[illegible]

उपदेशमाला भाषांतर.

([illegible])

[illegible]

अमदावाद निवासी मर्हुम शेठ [illegible] भाईनी विधवा पुत्रवधू [illegible] बेन [illegible] तेमनी संपूर्ण आर्थिक सहाय थकी.

[illegible]

[illegible] निवासी—

मास्तर उमेदचंद रायचंद.

ठे. पांजरापोळ—अमदावाद.

वीर संवत २४३८ विक्रम संवत १९६८. सने १९१२.

आवृत्ति [illegible] प्रत १०००.

[illegible]

[illegible]

धी सूर्यप्रकाश प्रिन्टिंग प्रेसमां मुळचंदभाइ त्रीकमलाले छाप्युं
काळुपुर टंकशाळ अमदावाद. (कन्याशाळानी नजीकमां.)

प्रस्तावना.

आ मूळ ग्रंथ मागधी गाथाबंध छे, तेनी संख्यानुं प्रमाण पण करीए ५४० नुं बन
वेलुं छे; उपरांत आशिर्वादात्मक अने मिथ्यादुष्कृत सूचक बे गाथाओ अंते अने बीज
बे गाथाओ मध्यमां कोइ पण स्थळे क्षेपक छे, एकंदर ५४४ गाथाओनुं प्रमाण थयेलुं
आ प्रकरण कहो के ग्रंथ कहो, तेना कर्ता भगवंत श्रीमहावीर स्वामीना हस्तदी
क्षित शिष्य श्रीधर्मदास गणि अग ज्ञानना धारक हता. तेमणे प्रथम तो जो के पोताना
पुत्रना हित माटे आ ग्रंथ बनाव्यो हतो, परंतु ते अनेक भव्य जीवोना हित माटे थ
छे. आ ग्रंथमां एटला बधा हितनां वाक्यो समावेला छे के तेनुं पृथक पृथक वर्ण
करवा बेसीए तो पार आवे तेम नथी. उपदेशना विषयनी पृथकता बताववा मा
अनुक्रमणिका करतां जुदा जुदा २५० विषयो बताववामां आव्या छे; परंतु जुदी जु
विवक्षा करता बेसीए तो तेथी विशेष विषयो पण उपलब्ध थइ शके तेवुं छे. अनुक्र
मणिकामां विषय संख्या ३२३ नी आपेली छे, परंतु तेमां प्रथमना त्रण विषय अने मध्य
आवेली ७० कथाओ सूचक ७० अंक बाद करतां विषयसंख्या २५० नी रहे छे.

आ ग्रंथना कर्त्ता श्रीमान धर्मदास गणि भगवंतना हस्तदीक्षित शिष्य हता के केम
ए संबंधमां केटलाएक शंका उठावे छे. परंतु प्रथम दृष्टिए आ ग्रंथमां आवेला उपदेशन
गौरवता, प्रौढता, गंभीरता, विशालता विगेरे जोतां वांचनार बंधुओने स्वतः एम अव
आवे तेवुं छे के एमां लेश पण शंका उठाववा जेवुं नथी. कारण के आवी गौरवता
धावधरनना भगवंतना समयना ग्रंथकर्त्ताने माटेज संभवे छे.

बीजुं प्रबल कारण ए छे के आ उपदेशमाळानी उपर संस्कृतबंध टीकाओ थयेल
छे, जेना कर्त्ता एवा महापुरुषो, तत्त्वशोधक अने बुद्धिचातुर्यमां अद्वितीय थयेलो
के जेमने अंशमात्र पण शंका पडी होत तो तेमा निःस्पृहे पोतानी टीकामां
सूचन कर्या शिवाय रहेत नहीं.

त्रीजुं कारण ए पण प्रबल छे के आ ग्रंथना प्रारंभमां आवेलुं धर्मदास गणि
सांसारिक पुत्र रणसिंह राजानुं दृष्टांत जे तमाम टीकाओमां विस्तारथी आपेलुं छे
कर्तुं कल्पित होय ते तद्दन असंभवित छे.

चोथुं कारण ए छे के, शंका उठावनारनी मुख्य युक्ति पोतानी धारणा पण केट
एक महत्वतानी पुरुषोनी स्तुति आ ग्रंथमां आवेली जाणी छे के त्यार पछीना क
होय तेवुं बतावे छे के छे परंतु ते बाबतमां समाधान थाय छे. तेवो अवसिद्धान्त विचा

विषयी होवाथी एवां दृष्टांतो जाणवानी तेमनी शक्ति होय छे, एटले तेवां दृष्टांतो आपी शके छे. कदि ते ते दृष्टांतो साथे आपेला क्रियापदोने माटे एम कहेवामां आवे के तेमां भविष्यत् काळ वापरवामां आवेल नथी; परंतु सिद्धांतमां पण एवा घणा पुरावा मळी शके छे के जेमां भविष्यत् काळनी हकीकतने माटे पण क्रियापद वर्तमान काळना वपरायेला छे.

पांचमुं अने छेल्लुं कारण ए छे के वर्तमान समयमां वर्तता सर्व मुनि महाराजाओ आ संबंधमां तद्दन एकज मत धरावे छे, तेमां कोइनो मत जुदो पडतो नथी. जेमणे अनेक सिद्धांतो, पंचांगीओ, ग्रंथो, प्रकरणो अने कथानको वांचेलां छे एवा बहुश्रुतो ज्यारे एमां शंकानो अवकाश गणता नथी त्यारे आपणे पण तेमना विचारनेज अनुसरवुं ए आपणी फरज छे. 'महाजनो येन गतः स पंथाः' ए सूत्र अहीं खास स्मरणमां राखवा योग्य छे.

आ प्रकरण उपरनी अनेक टीकाओ पैकी आ भाषांतर श्रीरामविजय गणिनी करेली टीकानुं करवामां आव्युं छे. एना कर्त्ताए टीकाने छेडे पोतानुं नाम पण सुचव्युं नथी, प्रशस्ति पण लखी नथी, तेमज संवत विगेरे पण जणाव्युं नथी; तेथी बीजो विशेष निर्णय बतावी शकीए तेवुं नथी, तोपण एटलुं जणावीए छीए के आ टीकाना कर्त्ता श्रीहीरविजय सूरि महाराजनी परंपरामां थयेला छे, तेमना गुरुनुं नाम श्रीसुमति विजयजी छे, अने तेओ उपाध्यायजी श्रीमद्यशोविजयजीना समयमांज थया [१]छे. एओ व्याख्यानकळामां बहु प्रवीण हता. एमनी प्रशंसा सांभळीने एक वखत श्रीमद्यशोविजयजी पण एमनुं व्याख्यान सांभळवा गया हता, अने सांभळीने बहुज प्रसन्न थया हता एम कहेवाय छे. एमणे श्रीशांतिनाथजीनो रास संवत १७८५ मां बनाव्यो छे, तदुपरांत बीजुं शुं शुं बनाव्युं छे ते चोकस जाणवामां नथी. एक पंच कल्याणकनुं स्तवन एमनुं करेलुं प्रसिद्ध छे. आ ग्रंथना टीकाकार तरीके एओ छेल्ला थयेला जणाय छे.

आ भाषांतरना कार्य माटे पन्यासजी श्री गंभीरविजयजीए आपेली टीकानी प्रत, पन्यासजी आनंद सागरजीनी टीकानी प्रत तथा एक बहु प्राचीन मूळ गाथाओ परना टबार्थनी प्रत, अमदावादमां छपायेल उपदेशमाळानो बाळावबोध इत्यादिनी सहाय लेवामां आवी छे, अने तेने अनुसरीने दरेक गाथाना पाठांतरो नोटमां जणाव्या छे. मागधीनी संस्कृत छाया जाणवाना अभिलाषीने माटे केटलाएक अपरिचित मागधी शब्दोनां संस्कृत अर्थ टीका अनुसार नोटमां आपवामां आव्यो छे, तेमज गाथा उपरथी अर्थ करवाने सरल पडवा माटे अन्वयना अंको पण गाथाओमां मुकवामां आव्या छे, अने अर्थनी अंदर विशेषार्थ कौंसमां आपवामां आवेल छे. जेम बने तेम विशेष उप-

१ [illegible] शांतिनाथजीना रासनो प्रांत भाग.

योगी थइ पडे तेम करवा माटे बनतुं कर्युं छे. वळी साध्वीओ अने श्राविकाओ आ उपदेशमाळा आखी कंठे करे छे, तेमने अर्थ धारवा सबळ पडे तेवो दरेक प्रयत्न करवामां आव्यो छे.

आ प्रकरणनी टीकामां प्रारंभमां आपेली रणसिंहकुमारनी विस्तृत कथा उपरांत बीजी ७० कथाओ जुदा जुदा प्रसंगने लइने आपवामां आवी छे. गाथाओनी अंदर तो तेथी वधारे नामो लभ्य थाय छे, परंतु ते शिवायनां नामोनी कथाओ उपरनी कथामां अंतर्गत थइ जवाना कारणथी, प्रथम आवी गयेल होवाना कारणथी, अथवा विशेष प्रसिद्ध होवाना कारणथी आपवामां आवी नहीं होय एम जणाय छे. ७० कथाओ पैकी ६५ कथाओ तो २८३ गाथा सुधीमां आवी जाय छे, एटले पाछली गाथाओ २६१ मां मात्र पांचज कथाओ छे, परंतु एकलो उपदेशज भरेलो छे के जे उपदेशनुं मूल्य थइ शके तेम नथी.

आ टीकानी अंदर १ चंदनबाळा, २ संबाधन राजा, ३ भरत चक्री, ४ प्रसन्नचंद्र राजर्षि, ५ बाहुबलि, ६ सनत्कुमार, चक्री, ७ ब्रह्मदत्त चक्री, ८ उदायिनृपमारक, ९ जासा सासा. १० मृगावती साध्वी, ११ जंबुस्वामी, १२ चिलातीपुत्र, १३ ढंढण कुमार, १४ स्कंदक सूरिना शिष्यो, १५ हरिकेशी मुनि, १६ धन्न मुनि, १७ वसुदेवना जीव नंदिषेण. १८ गजसुकुमाल, १९ स्थूलभद्र, २० सिंहगुफावासी मुनि, २१ पीठ महापीठ मुनि, २२ तामलि तापस, २३ शालिभद्र, २४ अवंतिसुकुमाल, २५ मेतार्य मुनि, २६ वज्रस्वामी, २७ दत्त मुनि, २८ सुनक्षत्र मुनि, २९ परदेशी राजा, ३० कालिकाचार्य, ३१ महावीर स्वामीना पूर्वभवो. ३२ बलभद्र मुनि, मृग अने रथकारक, ३३ पूरण तापस, ३४ दमदन्त मुनि, ३५ चंडावतंसक राजा. ३६ सागरचंद्र कुमार, ३७ कामदेव श्रावक. ३८ द्रुमक, ३९ दृढप्रहारी. ४० सहस्रमल्ल, ४१ स्कंद कुमार, ४२ सूरिकान्ता राणी, ४३ कनककेतु राजा, ४४ कोणिक राजा. ४५ चाणाक्य, ४६ परशुराम ने सुभूम चक्री. ४७ आर्य महागिरि, ४८ मेघकुमार, ४९ सत्यकी विद्याधर, ५० कृष्ण. ५१ चंडरुद्राचार्य ने तेनो शिष्य. ५२ अंगारमर्दकाचार्य, ५३ [illegible], ५४ अर्णिकापुत्र आचार्य. ५५ मरुदेवा माता, ५६ पुष्पचूला. ५७ मंगु मुनि, ५८ गिरिशुक ने पुष्पशुक, ५९ सेलकाचार्य ने पंथक शिष्य, ६० [illegible] नंदिषेण, ६१ कंडरिक ने पुंडरीक, ६२ जितशत्रु राजा. ६३ [illegible], ६४ श्रेणिक राजा ने विद्याधरना चंडाळ, ६५ त्रिदंडी, ६६ [illegible], ६७ दर्दुरांक देव. ६८ सुलस, ६९. सनाथि अने ७० रुपीनी कथा मळी सित्तेर कथाओ आवेली छे. तेमां केटलीक

१ [illegible]

जंबूस्वामीनी कथा जेवी बहु विस्तारवाळी छे, अने उपदेशवडे तो तमाम कथाओ भरपूर छे.

आ ग्रंथज उपदेशनी माळारुप होवाथी तेमां अमुक उपदेश विशेष ग्राह्य छे एम कहेवा जेवुं नथी, तोपण खास ध्यान खेंचवा लायक स्थळो आ नीचे दर्शाव्या छे. ते उपर वधारे ध्यान आपवुं.

१ माता, पिता, बंधु, स्त्री, मित्र अने स्वजनो पण स्वार्थने माटे प्राणांत कष्ट मारनार थाय छे. ते विषे पृष्ठ २०० थी २१८. दरेक संबंधपर कथा साथे.

२ जीवने सामान्य उपदेश गाथा २०३ थी २१७.

३ पासत्थादिनुं स्वरुप–तेना लक्षण विगेरे. गाथा २२२ थी २२९ ने ३५४थी३८२.

४ श्रावक केवा होय ? तेनी करणी–कर्त्तव्य विगेरे. गाथा २३० थी २४६.

५ चारे गतिना दुःख. गाथा २७९ थी २८७.

६ कर्मनी गति विगेरेमां यत्न करवा संबंधी तथा कषाय मारनादि तजवा

चित्त ते तरफ दोर्यु, जेथी श्राविकाओमांथी आ ग्रंथ माटे एक सारी रकम उत्पन्न करवामां आवी, जेनुं लीस्ट आ ग्रंथना अंते आपवामां आव्युं छे. ते मदथने स्थाने आ ग्रंथनुं भाषांतर करावयानुं अने छपाववा विगेरेनुं काम हाथ धरवामां आव्युं छे. अने तेनुं परिणाम पण तेमना लाभमांज लाववामां आव्युं छे. अर्थात् मदायक बहेनोने. अन्य उत्तम श्राविकाओने तेमज साध्वीसमुदायने आ बुक भेट दाखल आपवानुं निर्माण करवामां आव्युं छे अन्य बहेननी श्राविकाओए तेमज श्रीमंत गृहस्थनी स्त्रीओए ज्ञानावरणी कर्म तोडवा माटे ज्ञाननो उद्धार अने ज्ञाननुं दान करवा रूप आ कार्य अनुकरण करवा योग्य छे.

आ ग्रंथनुं भाषांतर तपास्या छतां तेमां मतिदोष दृष्टिदोषादि कारणथी कांइ पण भूल थइ होय तो तेने माटे मिच्छादुक्कडनी याचना छे.

आ परम उत्कृष्ट, सिद्धांतनी सरखामणीमां मुकवा लायक अने तेज प्रकारनी योग्यता धरावनारो ग्रंथ छे, तेथीज कालवेलाए आ ग्रंथनुं पठन पाठन करवानुं निषेधेलुं छे, माटे ज्ञानाचारना प्रथम अतिचारने ध्यानमां राखीने तेनुं योग्य अवसरेज पठन पाठन करवुं अने आ ग्रंथने विनय पूर्वक लेवो. मुकवो ने वांचवो, के जेथी तेमां रहेलो अमूल्य उपदेश हृदयपर खूब तेमज दृढ असर करे अने ते प्रमाणे वर्तन करवाथी भव्य आत्मानुं कल्याण थाय.

प्रस्तावनानुं वधारे लंबाण न करतां अनुक्रमणिका तरफ दृष्टि करवानी–तेने साद्यंत वांची जोवानी भलामण करी समाप्त करवामां आवे छे. ते साथे आशा राखवामां आवे छे के जो अनुक्रमणिका वांचीने वंचाशे तो आ ग्रंथ वांच्या शिवाय रहेवानोज नहीं एवी अमने खात्री छे. इत्यलं विस्तरेण.

निवेदन.

उपरनी हकीकतथी जणायुं हशे के-आ उपदेशमाळा नामनो ग्रंथ भावनगर श्री जैन धर्मप्रसारक सभा तरफथी १९६६ नी सालमां बहार पड्यो हतो. तेने आज लांबो वखत थइ गयो छे-अत्र अमदावादमां रहेता जैन श्वेतांबर ज्ञाते वीसापोरवाड शेठजी प्रसिद्ध नाना मा णेकना कुटुंबमां थइ गयेला मर्हुम शेठ वाडीलाल लल्लुभाइनी विध्वा ब्हेन चंचल ब्हेन अति धर्मचुस्त छे. जे शेठजीना जीवन चरित्रथी जणाशे. तेमने साधुसाध्वी तेमज तेमनी सोबतमां बेसनारी श्रावीका वर्गमांथी उपदेश मल्यो के-उपदेशमाळा नामनुं पुस्तक अती उपयोगी छे. अने अत्यारे ते मलतुं नथी. ते माटे तमो द्रव्यनो सद्उपयोग करी आ पूस्तक जरुर छपावी भेट तरीके आपो तो बहुज लाभ थशे ते सौनी प्रेरणाथी तेमनी इच्छा थइ अने प्रसारक सभानी छपावेली नकल मने मेळवी आपी. जेना संयोगे करी. आ उपदेश माळा नामनो ग्रंथ अत्र अमदावादथी बहार पाडवामां आव्यो छे. जो के आ पूस्तक प्रथम सभानी" खंतथी अने मुंबाइना छापखानामां छपायेलुं जेथी परम शुद्ध अने सुंदर छपायेलुं छे. परंतुः आ आवृत्ति तो अमदावादमां कोपी टु कोपी प्रमाणेज छपावेल छे छतां पण प्रेसो साधारण होवाथी शुद्धी तरफ संपूर्ण काळजी राख्या छतां पण काना, मात्रा, विलंटीओं विगेरेनी अशुद्धिनो संभव छे तो ते वांचनार वर्ग सुधारीने वांचशे. एम भलामण पूर्वक तेमज आ ग्रंथ तैयार करनार श्री जैन धर्म प्रसारक सभानो तेमज आ ग्रंथ पोतानां नाणां सन्मार्गे वापरी ज्ञानने उत्तेजन आपनार मर्हुम वाडीलाल लल्लुभाइनी सद्गुणी विध्वा के जेओनी इच्छाथी आ ग्रंथमां पोताना स्वामीनुं नाम जालवी राखवा तेओ साहेबनुं फोटा सहित टुंकुं जीवनचरित्र तथा देव गुरुभक्ति नीमीत्ते महात्माओ के जे अत्यारे अमदावादमांज बिराजे छे श्रीमान् विजयनेमी सूरिश्वरजी तेमज श्रीमान् विजयसीद्धी सूरिश्वरजीना फोटा तथा तेमनुं टुंकुं जीवनचरित्र प्रसिद्ध करावी पोताना आत्मानुं हित इच्छनार बेन चंचल बेननो आभार मानी अशुद्धि के जीनाज्ञा विरुद्ध लखाण आदिमां दोषो रह्या होय तो तेनी क्षमा याची मिच्छादुःष्कृत दइ अत्रे विरमुं छुं. एज मुमुक्षु शीवम्ना.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ली. प्रसिद्ध कर्ता.

[illegible]

मास्तर उमेचंद रायचंद.

ठेकाणुं पांजरापोळ-अमदावाद

શ્રી વિજય દેવસૂર સંઘ જ્ઞાન ભંડાર
[illegible]
[illegible]

स्वपरसमयपारावारपारीण-शासनसम्राट-तीर्थरक्षाप्रवण-
परोपकारी-कार्पितकरण-तपोगच्छाधिराज
सूरिचक्रचक्रवर्ति-

आचार्य श्रीविजयनेमिसूरीशः

जन्म सं. १९२९ दीक्षा सं. १९४५ गणिपद सं. १९६० पंन्यासपद सं. १९६०
कार्तिक शु. १ ज्येष्ठ शु. ७ कार्तिक कृष्ण ७ मागसर शु. ३
सूरिपद सं. १९६४-ज्येष्ठ शु. ५

तपागच्छाधिपति तीर्थरक्षक शासन प्रभावक पूज्यपाद आचार्य
महाराज श्री विजयनेमिसूरीश्वरजीनुं

टुंक जीवनवृत्तांत.

आ महापुरुषनो जन्म काठीआवाडमां आवेला प्रसिद्ध महुवा नामे गाममां थयो तो. महुवानी भूमी उत्तम विद्वानोनी उत्पत्ति माटे अभिमान धरावे छे, केमके त्यांना रहेवासी घणाक प्रसिद्ध वक्ताओ अने लेखकोनां नामो वारंवार सांभळवामां आव्यां छे.

आपणा आ पूज्य सूरीश्वरनी पण वक्तृत्व कळा अने उपदेश छटा एटली बधी तो रसीक अने असरकारक छे के जे सांभळतां पाषाण पण पाणीरूप थइ जाय तो पछी कोमळ दिलना मानवीओ तेमनी अमृत वाणीथी पोताना आत्मानो उद्धार करी शके तेमां तो कहेवानुंज शुं.

तेमना चारित्रनी उत्तमता अने दृढता प्रशंसनीय छे. चार वर्षनी नानी वयमांथी रीते चारित्र लइ अत्यारे सुधी नीराबाध नीष्कलंक पाळ्युं छे, अने हजु पण तेवीज रीते निर्मळताथी तेनुं पालन करे छे.

तेमना अखंड बाळ ब्रह्मचारीपणानो प्रताप एटलो बधो तो प्रचंड छे के, शासन द्रोही घुवडो तेमनो पाछळ भले चीचीआरीओ करे. परंतु तेमनी सामे तो दृष्टि मेळववा पण करी शके तेम नथी.

ब्रह्मचर्यनी श्रेष्ठता अने पवित्रतानो प्रताप एटलो बधो तो प्रभावशाळी छे के, दरेक दर्शनवाळाओ वगर आनाकानीए तेनो एकांत स्वीकार करे छे. तो तेनी छत्र छायामां रहेनार माणस आ लोकमां उज्ज्वल यश अने परलोकमां आत्मकल्याणनी प्राप्ति करे तेमां तो शुं आश्चर्य.

पूज्यसूरीश्वरजीनी स्वसिद्धान्त तथा षड्दर्शनना न्यायादि शास्त्रोमां अपूर्व तीक्ष्ण बुद्धि माटे तो कोइ पण जातनो विवाद छेज नहि वळी आ पूज्य सूरीश्वरे काठीआवाड गुजरात, मारवाड, मेवाड, माळवा विगेरे घणा देशोमां गामोगाम वी-चरी पोतानी उपदेश छटाथी जनसमुदायना मन एटला बधा तो हरी लीधा छे के, शासन द्वेषी अने कदाग्रहीओ शीवाय दरेक जन पोताना स्वच्छ अंतःकरणथी तेमनुं यशोगान स्वेच्छाए गाया करे छे.

भारत साधु समुदायमां अत्यारे शासननौकाने टकावी निर्भय करवानी शक्ति, जो कोई पण साधु मुनिराजे धरावी होय तो ते आज श्रीमद्विजय नेमिसूरीश्वरजीज छे. अने तेने माटे तेना प्रतिस्पर्धिओ अने तेना आश्रित मन्तव्यवाळा एक सामान्य व्यक्तिने पण न घटे तेवा गुप्त आक्षेपो तेमनो उपर घणा वखत करे छे; परंतु तेम

सूर्यनो उदय थतां नीशाचर घुवडीआ उडी जाय तेवीज रीते आ मुनीश्वर तरफथी सूत्र सिद्धांतनो 'खरेखरो खुलासो थतां अने सत्यासत्यनो प्रकाश पडता, अत्यारे एक पण धर्मद्रोही जाहेरमां देखवामां आवतो नथी.

समाजना अगर शासनना नेत्ता पुरुषोने घणी वखते तुच्छ लोको तरफथी अणघट्ती मुश्केलीओ भोगववी पडे छे, तथापी तेनी उन्नति एज जेनुं साध्य बिंदु छे एवा अग्रगण्य पुरुषो तेवा दुर्वीनीत मनुष्यो तरफ जरा पण लक्ष आपता नथी.

अत्यारे आ महापुरुष अमदावाद राजनगरनी भुमी उपर विचरे छे, के ज्यां आगळ श्रोताओ घणी मोटी संख्यामां भेगा मळी तेमना उपदेशामृतनुं पान करी आनंद पामे छे, अने अन्यदर्शन वाळाओ पण तेमनी वाणीनुं रहस्य विचारता थका छक थइ जाय छे.

पूज्यसूरीश्वरजी महाराजना श्री सिद्धगिरि–गिरनारजी समेतशिखरजी–अंतरीक्षजी–तारंगाजी विगेरे आपणा परम पवित्र तीर्थ रक्षण माटे कराता सतत प्रयासो श्री कापरडाजी–शेरीसाजी–कलोल–श्री स्तंभतीर्थ विगेरे तीर्थ भूमीयोनो उद्धार तथा प्रतिष्ठाओ–मेवाड विगेरेमां तेरापंथ विगेरे पाखंड मतोमां भली गयेला श्रावक भाइओना धार्मिक जीवननो पुनरुद्धार विगेरे विगेरे असीम उपकारना कार्योनो आभार समग्र जैन कोमथी आ चन्द्रदिवाकर पण भुली शकाय तेम छेज नहि ?

राजनगरमां आ महा पुरुषना भक्तोमां जैन आगेवान धनाढ्यो घणा सेवको छे. के जेनुं वचन अलंघनीय एटले जरा पण आनाकानी कर्या वगर जैन शासनना गमे तेवा काम–करवाने तैयार रहे छे. अने ते केम पार उतरे तेवुं खंतथी ध्यान आपता आव्या छे अने हाल पण आपे छे आ महापुरुष मारा पण घणाज उपकारी छे के तेमना वडे हुं पण यत् किंचित् ज्ञानादि धर्म सारी रीते पामी शक्यो छुं, आ पुस्तक प्रगट करावनार बाई चंचल बेहननी पण संपूर्ण पूज्यश्री तरफ भक्ति होवाथी तेओ साहेबना फोटा सहित तेमनुं जीवनचरित्र अत्रे प्रकट करवामां आव्युं छे. आवा शासन रक्षक परोपकारी महापुरुषना जेटला गुणगान करुं तेटला ओछा छे. कारणके लाखो जिह्वाथी जेना गुण गणी शकाय नहीं त्यां मारा जेवा पामर प्राणीनी एक जीभथी तेमनां गुण शी रीते गणावी शकाय. टुंकामां अत्यारे आ महापुरुष जैन शासन माटे महान उपकारी छे. अस्तु.

हालमां पण अनेक शासनप्रभावनाना कार्यो अहर्निश करी रह्या छे अने तेज प्रमाणे शासन प्रभावनाना कार्यो करवा माटे चिरकाल जयवंता वर्तो.

ली. प्रसिद्धकर्ता.

मर्हूम शेठ वाडीलाल लल्लुभाइनुं

टुंक जीवन वृत्तांत.

आ नररत्ननो जन्म संवत १८९८ ना महा सुद १५ मे अमदावादमां ठेकाणुं
कुसींगनी पोलमां श्री जैन श्वेताम्बर आम्नायमां अने वीसापोरवाडमां घणा वृ-
द्ध एवा नाना माणेकना कुटुंबमां थयो हतो. बाल्यावस्था विना बाद केलवणी
ामां केटलोक वखत गया पछी शेठजीनी उमर आशरे (२०) वीस
सनी थवा आवतां तेमना पिताथी देवलोक पामी गया के जेथी घर विगेरेनो बोजो
ना शीर उपर आवी पड्यो. तेओ साहेबने सराफीनो धंधो हतो. पोताना पंडाशी
ने संपूर्ण कावेल हता तेना प्रताप साधारण लक्ष्मी पण सारी संपादन करी हती
ने ते लक्ष्मीवडे शेठजी साहेब घणी उदारता तथा परोपकारना काम पण हंमेशा
ाँ करता हता. दरेक वर्षे तीर्थयात्रा—देवदर्शन गुरुभक्तिमां तत्पर रहेता हता. अने
ना व्याख्यानादि सांभळवानी रुचीवाळा होवाथी जीवदया तरफ तेमनो संपूर्ण प्रेम
ो जेथी अमदावादमां आवेला घोडा ढोरना पांजरानो वहीवट पण शेठजी साहेब करता
ा पछी तेओ साहेबे घोडा ढोरना पांजरामां पोतानी जग्या पण धर्मार्थे आपेली छे.
ो साहेब गरीब लाचार माणसो तेमनी पासे आवता तो तेमने योग्य ठेकाणे पाडता तथा
नी मदद पण करवा चुकता नहोता. शेठजी साहेब नाते दशाड सरक स्वभावी
ांती अने सौ सागे हळीमळीने चालनारा हता. तेओ साहेबे संवत्सरीना दीवसमां
ा काडीनाथजी महाराजनी प्रतिष्ठा करवामां पोते अरधो भाग लीधो हतो विगेरे दरेक
ाना काममां आगळ भाग लेता हता. शेठजी साहेबनी तेमनी शीतळीनी साथ धर्मा-
ा पछी पण थयेली छे. संपमां एक पाटीमां घणुं मोटुं नम्र हता. घोर धर्मी
ी अर्थात एक पण संपमां ठपको नथी. शेठजी साहेब तेमनी वृत्ती पूर्वे धर्मी
नि आशरे ७१ वर्षनी नानी नवरमां जिन भक्ति शीतळ १९६९ ना पोस सुद १५
आशरे ६१ वर्षनी उमरे देवलोक पामेला छे. ते ते विगतनुं नाम पोतानुं संप छे

२ .

शेठजी साहेबनो तेमना उपर संपूर्ण प्रेम अने विश्वास होवाथी पोतानी सर्व मीलकत ट्रष्टीओ तथा कुटुंबीओ विगेरेने नहीं सोंपता पोतानी स्त्रीनेज सोंपी गया छे. आ चंचल व्हेन पण तेमना सहवासमां आव्या त्यारथी धर्म उपर संपूर्ण प्रीतीवाला हता जेना परीणामे पोतानी २१ वरसनी नानी उमरे वैधव्यपणुं आव्या छतां पण आवाइ धर्म ध्यान आदि सारा संस्कारोमां जोडायेला होवाथी आजे तेमनी उमर लगभग ४० वरसनी थवा आवी छे छतां पण कोइ जातनुं कलंक के कहेवत विना तेमने धर्ममय जींदगी गुजारी छे. वैधव्यपणुं थया पछी लगभग एकाद वर्षमांज अत्रे सुप्रसिद्ध नगर शेठना मामानी दीकरी व्हेन सीता व्हेननी तेमने सोबत थइ हती तेओ धर्मशील अने बुद्धीशाळी होवाथी आ व्हेनने धर्म मार्गमां जोडवामां सारी सहाय करेलो छे.

शेठजी साहेब गुजरी गया पछी आ व्हेने—त्रीजेज वर्षे एटले १९६३ नी सालमां सारी धामधुम साथे उजमणुं माडयुं हतुं. तेमां हंमेशा पूजा प्रभावना विगेरे अठाइ ओच्छव तथा स्वामीवत्सल विगेरे पण करवामां आव्युं हतुं. वली आ व्हेन पालीताणा जइ चोमासु पण करी आवेला छे ते चोमासामां त्यां अठ्ठाइनी तपस्या करी स्वामीवत्सल पण कर्युं हतुं. वली शे जयगीरीनो नवाणुं जात्रापण करी हती. वली अमदावादना दोसीवाडानी पोळना विद्याशाळाना वहीवट करनार शेठ जेशींगभाइ हठीसंगे शेत्रुंजय तीर्थनो संघ छरीपाळता काढेलो तेमां पण छरीपाळता शेत्रुंजयगीरीनी जात्रा पण करेली छे. विगेरे. हंमेशां धर्मक्रीयाओ करवामां तत्पर रहे छे जेना प्रतापे महात्मा पुरुषोना व्याख्यानादि सांभळवा वनी भक्ति तपस्या तेमज पोसह प्रतिक्रमणादि दरेक आवश्यक क्रीयाओ यथाशक्ति करवामां जेमनुं मन लागेलुंज रहे छे दरेक वर्षे तीर्थयात्राओ [illegible] तेमां स्वामीभक्ति गुरुभक्ति आदि दरेक धर्मना काममां अग्र भाग [illegible] जैनोना दरेक तीर्थ जेवा के शत्रुंजय, गीरनार, आबुजी, [illegible], [illegible], [illegible], अंतरीकजी आदि नाना मोटा दरेक तीर्थनी [illegible] छे. [illegible] पण [illegible] नीर्थयात्राओ करेज छे [illegible] पण कर्यांज करे छे. वली हमणां चारपांच [illegible] भाग्यशाळीओनी क्रियाओ चेपामणीनो तेमनी [illegible] छे. हंमेशां ज्ञानावरणी कर्म तोड-

वामां ज्ञाननुं आराधन अने तेनी भक्ति तेनुं उत्तेजन करवाथीज थाय छे तेवो उपदेश–सर्वोपरि तेमने मनमांज ठसतो हतो. तेवा संयोगोमां आ उपदेशमाळा नामनुं पुस्तक भावनगर श्री जैन धर्मप्रसारक सभाए प्रसिद्ध करेलुं पण ते बुको पुरी थवाथी कोइ ठेकाणे मळती न होती. अने घणा साधुसाध्वीओ तेमज श्रावीकाओनी मागणी हती. जेथी तेमनी पासे रहेला सीताबहेन तथा साध्वीजी श्री चंपाश्रीजी तथा प्रभा-श्रीजी आदिनी प्रेरणाथी आ पुस्तक छपाववानी तेमनी इच्छा थइ अने संवत १९६६ मां छपायेली उपदेशमाळानी नकल मने बतावी. पछी तेना खर्च विगेरेनो अंदाज करी नकलो ११०० छपाववानुं नक्की करी आ नवुं बुक भेट तरीके साधु साध्वी अने तेना ज्ञानी जीवोने आपवानुं नक्की थवाथी आ बुक आ चंचळ बहेननी संपूर्ण आर्थीक सहायताथीज बहार पाडवामां आवी छे. साथे तेमना मर्हुम पति शेठ वाडीलाल लल्लुभाइनुं नाम जाळवी राखवा माटे तेओ साहेबनो फोटो तथा एमनुं जीवनचरित्र तेमज देवगुरु भक्ति तीर्थोने केसरीयाजी दादानो तेमज जैन शासनना स्थंभरुप आचार्य महाराज श्री विजयनेमीसूरीश्वरजी महाराजनो फोटो तथा तेमनु टुंक जीवनवृत्तांत पण आ पुस्तकमां दाखल करवामां आव्युं छे. एज. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

ली. प्रसिद्ध कर्ता.

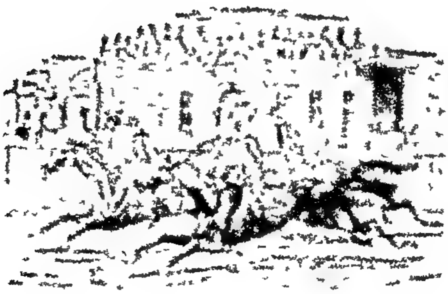

अनुक्रमणिका.

विषय.	गाथा.	पृष्ठ.
१ टीका करवानो हेतु...		१
२ उपदेशमाळाना कर्त्ताना पुत्र रणसिंहनुं चमत्कारिक चरित्र.		२५
३ उपदेशमाळा प्रारंभ. टीकाकारनुं मंगळाचरण. ...		२५
४ ग्रंथकर्त्तानुं मंगळाचरण.	१– ५	२५
५ विनयनी प्राधान्यता...	६– ७	२७
६ गुरुनुं महत्त्व–गुरुनुं स्वरूप.	८– १२	२८
७ साध्वीने विनयनो उपदेश–पुरुषनी प्राधान्यता. ...	१३– १४	३०
८ चंदनबाळानी कथा. (१)		३१
९ साध्वी करतां साधुनी श्रेष्ठता...	१५– १६	३५
१० संबाधन राजानुं दृष्टांत. (२)...	१७– १८	३५
११ पुत्रने अभावे द्रव्यनुं राजग्राह्यपणुं.	१९	३७
१२ आत्मसाक्षीए धर्म....	२०	३८
१३ भरतचक्रीनुं दृष्टांत (३)		३८
१४ प्रसन्नचंद्र राजर्षिनुं दृष्टांत. (४)		४१
१५ एकला वेषनी अप्रामाण्यता–वेष पण धर्मनो हेतु छे...	२१– २२	४७
१६ आत्मसाक्षीए धर्म–प्राणामानुसार कर्मबंध... ...	२३– २४	४८
१७ अभिमान वडे धर्म थतो नथी	२५	४८
१८ बाहुबलिनुं दृष्टांत. (५)		४९
१९ परचुरण उपदेश.	२६– २८	५७
२० सनत्कुमार चक्रीनुं दृष्टांत. (६)		५८
२१ आयुष्यनी अनित्यता.	२९– ३०	६१
२२ गुरुनो उपदेश भारेकर्मीने लागतो नथी.	३१	६१
२३ ब्रह्मदत्त चक्रीनी कथा. (७)...		६२
२४ उदायी नृपने मारनारनुं दृष्टांत. (८)		७१
२५ उपरना दृष्टांतनो उपनय.	३२	७२
२६ केटलाएक प्राणीनां पापकार्यो प्रगट करवानां पण नथी.	३३	७२
२७ भाणा मामानुं दृष्टांत. (९) ..		७३
२८ पोताना दोषनी क्षमापनाथी निरावरणपणुं प्राप्त थाय छे.	३४	७५

विषय.	गाथा.	पृष्ठ.
२९ मृगावतीनुं दृष्टांत. (१०)		७५
३० सराग संयमीमां सर्वथा अकषायीनो असंभव. ...	३५	७६
३१ कषायनां कडवां फळ.	३६	७७
३२ भोग नजवानां अनेक कारणो....	३७	७७
३३ जंबूस्वामीनुं दृष्टांत. (प्रासंगिक १६ दृष्टांत युक्त) (११)		७७
३४ रौद्रध्यानी जीवो पण धर्मना प्रभावथी प्रतिबोध पामे छे.	३८	९४
३५ चिलाती पुत्रनी कथा (१२)...		९४
३६ अलाभ परिसह सहन करवानुं फळ.	३९	९७
३७ ढंढणकुमारनी कथा. (१३)		९७
३८ मुनिपणानुं स्वरूप	४०– ४२	९९
३९ स्कंदक शिष्योनुं दृष्टांत. (१४)...		१००
४० दुष्टोनो करेलो उपद्रव सहन करवो ते मुनिनो धर्मज छे.	४३	१०३
४१ धर्ममां कुळनुं प्रधानपणुं नथी....	४४	१०३
४२ हरिकेशि मुनिनी कथा. (१५)....		१०४
४३ कुलाभिमान न करवानां कारणो.	४५– ४७	१०९
४४ साधुए निर्लोभी थवुं...	४८	११०
४५ वज्रमुनिनुं दृष्टांत. (१६)		१११
४६ चारित्र दुष्करनुं तो पालन करवो-चारित्र ने परिग्रहनुं विरोधीपणुं.	४९– ५२	११५
४७ तप ने सदनुष्ठाननुं फळ	५३– ५४	११६
४८ वसुदेव थयेला नंदिषेणनी कथा. (१७)		११७
४९ मुनिए उत्कृष्ट क्षमा धारण करवी.	५५	१२१
५० गजसुकुमालनी कथा. (१८)...		१२२
५१ मुनियोग्य उपदेश	५६– ५८	१२४
५२ शीघ्र चतुर्थ व्रत धारण करवा विषे.	५९	१२४
५३ स्थूलभद्रनी कथा. (१९)		१२८
५४ मुनिए तपश्चरणमां वर्तवुं.	६०	१३२
५५ गुरुनी आज्ञानो अनादर न करवो.	६१	१३३
५६ शिवभूतिनामा मुनिनुं दृष्टांत. (२०)		१३४
५७ प्रव्रज्यानी योग्यता	६२– ६५	१३६
५८ मुनिए परिषहो सहन करवा—प्रमाद न करवो. ...	६६– ६८	१३६

विषय	गाथा	पत्र
५९ पीठ अने महापीठ मुनि (ब्राह्मी सुंदरीना जीवनी कथा) (२१)		१३०
६० आत्मस्तुति-परनिंदा न करवा विषे. .	६९- ७३	१३७
६१ शिष्य केवा होय ?..	७४- ७८	१३९
६२ मुनि केवुं बोले ?	७९- ८०	१४०
६३ अज्ञान तपनुं अल्प फळ.	८१	१४०
६४ तामलि तापसनी कथा (२२)... ...		१४१
६५ ज्ञानयुक्त तप करवा विगेरेनो उपदेश.	८२- ८४	१४१
६६ हजु मारे माथे पण बीजो स्वामी छे ?	८५	१४२
६७ शालिभद्रनुं दृष्टांत (२३)		१४२
६८ शालिभद्रना चरित्र उपरथी उपदेश.	८६- ८७	१४५
६९ सांभळतां पण रोमो कंप थाय तेवो अवंती सुकमालनी कथा (२४)	८८	१४६
७० जीव अन्य ने शरीर अन्य-एवी मुनिनी मान्यता होय छे...	८९	१४७
७१ एक दिवसना चारित्रनुं फळ	९०	१४८
७२ प्राणांत उपसर्ग करनार उपर पण क्षमा करवी. ..	९१	१४८
७३ मेतार्य मुनिनी कथा. (२५)		१४८
७४ मुनि भक्ति ने अभक्ति करनार पर समभाव राखे छे....	९२	१५३
७५ गुरुना वचनपर श्रद्धा राखवी....	९३	१५४
७६ वज्र स्वामीनुं दृष्टांत. (२६)		१५४
७७ गुरुना वचननुं बहुमान-तेथी थतो शिष्यने परम लाभ....	९४- ९८	१५५
७८ गुरुनो पराभव करवाथी हानि	९९	१५६
७९ दत्त मुनिनी कथा (२७)		१५६
८० गुरुउपर भक्तिराग केवो होवो जोइए ?	१००	१५७
८१ सुनक्षत्र मुनिनुं वृत्तांत (२८)....		१५८
८२ गुरुने देवनी जेम सेववा-तेथी थतुं फळ.	१०१- २	१६०
८३ केशि गणधर ने प्रदेशी राजानो संबंध (२९)		१६०
८४ आचार्यनो प्रभाव-तेमनी शिक्षा.	१०३- ४	१६५
८५ प्राणांत कष्टना संभवमां पण सत्यज बोलवुं.... .	१०५	१६५
८६ कालिकाचार्यनी कथा (३०)....		१६५
८७ यथास्थित सत्य न बोलवाथी बोधिलाभनो विनाश थाय छे.	१०६	१६८
८८ महावीर स्वामीना पूर्वभवोनो संबंध. (३१)		१६८

विषय.	गाथा.	पृष्ठ.
८९ प्राणांते पण मुनि पोताना नियम विराधता नथी.	१०७	१७१
९० करण करावणने अनुमोदननुं समान फळ....	१०८	१७१
९१ बळदेव, रथकार ने मृगनी कथा. (३२)....		१७१
९२ दयारहित अज्ञानतपनुं तुच्छ फळ.	१०९	१७४
९३ पूरण तापसनुं दृष्टांत. (३३)....		१७४
९४ निर्भयवासी थवुं पडे त्यारे मुनिए केवी रीते रहेवुं ?	११०-१११	१७४
९५ उपाश्रयने घर न मानवुं.	११२	१७५
९६ गृहस्थनो अल्प प्रसंग पण मुनिने हानि करे छे.	११३	१७५
९७ वरदत्त मुनिनुं दृष्टांत (३४)		१७५
९८ स्त्रीनो परिचय तप, शील ने व्रतादिनो नाश करे छे	११४	१७९
९९ मुनिए तजवा योग्य कार्य.	११५-११७	१७९
१०० प्राणांते पण गृहित अभिग्रह न तजवो.	११८	१८०
१०१ चंद्रावतंसक राजानुं दृष्टांत (३५)		१८०
१०२ मुनिए परिसहो सहेवा-तेज तेनो धर्म छे	११९	१८१
१०३ गृहस्थ पण व्रतमां दृढ होय छे तो मुनि केम न होय ? ...	१२०	१८१
१०४ सागरचंद्र कुमारनुं दृष्टांत. (३६)		१८१
१०५ देवकृत उपसर्गथी श्रावक पण चळता नथी. ...	१२१	१८४
१०६ कामदेव श्रावकनुं दृष्टांत. (३७)		१८४
१०७ भोगने भोगव्या विना इच्छा मात्रथी दुर्गति पामे छे....	१२२	१८८
१०८ द्रमकनुं दृष्टांत. (३८)		१८८
१०९ जिन वचनना आराधनमां प्रमाद न करवो. ...	१२३	१८९
११० रागद्वेषनुं स्वाधीनपणुं-तेनां कटु फळ	१२४-१२९	१८९
१११ कुशिष्य चारित्रने निष्फळ करे छे.	१३०	१९०
११२ क्रोधनुं स्वाधीनपणुं-तेनां कटु फळ	१३१-१३४	१९१
११३ प्रमादनुं स्वाधीनपणुं-तेनां फळ	१३५	१९२
११४ मुनिए आक्रोशादि सर्व सहन करवुं.	१३६	१९३
११५ [illegible]नुं दृष्टांत. (३९)		१९३
११६ मुनि अपकारी मळे पण अपकार करता नथी. ...	१३७	१९५
११७ [illegible]नी कथा. (४०)		१९५
११८ मुनिनी क्षमा अने सहनशीलता.	१३८-१४०	१९६
११९ मुनि कुतीर्थीना स्नेहपाशमां बंधाता नथी....	१४१	१९७

विषय	गाथा.	पृष्ठ.
१२० स्कंदकुमारनुं दृष्टांत. (४१)		१९७
१२१ बंधुवर्गना स्नेहनुं त्याज्यपणुं	१४२–१४३	१९९
१२२ माता पिता विगेरे संबंधीओ आ भवमां अनेक दुःख आपे छे.	१४४	२००
१२३ माता पण पुत्रनुं अहित करे छे....	१४५	२००
१२४ चुलणी राणीनु दृष्टांत. (४२)....		२००
१२५ पिता पण पुत्रनुं अश्रेय करे छे....	१४६	२०२
१२६ कनककेतु राजानी कथा (४३)....		२०४
१२७ भाई पण भाईने हणे छे.	१४७	२०६
१२८ स्त्री पण पतिने विष आपे छे	१४८	२०६
१२९ पुत्र पण पिताने दुःख आपे छे....	१४९	२०७
१३० कोणिक राजानुं दृष्टांत. (४४)		२०७
१३१ मित्र पण मित्रने हणे छे.	१५०	२०८
१३२ चाणाक्यनुं वृत्तांत (४५)		२०९
१३३ स्वजनो पण स्वजनोनुं अनिष्ट करे छे.	१५१	२११
१३४ परशुराम ने सुभूम चक्रीनी कथा.(४६)		२१४
१३५ श्रेष्ठ मुनिओ अनिश्राएज विचरे छे.	१५२	२१८
१३६ आर्य महागिरि प्रबंध. (४७)....		२१८
१३७ सांसारिक सुंदरतामां मुनि लोभाता नथी....	१५३	२१९
१३८ कुळवान मुनिओ मुनिजनोनो संघट्ट खमे छे.	१५४	२१९
१३९ मेघकुमारनुं दृष्टांत. (४८)		२२०
१४० मुनिए गुरुकुळमांज वसवुं–एकाकी विचरवुं नहीं	१५५–१६१	२२२
१४१ तजवा योग्य स्त्रीओ....	१६२–१६३	२२३
१४२ विषयरागना परवशपणाथी जीव संसारमां भमे छे ...	१६४	२२४
१४३ सत्यकी विद्याधरनी कथा (४९)		२२४
१४४ मुनिराजनी सेवाभक्तिथी अशुभ कर्म शिथिल थाय छे.	१६५	२२७
१४५ श्रीकृष्ण प्रबंध (५०)		२२७
१४६ साधु प्रत्ये करेला वंदना नमस्कारादिथी पापकर्मनो क्षय थायछे.	१६६	२२८
१४७ कुशिष्यो गुरुनी श्रद्धाने पण दृढ करे छे.	१६७	२२८
१४८ चंडरुद्राचार्य ने तेना शिष्यनी कथा. (५१) ...		२२९
१४९ [illegible] तेनुं मोचन.	१६८–१६९	२३०
१५० [illegible] कथा. (५२)		२३०

विषय.	गाथा.	पृष्ठ.
५१ स्वप्नमां पण संसारस्थिति जोवाथी जीव बोध पामे छे....	१७०	२३२
५२ पुष्पचूलानी कथा. (५३)		२३२
५३ अनावस्थाए पण जे धर्म करे छे ते आत्महित साधे छे.	१७१	२३५
५४ अणिकापुत्र प्रबंध. (५४)		२३५
५५ कर्मनी लघुता होय तोज बोध पामी शकाय छे.	१७२–१७३	२३७
५६ प्राणांत कष्ट आपनार उपर पण मुनी द्वेष चिंतवता नथी.	१७४–१७६	२३७
५७ वधादिक पापकर्मनो जघन्य ने उत्कृष्ट उदय केटलो थाय छे?	१७७–१७८	२३८
५८ मरुदेवा मातानुं अवलंबन ग्रहण करवा योग्य नथी.	१७९	२३८
५९ मरुदेवा मातानी कथा. (५५)....		२३९
६० प्रत्येकबुद्धनुं अवलंबन पण ग्रहण करवा योग्य नथी	१८०–१८१	२४०
६१ अल्पशेष रहे तो पण विषयनो विश्वास करवो नहीं....	१८२	२४०
६२ सुकुमालिकानी कथा. (५६)....		२४१
६३ नीरंकुश आत्मा वश करातो नथी-आत्मदमननी आवश्यकता.	१८३–१८८	२४२
६४ वीषयसुखना सेवनथी तृप्ती थती नथी.	१८९–१९०	२४४
६५ रसगृद्ध प्राणी परिणामे दुःख पामे छे.	१९१	२४५
६६ मंगुसुरिनी कथा. (५७)		२४५
६७ आत्मगीनाथ	१९२–१९६	२४७
६८ जीवे ग्रहण करीने मूकेलां शरीरादी—नडाना उपदेश. .	१९७–२०२	२४८
६९ जीवने उपदेश	२०३–२१७	२५०
७० श्रद्धारहीत धर्माचरण मोक्षने माटे थतुं नथी	२१८–२१९	२५४
७१ केवा यतीओए परमारथ पदनुं कहेवाय?	२२०	२५४
७२ उन्मुक्त आचरणनुं फळ	२२१	२५५
७३ पासत्थादिनो संग न करवो	२२२–२२६	२५६
७४ शीतलविहारीनुं वर्णन ने शीतलमां उपजी थयुं. ...	२२७	२५७
७५ निरिधृत अने पुष्पभूतिनी कथा. (५८).... ...		२५७
७६ परमार्थना ज्ञान सामर्थ्य सुविहित साधुने वांदवा देता नथी.	२२८	२५८
७७ सुविहित मुनि पासे वंदन करावनार पासत्थाने थतुं फळ.	२२९	२५८
७८ श्रावक केवा होय? तेनी करणी—तेनुं कर्तव्य विगेरे.	२३०–२४६	२५९
७९ [illegible] .	२४७	२६३
८० [illegible] कथा. (५९)		२६३
८१ [illegible] ..	२४८	२६६
८२ [illegible] कथा. (६०) ...		२६६

विषय.	गाथा	पृष्ठ
१८३ कर्मना वशवर्त्तिपणाथी जीव जाणतो छतो मोह पामे छे.	२४९–२५०	२७०
१८४ अंते थता अशुभ शुभ परीणामनुं फल तादृश मळे छे....	२५१–२५२	२७१
१८५ कंडरीक ने पुंडरीकनी कथा. (६१)		२७२
१८६ चारीत्रने वीराधनार मुनी प्रमादने तजी शकतो नथी....	२५३–२५४	२७३
१८७ चक्रवर्ती छ खंडनी ऋद्धी तजी शके छे पण शीथील थयेल शीथीलपणुं तजी शकतो नथी.	२५५	२७४
१८८ मनुष्यभवमां सुखलंपटने नरकमां थयेल पश्चात्ताप	२५६	२७४
१८९ शशीप्रभ राजानी कथा. (६२)		२७४
१९० सुरप्रभदेवे शशिप्रभने आपेल उत्तर ने तेनुं रहस्य.	२५७–२५८	२७५
१९१ संयम योगमां करेला प्रमादनुं फळ.	२५९	२७६
१९२ शोक करवा लायक कया जीवो छे ?	२६०	२७६
१९३ उत्तम उपदेश.	२६१–२६४	२७६
१९४ ज्ञानदाता गुरुने शुं अदेय छे ?...	२६५	२७७
१९५ शिवभक्त पुलिंद (भिल्ल)नी कथा. (६३) ...		२७८
१९६ विद्याना इच्छके गुरुनो विनय अवश्य करवो. ...	२६६	२७९
१९७ श्रेणिकने विद्या आपनार चंडालनी कथा. (६४)		२७९
१९८ विद्यागुरुनो अपलाप करनार नष्टविद्य थाय छे.	२६७	२८१
१९९ त्रिदंडीनी कथा. (६५)		२८३
२०० एक जीवने बोध पमाडनार सर्व जीवलोकमां अमारि पटह वगडावे छे.	२६८	२८४
२०१ समकित दाता गुरुनो प्रत्युपकार थइ शकतो नथी.	२६९	२८४
२०२ समकितनुं फळ.	२७०–२७२	२८४
२०३ प्रमादथी समकित मलिन थाय छे.	२७३	२८५
२०४ सो वर्षना आयुष्य साथे पुण्य पापथी थता बंधनी वहेंचण.	२७४–२७६	२८५
२०५ धर्ममां प्रमादीने श्रेष्ठ सुखनी प्राप्ति न होय....	२७७	२८५
२०६ देवताना सुख मुखे कही शकाय तेम नथी.	२७८	२८६
२०७ नरक गतिनां दुःख....	२७९–२८०	२८७
२०८ तिर्यंच गतिनां दुःख.	२८१	२८७
२०९ मनुष्य गतिनां दुःख.	२८२–२८४	२८८
२१० देव गतिनां दुःख.	२८५–२८७	२८८
२११ स्वामीपणुं स्वाधीन छतां दासपणुं कोण स्वीकारे ?....	२८८	२८९

विषय.	गाथा.	पृष्ठ.
१२ आसन्नसिद्धि जीवोनुं लक्षण....	२८९–२९०	२९०
१३ धर्म करवानी आवश्यकता.	२९१–२९३	२९०
१४ यतनानी आवश्यकता—तेनुं निरूपण—दशद्वार.	२९४–२९५	२९१
१५ पांच समितिनुं पालन केवी रीते थाय ? (प्रथम द्वार).	२९६–३००	२९२
१६ क्रोधादि दश क्रमरूप छे. (द्वितीय द्वार)....	३०१	२९३
१७ क्रोधना पर्यायो	३०२–३०३	२९४
१८ मानना पर्यायो.	३०४–३०५	२९४
१९ मायाना पर्यायो.	३०६–३०७	२९५
२० लोभना पर्यायो.	३०८–३०९	२९५
२१ कषायो तजवा संबंधी उपदेश.....	३१०–३१५	२९६
२२ हास्यादि षट्कने तजवा संबंधी उपदेश.	३१६–३२१	२९८
२३ कर्मने पराधीन थयेल जीव अकार्य करे छे.... ...	३२२	३००
२४ अनुभव रहित बहुश्रुत मोक्षमार्गनो आराधक थतो नथी.	३२३	३००
२५ त्रणे गारव तजवा विषे. (३)....	३२४–३२६	३००
२६ इंद्रिय द्वार. (४)	३२७–३२९	३०१
२७ मद त्याज्य द्वार. (५)	३३०–३३३	३०२
२८ ब्रह्मचर्य गुप्ति द्वार. (६)	३३४–३३७	३०३
२९ स्वाध्याय द्वार. (७)	३३८–३४०	३०४
३० विनय द्वार. (८)...	३४१–३४२	३०५
३१ तप द्वार. (९)	३४३–३४४	३०६
३२ मुनिए रोगोत्पत्ति समये शुं करवुं ? वैयावृत्त्य कोनी कोनी करवी ? (शक्ति न गोपववा संबंधी १० मुं द्वार.)	३४५–३४८	३०६
३३ लिंगधारीनुं स्वरूप विगेरे.	३४९–३५३	३०७
३४ पार्श्वस्थादिकनां लक्षणो.	३५४–३८२	३०९
३५ आ काले कोई साधुओ ज नथी ? एवी शंकानुं निराकरण	३८३–३८४	३१७
३६ मायावीनुं स्वरूप—तेनुं परिणाम.	३८५–३८६	३१७
३७ कपटक्षपक मरुकनी कथा. (६६)		३१८
३८ विराधकनुं स्वरूप	३८७	३१९
३९ आराधकनुं स्वरूप	३८८	३२०
४० एक स्थाने केवा मुनि रहे ?	३८९–३९१	३२०
४१ सर्वांगमां ए सर्व निषेध जिन वचनमां नथी	३९२	३२१
४२ धर्ममां मायानो अवकाश ज नथी.	३९३–३९४	३२१

विषय	गाथा.	पृष्ठ.
२४३ [illegible]मनो विचार करनारे वस्तुने ओळखवी.	३९५	३२२
२४४ चारित्राचारना बे प्रकार	३९६–३९७	३२[illegible]
२४५ अगीतार्थ गच्छने प्रवर्तावनो अनंत संसारी थाय.	३९८	३२[illegible]
२४६ [illegible] पुछेलुं तेनुं कारण	३९९	३२[illegible]
२४७ [illegible]नो उत्तर–अगीतार्थ आराधक थइ शकतो नथी	४००–४११	३२[illegible]
२४८ [illegible](अल्पश्रुत) पण मोक्षमार्गमां यतना करी शकतो नथी	४१२–४१८	३२[illegible]
२४९ [illegible] [illegible] प्राप्त थाय छे	४१९	३२[illegible]
२५० [illegible] [illegible] बराबर प्रवर्ती शके छे.	४२०	३२[illegible]
२५१ [illegible] [illegible] आवश्यकता.	४२१–४२६	३२[illegible]
२५२ [illegible] [illegible] उपदेश	४२७–४३५	३३[illegible]
२५३ [illegible]	४३६	३३३
२५४ [illegible] छे?	४३७	३३३
२५५ [illegible] [illegible] नथी ..	४३८	३३३
२५६ [illegible] [illegible] श्रेष्ठ [illegible] छे	४३९	३३४
[illegible]		३३४
[illegible]	४४०–४४४	३४०
[illegible]	[illegible]	३४[illegible]
[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

विषय.	गाथा.	पृष्ठ.
२७२ केटलाएक नटनी जेम मात्र उपदेश करनारज होयछे....	४७३–४७४	३५३
२७३ आत्महित करनारना विचार.	४७५	३५४
२७४ प्रमादीनुं संयम केवुं होय ?	४७६–४७७	३५४
२७५ पापीना जीवितने धिक्कार छे.	४७८	३५५
२७६ धर्मयुक्त व्यक्तिन थयेला दिवसोज लेखे छे. ...	४७९–४८०	३५५
२७७ अनेक युक्ति दृष्टांतोथी उपदेश आप्या छतां प्रतिबोध न पामे तो तेनी भवितव्यताज एवी समजवी. ...	४८१	३५५
२७८ शिथिल थया पछी उपगम अशक्य छे माटे शिथिल थवुं नहीं.	४८२	३५६
२७९ योगने उन्मार्गे प्रवर्तवा देवा नहीं.	४८३–४८४	३५६
२८० कूर्म (काचबा) नी कथा (७०)....		३५६
२८१ साधु केवी भाषा न बोले.	४८५	३५७
२८२ मनने स्थिर करवुं.	४८६	३५८
२८३ भारेकर्मीनां लक्षण	४८७–४८९	३५८
२८४ जाणतां छतां प्रमादी थाय तेने कोण उपदेश आपे ?...	४९०	३५९
२८५ भगवंते बे मार्गज कहेला छे.	४९१	३५९
२८६ भावपूजाथी भ्रष्ट थाय तेणे द्रव्य पूजामां उद्यमी थवुं...	४९२–४९३	३५९
२८७ द्रव्यपूजाथी भावपूजा श्रेष्ठ छे.	४९४	३६०
२८८ [illegible] दृष्टांत ने उपनय.... ...	४९५–५००	३६०
२८९ चारित्र तजनारे पण भूमिनो त्याग करवो.... ...	५०१	३६२
२९० साधुपणुं धारी शकाय नहीं तो श्रावक थइ जवुं पण वेषने लजवावो नहीं.	५०२	३६२
२९१ [illegible] त्याग करीने [illegible] पालवुं...	५०३–५०४	३६२
२९२ जिनेश्वरनी आज्ञानो भंग न करवो.	५०५	३६३
२९३ चारित्रथी भ्रष्ट थया छतां [illegible] आजीविका चलावे छे ते अनंत संसारी थाय छे.	५०६	३६३
२९४ [illegible] मात्र [illegible] नहीं.	५०७–५०८	३६३
२९५ [illegible] करे छे ते मूर्ख छे.	५०९	३६४
२९६ [illegible] करीने [illegible] थवुं. ...	५१०	३६४
२९७ मुनिवेष मात्र [illegible] नथी ?	५११	३६४
२९८ [illegible] तेवो [illegible] होय छे.	५१२	३६५

विषय.	गाथा.	पृष्ठ.
२९९ कोण कोण शुद्ध थाय छे.	५१३	३६५
३०० संविज्ञ पक्षीनां लक्षण....	५१४–५१६	३६५
३०१ पोते शिथिल छतां बीजाने दीक्षा आपे छे ते शुं करे छे?	५१७	३६६
३०२ उन्मूत्र प्ररूपक शुं करे छे ?	५१८	३६६
३०३ त्रण प्रकारना मोक्षमार्ग ने त्रण प्रकारना संसारमार्ग....	५१९–५२०	३६६
३०४ द्रव्यलिंगथी अर्थसिद्धि थती नथी.	५२१	३६७
३०५ वेशना आग्रहीए संविज्ञ पक्षी थवुं....	५२२	३६७
३०६ [illegible] पण मुनिए कर्त्तव्य अवश्य करवुं	५२३	३६७
३०७ संविज्ञ [illegible] दुर्लभपणुं.	५२४	३६८
३०८ [illegible] जिनवचनथी थाय छे.	५२५	३६८
३०९ [illegible] लाभ.	५२६	३६८
३१० [illegible] लाभ तोटानो विचार करे.	५२७	३६९
३११ [illegible] प्रमाण छे. . . .	५२८	३६९
३१२ [illegible] कोण पामे छे?	५२९–५३३	३६९
३१३ [illegible] पण ते भवमां तरथी शतो नथी [illegible]	५३४	३७१
[illegible] नथी.	५३५	३७१
[illegible] गुण. ...	५३६	३७१
[illegible]	५३७	३७१
[illegible]	५३८	३७२

श्री आत्मरक्षा नवकारमंत्र.

ॐ परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकं। आत्मरक्षाकरं वज्र-पंजराभं स्मराम्यहं ॥ ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितं। ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपटांबरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी। ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयो र्दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे। एसो पंचनमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥ ४ ॥ सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः। मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगारखातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं। वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी। परमेष्ठिपदोद्भूता। कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं-कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा। तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन. ॥ ८ ॥

श्री नवकार मंत्रनो छंद.

॥ दूहा ॥

वंछित पूरे विविधपरे, श्री जिनशासनसार; निश्चे श्री नवकार नित्य, जपतां जय-जयकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर अधिकफल, नवपद नवे निधान, वीतराग स्वयं मुख वदे, पंचपरमेष्ठि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एकचित्त, समर्यां संपत्ति थाय; संचित सागर सातनां, पातक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकलमंत्रशिर मुकुटमणि, सद्गुरुभाषितसार; सो भवियां मनशुद्धशुं, नित्य जपीए नवकार ॥ ४ ॥ छंद—नवकार थकी श्रीपाल नरेसर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध; स्मशान विषे शिवनाम कुमरने, सोवनपुरिसो सिद्ध; नवलाख जपंता नरकनिवारे, पामे भवनो पार; सो भवियां भक्ते चोखे चित्ते, नित्य जपीए नव-कार ॥ ५ ॥ बांधी वडशाखा शिंके बेसी, हेठळ कुंड हुताश; तस्करने मंत्रसमर्प्यो, उड्यो ते आकाश; विधि रीते जपतां विषधर विष टाळे, ढाळे अमृतधार सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण रायमहाबल, व्यंतरदुष्टविरोध; जेणे नवकारे हत्या टाळी, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध; नवलाख जपंतां थाये जिनवर, इस्यो छे अधिकार सो० ॥ ७ ॥ पल्लीपति शिख्यो मुनिवर पासे, महामंत्र मन शुद्ध; परभव ते राजसिंह पृथ्वीपति, पाम्यो परि-गल रिद्ध, ए मंत्रथकी अमरापुर पहोंतो, चारुदत्त सुविचार सो० ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधतो, पंचाग्नि परजाळे; दीठो श्री पार्श्वकुमारे पन्नग, अधबळतो ते टाळे, संभळाव्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार, सो० ॥ ९ ॥ मन शुद्धे जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रियसंयोग; इणे ध्यान कष्ट टळ्युं उंबरनो, रक्तपित्तनो रोग; निश्चे शुं जपतां नवनिधि थाये, धर्मतणो आधार, सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण भुजं-गम घाल्यो, घरणी करवा घात; परमेष्ठि प्रभावे हार फूलनो, वसुधा मांहि विख्यात. एक.

लावतिए (कलावतिए) पिंगलकीधो, पापतणोपरिहार, सो० ॥ ११ ॥ गयणां गणजाति राखीग्रहीने, पाडी बाण महार; पदपंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ कुंता नार; ए मंत्र अमुल्खमहिमामंदिर, भवदुःख भंजणहार. सो० ॥ १२ ॥ कंबल संबले कादव काढया, शकट पांचशें मान; दीधे नवकारे गया देवलोके, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्र थकी संपत्ति वसुधा लही, विलसे जैनविहार. सो० ॥ १३ ॥ आगे चोवीशी हुइ अनंती, होशेवार अनंत; नवकारतणी कोइ आदि न जाणे, एम भाखे अरिहंत, पूरव दिशि चार आदि प्रपत्ने, समर्यो संपत्ति सार. सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे. जे कृतकर्म कठोर; पुंडरगिरि उपर प्रत्यक्ष पेखो, मणिधर ने एक मोर; सद्गुरु सन्मुख विधिये समरंता. सफळ जनम संसार. सो० ॥ १५ ॥ शुलिकारोपण तस्कर [illegible]. [illegible] परसिद्ध; तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी रिद्धि; शे-[illegible] [illegible] विघ्न निवार्यां, सुरे करी मनोहार. सो० ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्ठि ज्ञानज [illegible], [illegible] [illegible]; पंच [illegible] महाव्रतपंचक, पंचसमिति समकित; पंचप्रमाद [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] पंचाचार. सो० ॥ १७ ॥ कलश–छप्पय ॥ नित्य जपीये [illegible], [illegible] [illegible]; सिद्धमंत्र ए शाश्वतो, एम जंपे श्री जगनायक; श्री [illegible] भणीजे; श्री उदयसागर सुराणु, पंच परमेष्ठिगुणी जे; [illegible] कहे; एक चित्ते आराधतां, विविधरीद्धि [illegible]

श्री धर्मदासगणि विरचित.

श्री उपदेशमाळा

भाषांतर.

श्रेय करवावाळा, इच्छित वस्तुने आपवावाळा अने जेणे कर्मसमूहने जीत्यो छे एवा श्रीवीरभगवानने नमस्कार करीने उपदेशमाळा नामना ग्रंथमां रहेला पदोना अर्थमात्रने स्फुट करवा माटे किंचित मात्र तेनुं विवरण करुं छुं. जोके आ ग्रंथनी अनेक टीकाओ छे तोपण जगतने विषे चंद्रमा प्रकाशमान छतां शुं घरने विषे दीवो करवामां आवतो नथी ? आवे छे. तेथी तेम हुं आ ग्रंथनी अल्पिय एवी टीका करुं छुं. श्री धर्मदासगणीए पोताना पुत्रने बोध आपवा अर्थे अनेक जनोने उपकार करनारो तथा भव्यजीवोना कल्याण माटे आ सुखे बोध थाय तेवो ग्रंथ रच्यो छे. प्रारंभमां धर्मदासगणिना पुत्र 'रणसिंह'नुं, धर्मने हित करनारुं शुभ चरित्र कहुं छुं.

जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां समृद्धिवान 'विजयपुर' नामनुं नगर छे. त्यां 'विजयसेन' नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेने 'अजया' ने 'विजया' नामनी बे राणीओ हती. तेमां विजया राणी नृपने अति वल्लभ हती. ते नृपतिसाथे विषय सुखनो आनंद लेतां सती गर्भवंती थई. तेने गर्भवंती थयेली जोइने तेनी शोक्य अजयाने विचार थयो के-'मारे पुत्र नथी. तेथी जो विजयाने पुत्र थशे तो ते राज्याधिपति थशे.' एवुं विचारी तेणे द्रव्यथी 'प्रसूतिकारिकाने पोतानी कुक्षल करी आपीने कह्युं के-'ज्यारे विजयाने पुत्र थाय त्यारे कोइ मृत पुत्रने लावीने तेने बताववो अने ते पुत्र मने आपवो.' ए प्रमाणे तेणे प्रसूतिकारिकानी साथे विचारबंध कर्यो. त्यार पछी विजया राणीने पूर्ण मासे पुत्र जन्म्यो. ते जन्म्या पछी सुयाणीए कोइ मृत बाळकने लावीने तेने बताव्यो, अने तेना पुत्रने शोक्य अजयाने स्वाधीन कर्यो. तेणे पण दासीने सोंपीने कह्युं के-'बाळकने वनने विषे कोइ अंध कूवामां नांखी आव.' दासी ते बाळकने लइ वनमां गइ अने कूवा समीप आवी. पछी तेने विचार थयो के-आने कूवामां नाखीश तो [illegible]

[illegible]

१ सुयाणी.

मूकी दइने ते पाछी आवी, अने अजया राणीने जणाव्युं के 'में ते बाळकने कूवामां नांखी दीधो.' पोतानी शोकना पुत्रने मारी नंखाववाथी अजयाने घणो हर्ष थयो.

ते अवसरे सुंदर नामनो एक कौटुंबिक घास लेवाने माटे ते वनमां आव्यो त्यां तेने पेला रोता बाळकने जोइने दया आवी, तेथी घणा हर्षथी घरे लावी ते बाळक पोतानी प्रियाने आपीने कह्युं के–'हे सुंदर लोचनवाळी स्त्री! वनदेवताए आपणने आ मनोहर बाळक अर्पण करेल छे, तेथी तारे तेनुं पुत्रवत् रक्षण करवुं ने पालणपोषण करवुं.' ते पण तेनुं सम्यक प्रकारे पालणपोषण करवा लागी अने रणने विषे मालुम पडवाथी तेणे ते बाळकनुं नाम 'रणसिंह' पाड्युं. ते दिनप्रतिदिन बीजना चंद्रनी जेम वृद्धि पामवा लाग्यो.

हवे केटलाक दिवस पछी कोइए विजयसेन राजाने तेना पुत्रने मारी नंखाववानुं सर्व वृत्तांत कह्युं; तेथी तेने घणुं दुःख उत्पन्न थयुं. ते विचारवा लाग्यो के–'जेणे मारा पुत्ररत्नने मारी नंखाव्यो ते दुष्ट राणीने धिक्कार छे! आ संसारस्वरूपने पण धिक्कार छे के जेनी अंदर रागद्वेषथी पराभव पामेला प्राणीओ स्वार्थवृत्तिने वश थइने आवां दुष्ट कर्म आचरे छे, तेथी एवा संसारमां रहेवुं तेज अघटित छे. आ लक्ष्मी चलित छे, प्राण पण चळ छे, आ गृहवास पण अस्थिर ने पाप रूप छे; तेथी प्रमाद छोडीने धर्मने विषे उद्यम करवो जोइए. कह्युं छे के 'संपदा जळना मोजाना जेवी चपळ छे, यौवन त्रण चार दिवसनुं छे, आयुष्य शरदऋतुना वादळाना जेवुं चंचळ छे, तो धनथी शुं काम छे? अनिंद्य एवो धर्मज करो.' वळी 'एवी कोइ कळा नथी, एवुं कोइ औषध नथी, अने एवुं कोइ विज्ञान नथी के जेथी [illegible] मृत्युथी आ कायानुं रक्षण करी शकाय!' आ प्रमाणे वैराग्यवासित थयेला विजयसेन राजाए पोतानी प्रिया विजया तथा 'सुजय' नामना [illegible] पोताना कोइ स्वजनने राज्य सोंपीने वीरभगवाननी पासे चारित्र [illegible] अनुक्रमे विजयसेन नामना नवदीक्षित [illegible] महाज्ञानी थया. तेमनुं 'धर्मदासगणि' एवुं नाम [illegible], अने तेना नाना सुजयनुं नाम 'जिनदासगणि' राखवामां आव्युं. [illegible] बहु साधुओथी परवरेला तेओ पृथ्वीने विषे [illegible] विहार करवा लाग्या.

[illegible] बाल्यावस्थामां पण राजक्रीडा करतो [illegible] अने [illegible] तेना [illegible] कार्यो करवा लाग्यो [illegible] श्री पार्श्वनाथजीनुं चैत्य आ [illegible]

बेठेलुं छे. त्यां विजयपुरना पण लोको आवीने हमेशां श्रद्धा पूर्वक पूजा स्नान आदि करे छे अने तेओनां मनोवांछित ते सर्व पूरा पाडे छे.

एक वखत कौतुक जोवाने अर्थे रणसिंह पण त्यां गयो. त्यां प्रतिमाना दर्शन करतो उभो हतो तेवामां चारणऋषिओ त्यां वंदना करवाने आव्या. रणसिंह पण तेओने वंदन करीने तेमनी पासे बेठो. मुनिए पण 'आ योग्य छे' एवुं जाणीने तेने धर्मनो उपदेश दीधो. ते आ प्रमाणे—

" आ संसारमां प्रथम तो मनुष्योने बाल्यपणामां स्त्रीनी कुक्षिने विषे दुःख छे, त्यारपछी बाल्यावस्थामां पण शरीर मळथी खरडायेलुं रहे छे. तेमज स्त्रीनुं स्तनपान करवुं पडे छे. ते पण दुःख छे. तरुणवयमां विरहथी उत्पन्न थयेलुं दुःख भोगववुं पडे छे अने वृद्धावस्था तो वदन कुंचितरूप छे; तेथी हे मनुष्यो! संसारमां थोडुं पण सुख होय तो कहो." आ प्रमाणे सांभळीने रणसिंहे कह्युं के—'आपे कह्युं ते सत्य छे.' साधुए रणसिंहने धर्म उपर रुचिवाळो जाणीने पूछ्युं के—'हे वत्स! तुं हमेशां आ प्रासादने विषे पूजा करवा आवे छे?' त्यारे तेणे जवाब आप्यो के—'हुं अहीं आवीने रोज पूजा करुं एवुं मारुं भाग्य क्यांथी?' साधुए कह्युं के—"जिनपूजानुं मोटुं फळ छे. कह्युं छे के—' सोगणुं प्रभुनी प्रतिमाने प्रमार्जन करवामां पुण्य छे, हजारगणुं विलेपन करवामां, लाखगणुं पुष्पनी माळा चडाववाथी पुण्य छे अने गीत वाजित्रादिनुं अनंत गणुं पुण्य छे.' तेथी जो हमेशां तुं पूजा करवाने असमर्थ हो तो देवदर्शन कर्या पछी भोजन लेवुं एवो अभिग्रह कर. एवा अभिग्रहथी पण तुं पुण्यनुं भाजन थईश." आ प्रमाणे सांभळीने रणसिंहे ते प्रमाणे अभिग्रह लीधो, अने चारणऋषिओ आकाशने विषे उडी गया.

हवे रणसिंह हमेशां ज्यारे क्षेत्रने विषे पोताने माटे भोजन आवे छे त्यारे हळ छोडीने जयवंतादि नैवेद्य लईने श्री पार्श्वनाथ प्रभुनां दर्शन करवा जाय छे अने पछी भोजन ले छे. ए प्रमाणे अभिग्रह पाळतां तेना घणा दिवसो निर्गमन थया. एक दिवस शासनदेवता तेनी परीक्षा करवाने माटे सिंहनुं रूप करीने देवालयना द्वारनी आडो बेठो. ते अवसरे रणसिंह कुमार पण नैवेद्य ग्रहण करीने जिनदर्शन करवाने माटे आव्यो; त्यां सिंहने जोईने ते विचार करवा लाग्यो के 'प्राण जाय तो पण नियमनो भंग तो करवो नहि. वळी जो आ सिंह छे तो हुं पण रणसिंह छुं. ए मने शुं करनार छे?' ए प्रमाणे धैर्यपणाथी तेणे सिंहने हाक मारी के 'हे वनराज! मार्ग आप.' तेनुं आवुं साहस जोईने, ते सिंह अदृश्य थयो. पछी जिनदर्शन करीने, रणसिंहे पाछा आवीने भोजन कर्युं. एकदा घणा दिवस सुधी वृष्टि थई

थइ, तेथी नदीमां पूर आववाने लीधे त्रण दिवस सुधी घरेथी भात पण आव्यो नहि. चोथे दिवसे भात आव्यो, एटले जिनगृहे जइ नैवेद्य धरी जिनदर्शन करीने पोताना क्षेत्रे आवी विचार करवा लाग्यो के 'जो कोइ अतिथि आवे, तो तेने भावपूर्वक कांइक आपीने पछी पारणु करुं.' एवो विचार करे छे, तेवामां बे मुनिओ भाग्यवशात् त्यां आवी चड्या. ते तेओने पगे लाग्यो अने शुद्ध अन्न वहोराव्युं. तेना मनमां घणो आनंद थयो, तेमज पोताने धन्य मानवा लाग्यो के 'अहो! आवे अवसरे मने साधुनां दर्शन थयां अने तेमनी भक्ति पण थइ.' तेना माहात्म्यथी चिंतामणि यक्ष प्रत्यक्ष थयो ने बोल्यो के–'हे वत्स! तारा [illegible] हुं संतुष्ट थयो छुं माटे तुं वरदान माग.' रणसिंहे कह्युं के–'हे स्वामी! आपनां दर्शन थयां तेथी मने तो नव निधि प्राप्त थइ छे, जेथी मने कांइ [illegible] नथी.' त्यारे यक्षे कह्युं के–'देवदर्शन मिथ्या थतुं नथी, तेथी कांइक तो माग.' त्यारे तेणे कह्युं के–'मने राज्य आपो.' यक्षे कह्युं के–" [illegible] दिवसे [illegible] राज्यप्राप्ति थशे; पण तारे कनकपुर नगरने [illegible] कनकमालानी पुत्री कनकवतीनो स्वयंवर थशे त्यां [illegible] जोजे. वळी [illegible] पछी जन्म पर्यंत [illegible] स्मरण करजे." आ प्रमाणे कही [illegible] जोशे, तेना उपर [illegible] [illegible] रणसिंह [illegible] [illegible] घणी [illegible] पछी [illegible]

थीज मारा कुळनी परीक्षा थशे.' ए प्रमाणे सांभळीने सर्वे युद्ध करवाने सज्ज थया. रणसिंह पण हर्ष उपजीने सामे धस्यो. परस्पर युद्ध थये सते देवप्रसाद-थकी हळना प्रहारथी सर्व राजाओ जर्जरीभूत थइने नासी गया. ते जोइने चम-त्कार पामेला कनकशेखरे रणसिंह कुमारने विज्ञप्ति करी के–' हे स्वामिन् ! आपे पोतानुं आश्चर्य बताव्युं छे तो हवे तमारुं रूप पण प्रकाशित करो ' ते वखते यक्षे प्रत्यक्ष थइने रणसिंह कुमारनुं सर्व चरित्र कही संभळाव्युं. ते सांभळीने कनकशेखर अति हर्षित थयो अने घणी धामधूमथी पोतानी पुत्रीनो विवाह कर्यो. बीजा सर्व राजा-ओनुं पण पहेरामणी आपवावडे सन्मान कर्युं. पछी तेओ पोतपोताने देश गया.

कनकशेखरे एक देशनुं राज्य जमाइने अर्पण कर्युं. एटले त्यां रहीने ते कनकवतीनी साथे विषयसुखनो अनुभव करवा लाग्यो. पछी सुंदर देशने पो-ताथी तेने योग्य राज्यकार्यमां अधिकारी कर्यो.

ए अवसरे सोपा नामनी मोटी नगरीने विषे, पुरुषोत्तम नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने रत्नवती नामनी पुत्री हती. ते कनकशेखर राजानी बेननी पुत्री (भाणेज) थती हती. तेणे कनकवतीना पाणिग्रहणना सर्व वृत्तांत जाण्यो. त्यारथी ते रणसिंह कुमारनी उपर अनुरागवाळी थइ, अने तेणे रणसिंह विना अन्य वर नहि करवानो नियम कर्यो. ए प्रमाणे पोतानी पुत्रीनो इरादो जाणीने पुरुषोत्तम राजाए पोताना प्रधानपुरुषोने रणसिंह कुमारने बोलाववा मोकल्या. त्यां जइने तेओए आमंत्रण कर्युं, एटले रणसिंहे उत्तर आप्यो के 'ए वात कनकशेखर जाणे, हुं कांइ जाणतो नथी.' एटले प्रधान पुरुषोए कनकशेखरने विदित कर्युं; त्यारे तेणे विचार्युं के 'मारी भाणेजनो विवाह करी आपवो ए मने उचित छे.' ए प्रमाणे विचारी रणसिंह कुमारने पोतापासे [illegible] के ' तमे रत्नवतीना पाणिग्रहणार्थे जाओ.' तेणे ते कबूल कर्युं. पछी मोटा परिवार साथे रत्नवतीने परणवा माटे जतां मार्गमां पाडलीपुर नगरनी नजीकना उद्यानमां [illegible] तेना थाने ते आव्यो. [illegible] रात्रे ते त्यांज मुकाम कर्यो. त्यां तेणे [illegible] एटले ते [illegible] विचार करवा लाग्यो के 'मारी [illegible] थशे.' ते समये पाडलीपुर [illegible] राजानी [illegible] कमलिनीनी [illegible] [illegible] नामनी पुत्री [illegible] कुमारनो [illegible] [illegible] सहित ते [illegible] त्यां आवी. त्यां रणसिंह कुमारने जोइने ते [illegible] थइ गइ. कुमार पण तेने जोइने [illegible] [illegible] [illegible] विचार, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्वामिन् ! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],

[illegible]

[illegible] अहीं कांइ काम छे, नहि [illegible]

ए प्रमाणे कुमारनो उत्तर सांभळीने तेओ मोतीपुरीना पुरपालक राजा पासे गया अने कुमार [illegible] कर्युं. हवे [illegible] कुमार तो कमलवतीना रूपथी मोहित थइने त्यांज रहेलो छे. ते [illegible] एक भीम राजानो पुत्र पण कनकसेन राजानी सेवा करे छे, ते कमलवतीनुं रूप जोइने तेना पर मोहित थयो छे; परंतु कमलवती तेने जरा पण इच्छती नथी. एक वखत कमलवतीने यक्षपूजाने अर्थे गयेली जाणीने ते भीमपुत्र तेनी पछवाडे गयो. तेणे धार्युं के 'ज्यारे ते यक्षप्रासादमांथी वहार नीकळशे, त्यारे हुं मारा मननी सर्व अभिलाषा तेने जणावीश.' ए प्रमाणे विचार करतो सतो ते द्वारमांज उभो रह्यो. कमलवतीए पण तेने जोयो, एटले तेणे सुमंगला दासीने कह्युं के–'आ पुरुष जे द्वारने विषे उभो छे ते जो अंदर आवे तो तेने तारे रोकवो.' ए प्रमाणे कहीने ते मंदिरनी अंदर गइ अने दासीने द्वार पासे उभी राखी. पछी एकांते जइ एक जडी कान उपर बांधवाथी पुरुषरूपे थइने ते प्रासादना द्वार पासे आवी. त्यारे कुमारे तेने पूछ्युं के–'हे देवपूजक ! कमलवती हजु केम वहार आवी नहि ?' त्यारे तेणे कह्युं के–'में तो आ दासीने एकलीनेज प्रासादने विषे जोइ छे, बीजी कोइ पण स्त्री अंदर नथी.' ए प्रमाणे कहीने ते पोताने घेर आवी. पछी कर्ण उपरथी जटिकाने दूर करी एटले मूळरूपे थइ गइ. पाछळ भीमपुत्रे प्रासादनी अंदर घणी तपास करी, पण कमलवतीने नहि जोवाथी ते खिन्न थइने पोताने स्थाने गयो. सुमंगला दासी पण घेर आवी. त्यां कमलवतीने तेणे पूछ्युं के–'हे स्वामिनी ! तमे अहीं केवी रीते आव्यां ? में तो वहार नीकळतां तो जोया नहि.' त्यारे तेणे जटिकानुं सर्व स्वरूप कही बताव्युं. ते वखते दासीए कह्युं के–'हे स्वामिनी ! एवी जटिका तमने क्यांथी मळी ?' कमलवतीए कह्युं के–"सांभळ, पूर्वे हुं एक वखत यक्षने मंदिरे गइ हती. ते

वनने त्यां एक विद्याधर ने विद्याधरीनुं जोडुं आव्युं हतुं. मने जोइने विद्याधरी मनमां चिन्तवरा लागी के 'जो आ अद्भुत रूपवाळी स्त्रीने मारो पति जोशे तो ते तेना रूपथी मोहित थइ जशे.' एवुं धारीने हुं न जाणुं तेम तेणे मारा कर्ण उपर एक जटिका बांधी दीधी. हुं यक्षनी पूजा करवाने माटे गइ त्यां मारा पुरुषवेषने जोइने हुं विस्मित थइ, अने सर्व शरीरने अवलोकतां एक जटिका कर्णउपर जोवामां आवी. ते जटिका दूर करी एटले हुं मूळरूपमां आवी. त्यारपछी ते जटिकाने आदरथी ग्रहण करीने में मारी पासे राखी छे. तेना प्रभावथी पुरुषवेष धारण करीने हुं आज वसंतपुरमांथी बहार नीकळी हती.' ए प्रमाणे कमलवतीए पोतानी दासीने जटिकानुं स्वरूप निवेदन कर्युं.

हवे सोम राजाना पुत्रे तेने माटे घणा उपायो कर्या. परंतु एक पण उपाय कामे लाग्यो नहि. त्यारे तेणे कमलवतीनी माताने पोतानो अभिप्राय जणाव्यो. तेणे विचार कर्यो के 'आ प्रधान राजपुत्र छे तो आनी साथे मारी पुत्रीना लग्न थाय तो ते युक्त छे.' ए प्रमाणे विचारीने तेणे पोताना स्वामीने ते हकीकत निवेदन करी. तेणे पण ते कबूल कर्युं अने बीजे दिवसेज लग्न लीधां. त्यारे कमलवतीए ते वात जाणी, त्यारे तेने घणुं दुःख उत्पन्न थयुं: तेथी ते खाती नथी, सूती पण नथी, बोलती नथी अने हसती पण नथी. ते मनमां विचार करे छे के 'ते यक्षनी पासेज जइने तेने उपालंभ दइने तेनोज आश्रय लइश, ते शिवाय मारो बीजो गति नथी.' आ प्रमाणे विचारीने रात्रिए गुप्त रीते नीकळी यक्षमंदिरमां आवीने तेने ओळंभो आपवा लागी के "हे यक्ष! तमारा जेवा मुख्य देवोनुं वचन अन्यथा थाय ए घटित गणाय नहि. कारणके सत्पुरुषोने आ एकज वाणी होय छे. कह्युं छे के 'सत्पुरुषोने एक, [illegible] प्रकाशने [illegible], अग्निने [illegible] [illegible], रावणने [illegible]. [illegible] अने [illegible] हृदयमां [illegible] होय छे.' [illegible] ए प्रमाणे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे." ए प्रमाणे कहीने [illegible] कुमारना [illegible] पासे [illegible] [illegible] बांधीने बोली के—"हे वनदेवताओ! [illegible] [illegible] [illegible] कुमारने [illegible] [illegible] [illegible] आ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कर्युं. [illegible] [illegible] आव्युं [illegible] नहि. [illegible] [illegible] [illegible] छे. तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]." ए प्रमाणे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible]

सहित त्यां सत्वर आव्यो. दासीए गळानो फांसो छेदी नांख्यो, एटले कमळवती बेशुद्ध अवस्थामां नीचे पडी. शीत पवन विगेरेना उपचारथी ते स्वस्थ थइ, त्यारे कुमारे पूछ्युं के-'हे सुंदरी! तुं कोण छे? तें शा माटे गळे फांसो नाख्यो हतो? तें आ साहस शा हेतुए कर्युं?' सुमंगलाए उत्तर आप्यो के-"स्वामिन! शुं हजु आपे आने न ओळखी? तमारामां जेनुं चित्त लीन थयुं छे एवी आ राजपुत्री कमळवती छे. तेना पिताए तेने भीम नृपना पुत्रने आपवाथी ते आत्मघात करीने मरण पामवा इच्छती हती, तेनुं में गळाफांसो कापी नांखी रक्षण कर्युं छे." ते सांभळीने रणसिंह कुमार अति हर्षित थयो. त्यारपछी सुमित्र बोल्यो के-'हे मित्र! कयो क्षुधातुर माणस मिष्ट अन्न खावानुं मळते सते विलंब करे? ते माटे आ बाळानुं पाणिग्रहण करीने तेनो मन्मथसमुद्रमांथी उद्धार करो.' ए प्रमाणेनुं मित्रनुं कथन सांभळीने रणसिंहे तेज वखते तेनी साथे गांधर्व लग्न कर्युं. कमळवती पण मनमां अति आनंदित थइ. पछी कमळवती रात्रिए ज सुमित्रनी साथे पोताने घेर आवी. ते समये विवाहकार्यना अति हर्षमां पोताना कुटुंबपरिवारनुं मन व्यग्र छे, एवुं जाणीने कमळवतीए पोतानो स्त्रीवेष सुमित्रने पहेराव्यो, अने पोते पुरुषवेष धारण करीने रणसिंह कुमारनी समीपे गइ. कुमारे पण तेने स्नेहदृष्टिथी बे हातवडे गाढ आलिंगन करीने पोतानी पासे बेसाडी.

हवे लग्न वखते भीमपुत्र हाथी उपर स्वारी करीने मोटा आडंबरथी परणवा आव्यो; अने महोत्सव पूर्वक कमळवतीनो वेष जेणे धारण कर्यो छे एवा सुमित्रनी साथे पाणिग्रहणकरी तेने लइने पोतानेस्थाने आव्यो. पछी कामना आवेशथी कोमळ आलापपूर्वक नवीन वधूने पुनःपुनः बोलाववा लाग्यो; पण ते जरा पण बोलती नथी; मूक थइने बेसी रही छे. अति कामना आवेशमां तेणे हस्त वडे तेना अंगनो स्पर्श कर्यो. ते स्पर्शथी ते तो पुरुष छे एवुं जाणीने तेणे पूछ्युं के-'तुं कोण?' तेणे उत्तर आप्यो के-'हुं तारी वधू छुं.' कुमारे पूछ्युं के-'तुं वधू क्यां छे? तारा देहस्पर्शथी जणाय छे के तुं पुरुष छे.' त्यारे वधूनो वेष धारण करनार सुमित्रे जवाब आप्यो के-'हे प्राणनाथ! आ शुं लवो छो? शुं तमे तमारुं चेष्टित प्रकट करो छो? विवाहना उत्सवथी परणेली पत्नी मने चेटकविद्याथी पुरुषरुप करो छो; तेथी हुं हमणां मारा पिता पासे जइने कहीश के-हुं कुमारना प्रभावथी पुत्रीपणाने तजी दइने पुत्र थइ छुं.' ए प्रमाणे बोलवाथी 'आ केम बन्युं?' एम विचारतो भीमपुत्र व्यग्र चित्तवाळो थयो. ते अवसरे स्त्रीवेष धारण करनार सुमित्र रणसिंह कुमार पासे आव्यो, अने रात्रिनुं सर्व वृत्तांत कह्युं. ते कौतुक सांभळीने तेओ सर्व हस्ततालीं दइने हसवा लाग्या.

अहीं भीमपुत्र कनकसेन राजा पासे आवीने कह्युं के-'मारी साथे तमारी जे स्त्रीना लग्न थया ते तो पुत्र देखाय छे.' ते सांभळीने तेना सासु ससराए कह्युं के-'शुं आ तमारुं गांडा थइ गयो छे के आ प्रमाणे लवे छे? अथवा शुं कुनथी आवेशवान

थयो छे के जेणे आ प्रमाणे असंबंध बोले छे? पुत्र भवने विषे जीव मोक्ष नथी इहने पुत्रत्व प्राप्त थाय, एवा प्रकारनी प्रवृत्ति कोइ ठेकाणे थइ नथी अने थशे पण नहि. तेमज एवी वात सांभळवामां पण आवी नथी. तेम आ जमाइ पण असत्य शामाटे बोले? माटे ए पुरुषने कोइ भूत वळग्युं छे." ए प्रमाणे करी राजाए कमलवतीनी सर्वत्र शोध करावी, परंतु तेनो क्यांये कोइ ठेकाणे पत्तो मळ्यो नहि. त्यारे राजा अति शोकातुर थइ गयो. अने राणी पण पुत्रीना मोहने लीधे रुदन करती सती एवां वचनो बोलवा लागी के 'जे कोइ मारी पुत्रीने लावी आपशे तेनो अभिलाष हुं पूर्ण करीश.' तेथी केटलाक पण तैयार थया. परन्तु पत्तो न लागवाथी खिन्न थइने पाछा आव्या.

प्रातःकाळे एवो केटलेक कोइ पुरुषे कनकसेन राजा पासे आवीने कह्युं के–'हे स्वामिन! तें कमळवतीने अपहरणथी रणसिंह कुमारना प्रताप थकी प्राप्त करी होइ छे.' ते सांभळीने राजाथी तेना वेरी व्याकुळ थइ गयां हता एवो कनकसेन राजा चतुरंग सहित मोटुं लश्कर लइने त्यां आव्यो. अने रणसिंह कुमारनी साथे युद्ध आरंभ्युं. रणसिंह पण सिंहनी माफक युद्ध करवा लाग्यो. रणसिंह कुमारे थोडी वारमां सर्व सैन्यनी सहायथी भीमपुत्र सहित कनकसेन राजाने जीती लइने बंधने पकडी लीधा. ते वखते कमळवतीनी दासी कुंवरलाए आवीने सर्व वृत्तांत जणाव्यो. पछी कमळवती पण आवी अने पिताने प्रणाम करी बे हाथ जोडी उभी रही. कनकसेन राजाए भीमपुत्रनुं सर्व स्वरूप सांभळ्युं तेथी तेनाथी क्रोधायमान थइने तेनो घणो तिरस्कार कर्यो. कमळवतीए भीमपुत्रने पण छोडावी मूकाव्यो. कनकसेन राजा रणसिंह कुमारनुं युद्ध, धैर्य विगेरे जाणीने अति हर्षित थयो. पछी मोटा आडंबरथी कमळवतीनो विवाह कर्यो. केटलोक काळ सुधी त्यां रहीने पोतानी विगेरे आव्या. रणसिंह पण त्यां निरंतर सुख भोगवतो हतो. अनुक्रमे कमळवतीने पुत्रने पोताने देश पाछो आव्यो अने अनुक्रमे कमळवतीनी साथे निरंतर भोगसुख भोगवतो सुखमां काळ निर्गमन करवा लाग्यो.

[illegible]

ताने ए वात जणावी. तेणे पण 'तारी इच्छानुसार कर' एवी रजा आपी. पछी त्यां एक दुष्ट 'गंधमूषिका' नामनी कामण तथा वशीकरण विगेरेमां कुशळ एवी स्त्री रहेती हती. तेने बोलावीने रत्नवतीए कह्युं के–'हे माता! तु मारुं एक कार्य कर, ते कार्य ए छे के रणसिंह कुमार कमळवतीना उपर अति लब्ध थयेलो छे, तेथी एवुं करो के जेथी तेने कलंकथी दूषित मानीने कुमार घरमांथी काढी मूके.' ते सांभळीने परिव्राजिकाए ते वात कबूल करी अने बोली के–'एमां ते शुं मोटुं काम छे? ते हु अल्प काळमां करीश.' ए प्रमाणे वचन आपीने ते थोडा दिवसमां रणसिंह कुमार हता ते नगरमां आवी. त्यां ते अंतःपुरमां कनकवतीना मंदिरमां गइ, अने तेने रत्नवतीना कुशळ समाचार विगेरे निवेदन कर्युं. रत्नवतीना तरफथी समाचार लावेली होवाथी कनकवतीए तेने सन्मान आप्युं. पछी ते हमेशां अंतःपुरमां जवा लागी. अने कुतूहल विनोद विगेरे वार्ता करवा लागी. ते कमळवतीनी साथे विशेष वातचित करती हती, अने जेम कमलवतीनो तेना पर वधारे विश्वास उत्पन्न थाय तेम करती हती. दररोज जवा आववानुं करतां तेणे एक दिवस [illegible] विद्याथी कमळवतीना मंदिरने विषे परपुरुषने आवतो कुमारने बताव्यो. [illegible] तेना मनमां असर आव्युं नहि; ते तो विचार करवा लाग्यो के–'[illegible] शील [illegible] निष्कलंकित छे.' ए प्रमाणे घणीवार परपुरुषने आवतो [illegible] विचार्युं के 'शुं कमलवतो शीलथी स्खलित थइ हशे? के जेथी हुं [illegible] परपुरुषने आवतो जतो प्रत्यक्ष जोउं छुं.' तेणे कमलवतीने पूछ्युं के–'[illegible] मंदिरने विषे परपुरुषने आवतो जोउं छुं तेनुं शुं कारण?' [illegible] बोली के–'हे प्राणनाथ! हुं कांइ पण जाणती नथी. [illegible] ज्यारे [illegible] पूछो छो त्यारे ते मारां कर्मनो दोष छे. [illegible] छुं. माटे जो आपनी मारा उपर [illegible] 'अप्रमाण' वचन बोलवुं न घटे.' आ [illegible] विचार करवा लाग्यो के–'[illegible] जाणी नथी. [illegible] मारा मनने मोहित [illegible]? [illegible] अथवा [illegible] विचार करवाथी [illegible]

जनना उपाये करी मंत्रचूर्णादिनो योग करीने तेणे कुमारनुं मन विरक्त कर्युं. पारनुं मन जे पूर्वे कमलवतीना उपर गाढ प्यारमां लग्न हतुं तेने मंत्रचूर्णादिना प्रयोगथी तेना प्रत्ये अत्यंत अपमान कर्युं. कुमार लोकापवादथी डरीने विचार करवा लाग्यो के 'आ कमलवतीने तेना पिताने घरे मोकली दउं. अहीं राखवा लायक नथी.' ए प्रमाणे विचारीने तेणे सेवकोने बोलावी आज्ञा करी के 'तमे कमलवतीने रथमां बेसारीने तेना पिताने घेर मूकी आवो.' ए प्रमाणे सांभळीने सेवको विचार करवा लाग्या के–'आ आवुं अघटित केम करे छे? पण आपणने तो स्वामीनुं वाक्य उल्लंघन न थइ शके तेवुं छे.' ए प्रमाणे विचारीने तेओ कमलवतीनी पासे आवी बोल्या के–'हे स्वामिनी! तमारा पति वाटिकाने विषे बेठा छे ने तमने त्यां बोलावे छे. माटे रथमां बेसीने शीघ्र चालो.' ए प्रमाणे असत्य बोलीने तेओए तेने रथमां बेसारी. ते वखते कमलवतीनी जमणी आंख फरकी, तेथी ते विचारवा लागी के–'अत्यारे शुं अशुभ थशे? पण स्वामी ने बोलावे छे माटे जरूर जवुं. जे थवानुं होय ते थजो.' ए प्रमाणे विचारी व्यग्र चित्ते ते रथमां बेठी. सेवकोए रथने सत्वर चलाव्यो. कमलवतीए पूछयुं के–'मारा स्वामीथी अलंकृत सर्वेने उपवन केटलुं दूर छे?' त्यारे सेवके उत्तर आप्यो के–'वन नथी अने तमारो स्वामी पण नथी? कुमारे तमारा पिताने घेर तमने मूकी आववानी अमने आज्ञा आपी छे.' कमलवतीए कह्युं के–"अरे, मारे कुमारे आवुं गगनविनाश [illegible] परीक्षा कर्या विनानुं कार्य कर्युं छे तो दश-रथेथी तेने घणो पश्चात्ताप थशे, बाकी मारे तो जे कर्म उदयमां आव्यो तदनुं ते भोगववुं जोइए. कह्युं छे के 'करेला कर्मोनो क्षय क्रोडो वर्ष करीने पण थतो नथी. शुभ वा अशुभ जे कर्म कर्युं होय, ते अवश्य भोगववुं पडे छे.' परंतु हुं [illegible]थी अत्रे आ शुं थयुं?" आ प्रमाणे विचारती ते थोडा दिवसमां गाढ-[illegible]पुर नगरे आवी पहोंची. एटले कमलवती बोली के–"हे सारथि! तुं [illegible] रथने पाछो वाळ. हवे अहींथी मारो घेर [illegible] नथी. आ स्थानथी हुं परिचित छुं. अहींथी [illegible] स्थान [illegible] छे, त्यां हुं एकली [illegible] जइश." ए प्रमाणे सांभळी सारथि [illegible] करीने आंखमां आंसु लावी बोल्यो के–"हे स्वामिनी! तमे [illegible] धारण करनारा [illegible] छो. ते हुं आप [illegible] छुं. [illegible] तमने [illegible] छे. [illegible]!" ए प्रमाणे [illegible] के–"हे [illegible]! [illegible] ते सेवक छे ने [illegible] स्वामीनी आज्ञा [illegible] करेल छे. [illegible]

[illegible] [illegible]न कहे ने के ' शुं आ [illegible] [illegible] [illegible] मां[illegible] घा[illegible] [illegible]तीने वट [illegible] नीचे [illegible] [illegible] [illegible] पछी एकाए कदलवृती रोती ने विलाप [illegible] [illegible] [illegible] के-" हे [illegible]! तें आ अति कृर कार्य शुं आचर्युं ? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उत्पन्न थतुं दुःख तें मने शामाटे आप्युं ? में तारो शो अपराध कर्यो हतो! आ दुःख तो सर्व सहन थइ शके तेम छे, परंतु असत्य कलंक चडावीने भर्तारे मने घरमांथी काढी मूकी छेः तेथी मने महद् दुःख थाय छे. हुं शुं करुं ? क्यां जाउं हे माता! अहीं आवीने दुःखदावाग्निथी बळती तारी पुत्रीनुं रक्षण कर. अथवा तुं आवती नहि, कारण के मारुं दुःख जोइने तारुं हृदय फाटी जशे. हुं मंदभाग्यवती छुं. कारण के हुं कुमारावस्थामां पिताने वर शोधवानी चिंतानुं कारण थइ हती. पाणिग्रहण वखते पिताने बंधन विगेरेनुं कष्ट प्राप्त कराव्युं हतुं. अत्यारे पण आ सांभळीने ते पण दुःखी थशे." आ प्रमाणे अनेक रीते विलाप करती सती मनने विषे विचार करवा लागी के–' प्रथम मारा स्वामीए मारा शीलनी सारी रीते परीक्षा करी हती. परंतु एवुं जणाय छे के कोइ निष्कारण वैरीए अथवा भूतराक्षस विगेरेए इंद्रजाळनुं स्वरूप बतावीने मारा स्वामिनुं मन व्युद्ग्राहित करी नांख्युं छे. तेथी हमणा कलंकयुक्त मारे पिताने घेर जवुं सर्वथा युक्त नथी. हमणां तो जटिकाना प्रभावथी पुरुष रूप धारण करीने रहुं.कारण के पाका बदरी फळना जेवा स्त्रीशरीरने जोइने कोण भोगववानी इच्छा न करे ! कहुं छे के " तळावनुं पाणी पीवाने, तांबूल खावाने अने यौवनावस्थामां स्त्रीना शरीरने जोवाने कोण उत्सुक न थाय ? " मारे तो प्राणत्यागथी पण शीलनुं रक्षण करवुं ते श्रेष्ठ छे. कारण के आ संसारमां शील शिवाय बीजो परम पवित्र अने निष्कारण मित्र नथी. कहुं छे के–"शील ए निर्धननुं धन छे, अलंकाररहितनुं आभूषण छे,विदेशने विषे परम मित्र छे,अने आ भवमां तथा परभवमां सुख आपनारुं छे." वळी शीलना प्रभावथी प्रज्वलित अग्नि शांत थइ जाय छे अने सर्पआदिनो भय नाश पामी जायछे. आगममां पण कहुं छे के-" देव दानव, गंधर्व,यक्ष राक्षस अने किन्नर विगेरे ब्रह्मचारीने नमस्कार करे छे, कारणके ते दुष्कर कार्यना करनार छे." वळी " कोइ क्रोडोगमे सोनैयानुं दान दे अथवा सोनानुं जिनभुवन करावे तो पण जेटलुं पुण्य ब्रह्मव्रत धारण करनारने थाय छे तेटलुं तेने थतुं नथी."

आ प्रमाणे विचार करीने ते जटिकाना प्रभावथी ब्राह्मणनो वेष धारण करीने [illegible]पुरथी पश्चिम दिशाए आवेल 'चक्रधर' नामना गामनी समीपे चक्रधर [illegible]ना मंदिरमां पूजारीपणे रही, अने सुखे काळ निर्गमन करवा लागी.

हवे मारगीए रणसिंह कुमार पासे जइने कमळवती संबंधी सर्व वृत्तांत कह्युं, ते सांभळीने 'आ सर्व गंधमृगिकाना संघाडिनुं माहात्म्य छे' एवुं जाणी कुमार अत्यंत पश्चात्ताप करवा लाग्यो के–"में अधमे कुळने अनुचित एवुं आ शुं आचर्युं? के जेथी निर्दूषण एवी प्राणप्रियाने कलंक चडाव्युं. ते मारी प्राणप्रिया कमळाक्षी कमळवती शुं करती हशे? हुं शुं करुं? तेना विना सर्व शून्य लागे छे. [illegible] छतां, अग्नि छतां तथा नाना प्रकारना मणि छतां एक ते मृगाक्षी विना [illegible] सर्व अंधकारमय लागे छे.' फोगट जाणे ते मारी वल्लभा हवे मने क्यारे [illegible]? अधन्य एवो हुं लोकोने मुख शीरीते बतावी शकीश? मने धिक्कार छे! [illegible] ते विषे एवो माठो विचार आव्यो ते मारुं हृदय फूटी केम गयुं नहि? अने [illegible] जीभ शतखंड केम थइ गइ नहि, के जेणे तेने वनमां मूकी आववानी [illegible]? आ प्रमाणेनुं अकार्य करतां मारा माथा उपर वज्राघात केम तूटी पड्युं नहि? [illegible] वगरविचार्युं करेलुं कार्य महा अनर्थने माटेज थाय छे. नीतिशास्त्रमां पण [illegible] छे के "कोइ पण कार्य सहसा करवुं नहि. कारणके सहसा कार्य करनार [illegible] परम आपदानुं स्थान [illegible] छे, अने विचारीने काम करनारा [illegible] प्राणीओ स्वयमेव संपदाने पामे छे." पण हवे आ प्रमाणे शोच कर[illegible] शुं? विचारवानी जरूर ए छे के आ कार्य कोनाथी थयुं?" ए प्रमाणे [illegible] करता तेणे गंधमृगिका उपर रखाना [illegible] सांभळ्या. एटले 'स्वकीय कार्य गोपवीने करेलुं छे' एम [illegible] सुधी विचारवा लाग्यो.

हवे गंधमृगिकाए मोकलेली [illegible] [illegible] कुमारनुं [illegible] [illegible] [illegible] पण [illegible] कशी बताव्युं. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तेणे [illegible] [illegible] पुरंदर राजाने कह्युं के–"हे स्वामिन! रणसिंह कुमारने तेडावो." एटले [illegible] राजाए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] त्यां आवीने कह्युं के–"हे स्वामिन! [illegible] [illegible] पाणिग्रहण कर्यां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अनुचित [illegible] छे, तेथी [illegible] [illegible] कर्यां छे; [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे, तेथी हवे [illegible] [illegible] [illegible] कुमारने बोलावो." [illegible] कुमारने बोलावी [illegible] कह्युं के–"[illegible] [illegible] [illegible]." [illegible]

पूजा करवा चाल्या, ते वखते तेमनी जमणी चक्षु फरकी, तेथी ते विचारवा लाग्योके–'आज कोइ इष्टनो संयोग थशे, परंतु कमलवती विना मने बीजुं कंइ इष्ट नथी; तेथी जो ते मळी आवे, तो खरो इष्ट लाभ प्राप्त थयो मानुं.' ए प्रमाणे विचारे छे, तेवामां पुष्पवटुक रूपधारक कमळवतीए पुष्प लावीने कुमारना हस्तमां मूक्यां. कुमारे तेने योग्य मूल्य आप्युं. पछी पुष्पवटुके विचार्युं के–'आ रणसिंह कुमार रत्नवतीना पाणिग्रहणार्थे जता जणाय छे.' कमळवती कुमारने जोइ अति हर्षित थइ. कुमार पण पुष्पवटुक रूप धरनारी कमळवतीने पुनः पुनः जोतो सतो विचार करवा लाग्यो के–'आ मारी प्राणवल्लभा कमलवतीना जेवो देखाय छे. एने जोईने मारुं मन अति प्रफुल्लित थायछे.' ए प्रमाणे चिन्तन करतो विस्मयथी तेने पुनः पुनः जोतां पण तृप्त थयो नहि. कमलवती पण स्नेह करीने पोताना प्रियने निरखवा लागी. पछी कुमार वटुकने साथे लइने पोताना मुकामे आव्यो, अने भोजन विगेरेथी भक्तिपूर्वक तेनुं बहु सन्मान करीने तेने पोतानी पासे बेसाड्यो. पछी कुमार तेने कहेवा लाग्यो के–'हे वटुक! तारुं अंग फरीफरीने जोतां छतां मने तृप्ति थती नथी. तारुं दर्शन मने अतिशय इष्ट लागे छे.' वटुक बोल्यो के–'हे स्वामिन्! ए सत्य छे. जेम चंद्रनी कांतिना दर्शनथी चांद्रोत्पलमांथी अमृत स्रवे छे, बीजामांथी स्रवतुं नथी, तेम आ संसारमां पण जे जेनो वल्लभ होय छे, तेने जोवाथी तृप्ति थतीज नथी' कुमारे कह्युं के–'मारे आगळ जवानुं खास कारण छे, परंतु तारा प्रेमनी शृंखलाथी बंधायेल मारुं मन एक पगलुं पण आगळ भरवाने उत्साहित थतुं नथी; तेथी कृपा करी तुं मारी साथे चाल. पाछो हुं तने अहीं अवश्य लावीश.' ए प्रमाणे सांभळीने वटुक बोल्यो के–'मारे अं हमेशां चक्रधर देवनी पूजा करवानी छे, तेथी माराथी केम आवी शकाय? वळी दंभरहित व्रत धारण करनार मने त्यां आववानुं प्रयोजन पण शुं छे?' कुमारे कह्युं के–'जोके तारे कंइ पण कार्य नथी तोपण मारा उपर कृपा करीने तारे आववुं जोइए.' कुमारना आग्रहथी तेणे ते कबुल कर्युं, अने तेनी साथे आगळ चाल्यो. मार्गमां जतां कुमारने वटुकनी साथे घणी प्रीति बंधाणी. एक क्षण पण ते तेनो संग छोडतो नथी. तेनी साथेज बेसवुं, उठवुं, चालवुं ने सुवुं विगेरे करे छे. शरीरनी छायानी जेम तेओ बन्ने एक क्षण पण नोखा पडतां नथी. दूध ने जळनी जेवी तेओने मैत्री थइ छे. कह्युं छे के–"दूधे पोतानी साथे मिश्रित थयेल जळने पोताना सर्व गुण आप्या. पछी दूधने ताप उपर चडावेलुं जोइने जळे पोतानी जातने अग्निमां नांखी, अर्थात् पोते बळवा मांड्युं; ते वखते पोताना मित्रने आपत्तिमां जोइने दूध उछळीने अग्निमां पडवा तैयार थयुं. तेने पाछुं

तेमा मित्र साथे मेळव्युं अर्थात् पाणी छांटयुं त्यारे ते शांत थयुं. सारा माणसोनी मैत्री एवा प्रकारनी होय छे."

एकदा कुमार बटुकने कहेवा लाग्यो के–'हे मित्र ! मारुं मन मारी पासे नथी.' तेणे पूछयुं के–'ते क्यां गयुं छे ?' कुमारे कह्युं के–'ते मारी वल्लभा कमलवतीनी साथे गयुं छे.' तेणे पूछयुं के–'कमलवती क्यां गइ छे ?' कुमारे कह्युं के–'मारा जेवा मंदभाग्यवाळाना घरने विषे एवुं स्त्रीरत्न क्यांथी रहे ? दैवथी जेनुं मन नष्ट थयेलुं छे एवा में ते निरपराधी बाळाने काढी मूकी. ते क्यां गइ हशे !' बटुके कह्युं के–'जेने माटे तुं आटलो बधो खेद करे छे ते केवी हती ?' कुमार नेत्रमां अश्रु सहित कहेवा लाग्यो के–'हे मित्र ! तेना गुणो एक [illegible]भथी गणवाने केवी रीते शक्तिवान थवाय ? सर्व गुणनुं भाजन ते स्त्री हती. [illegible] तेना विना सर्व संसार शून्य लागे छे. परंतु तारा दर्शनथी मने आनंद [illegible]पन्न थाय छे.' त्यारे बटुके कह्युं के–'हे सुंदर ! आटलो बधो पश्चात्ताप [illegible]वो उचित नथी, कारणके विधिए निर्माण करेल कार्य निवारवाने कोण [illegible]क्तिवान छे ? कह्युं छे के–'विधि अघटित घटनाने घटावे छे ने सुघटित घटनाने [illegible]रीभूत करे छे; जेने माटे मनुष्यजातने विचार पण आवी शकतो नथी तेवी [illegible]ना विधि घटावे छे.' तो आ प्रमाणे बहु शोक करवाथी शो लाभ छे ?"

हवे एक दिवसे कुमार मित्र सहित सोमपुरीए पहोंच्या. पुरुषोत्तम राजा [illegible] उत्सवथी तेनी सन्मुख गया. अने जमाइने मोटा आडंबरथी पोताना नग[illegible] विषे प्रवेश कराव्यो. पछी शुभ मुहूर्ते रत्नवतीनुं पाणिग्रहण कराव्युं. पुरुषो[illegible] राजाए पहेरामणीमां घणा हाथी घोडा प्रमुख विगेरे आप्यां. त्यां [illegible] कुमार [illegible]शुरे आपेल आवासमां रहेतो थको रत्नवती साथे विषयसुख भोगववा लाग्यो.

एकदा रत्नवतीए तेने पूछयुं के–'हे प्राणनाथ ! ते कमलवती केवी हती के जे [illegible] गइ छतां पण आपना चित्तने छोडती नथी. अने जेने माटे पाणिग्रहणार्थे [illegible] आवतां मार्गमां [illegible] पण घणा [illegible] हता ?' कुमार बोल्यो के–'हे [illegible] ! आ त्रिभुवनने विषे एना जेवी बीजी कोइ स्त्री नथी. तेना गुणना व्याख्[illegible]नुं शुं वर्णन करुं ! [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] नहि."

आ प्रमाणेनां कुमारनां वचन सांभळीने रत्नवती रोषथी बोली के-"हे ... कर्युं ? ते दुष्ट स्त्रीने केवी शिक्षा आपी ' अहींथी गंधमूषिकाने बोलावी, ते ... मेंज कर्युं हतुं. जेवी ते तमारी इष्ट हती. ... तेना गुणो वारंवार गाया करेलो" ए प्रमाणे सांभळीने कुमार कमलवतीने तदन निष्कलंक मानी, क्रोधथी लालचोळ थइ, रत्नवतीने हस्तथी पकडी, लात मारी, तिरस्कार करीने बोल्यो के-"हे मलिन कर्म करनारी ! तने धिक्कार छे ! तें आज्ञा आपीने कुकर्म कराव्युं, पण तेथी तें तारा पोताना जीवनेज दुःख समुद्रमां नांख्यो छे. तारा जेवी स्त्रीना करतां कुतरी पण सारी छे, के ते भसती होय पण अन्न आपवाथी वश थाय छे ने भसती नथी. परंतु बहुमानिता एवी पण मानिनी (स्त्री) कदि पण पोतानी थती नथी.?" ए प्रमाणे कहीने पछी विचारवा लाग्यो के-'अरे ! वृथा कलंकचिंतामां पटेली मारी प्रिया कमलवती जरूर मृत्युवश थइ हशे, तो हवे मारा आ जीवनथी सर्युं !' ए प्रमाणे विचार करी तेणे पोताना सेवकोने आज्ञा करी के-'तमे मारा आवासनी पासे एक मोटी चिता रचो, के जेथी कमलवतीना विरहथी दुःखी थयेलो हुं तेमां पडीने मरण पामुं.' ए प्रमाणे कही पराणे चिता करावी, अने सर्व जणाए वार्या छतां वळी मरवा चाल्यो. अहीं पुरुषोत्तम राजाए ते वात सांभळी, एटले प्रथम तो कुडकपटनी पेटी, मिथ्या कलंक चडावनारी, अकार्य करनारी अने नरकगतिमां जनारी एवी गंधमूषिकाने घणी कदर्थना करावी, मानरहित करी, अपमान अपावी, रासभ उपर बेसाडीने नगरनी बहार काढी मूकी; स्त्रीजाति होवाथी मारी नखावी नहि. पछी ते कुमार पासे आव्यो. त्यां तेणे तथा सार्थवाह आदि जनोए कुमारने बहु प्रकारे वार्यो छतां ते चिता समीप आव्यो. राजा आदि जन विचार करवा लाग्या के-' मोटो अनर्थ थशे, एक स्त्रीना वियोगथी आवु पुरु परत्न मृत्यु पामशे.' आ प्रमाणे विचारी कुमारने चितामां पडवाने तैयार थयेल जोइने पुरुषोत्तम राजा बटुक समीपे जइ कहेवा लाग्यो के-' हे आर्य ! आ कुमार तारुं वाक्य उल्लंघन करता नथी, तेथी एवी विज्ञप्ति कर के जेथी ते आ पापकार्यथी पाछो फरे.' पछी बटुक कुमार प्रत्ये बोल्यो के-"हे भद्र ! उत्तम कुळमां उत्पन्न थया छतां आवुं नीच कुळने उचित कर्म केम करो छो ? तमारा जेवा सदाचारी पुरुषने ए घटित नथी. अग्निप्रवेश आदिना मृत्युथी अनंत संसारनी वृद्धि थाय छे. तेमां पण मोहातुर थइने मरवुं ते तो अति दुःखदायी छे. वळी हे मि तमे मने प्रथम कह्युं हतुं के 'हुं तने चक्रधर गामनी समीपे पाछो पहोंचाडीश' ते तमा वचन अन्यथा थाय छे. तेमज मृत्यु पामेलो कमलवतीनी पाछळ मरवाने इच्छो छो, पण व्यर्थ छे.

कारण के जीव पोताना कर्म गति परभवने विषे जाय छे. जीवोनी चोराशी लाख योनि छे, तेथी तेओनी गति एक नथी; वळी ते बहुलकर्मीने जीवनी गति थाय छे. पंडित पुरुषे सारुं अथवा नरसुं कार्य करतां पहेलां परिणामनो विचार करीनेज करवुं जोइए. अकस्मात् [illegible] विचारे करेलुं कार्य आगळ उपर मनुष्यने केवुं दुःखदायक नीवडे छे. तेथी आ मारा वचनथी पाछा वळो; कारण के 'जीवतो नर भद्रा पामे' एवुं छे.' वळी जो तमे मारी वात सांभळीने महाराज प्राणनुं रक्षण करशो, तो कदाचित् तमने अप्सराओनो संयोग पण प्राप्त थशे; पण जो मरण पामशो तो [illegible] प्राणत्याग करशो. तो तेनो संभव दुर्लभ छे." आ प्रमाणेनी वकुलनी वाणी सांभळीने राजकुमारीने मळवानी तीव्र अभिलाषा जेना हृदयमां छलकाती छे एवो कुमार कहेवा लाग्यो के–' हे मित्र! शुं तें मारी विद्या-ने जोइ छे? अथवा शुं ते जोइने एवुं बोलवा तने कहुं छे? अथवा ज्ञानना बळथी शुं जाणे छे के ते मळशे के नहि? तुं मने अहिंयां पडतो अटकावे छे तेनुं कारण शुं छे? ते कहे.' वकुल बोल्यो के–' हे कुमार! तमारी दिव्य अदृश्यनी विद्यानी शक्ति छे एम हुं मानतो जाणुं छुं. तेथी जो तमे कहो तो मारा आत्माने विद्याना-नी शक्ति बोलावीने अदृश्यपणे अहीं लइ आवुं.' त्यारे कुमारे कह्युं के–' जो ए वर्ष सत्य होय तो तेमां जरा पण विलंब कर नहि. त्यारे हुं अदृश्यपणे जोइश त्यारे मारो आ जन्म कृतार्थ मानीश.' त्यारे वकुल बोल्यो के–' हे कुंवर! द-क्षिणा विना मंत्रविद्या आदि केवी रीते सिद्ध थइ शके?' त्यारे कुमारे कह्युं के–' हे मित्र! प्रथम में तने मारुं सर्वस्व अर्पण करेल छे, हवे मारा प्राण पण तारे आधीन छे; तो पछी हवे तेथी वधारे बीजी शी दक्षिणा आपुं?' वकुले कह्युं के–'ठीक छे मानी. पण हुं त्यारे जे कांइ तमारी पासे मागुं ते त्यारे आपवुं पडशे.' कुमारे कह्युं के–' हुं तने ए आपुं छुं एम हुं मानीश. वळी [illegible] शो? परंतु तुं हवे मारी प्रिया [illegible] लाव.' ए प्रमाणे कहेवाथी वकुले भीलो-निनी आगळथी कांइ मंत्र जपीने [illegible]. पछी ते कन्याना [illegible] करतो हतो. कुमार पण त्यां [illegible] थइने [illegible] लाग्यो. [illegible] कन्यादर्शनने माटे उत्कंठित थया. पछी ' [illegible] कन्यानी पासे आववानो [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

भयो. कमलवतीए विचार्यु के " [illegible] नथी, तेना तरफ ते अत्यंत निःस्नेही [illegible] बोलाय. जोके तेणे अपराध कर्यो छे तो पण मारे ते विषे विचार करवो योग्य नथी. कारणके उपकारीना प्रति प्रत्युपकार करवो एमां कांइ आश्चर्य नथी, पण अपकार करवावाळानी उपर उपकार करवो एज सत्पुरुषोनुं लक्षण छे." कह्युं छे के–" उपकार करवावाळा उपर या मत्सर विनाना मनुष्य उपर दया बताववा मां आवे तेमां विशेषपणुं शुं छे! पण जे अहित करनार प्रति तेमज गरुआ अपराध करनार प्रत्ये दया बतावे तेज सत्पुरुषोमां अग्रणी छे." ए प्रमाणे विचार करी कमलवतीए कुमार पासे वरदान माग्युं. कुमारे कह्युं के–' जे तारी इच्छा होय ते मागी ले.' कमलवती बोली के–' जो तमे इच्छित वस्तुने अर्पण करता हो तो मारी उपर जेवा स्नेहवाळा छो तेवा रत्नवती प्रति स्नेहवंत थाओ जोके तेणे अपराध कर्यो छे तो पण ते क्षमा करवा योग्य छे. कारणके तमो उत्तम कुळमां उत्पन्न थया छो अने कुळवान पुरुषोने चिरकाळ सुधी क्रोध राखवो घटतो नथी. कह्युं छे के " कुळवान पुरुषने क्रोध थतो नथी, कदाच थाय तो ते लांबा काळ सुधी रहेतो नथी, जो कदाच लांबो काळ सुधी रहे तो ते फळतो नथी. तेथी सत्पुरुषोनो कोप नीच जनोना स्नेह जेवो छे." वळी स्त्रीओनुं हृदय प्रायें निर्दय होय छे. कह्युं छे के-'असत्य. साहस, माया. मूर्खत्व, अतिलोभ, अस्वच्छता अने निर्दयपणुं ए स्त्रीओना स्वाभाविक दोषो छे. पोताना स्वार्थ साधवाने माटे ते नीच आचरण आचरे छे." आ प्रमाणे कमळवतीना कहेवाथी कुमारे रत्नवतीनुं पण सन्मान कर्युं. पछी केटलाक दिवस त्यां रहीने पुरुषोत्तम राजानी आज्ञा लइ कुमारे कनकपुर तरफ प्रयाण कर्युं. पिताए रत्नवतीने घणा दास,दासी,

अलंकार, द्रव्य विगेरे आपीने विदाय करी अने कुमारने पण घणा आप्यो. अश्व-रथ, पायदळ, सुवर्ण, मोती विगेरे अनेक दीधां.

रणसिंहे कनकवतीने लईने [illegible] सहित शुभ दिवसे प्रयाण कर्युं. अनुक्रमे पाडलीखंडपुर समीपे आव्या. त्यां जेणे पोतानी पुत्रीनुं सर्व वृत्तांत जाण्युं छे एवो कनकसेन राजा सन्मुख आवी महोत्सव पूर्वक कुमारने पोताना घेर लई गयो. कनकवतीने पण बहु सन्मान आप्युं. नगरना लोकोए तेनी घणी प्रशंसा करी. तेनी माताए पण स्नेहथी तेने आलिंगन कर्युं. पछी घणा दिवसो त्यां रहीने कुमार कनकपुर नगर चाल्यो. [illegible] राजा पण कुमारनुं आगमन सांभळीने आनंद सहित सन्मुख आव्यो. [illegible] मळ्यां अने कुमारने नगरमां प्रवेश कराव्यो. ते समये घणा पुरुषो तथा स्त्रीओ तेमने जोवाने आव्या. तेओ परस्पर आनंद सहित बोलवा लाग्या के—"आ रत्नवतीने [illegible] पोताना [illegible] [illegible] कुमार [illegible] [illegible] [illegible] आलिंगन [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

अहीं तहीं फरता हता तेओना जोवामां आव्यो. तेओए तेने पूछयुं के-'तारी केडे आ शुं बांध्युं छे ?' तेणे उत्तर आप्यो के-'चोभडुं छे.' राजसेवकोए तपासतां मस्तक दीठुं एटले तेने चोर धारी बांधीने प्रधान समीपे लइ गया. प्रधाने कह्युं के-'अरे तने धिकार छे ! तें दुर्गनिना कारणरूप बाळकने मारवानुं काम शा माटे कर्युं?' तेणे कह्युं के-'स्वामिन ! हुं कंइ जाणतो नथी.' आटलुं कहेवा उपरांत घडइ घडइत्ति एटलुं ते बोल्यो. तेथी तेने राजानी समीपे लइ जवामां आव्यो. राजाए पूछयुं के-'अरे ! आ कार्य तें शामाटे कर्युं ?' त्यारे तेणे 'घडइ घडइत्ति' एटलोज उत्तर आप्यो. राजाए कह्युं के-' अरे मूर्ख ! वारंवार 'घडइ घडइत्ति ' ए शब्दो केम बोले छे ? तेनो परमार्थ कहे." अर्जुन बोल्यो के-'हे स्वामी ! आ स्थितिमां हुं तेनो परमार्थ कहीश तोपण ते कोण सत्य मानशे. वळी कोण जाणे हजु पण मारा कर्मथी पुनः शुं बनशे ? माटे हुं कांइ परमार्थ जाणतो नथी.' ते सांभळी दुर्गपाळना पुरुषोए कह्युं के-"आ कोइ धृष्ट जणाय छे, केमके अमे तेनी पासेथीज साक्षात् मस्तक कढाव्युं छे छतां ते सत्य बोलतो नथी ने 'घडइ घडइत्ति' एवो उत्तर आपे छे" राजाए पण क्रोधथी 'तेने शूलीये चढावो' एवी आज्ञा आपी. सेवको तेने लइने शूली पासे आव्या. ते समये कोइ एक विकराळ रूपधारी पुरुष आवीने कहेवा लाग्यो के-'हे माणसो ! जो तमे आने हणशो तो हुं तमने सर्वने हणी नाखीश.' ए प्रमाणे कहेवाथी तेनी साथे राजपुरुषोने युद्ध थयुं. तेणे सर्वने हांकी काढया. तेओ नासीने राजा पासे आव्या. तेओनी पासेथी बनेल वृत्तांत सांभळी राजा पोते युद्ध करवा नीकळ्यो. ते वखते तेने एक कोस प्रमाण पोतानुं शरीर विकुर्व्युं. ते जोइ राजाए विचार कर्यो के-'आ कोइ मनुष्य नथी, आ तो कोइ यक्ष के राक्षस होय एम जणाय छे; पछी धूप उखेवबा विगेरेथी तेनी पूजा करीने कह्युं के-' तमे अमारा अपराधने क्षमा करो.' एटले ते प्रत्यक्ष थइ पोतानुं शरीर नानुं करीने बोल्यो के-'हे राजन् ! सांभळ मारुं नाम दुषमकाळ छे. लोको मने कलि पण कहे छे हमणा भरतक्षेत्रने विषे मारुं राज्य प्रवर्ते छे. महावीर स्वामीना निर्वाण पछी त्रण वर्षने साडा आठ महिना वीत्या बाद मारुं राज्य प्रवर्तेलुं छे. मारा राज्यमां आ खेडुते आवो अन्याय केम कर्यो ? कारणके तेणे शून्य क्षेत्रमां चमणुं मूल्य मूकीने एक चीभडुं शा माटे लीधुं ? तेथी ते मारो चोर छे. एटले चोभडाने बदले मस्तक बतावीने में प्रत्यक्ष एने शिक्षा आपी छे. हवे पछी कोइ पण एवो अन्याय करशे तो तेने हुं संकटमां नाखीश." पछी श्रेष्ठीपुत्र पण जीवतो थयो, अने ते राजानी

समीपे आव्यां. राजाए तेने पोताना खोळामां बेसाड्यां. अर्जुननुं पण घणुं सन्मान कर्युं; पछी कलिए राजाने पोतानुं सर्व माहात्म्य कहीने उत्कंठ थई कहे- 'हे राजन ! तारा राज्यमां रामचंद्र राजानी जेम न्यायधर्मनुं पालन केम करे छे ! हवे पछी जो तेम करीश तो ते न्यायधर्माचरणना निमित्तेज हुं तने दुःखी करीश.' आ प्रमाणे कहीने तेणे राजाने छळ्यो. पछी कलि अदृश्य थयो. सर्व पोतपोताना स्थाने गया. अर्जुन पण पोताने स्थाने गयो.

त्यांथी रणसिंह राजा प्रत्यक्ष अनीति जोइने न्यायधर्म तजी अन्याय आचरणमां तत्पर थयो. लोकोए विचार्युं के-'राजाने शुं थयुं छे के जेथी ते आवो अन्याय आचरे छे? तेने वारवाने कोइ समर्थ नथी.' ते समये तेनो [illegible] मां आवी पहेलां पोताना भाणेज रणसिंह कुमारने प्रतिबोध आपवाने माटे श्री जिनदास गणि ते नगरना उपवनने विषे पधार्या. राजा पण परिवार सहित वंदन करवा गयो. विनय पूर्वक नमस्कार करी बे हाथ जोडीने ते आगळ बेठो. गुरुए पण सकळ क्लेशनो नाश करनारी देशना आपी. तेमां कह्युं के-'हे राजन ! [illegible] परंतु आ प्रकारे संसारने विषे [illegible] सुख दुःख प्राप्त थाय छे.' कह्युं छे के-"कर्मना उदय- [illegible]

[illegible]

चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणा–श्चलं चंचलयौवनं ।
चलाचलेस्मिन्संसारे, धर्म एको हि निश्चलः ॥

" लक्ष्मी चपळ छे, प्राण चपल छे,चंचल एवुं यौवन पण चपळ छे; एवा चळाचळ संसारमां धर्म एकज निश्चळ छे."

आ प्रमाणे विचारी घरे आवीने रणसिंह राजा न्याय अने धर्मनी प्रतिपालना करवा लाग्यो पछी केटलेक काळे कमळवतीना पुत्रने राज्ये स्थापन करीने श्रीमुनिचंद्र सूरी पासे रणसिंह राजाए चारित्र ग्रहण कर्युं; अने विशुद्धचारित्रनुं आराधन करी काळधर्म पामीने देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थया.

कमळवतीना पुत्रे पण आ उपदेशमाळा कंठे करी अने सर्व लोकोए पण तेनुं पठन पाठन कर्युं. ए प्रमाणे अनुक्रमे पठन पाठनना क्रममां चालतो आ उपदेशमाळा अद्यापि विजय पामे छे.

आ उपदेशमाळाप्रकरण पोताना पुत्रने प्रतिबोध पमाडवा माटे श्रीधर्मदास गणिए रचेलुं छे;तेनुं रहस्य अन्य बुद्धिमान जनोए सम्यग् प्रकारे धारण करवुं. आ प्रमाणे वृद्धोक्त संप्रदाय बताव्यो. हवे ते उपदेशमाळानी गाथाओनो अर्थ विगेरे कहेवामां आवशे.

इत्युपदेशमालायां प्रथम रणसिंहनृपस्यमूलसंबंधः।

चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणा–श्चलं चंचलयौवनं ।
चलाचलेस्मिन्संसारे, धर्म एको हि निश्चलः ॥

" लक्ष्मी चपळ छे, प्राण चपल छे,चंचळ एवुं यौवन पण चपळ छे; एवा चळाचळ संसारमां धर्म एकज निश्चळ छे."

आ प्रमाणे विचारी घरे आवीने रणसिंह राजा न्याय अने धर्मनी प्रतिपालना करवा लाग्यो पछी केटलेक काळे कमळवतीना पुत्रने राज्ये स्थापन करीने श्रीमुनिचंद्र सूरी पासे रणसिंह राजाए चारित्र ग्रहण कर्युं; अने विशुद्धचारित्रनुं आराधन करी काळधर्म पामीने देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थया.

कमळवतीना पुत्रे पण आ उपदेशमाळा कंठे करी अने सर्व लोकोए पण तेनुं पठन पाठन थयुं. ए प्रमाणे अनुक्रमे पठन पाठनना क्रममां चालतो आ उपदेशमाळा अद्यापि विजय पामे छे.

आ उपदेशमाळाप्रकरण पोताना पुत्रने प्रतिबोध पमाडवा माटे श्रीधर्मदास गणिए रचेलुं छे;तेनुं रहस्य अन्य बुद्धिमान जनोए सम्यग् प्रकारे धारण करवुं. आ प्रमाणे वृद्धोक्त संप्रदाय बताव्यो. हवे ते उपदेशमाळानी गाथाओनो अर्थ विगेरे कहेवामां आवशे.

इत्युपदेशमालायां प्रथम रणसिंहनृपस्यमूलसंबंधः।

उपदेशमाळा भाषांतर प्रारंभ.

(टीकाकारनुं मंगलाचरण)

नत्वा विभुं सकलकामितदानदक्षम् ।
शंखेश्वरं जिनवरं जनतासुपक्षम् ॥
कुर्वे सुबोधितपदामुपदेशमालाम् ।
बालावबोधकरणक्षमटीप्पनेन ॥ १ ॥

" सकळ इच्छित दान आपवामां कुशळ तथा सुपक्षने उत्पन्न करनार (बताव-नार) एवा जिनेश्वर श्री शंखेश्वर प्रभुने नमस्कार करीने बाळजीवोने बोध थइ शके (सरल) टीप्पन (टीका) वडे उपदेशमाळा सुखे बोध थाय तेवा पदवाळी करुं छुं."

मूळ गाथा.

नमिऊण जिणवरिंदे, इंदनरिंदच्चिए तिलोअगुरू ॥
उवएसमाल मिणमो, वुच्छामि गुरूवएसेणं ॥ १ ॥

शब्दार्थ—" देवेन्द्रो ने नरेन्द्रोए पूजेला अने त्रिलोकना गुरु एवा जिनवरे-न्द्रने नमस्कार करीने तीर्थंकर अने गणधर आदि गुरुओना उपदेशथी हुं आ उपदेशमाळा कहुं छुं. " १.

भावार्थ—आ गाथामां प्रथम पदे करीने श्री जिनेश्वरने नमस्कार करवा रूप मंगलाचरण कर्युं छे. बीजा पदमां जिनेश्वरनां विशेषणो कह्यां छे. त्रीजा पदमां अभिधेय बतावेल छे, अने चोथा पदमां अहं ना अध्याहारवडे आ ग्रंथनी पो... आत करे छे एम बताव्युं छे. तेमां अहं एटले हुं धर्मदासगणि क्षमाश्रमण आ उपदेशमाळा रचुं छुं एम समजवुं. ते पण पोतानी बुद्धिए नहि पण तीर्थंकर ग-णधरादिना उपदेशवडे कहुं छुं. आम कहेवावडे ग्रंथनी आप्तता बतावी छे.
बीजी गाथामां पण मंगळाचरण करे छे ते आ प्रमाणे—

जगचूडामणिभूओ, उसभो वीरो तिलोअसिरितिलओ ॥
एगो लोगाइच्चो एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ २ ॥

शब्दार्थ–" जगतमां मुकुटमणि समान श्री ऋषभदेव तथा त्रिलोकना मस्तके तिलक समान श्री वीरभगवंत छे. तेमां एक लोकमां सूर्य समान छे अने एक त्रिभुवनना चक्षुभूत छे. " २.

भावार्थ–आ अवसर्पिणिना त्रीजा आराने छेडे धर्मना प्रथम उपदेशक होवाथी श्री ऋषभदेवने जगतना मुकुटमणि तुल्य कह्या छे तथा चोथा आराना छेवटे थएला चोवीशमा तीर्थंकर श्री वीरपरमात्माने तिलकनी उपमा आपी छे. तिलकवडे जेम मुख शोभे तेम श्री वीरभगवंतथी आ जगत बधुं शोभे छे. वळी सकळ मार्गना देखाडनारा होवाथी प्रथम तीर्थंकरने आदित्यनी उपमा आपी छे, अने जगतजीवोने ज्ञाननेत्रना दाता होवाथी चरम तीर्थंकरने चक्षुनी उपमा आपी छे.

हवे ते बे प्रभुनां चरित्रवडे तप करवानो उपदेश आपे छे–

संवच्छर मुसभजिणो, छम्मासा वद्धमाण जिणचंदो ॥

इअ विहरिया निरसणा, जइज्जए उवमाणेणं ॥ ३ ॥

शब्दार्थ–" ऋषभदेव एक वर्ष सुधी अने वर्धमान स्वामी छ मास सुधी–ए प्रमाणे आहारपाणी रहित विचर्या छे. ते दृष्टांते करीने (बीजाओए पण) तपकर्ममां प्रवर्तवुं–उद्यम करवो. " ३.

भावार्थ–आ गाथामां सर्व गुणवडे प्रधान होवाथी श्री वर्धमान स्वामीने जिनचंद्रनी उपमा आपी छे. श्री ऋषभदेवने महावीर स्वामीए करेला उत्कृष्ट तपनुं दृष्टांत आपीने गुरुशिष्यने उपदेश आपे छे के एवा तीर्थंकर भगवंते पण आवो उत्कृष्ट तप कर्यो छे, तो तमारे पण तप करवामां यथाशक्ति जरूर उद्यम करवो. केमके उत्तम पुरुषना दृष्टांतवडे बीजाओए प्रवर्तवुं योग्य छे.

हवे वीरपरमात्माना दृष्टांतवडे क्षमा राखवानो उपदेश आपे छे–

जइ ता तिलोअनाहो, विसहइ बहुआइं असरिस जणस्स ॥

इअ जीयंतकराइं, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ–" जो प्रथम त्रण लोकना नाथ तीर्थंकरोए असदृश जनोना–नीच जनोना जीवितनो अंत करे एवा घणा (दुष्ट चेष्टितो) सहन कर्या तो तेवी क्षमा सर्व साधुओए पण करवी." ४.

गाथा ३–छ मासे. ओयमाणेण.

भावार्थ—संगमादि देवोने करेला तेमज बीजा गोपादिना करेला प्राणांत करे तेवा उपसर्गो भगवंत श्री महावीर स्वामीए अनंत शक्तिमान छतां सहन कर्या क्षमा राखी–तेना पर क्रोध कर्यो नहि. ए प्रकारनी क्षमा सर्व मुनिओए पण धारण करवी, एटले भगवंतनुं अनुष्ठान हृदयमां धारण करीने प्राकृत जनोना करेला ताडन तर्जनादि मुनिओए पण सहन करवा. इत्युपदेशः

भगवंतनी दृढता संबंधे कहे छे—

न चइज्जइ चालेउं, महइ महा वद्धमाण जिणचंदो ॥
उवसग्ग सहस्सेहिंवि, मेरु जहा वायगुंजाहिं ॥ ५ ॥

शब्दार्थ—"मेरु पर्वत जेम गुंजारव करता प्रबळ वायुथी चलायमान न थाय तेम महइ एटले मोक्षने विषे ज करी छे मति जेमणे एवा महान वर्द्धमान जिनचंद्र हजारो उपसर्गवडे पण चलावी शकाया नहि." ५.

भावार्थ—मेरु पर्वतनी जेम देवमनुष्यना करेला हजारो उपसर्गथी पण वीरप्रभु चलायमान थया नहि; कारण के तेमने ध्यानथी चलाववाने–क्षोभ पमाडवाने कोइ पण शक्तिवान नथी. तेथीज तेमनुं नाम देवोए 'वीर' एवुं पाडयुं छे. आ दृष्टांत ध्यानमां राखीने अन्य साधुओए पण प्राणांतकारी उपसर्ग थया छतां ध्यानथी चळवुं नहि. इत्युपदेशः

हवे विनय गुणनी प्राधान्यता बतावबा माटे कहे छे—

भद्दो विणीयविणओ, पढमगणहरो समत्तसुअनाणी.
जाणंतोवि तमत्थं, विम्हिअहिअओ सुणइ सव्वं ॥ ६ ॥

शब्दार्थ-"भद्र अने विशेष विनयवान प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी समस्त श्रुतज्ञानी एवा ते अर्थने जाणतां छतां प्रभु ज्यारे कहे त्यारे ते सर्वे विस्मित हृदयवाळा थइने सांभळे छे." ६.

भावार्थ—भद्र एटले कल्याणकारी–मंगळरूप अने अत्यंत विनयी गौतम स्वामी श्रुतज्ञानना पारगामी–श्रुतकेवली छतां एटले सर्व भावने जाणनारा छतां प्रथम पूछायेला अर्थने फरीने पण भगवंत ज्यारे कहे त्यारे कौतुकवडे प्रफुल्लित लोचनवाळा थइने सांभळे छे. आ प्रमाणे बीजा शिष्योए पण विनय पूर्वक गुरुने पूछवुं ने ते जे कहे ते सांभळवुं. इत्युपदेशः

गाथा ५–सहस्सेहवि वायुगुंजाई ^ मोक्षे कृतमतिः महति. * विशेषेण नीतः प्राप्तो विनयो येन

विनय उपर लौकिक दृष्टांत आपे छे–

जं आणवेइ राया, पगइओ तं सिरेण इच्छंति ॥
इअ गुरुजणमुहभणिअं, कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥ ७ ॥

शब्दार्थ–'राजा जे आज्ञा करे छे ने तेनुं प्रकृतिमंडळ–सेवक वर्ग मस्तक करीने इच्छे छे; ते प्रमाणे गुरुजनना मुखथी कहेवायलुं (शिष्योए) हाथ जोडीने सांभळवुं " ७.

भावार्थ–सप्तांग[1] स्वामी राजा जे कहे छे ते तेनो सेवकवर्ग माथे हाथ जोडीने प्रमाण करे छे ते प्रमाणे गुरुमहाराज शास्त्रोपदेशादि जे कहे ते भक्ति वडे करकमळ जोडीने विनय पूर्वक शिष्यवर्गे सांभळवुं. आम कहेवावडे शिष्योने विनयनीज प्राधान्यता छे एम उपदेश आप्यो छे.

गुरुना महत्वने बतावे छे–

जह सुरगणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥
जह य पयाण नरिंदो, गणस्सवि गुरु तहा णंदो ॥ ८ ॥

शब्दार्थ–" देवताओना समूहमां जेम इंद्र ग्रहगण[2] ने ताराओना [3]समूहमां जेम चंद्र अने प्रजामां जेम राजा श्रेष्ठ छे तेम गण (साधुसमूह) मां आनंदकारी गुरु श्रेष्ठ छे " ८.

भावार्थ–देवताओ, ज्योतिषीओ अने मनुष्योमां जेम इंद्र, चंद्र ने नरेंद्रनी आज्ञानो अमल थाय छे तेम गच्छमां गुरुनी आज्ञानो अमल थवो जोइए; तेमज देवता विगेरेने जेम इंद्रादि आल्हाद उत्पन्न करनारा छे तेमज गच्छमां गुरु महाराज पण आनंद उपजावनारा होय छे.

बाळवयना गुरुने माटे कहे छे–

बालुत्ति महीपालो, न पया परिभवइ एस गुरु उवमा ।
जं वा पुरओ काउं, विहरंति मुणी तहा सोवि ॥ ९ ॥

शब्दार्थ–" आ बाळक छे एवी बुद्धिए जेम राजाने प्रजा पराभव करती नथी ते उपमा गुरुने पण आपवी; अने जेम गीतार्थने आगळ करीने मुनि विचरे छे तेम बाळ एवा गुरुने पण मानवा. " ९.

1 स्वामी, अमात्य, मित्र, भंडार, देश, किल्ला अने लश्कर ए राज्यनां सात अंग छे. 2 सूर्य चंद्रादि ८८ छे. 3 ताराओ कोटाकोटनी संख्यामां छे. गाथा ९: [illegible]

भावार्थ–वय अने दीक्षा पर्यायवडे हीन छतां पण ज्ञानवडे श्रेष्ठ एवा गुरुपणे
ापेला बाळवयना आचार्यनी आज्ञामांज मुनिओए वर्तवुं. कारण के ते गीतार्थ
ाथी गच्छमां दीपक तुल्य छे. आने माटे लौकिक दृष्टांत आपे छे के–कोइ
ात राजा बाळक होय तोपण प्रजा 'आ बाळक छे' एम कही तेनुं अपमान
ती नथी पण तेनी आज्ञामां वर्ते छे. ते प्रमाणे गच्छने माटे पण समजवुं.

हवे गुरुनुं स्वरुप कहे छे. गुरु केवा होय ?

पडिरूवो तेयस्सी, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को ॥
गंभीरो धीमंतो, उवएसपरो अ आयरिओ ॥ १० ॥
अपरिसावी सोमो, संगहसीलो अभिग्गहमईय ॥
अविकंथणो अचवलो, पसंतहियओ गुरू होइ ॥ ११ ॥

शब्दार्थ–" तीर्थंकरादिना प्रतिबिंब जेवा तेजस्वी, युगप्रधानागम, मधुर
का, गंभीर, धृतिमान, उपदेश देवामां तत्पर–एवा आचार्य होय. १०. वळी
ातिश्रावी, सौम्य संग्रहशील, अभिग्रह करवानी बुद्धिवाळा, बहु नहि बोलनारा,
ार स्वभाववाळा ने प्रशांत हृदयवाळा गुरु होय. " ११

भावार्थ–आचार्य भगवंत आकृतिमां तीर्थंकर गणधरादि जेवा अति सुंदर
ा, कांतिमान होय, वर्तमानकाळे वर्तता समग्र शास्त्रना पारगामी होय अथवा
य लोकनी अपेक्षाए सर्वथी विशेष ज्ञानवान होय, जेनुं वचन मधुर लागे
ा होय, अतुच्छ हृदयवाळा होय के जेथी पर तेना हृदयने जाणी न शके, धैर्यता-
ळा–संतोषवाळा–निष्प्रकंप चित्तवाळा होय, भव्य जीवोने उपदेश देवामां
ार होय एटले सद्वचनोवडे मार्गमां प्रवर्तावनारा होय. १०. निश्छिद्र शैल
जननी जेम अप्रतिश्रावी होय एटले छिद्रविनाना पत्थरना भाजनमां नांखेलुं
ळ जेम नीचे गळे नहि तेम कोइए कहेल पोतानुं गुह्य रुपजळ जेना हृदयमांथी
ातुं नथी अर्थात् अन्यनी पासे प्रकाशता नथी, सौम्य एटले देखवा मात्रवडेज
ह्लादकारी होय–बोलवाथी तो विशेष आह्लाद करे तेमां नवाइज शुं ! शिष्या-
कने माटे वस्त्र पात्र पुस्तकादिनो संग्रह करवामां तत्पर होय ते मात्र धर्मबुद्धिनेज
टे–लोलताथी नहि, वळी द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी ने भावथी एम चारे
कारना अभिग्रहो करवानी बुद्धिवाळा होय, कारण के अभिग्रह पण तप
ाज छे; वळी बहुबोला न होय–पोतानी प्रशंसा तो कदि पण न करे, स्थिर

धीमंतो-धृतिमान. गाथा ११-अपरिस्साविअ

स्वभाववाळा होय–चंचळ परिणामवाळा न होय. प्रशांत स्वभाववाळा होय एटले क्रोधादिकथी रहित चित्तवाळा–शान्तमूर्ति होय–आवा गुरुना गुणे करीने शोभता गुरु होय. एवा गुरु विशेषे करीने मानवा योग्य जाणवा. ११.

हवे आचार्यवडे शासन प्रवर्ते छे ते कहे छे–

कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दाउं ॥
आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ संपयं सयलं ॥ १२ ॥

शब्दार्थ–" कोइ काळे जिनवरेंद्र मार्ग (भव्य जीवोने) आपीने अजरामर स्थानने पाम्या छे. सांप्रत काळे सकळ प्रवचन आचार्योथी धारण कराय छे अर्थात् आचार्य धारण करे छे. "

भावार्थ–कोइ काळे एटले पोतपोताना आयुष्यने अंते तीर्थंकर भगवंत ज्ञान दर्शन चारित्र रुप मार्ग भव्य जीवोने आपीने–बतावीने–उपदेशीने मोक्षस्थान के ज्यां जन्म, जरा के मृत्यु नथी तेने पाम्या छे. तेमने विरहे संप्रतिकाळे चतुर्विध संघ रुप तीर्थ–प्रवचन अथवा द्वादशांगी रुप प्रवचन आचार्योथीज धारण कराय छे, अर्थात् आचार्योज शासननी रक्षा करे छे. तेथी तीर्थंकरने ... आचार्य भगवंत तेमनी समान माननीय–पूजनीय छे. इत्युपदेशः

हवे साध्वीने विनयनो उपदेश आपे छे.

अणुगम्मई भगवई, रायसु अज्जा सहस्सविंदेहिं ॥
तहवि न करेइ माणं, परियच्छइ तं तहा नूणं ॥ १३ ॥

शब्दार्थ–"भगवती राजपुत्री आर्या चंदनबाळा हजारोना वृंदोए परवरेली ... ते अभिमान करती नथी. कारण के ते निश्चये तेने (तेना कारणने) जाणे छे." १३

भावार्थ–दधिवाहन राजानी पुत्री साध्वी चंदनबाळा हजारो लोकोना ... परवरेली रहे छे, अर्थात हजारो लोको तेनी सेवा माटे तेनी पाछळ भमे तथापि ते किंचित् पण गर्व–अहंकार करती नथी, ए आश्चर्य छे. पण ते बराबर चोक्स जाणे छे के आ महात्म्य मारुं नथी पण ज्ञान दर्शन–चारित्रादि गुणोनुं महात्म्य छे तेथी ते गर्व करती नथी. ते प्रमाणे अन्य साध्वीओए पण ... माननीयपणा विगेरेथी गर्व करवो नहि. इत्युपदेशः

विनयनुं स्वरुप-पुरुषनी प्राधान्यता-

दिणदिक्खियस्स द्रुमगस्स, अभिमुहा अज्जाचंदणाअज्जा ॥
नेच्छइ आसणगहणं सो विणओ सव्वअज्जाणं ॥ १४ ॥

शब्दार्थ-" एक दिवसना दीक्षित भिक्षुक साधुनी सन्मुख आर्य चंदनबाळा साध्वी उठ्या अने आसन ग्रहण करवाने इच्छयुं नहि. आवो विनय सर्व साध्वीओने माटे कह्यो छे." १४.

भावार्थ-तेज दिवसना दीक्षित अने ते पण भिक्षुक छतां साधुनो वेष ग्रहण करीने पोतानी समीपे आवतां जोइ सर्व साध्वीमां मुख्य वडेरा चंदनबाळा साध्वी उभा थया, सन्मुख गया अने ते साधु उभा रह्या त्यांसुधी पोते आसन उपर वेसवानी इच्छा करी नहि. आवो विनय तेमणे साचव्यो ते प्रमाणे दरेक साध्वीए साधुमुनिराजनो विनय साचववो. इत्युपदेशः

अहीं चंदनबाळानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे-

" जंबुद्वीपना भरतक्षेत्रमां समृद्धिथी तथा लोकोथी भरपूर कौशाम्बी नामनी नगरी छे. एक वखत बहु साध्वीओथी परवरेली, श्रावकोथी पूजाती ने राजा सामंत शेठीआओ अने नगरवासीओए वांदेली एवी वर्धमान स्वामीनी प्रथम शिष्या आर्य 'चंदनबाला' कौशाम्बी नगरीना चोकमां घणा माणसोनी साथे जती हती. ते वखते 'काकंदीपुरथी कोइएक दरिद्री आव्यो हतो. ते अति दुर्बळ अने मलिन शरीरवाळो हतो. तेना मुख उपर असंख्य माखीओ बणबणाट करती हती; अने ते फुटेलुं माटीनुं वासण हाथमां लइने घेरघेर भिक्षा अर्थे भटकतो हतो. ते भिक्षुके मार्गमां साध्वी चंदनबालाने जोइ, तेथी ते विस्मित थयो के 'आ शुं कौतुक छे? आटला बधा लोको शामाटे भेगा थया छे?' एवुं जाणी ते पण कौतुक जोवाने साध्वीनी पासे आव्यो: एटले जेनुं मस्तक लोच करायेलुं छे, जेणे सांसारिक आसक्ति तजी दीधी छे अने जेणे भूमिप्रदेशने पवित्र करेल छे एवी शांतमूर्ति आर्या चंदनबालाने घणीज साध्वीओथी परिवृत्त थयेली अने घणा राजलोकथी वंदाती जोइ तेना मनमां आश्चर्य उत्पन्न थयुं. तेथी तेणे पासे उभेला कोइ वृद्ध पुरुषने पूछयुं के-'आ कोण छे ने क्यां जाय छे?' ते वृद्ध पुरुषे कह्युं के स्थीर चित्ते सांभळ-

चंपा नगरीमां 'दधिवाहन नामनो राजा हतो. तेने अति रुपलावण्य आदि गुणोथी युक्त, शीलथी अलंकृत अने मातापिताने प्राण करतां पण वधारे प्रिय

गाथा १४—द्रमगस्स. निच्छइ.

[illegible] 'धारिणी' नामनी रा[illegible] [illegible] कारणथी कौशांबी नगरना [illegible] राजाए मोटं सैन्य लइ [illegible] करी परिवार [illegible] परिणामे दधिवाहनने पन[illegible] निर्भयपणे अनाथ [illegible] पण लुंट्युं. ते वखते अंतःपुरमां [illegible] थइ गया छे एवी राजकन्या वसुमती [illegible] आमतेम नासवा लाग्यो, तेने कोइ [illegible] पकडी. [illegible] चाल्युं. तेनी साथे वसुमती पण [illegible] वेचवामाटे आण्यो. ते वखते कौशाम्बीपुरवासी 'धनावह' शेठ [illegible] तेने खरीद करी. ते तेने जोइ अति हर्षित थयो, अने पुत्री तरीके स्वीकार करी तेने पोताने घेर लइ गयो.

एकदा शेठना पग धोती वखते वसुमतीनो केशपास भूमि उपर पडतां शेठे तेने उंचो पकडी राख्यो ते जोइ तेनी भार्या मूलाए मनमां अंदर विचार कर्यो के–'आ स्त्री अति रूपवंती अने सौभाग्यादि गुणथी अलंकृत छे, तेथी मारो भर्तार तेना रूपथी मोहित थइ जरूर मारी अवगणना करशे; माटे एने दुःख आपी घरमांथी हांकी काढुं तो ठीक.' एक दिवस शेठ कोइ कार्यने माटे बहार गाम गया. त्यारे घरे रहेली तेनी भार्याए वसुमतीना केश मुंडावी नांखी, पगमां बेडी नांखी, हाथने मजबूत बांधी लइ गुप्त ओरडामां पूरी. शेठ घेर आव्या एटले तेणे पोतानी स्त्रीने पूछ्युं के–'वसुमती क्यां गइ छे?' तेणे जवाब आप्यो के–'हुं जाणती नथी. ते कांइक गइ हशे, सरल बुद्धिवाळा शेठे विचार्युं के–' तेम हशे. ए प्रमाणे त्रण दिवस वीती गया. चोथे दिवसे कोइ पाडाशीए शेठने पूछ्युं के–'वसुमती क्यां छे?' तेना दुःखथी दुःखित थयेला शेठे कह्युं के–'हुं जाणतो नथी, परंतु ते क्यांइ पण गयेली छे.' त्यारे तेणे कह्युं के–' तमारी स्त्रीना मारथी आक्रंद करती एवी तेने कोइक ओरडामां पूरता आजथी चोथा दिवस उपर में जोयेली छे, तेथी तमारा घरमां तपास करो. शेठे घरमां तपास करी, एटले जेना पग बेडीथी बंधायेला छे, जेना केश मुंडी नाखेला छे अने जे घणी क्षुधातुर थयेली छे एवी वसुमतीने तेणे अंदरना ओरडामां दीठी. शेठे दुःखित-चित्ते विचार कर्यो के–' अहो ! स्त्रीनुं दुश्चरित्र कोइ पण जाणतुं नथी. कामथी अंध

करेली मारी शीने धिक्कार छे !' पछी शेठे वसुमतीने पूछ्युं के–'आ तारी शी दशा !' तेणे जवाब आप्यो के–'तमने शोध मारी करवानी छे.' शेठे तेने उंबरानी बहार बेसाडी मनमां करुणा लावीने कह्युं के–'तुं अहीं बेस, पछी हुं बेडी भांगवाने माटे लुहारने बोलावी लावुं.' तेणे कह्युं के–'मने भूख बहु लागी छे तेथी कांइक खावानुं आपो.' ते वखते घोडाने माटे अडद बाफेला हता ते सुपडाना एक खुणामां नांखीने शेठे वसुमतीने खावा आप्या. ते पण एक पग उंबरानी बहार अने बीजो पग उंबरानी अंदर राखीने बेठी. पछी भावनामां ते भोजनार्थे रहेला सुपडामांना अडद खावा जाय छे ते अवसरे शुं बन्युं ते सांभळो–

छद्मस्थपणे विचरता श्री महावीर स्वामीए पोताना कर्मना क्षयने माटे एवो अभिग्रह करेलो छे के–"राजकन्या होय, माथुं मुंडावेलुं होय, अने पगमां बेडी नांखेली होय, हाथ बांधेला होय, बेडी नवीने पहेरावेली होय, मूल्यथी खरीदायेली होय, जे एक पग उंबरानी बहार ने बीजो पग उंबरानी अंदर राखीने बेठेली होय ते बे पहोर वीत्या पछी सुपडाना खुणामां रहेला अडद जो मने वहोरावे तो मारे वहोरवा" एवो अभिग्रह कर्याने पांच मास ने पचीस दिवस व्यतीत थया हता. ते श्रीवर्धमान एक गामथी बीजे गाम विहार करतां ते अवसरे कौशाम्बी नगरीए पधार्या. तेओ दरेक घरे पर्यटन करे छे, परंतु अभिग्रह प्रमाणे भिक्षा मळती नथी; अनुक्रमे भगवान धनावह शेठने घरे आव्या. तेमने जोइ वसुमती विचारवा लागी के–'मने धन्य छे के आवी स्थितिमां मारे भगवानना दर्शन थया.' पछी वसुमतीए कह्युं के–'हे त्रिलोकना स्वामी ! माषभिक्षाने माटे हाथ लांबा करीने मारो आ भवदुःखमांथी उद्धार करो अने मने तारो.' एवां वसुमतीनां वचन सांभळीने भगवाने विचार्युं के–'मारो अभिग्रह तो पूरो थयो छे परन्तु आ रोती नथी माटे अपूर्ण छे तेथी हुं वहोरीश नहीं.' एवुं धारी भगवान पाछा वळ्या. त्यारे वसुमती अश्रुजळथी नेत्रने मलिन करी विचारवा लागी के–'मंदभागिणी एवी मने धिक्कार छे ! मारे घेर भगवान आव्या छतां मारो उद्धार कर्या विना पाछा गया.' त्यारे भगवाने अभिग्रह संपूर्ण थयेलो जोइ पाछा वळीने माषभिक्षा ग्रहण करी, तेथी वसुमती अति हर्षित थइ. तेनां नेत्र प्रफुल्लित थयां, तेनी रोमराजि विकस्वर थइ; अने ते भवसागरनो पार पामी एम मानवा लागी. ते अवसरे ते दानना प्रभावथी तेना पगनी बेडी पोतानी मेळे तुटी गइ, मस्तक उपर श्याम केशपाश विस्तृत थयो, हाथनुं बंधन त्रुटी गयुं अने पांच दिव्य प्रगट थयां ते आ प्रमाणे–१ साडि बार क्रोड सोनैयानी वृष्टि थइ, २ सुगंधि पंचरंगि पुष्पोनी वृष्टि थइ, ३ वस्त्रनी वृष्टि थइ, ४ सुगंधी जळनी वृष्टि थइ अने ५ 'अहो दानम् दानम्' ए प्रमाणे आकाशमां देवताओए घोष कर्यो अने जयजयकार थयो. देवताओए वसुमतीनो चंदन जेवो शितळ स्वभाव होवाथी तेनुं चंदना

एवुं नाम आप्युं. प्रभुए छमासी तपनुं पारणुं करीने अन्यत्र विहार कर्यो. लोकोए चंदनानी घणी प्रशंसा करी. ए वखते शक्रे (इंद्रे) शतानीक नृपनी समीपे आवीने कह्युं के-'आ वसुमती दधिवाहन राजानी पुत्री छे के जेणे स्वगुणोथी 'चंदना' एवुं बीजुं नाम मेळवेलुं छे. तेनुं तारे यत्नथी रक्षण करवुं. आगळ उपर ए धर्मनी उद्योत करनारी थशे अने भगवान श्रीवीरस्वामीनी प्रथम शिष्या थशे.' ए प्रमाणे शिक्षण आपीने इंद्र देवलोक प्रत्ये गया.

शतानीक राजाथी अने बीजा लोकोथी अति सन्मान पामेली चंदनाए केटलाक दिवसो गया पछी वीर भगवंतने केवळज्ञान उत्पन्न थयेलुं जाणीने भगवंत पासे जइ तेमना हाथथी चारित्र लीधुं, अने भगवाननी शिष्या थइ. ते आ चंदना साध्वी नजीकना उपाश्रयमां रहेला 'श्रीसुस्थिताचार्य'ने वंदन करवाने माटे जाय छे."

आ प्रमाणे तेनुं सघळुं चरित्र वृद्ध पुरुषे द्रुमकने (भिक्षुकने) कही संभळाव्युं. तेथी आनंदित थयेलो द्रुमक साधुने उपाश्रये गयो. चंदना पण गुरुने वांदीने पोताना उपाश्रये गइ. गुरुए भिक्षुकने जोयो, एटले 'आ पुरुष थोडा वखतमां सिद्धि मेळवनारो छे' एम ज्ञानवडे जाणी तेमणे विचार्युं के-'आ भिक्षुकने धर्ममां जोडवो जोइए.' एवुं विचारी तेने मिष्टान्न खावा आप्युं. तेथी ते अति हर्षित थइ मनमां विचारवा लाग्यो के-'आ साधुओ घणा दयाळु छे. आलोक ने परलोक बंनेमां हितकर आ मार्ग छे. आलोकमां मिष्टान्नादि खावानुं मळे छे अने परलोकमां स्वर्गादिनां सुख मळे छे.' एवुं विचारी ते भिक्षुके गुरु पासे दीक्षा लीधी. गुरुए पण तेने प्रव्रज्यामां दृढ करवा माटे घणा साधुओनी साथे साध्वीने उपाश्रये मोकल्यो. ते द्रुमक साधु चंदना साध्वीने उपाश्रये गयो. बीजा साधुओ बहार उभा रह्या, अने भिक्षुक साधु एकलो उपाश्रयनी अंदर गयो. चंदना साध्वी नवा दीक्षित थयेला द्रुमक साधुने आवतां जोइने तेमनां सन्मुख गइ, आसन आप्युं, तेमनुं सन्मान कर्युं अने बे हाथ जोडी सामे उभी रही. द्रुमक साधु विचारवा लाग्या के-'अहो! आ वेषने धन्य छे! जो के हुं नवदीक्षित थयेलो छुं छतां आ पूज्य एवी चंदना मने आटलुं बधुं मान आपे छे.' ए वखते धर्ममां दृढ थयो. चंदनाए तेमने पूछयुं के-'आपने अत्र आववानुं प्रयोजन शुं छे?' द्रुमके कह्युं के-'तमारो वृत्तांत जाणवाने माटे गुरुए मने अहीं मोकल्यो छे.' एटलुं कही मनने चारित्रमां स्थिर करी घणा काळ सुधी [illegible] चारित्र पाळ्युं.

आ दृष्टांत उपरथी अन्य साध्वीओए पण मुनिनो आ प्रमाणे विनय [illegible] करो आ दृष्टांतनो उपनय छे.

[illegible] बन्नेमां साधुनो श्रेष्ठता बतावे छे.

वरिससयदिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिओ साहु ॥
अभिगमण वंदण नमंसणेणं, विणएण सो पुज्जो ॥ १५ ॥

शब्दार्थ–" सो वर्षनी दीक्षित साध्वीने आजनो दीक्षित साधु होय तो ते (पण) अभिगमन, वंदन अने नमस्कारवडे तेमज विनयवडे पूजवा योग्य छे." १५.

भावार्थ–" सो वर्षनी दीक्षित एटले वृद्ध एवी साध्वीने लघु मुनि एटले यावत् एकज दिवसनो दीक्षित मुनि पण पूजवा योग्य छे तेना पूजनना प्रकार बतावे छे–अभिगमन ते सामा जवुं, वंदन ते द्वादशावर्तादि वंदन करवुं, नमस्कार ते अंतरंग प्रीति धराववी अने विनय ते आसन आपवुं विगेरे.

साधुना विशेष पूजनीकपणानां कारणो बतावे छे–

धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिसवरदेसिओ पुरिसजिट्ठो ॥
लोएवि पहू पुरिसो, किं पुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १६ ॥

शब्दार्थ–" धर्म पुरुषथी उत्पन्न थयेलो छे अने पुरुषश्रेष्ठ उपदेशेलो छे तेथी तेमां पुरुष ज्येष्ठ छे. लोकने विषे पण पुरुषज स्वामी थाय छे, तो लोकोत्तम एवा धर्ममां पुरुषनी श्रेष्ठता गणाय तेमां शुं !" १६.

भावार्थ–दुर्गतिथी जे रक्षा करे ते धर्म कहीए; एवो धर्म पुरुष जे गणधर महाराजा तेमनाथी उत्पन्न थयेलो–प्रगट थयेलो छे. पुरुषवर–पुरुषश्रेष्ठ जे तीर्थंकर महाराजा तेमणे बतावेलो–कहेलो–प्ररुपेलो छे. एवो श्रुत चारित्र रुप जे धर्म ते पुरुषना स्वामीपणावाळो होवाथी तेमां पुरुषनुं ज्येष्ठपणुं कहेलुं छे. लोकोमां पण स्वामीपणुं पुत्रने अपाय छे, पुत्रीने अपातुं नथी; तो लोकमां उत्तम एवा धर्ममां तो विशेषे करीने पुरुषनुंज स्वामीपणुं समजवुं. जो लोकमां पुरुषनी श्रेष्ठता छे तो लोकोत्तम एवा धर्ममां तो विशेषे करीने तेनी श्रेष्ठता जाणवी.

तेने माटे दृष्टांत बतावे छे—

संवाहणस्स रन्नो, तइया वाणारसीयनयरिए ॥
कन्नासहस्स महिअं, आसी कीर रूपवंतीणं ॥ १७ ॥
तहविय सा रायसिरी, उल्लुट्टंती न ताइया ताहिं ॥
उयरट्ठिएण इक्केण, ताइया अंगवीरेण ॥ १८ ॥

गाथा १६—जेट्ठो. गाथा. १७—संवाहणस्स. वाणारसीए गाथा १८–उल्लट्टंती.

शब्दार्थ—" ते काळने विषे वाराणसी नगरीमां संबाधन नामना राजाने अधिक रूपवती एवी एक हजार कन्याओ हती, तथापि तेनी राजलक्ष्मी लुंटाती तेओ राखी शकी नहि; अने उदरमां रहेला एवा पण अंगवीर नामना एक पुत्रे ते राखी." १७–१८.

भावार्थ—वाराणसी नगरीमां राज करनारा संबाधन राजाने एक हजार पुत्रीओ अत्यंत रूपवंती हती, तथापि ते राजा गुजरी गयो त्यारे तेनी लुंटाती राजलक्ष्मीनुं रक्षण करवाने तेओ समर्थ थइ नहि; परंतु ते राजानी राणीना गर्भमां रहेला एक पुत्रना कारणथी तेनी राज्यलक्ष्मी लुंटाती नाश पामती रही गइ. अर्थात् ते पुत्र के जेनुं पाछळथी 'अंगवीर' नाम पाडवामां आव्युं हतुं तेना प्रताप वडे तेनुं रक्षण थयुं. आनी स्पष्टता तेना दृष्टांतवडे विशेष थइ शके तेम छे.

संबाधन राजानुं दृष्टांत नीचे प्रमाणेः—

'वाराणसी नगरीमां संबाधन नामनो एक राजा राज्य करतो हतो. तेने एक हजार पुत्रीओ हती; परंतु घणा उपायो कर्या छतां तेने पुत्र थयो नहीं. राजाए विचार्युं के–' पुत्र विना राजलक्ष्मी शा कामनी ? जेना घरमां पुत्र नथी तेनुं घर पण शून्य छे.' वेदमां पण कह्युं छे के–" पुत्र वगरना माणसनी सद्गति थती नथी अने स्वर्गमां तो ते कोइकाळ जइ शकतोज नथी, तेथी मनुष्यो पुत्रमुख जोइने स्वर्गे जाय छे." लोकोक्ति पण एवी छे के—

चोसठ दीवा जो बळे, बार रवी उगंत;
तस घर तोहे अंधारकुं, जस घर पुत्र न हुंत.

"जेना घरमां चोसठ दीवा बळता होय अने एकी वखते बारे सूर्य उदय थएला होय तेना घरमां पुत्र नथी तेना घरमां तो अंधारुंज छे." तेथी पुत्र विना राजलक्ष्मी कांइ कामनी नथी. आ प्रमाणे विचारीने राजाए अनेक मांत्रिक [illegible] अनेक प्रयोगो किधा पण कोइ पण उपाये पुत्र प्राप्त थयो नहि. कह्युं छे के—

प्राक्तनो नियतिनिश्चलाश्रयेण योऽर्थः
सोऽवश्यं भवति नृणां शुभोऽशुभो वा ॥
भूतानां महति कृतेऽपि हि प्रयत्ने ।
नाभाव्यं भवति न भाविनोऽस्ति नाशः ॥

[illegible] अर्थ प्राप्त थवा योग्य छे [illegible]
[illegible] एवा प्राणीओ अनेक प्रयत्नो करे तो [illegible]
[illegible] नाश थता नथी."

हवे राजा वृद्ध थयो. ए वखतमां कोइएक जीव पट्टराणीना उदरमां पुत्र-
ाणे आवीने उत्पन्न थयो; परंतु पुत्रमुख जोया वगरज राजा तो परलोकमां
ायो. पछी सर्व पौरजनो एकठा मळी विचार करवा लाग्या के–' हवे शुं थशे?
ुत्र विनानुं राज्य केवी रीते रहेशे ?' ए प्रमाणे विचारी सर्व नगरवासी लोको
ोकाकुल थया ते वखते शत्रुओए पण सांभळ्युं के–' संबाधन राजा अपुत्र मरण
ाम्यो छे.' तेथी तेओ सर्व एकठा मळी मोटुं लश्कर एकठुं करी सज्ज थइने
ाराणसी नगरी तरफ चाल्या. ते वात सांभळी बधा लोको त्रास पाम्या, अने
ोतपोताना घरनी अंदरथी धन काढवा लाग्या. ते वखते शत्रुओए कोइएक नि-
मित्तियाने पूछयुं के–'अमारो जय थशे के केम ?' ते निमित्तिये लग्नबळ जोइने
कह्युं के–'तमो सर्व मळीने जयनी अभिलाषाथी त्यां जवानी इच्छा करो छो, प-
रंतु संबाधन राजानी पट्टराणीना उदरमां रहेल गर्भना प्रभावथी तमारो पराजय
थशे, जय थशे नहि.' ए प्रमाणे सांभळीने सर्वेला वैरीओ पाछा वळ्या. नागरी
को खुशी थया अने कहेवा लाग्या के–'अहो गर्भमां रहेल पुत्रनुं महात्म्य केवुं
अद्भुत छे के जेथी सघळा शत्रुओ नासी गया.' गर्भस्थिति पूर्ण थतां पुत्रनो
जन्म थयो. अशुचिकर्म पूरुं कर्या पछी तेनुं 'अंगवीर्य' नाम पाडयुं. अनुक्रमे ते
युवावस्थामां आव्यो, अने तेणे लांबा वखत सुधी प्रजानुं पाळन कर्युं.

"हजार कन्याओथी पण राज्यनुं रक्षण थयुं नहि, परंतु गर्भस्थित पुत्र मा-
त्रथी रक्षण थयुं" एवो कर्मव्यवहारमां उपनय छे. धर्मव्यवहारमां एवो उप-
नय छे के–"सर्वत्र पुरुष एज श्रेष्ठ छे. तेथी साध्वीओए एक दिवसनी दीक्षा-
वाळा साधुनो पण विनय करवो." ए प्रमाणे पूर्वनी गाथा साथे संबंध छे. हजु
आगली गाथामां पण तेज बाबत स्पष्ट करी देखाडे छे.

महिलाण सुबहुयाणवि, मज्झाओ इह समत्त घरसारो ॥
रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो जहिं नत्थि ॥ १९ ॥

शब्दार्थ–"आ लोकने विषे पण ज्यां पुरुष–पुत्र नथी त्यां घणी स्त्री-
ओना मध्यमांथी पण समस्त घरनो सार राजपुरुषो लइ जाय छे." १९.

भावार्थ–अपुत्रनुं धन राजा लइ जाय एवो लोकमां प्रचार छे, तेथी जेना
कुळमां पाछळ पुत्र न होय तेनुं धन घणी स्त्रीओ अथवा पुत्रीओ होय छतां
पण राजा लइ जाय छे तेथी पुरुषनुंज प्रधानपणुं छे.

हवे आत्मसाक्षीए धर्म करवा विषे कहे छे—

किं परंजणबहुंजाणावणाहिं, वरं मप्पसक्खियं सुकयं॥
इह भरहचक्कवटी, पसन्नचंदो य दिठ्ठंतो ॥ २० ॥

शब्दार्थ–" हे आत्मा ! परजनने बहु जणाववाथी शुं ? आत्मसाक्षि सुकृत तेज श्रेष्ठ छे. अहीं भरत चक्रवर्ती अने प्रसन्नचंद्रनुं दृष्टांत जाणवुं." २०

भावार्थ–" में आ अनुष्ठान कर्युं' एम परजन एटले बीजाओने बहु जणाववाथी शो लाभ छे ? आत्मसाक्षिक धर्म करवो तेज श्रेष्ठ छे. आ विषय उपर भरत चक्रीनुं दृष्टांत छे के जेमणे यत्नवडे करेला आत्मसाक्षिक अनुष्ठानथी [illegible] सुखने प्राप्त कर्युं छे. प्रसन्नचंद्र राजर्षिनुं पण आ विषय उपरज दृष्टांत छे.

तेमां प्रथम भरतचक्रीनुं दृष्टांत कहे छेः––

अयोध्या नगरीमां ऋषभदेवना पुत्र 'भरत' नामे चक्रवर्ती थया हता. ज्यारे श्री ऋषभदेवस्वामीए चारित्र ग्रहण कर्युं ते वखते पोताना सो पुत्रोने पोतपोतानां नामवाळा देशो आप्या. 'बाहुबली' ने बहुलि देशमां तक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं अने भरतने अयोध्या नगरीनुं राज्य आप्युं. एक दिवस भरतराजा सभामां बेठेला छे ते वखते 'यमक' अने 'समक' नामना बे पुरुषो वधामणी देवाने माटे आस्थानना मुख्य द्वार पासे आव्या; प्रतिहारे भरत राजाने तेओनुं आगमन निवेदन कर्युं एटले भ्रूसंज्ञाथी द्वारपाळने आववा देवानो हुकम आपवाथी यमक अने समक सभामां आव्या. तेओ बंनेए हाथ जोडी आशीर्वाद पूर्वक राजानी स्तुति करी. पछी तेमांना यमके विज्ञप्ति करी के–' हे देव ! 'पुरिमताल[1]' नगरना शकट नामना उद्यानने विषे श्री ऋषभस्वामीने केवळज्ञान उत्पन्न थयु छे, ते वधामणी आपवा माटे हुं आव्यो छुं.' त्यार पछी समके कह्युं के–'हे देव ! एक हजार देवताओथी सेवायेलुं अने करोडो सूर्य जेवो प्रकाश आपतुं चक्ररत्न आपनी आयुधशाळामां उत्पन्न थयुं छे.' आ प्रमाणे बे माणसना मुखथी बे वधामणी सांभळीने भरत राजा अति हर्ष पाम्या. पछी तेमने जीवीत पर्यंत देतां अने भोगवतां खुटे नहि एटलुं धन आपीने ते बंनेनुं सन्मान कर्युं. हवे भरत विचार करवा लाग्या के–' मारे प्रथम कोनो उत्सव करवो उचित छे ? केवळज्ञाननो के चक्रनो ?' ए प्रमाणे विचार करतां पाछुं तेणे चिंतव्युं के–' मने धिक्कार छे के मारा [illegible] विचार्युं ? क्यां त्रण भुवनना दाता पिता क्यां ! अने मात्र संसारसुखनुं [illegible] [illegible] क्यां ! वळी तातनी पूजा करवाथी चक्रनी पूजा पण थइज गइ.' एम [illegible] निश्चय करी दादा [illegible] प्रमोदथी विकस्वर थयेला अने 'ऋष

1 अयोध्या नगरीनुं पुरिमताल नामे परुं हतुं

!" ए नामनो जप करता पछी पोताना पितामही ' मरुदेवा 'ने गज उपर
ने भरत राजा ऋषभ स्वामीने वंदन करवा चाल्या. मार्गमां भरते मरुदे-
र्युं के-" माता ! तमे स्वपुत्रनी समृद्धिने जुओ. तमे मने हमेशां कहेता
के-'मारो पुत्र स्वर्गं भटके छे अने दुःख अनुभवे छे, परंतु तुं तेनी संभा-
तो नथी. ' आ प्रमाणे दररोज मने ओळंभो आपता हताः पण हवे तमा-
त्रनुं ऐश्वर्य जुओ. "
ए अवसरे चोसठ सुरेंद्रोए एकठा थइने समवसरण रच्युं. करोडो देवदेवी-
एकठा मळ्यां. विविध प्रकारनां वाजिंत्रोना शब्दोथी गगनमंडळ गाजी रह्युं.
य गन्धर्वो साथे गीतगान पूर्वक प्रभु सिंहासन उपर बेसीने देशना आपवा
ा. ते वखते देवदुंदुभिनो ध्वनि अने जयजयना शब्दो सांभळीने मरुदेवा
कहे छे के-' आ कौतुक शुं छे ?' भरते कह्युं के-'आ तमारा पुत्रनुं ऐश्वर्य
मरुदेवा विचारे छे के-' अहो ! पुत्रे आटली बधी समृद्धि मेळवी छे ? ' ए
ग हर्षथी पूर्वक आनंदाश्रु आववाथी तेमनां बने नेत्रनां पडळ तुटी गयां
मने प्रत्यक्ष जोयुं जोइने विचार्युं के-" अहो ! आ ऋषभ आवुं ऐश्वर्य
वे छे ! परंतु पण मने एकवार संभारी पण नथी. हुं तो एक हजार वर्ष
पुत्रमोहथी दुःखित थइ अने पुत्रना मनमां तो मोहनुं किंचित् कारण पण
तुं नथी. अहो ! मोहनी चेष्टाने धिक्कार छे ! मोहांध माणसो कइ पण जा-
नथी, " ए प्रमाणे वैराग्यप्रपणाथी क्षपकश्रेणी उपर आरूढ थया अने आठ
नो क्षय करी अंतकृत केवली थइने मोक्षे गया. देवताओए महोत्सव कर्यो इंद्र
दे सर्व देवोए समवसरणमांथी त्यां आवीने मरुदेवा माताना शरीरने क्षीर-
रना प्रवाहमां वहेतुं मूक्युं. पछी शोकमग्न भरतने अग्रेसर करीने सौ समवस-
मां आव्या. भरत प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करीने यथायोग्य स्थाने बेठा अने
नी देशना सांभळी तेमनो शोक नष्ट थयो देशनाने अंते प्रभुने वांदी श्रावक
अंगीकार करी अयोध्यामां आव्या, अने पछी चक्रनो उत्सव कर्यो.

आठ दिवस गया पछी चक्र पूर्व दिशामां चाल्युं. भरत राजा पण देश
तवाने माटे चक्रनी पाछळ सैन्य सहित चाल्या. एकेक योजननुं दररोज
ाण करतां केटलेक दिवसे पूर्व समुद्रने किनारे आवी सैन्यनो पडाव नाख्यो.
भरते अष्टमनुं तप कर्युः अने मागध नामना देवनुं मनमां ध्यान करीने
त रह्या. त्रण दिवस पछी रथमां बेसी समुद्रना जळमां रथनी धरी पर्यंत
श करी पोताना नामथी अंकित बाणने धनुष्यमां सांधीने ते देवमति छोडयुं
बाण बार योजन जइने मगधदेवनी सभामां सिंहासन साथे अथडाइने भूमि
र पड्युं. बाणनुं पडवुं जोइ मगधदेव क्षोभायमान थइ गयो. पछी ते बाण

हाथमां लइ तेना परना अक्षरो वांच्या: एटले भरत चक्रवर्तीने आवेला मा कोपरहित थइ भेटणुं लइ परिवार सहित तेमनी सन्मुख चाल्यो. नजीक आवी ते चक्रवर्तीना चरणमां पड्यो ने बोल्यो के-' हे स्वामिन्! मारो अपराध क्षमा करो, हुं तमारो सेवक छुं; आटला दिवस सुधी हुं स्वामीरहीत हतो, हवे आपना दर्शनथी सनाथ थयो छुं. ' ए प्रमाणे कही, नमस्कार करी, भेट धरी, रजा लइने स्वस्थाने गयो. पछी भरतचक्रीए छावणीमां पाछा आवी अट्ठम तपनुं पारणुं कर्युं.

त्यारपछी पाछुं चक्र आकाशमां चाल्युं. सैन्य पण तेनी पाछळ चाल्युं. अनुक्रमे तेओ दक्षिण समुद्रने किनारे आव्या. पूर्ववत ते दिशाना स्वामी 'वरदामदेवने' पण जीत्यो. त्यारबाद पश्चिम दिशामां 'प्रभासदेवने' जीतीने चक्रे उत्तर दिशा भणी प्रयाण कर्युं. अनुक्रमे वैताढ्य पर्वत पासे आवीने चक्रीए अट्ठम तप करी 'तमिस्रा' गुफाना अधिष्ठायक 'कृतमालदेव'नुं मनमां ध्यान करीने स्थित रह्या. अट्ठम तपने अंते ते देव प्रत्यक्ष थयो अने तमिस्रा गुफानुं द्वार उघाड्युं सैन्य सहित भरत राजाए तमिस्रा गुफामां प्रवेश कर्यो. मणिरत्नना प्रकाशवडे सैन्य सहित आगळ चालतां 'निमग्ना' अने उन्निमग्ना नामनी बे नदीओ आवी. ते नदीओ चर्मरत्नवडे उतर्या. अने आगळ वाली गुफाना बीजा द्वारेथी सैन्यने बहार काढ्युं. हवे त्यां घणा म्लेच्छ राजाओ रहे छे तेओ एकठा थया अने चक्रीनी साथे युद्ध करवा लाग्या चक्रीए ते सघळाओने जीती लीधा. तेओ चक्रीना सेवको थया. त्यां आवेला उत्तर तरफना त्रणे खंडने ... चक्री पाछा वळ्या. मार्गे चालतां गंगाने तीरे सैन्यनो पडाव नाख्यो. त्यां निधिओ प्रगट थया नव निधाननुं स्वरुप आ प्रमाणे:—

"१ नैसर्प, २ पांडुक, ३ पिंगळ, ४ सर्वरत्न, ५ महापद्म, ५ काळ, ७ महाकाळ, ८ माणवक ने ९ शंख-ए प्रमाणे तेनां नामो छे. ते गंगाना मुखमां रहेला छे. आठ पैडांवाळा, आठ योजन उंचा, नव योजन विस्तारवाळा ने बार योजन लांबा मंजुषाने आकारे छे. तेना वैडूर्यमणिना कमाड (बारणा) कनकमय छे, विविध प्रकारनां रत्नोवडे परिपूर्ण छे, अने तेना अधिष्ठाता देव तेज नामना पल्योपमना आयुष्यवाळा होय छे."

चक्रीए गंगाने तीरे रहीने आठ दिवस सुधी ते निधान संबंधी उत्सव कर्यो. गंगानदीनो अधिष्ठायिका 'गंगा' नामनी देवी भरतचक्रीने पोताना आवासमां लइ गइ. त्यां तेनी साथे एक हजार वर्षपर्यंत भोगभोगव्या. त्यारपछी चक्र आगळ चाल्युं. एटले चक्रीए वैताढ्य पर्वत पासे आवी तेनी उपर रहेनार 'नमि' अने 'विनमि'

मना विद्याधरोने जीत्या. विनमि विद्याधरे पोतानी पुत्री चक्रीने आपी. ते रत्न थइ. ए प्रमाणे भरतचक्री साठ हजार वर्ष पर्यंत दिग्विजय करीने अयोध्यामां ग आव्या; ते षट्खंडाधिपति महा ऋद्धिमान थया. तेमनी ऋद्धिनुं स्वरुप कहे -चोराशी लाख हाथी, तेटलाज रथो, तेटलाज अश्वो. छन्नुकोटी पायदळ, श हजार देशो, बत्रीश हजार मुकुटबध राजाओ जेना सेवक छे, अडतालीश र पाटण, बोतेर हजार नगरो, छन्नुकोटी गामो, चौद रत्नो, नव निधि, साठ र वंशावळी कहेनारा भाटो, साट हजार पंडितो, दश कोटी ध्वजा धारण नारा, पांच लाख मशालची, वीश हजार सुवर्ण आदि धातुनी खाणो.पचीश र देवो जेना सेवको छे, अढार कोटी घोडेस्वार जेनी पाछळ चाले छे-आ णेनी ऋद्धि प्राप्त थइ छतां ते मनथी विरक्त रहेता हता. ए प्रमाणे घणालाख । व्यतीत थतां एकदा भरतचक्री पोतानी शृंगारशाळामां शरीरप्रमाण आदर्श च) मां पोतानुं रुप जोवा लाग्या. ते वखते दरेक अवयवनी सुंदरता निहाळतां ; आंगळीने वींटीरहित होवाथी अत्यंत शोभारहित लागती जोइने मनमां विचार वा लाग्या के-"अहो ! देहनी असारता ! परपुद्गलोथीज शरीर शोभे छे, ाना पुद्गलोथी शोभतुं नथी. अरे ! में शुं कर्युं ! आ असार देहनी खातर में घणा रंभो कर्या. आ असार संसारमां सघळु अनित्य छे. कोइ कोइनुं नथी. मारा ना भाइओने धन्य छे के तेमणे वीजळीना चमकारानी जेवां चंचल राज्यसुखने ो दइने संयम स्वीकार्युं. हुंतो अधन्य छुं, जेथी आ अनित्य एवा संसारीसुखमां ःयपणानी बुद्धिथी मोह पामेलोछुं. आ देहने धिक्कार छे ! अने सर्पनी फणा ा आ विषयोने पण धिक्कार छे ! हे आत्मा ! आ संसारमां तु एकलोज छे. बीजुं इ तारुं नथी." आ प्रमाणे विचार करतां परमपद पर आरोहण करवानी ःसरणी रुप क्षपकश्रेणीए आरूढ थया; अने चार घन घातिकर्मनो क्षय करीने वल केवळज्ञान प्राप्त कर्युं. ते अवसरे शासनदेवीए आवीने मुनिनो वेष अर्पण ों. ते साधुनो वेष धारण करीने तेमणे केवलीपणे पृथ्वी उपर विहार कर्यो, ने अनुक्रमे मोक्षसुख प्राप्त कर्युं. एटलामाटे आत्मसाक्षिक अनुष्ठानज फळदायी अन्य साक्षिक अनुष्ठान फळदायी नथी.

आ प्रमाणे अध्यात्मिक अनुष्ठानमां भरतचक्रीनुं दृष्टांत जाणवुं.

हवे प्रसनचंद्र राजर्षिनुं दृष्टांत कहे छे—

पोतनपुर नगरमां प्रसन्नचंद्र नामनो राजा हतो. ते अति धार्मिक, सत्यवादी तथा ायधर्ममां अद्वितीय निपुण हतो. ते एक दिवसे संध्याकाळे झरूखामां बेसी नगर-

नुं स्वरूप जोतो हतो. ते समये नाना प्रकारनां रंगवाळां वादळां थयां. संध्या रंग खील्यो. ते जोइ राजाने अति हर्ष थयो. पछी ते तेना तरफ पुनः पुः दृष्टि करवा लाग्यो. एटलामां ते संध्यास्वरूप क्षणिक होवाथी जोतांजोतां नाश पामी गयु. ते जोइ राजा विचार करवा लाग्यो के—अहो ! संध्याना सं सुंदरता क्यां गइ ! पुद्गलो अनित्य छे. संध्याना रंगनी पेठे आ देह पण अनित्य छे. संसारमां प्राणीओने कंइ पण सुख नथी. कह्युं छे के—

दुःखं स्त्रीकुक्षिमध्ये प्रथमसिह भवे गर्भवासे नराणाम्
बालत्वे चापि दुःखं मललुलितवपुः स्त्रीपयःपानमिश्रम् ।
तारुण्ये चापि दुःखं भवति विरहजं वृद्धभावोप्यसारः
संसारे रे मनुष्या वदत यदिसुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥

" माणसोने आ संसारमां प्रथम स्त्रीनी कुक्षिनी विषे गर्भवासमां दुःख होय छे, बाल्यावस्थामां पण माताना दुधना पानथी तेमज मळमूत्रथी शरीर खरडायेलुं रहेवाथी दुःख छे, युवावस्थामां पण विरहथी उत्पन्न थयेलुं दुःख छे, अने वृद्धभाव तो वदन असारज छे. माटे हे मनुष्यो ! जो आ संसारमां स्वल्प पण कांइ सुख होय तो कहो. "

ए प्रमाणे वैराग्यथी जेनुं मन रंजित थयुं छे एवो राजा चिंतवन करे छे के 'आ संसारमां वैराग्यनो साथे बरोबरी करी शके तेवुं कोइ पण सुख नथी.' कह्युं छे के

भोगे रोगभयं सुखे क्षयभयं वित्तेऽग्निभूभृद्भयम्
दास्ये स्वामिभयं गुणे खलभयं वंशे कुयोषिद्भयम् ।
माने म्लानिभयं जये रिपुभयं काये कृतांताद्भयम्
सर्वं नामभयं भवेऽत्र भविनां वैराग्यमेवाऽभयम् ॥

"भोगमां रोगनो भय, सुखमां क्षयनो भय, धनने विषे अग्नि ने राजानो भय, दासत्वमां स्वामीनो भय, गुणमां खळपुरुषनो भय, वंशमां कुनारीनो भय, मानने विषे तेनी हानि थवानो भय, जयने विषे रिपुनो भय अने देहने विषे यम राजानो भय होय छे. ए प्रमाणे आ संसारमां मनुष्योने सर्व भययुक्त होय छे. मात्र वैराग्यज एक भयरहित छे. "

ए प्रमाणे विचारी वैराग्यमां तत्पर थयेल राजाए पोताना बाल्यावस्थावाळा पुत्रने राज्य उपर बेसाडीने पोते दीक्षा ग्रहण करी. तत्काळ जेणे केशनो लोच कर्यो छे एवो ते राजा पृथ्वी उपर विहार करतां राजगृहीना उद्यानमां कायोत्सर्ग मुद्राथी उभो रह्यो. ते अवसरे श्रीमान वर्धमान स्वामि-एक गामथी बीजे गाम विहार करतां चौदहजार साधुओथी परिवृत थयेला, देवताओए निर्माण करेलां सोनानां कमलो उपर पोताना चरणोने धारण करतां राजगृह नगरना गुणशील नामना उद्यानमां समवसर्या, देवोए आवीने त्यां समवसरण रच्युं. वनपालके त्वराथी श्रेणिक राजा पासे जइने विज्ञप्ति करी के-'हे स्वामिन्! आपना मनने घणाज व्हाला श्री महावीर स्वामि वनमां समवसरेला छे.' ए प्रमाणे वनपालकनुं बोलवुं सांभळीने राजाने घणो हर्ष थयो. राजाए तेने कोटी द्रव्य अने सोनानी जीभ आपी. पछी श्रेणिक राजा मोटा आडंबरसहित प्रभुने वंदन करवा चाल्यो. सैन्यना अग्र भागे सुमुख ने दुर्मुख नामना बे चोपदारो चालता हता. तेओए प्रसन्नचंद्र मुनिने वनमां कायोत्सर्ग मुद्राए उभा रहेला जोया. प्रथम सुमुखे कह्युं के-'आ मुनिने धन्य छे के जेणे आवी मोटी राज्यलक्ष्मी तजी दइने संयम रूपी समृद्धि ग्रहण करेली छे. एना नाम मात्रनो उच्चार करवाथी पाप जाय तो पछी सेवा करवाथी जाय तेमां तो शुं कहेवुं!' पछी दुर्मुख बोल्यो के-'अरे! आ मुनि तो अधन्य अने महापापि छे. तु एने वारंवार शा माटे वखाणे छे? एना जेवो पापि तो कोइ नथी.' सुमुखे मनमां चिंतव्युं के-'अहो! दुर्जननो स्वभावज आवो होय छे के जे गुणोमांथि पण दोषनेज ग्रहण करे छे.' कह्युं छे के-

आक्रांतेव महोपलेन मुनिना शप्तेव दुर्वाससा
सातत्यं बत मुद्रितेव जतुना नीतेव मूर्छां विषैः।
बद्धेवातनुरज्जुभिः परगुणान् वक्तुं न शक्ता सति
जिह्वा लोहशलाकया खलमुखे विद्धेव संलक्ष्यते ॥

"मोटा पथ्थरथी दबायेली होय नहि! दुर्वासा मुनिथी शाप पामेली होय नहि! लाखथी निरंतर चोटाडी दीधेली होय नहि! विषथी मूर्छित थयेल होय नहि अथवा जाडा दोरडाथी बांधेली होय नहि! तेवी खल माणसनी जीभ पारकाना गुणो बोलवाने अशक्त होती सती लोढाना खीलाथी जाणे विंधेली होय नहि तेवी जणाय छे" वळी कह्युं छे के-

आर्योऽपि दोषान् खलवत्परेषां, वक्तुं हि जानाति परं न वक्ति।
किं काकवत्तीव्रतराननोऽपि, कीरः करोत्यस्थिविघट्टनानि ॥

“ सज्जन माणसने पण खल माणसनी पेठे पारकाना दोषो बोलतां आवडे छे पण ते बोलता नथी. शुं कागडानी माफक पोपट पण तीव्र चांचवाळो नथी! छे; छतां ते अस्थिना टुकडा करे छे ? नथी करतो. ”

पछी सुमुखे कह्युं–‘ हे दुर्मुख ! तुं आ मुनीश्वर महात्माने शामाटे निंदे छे?’ त्यारे दुर्मुखे कह्युं–“ अरे ? तेनुं नाम पण लेवा जेवुं नथी. कारणके आ मुनिए पांच वर्षना बाळकने राज्यगादी उपर बेसाडीने पोते दीक्षा लीधी छे; परंतु तेना वैरीओए एकठा थइने तेना नगरने लुंटयुं छे, तेना नगरवासी जनो आक्रंद अने विलाप करे छे. मोटुं युद्ध थाय छे. हमणां तेना शत्रुओ ते बाळकने हणीने राज्य ग्रहण करशे. आ सघळुं पाप तेना शिरे छे.” आ प्रमाणे सांभळीने ध्यानमां स्थित थयेला प्रसन्नचंद्र ऋषिए चिंतव्युं के–‘अरे ! हुं जीवतां जो मारा शत्रुओ मारा बाळकने मारीने राज्य ग्रहण करे, तो ए माननी हानि तो मारी पोतानीज छे.’ ए प्रमाणे चिंतवतां ध्यानथी चलित थइने मनमां शत्रुओनी साथे युद्ध करवा लाग्या; अति भयंकरपणाने पाम्या अने तेमां एकाग्र थवाथी रौद्र ध्यान ध्यावा लाग्या. मनवडेज शत्रुओने हणे छे, अने ‘में अमुक शत्रुने मार्यो ’ एवी बुद्धिथी ‘बहु सारुं थयुं’ एम मुखथी पण बोले छे. ‘ हवे बीजाने मारुं ए प्रमाणे तेम करीने पण मनथी युद्धमां प्रवर्ते छे. एवे समये हाथी उपर बेठेला श्रेणिके प्रसन्नचंद्र मुनिने जोया. एटले ‘ अहो ! आ राजर्षिने धन्य छे के जे एकाग्र मनथी ध्यान धरे छे.’ एम विचारी श्रेणिक राजाए गज उपरथी उतरी मुनिनी प्रदक्षिणा करीने तेमने वारंवार वांद्या अने स्तुति करी. पछी तेमने वांदी मनमां स्तुति करतो हाथि उपर चढी श्री महावीर स्वामी समीपे आव्यो. समवसरणमां जइने ‘पंचाभिगम’ साचवीने विधिथी जिनेश्वरने वंदन करीने बे हस्त जोडी आ प्रमाणे स्तुति करी—

अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य, देव त्वदीयचरणांबुजवीक्षणेन।
अद्य त्रिलोकतिलक प्रतिभासते मे, संसारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणः॥

“ हे देव ! तमारां चरणकमळना दर्शनथी मारां बन्ने नेत्रो आज सफळ थयां. हे त्रिलोकतिलक ! आज आ संसार वारिधि मने एक अंजलिप्रमाणज भासे छे.

१ [illegible] अभिगम अहीं आगळ

दिट्ठे तुहमुहकमले, तिन्नि विणट्ठाइं निरवसेसाइं।
दारिद्दं दोहग्गं, जम्मंतरसंचियं पावं ॥

" तमारुं मुखकमळ देखवाथी दारिद्र, दौर्भाग्य अने जन्मांतरसंचित पाप- ए त्रणे वानां सर्वथा नाश पाम्यां."

इत्यादि एकसो ने आठ काव्योथी जिनेन्द्रने स्तवीने ते योग्य स्थान उपर बेठो. पछी प्रभुए क्लेशने नाश करनारी धर्मदेशना शरु करी. देशनाने अंते श्रेणिक राजाए वीरस्वामीने पूछ्युं के-' हे प्रभु ! जे अवसरे में प्रसन्नचंद्र मुनिने वांद्या, ते अवसरे जो ते काळधर्म पामे तो तेनी गति क्यां थाय ? स्वामीए कह्युं के-'जो ते वखते मरण पामे तो सातमी नरके जाय.' फरी पूछ्युं ' हमणा काळ करे तो क्यां जाय ? भगवाने कह्युं के-' छट्ठी नरके जाय.' फरीथी श्रेणिके क्षणमात्र विलंब करीने पूछ्यु के-' हवे क्यां जाय ?' भगवाने कह्यु के-'पांचमी नरकभूमिए जाय.' क्षण पछी फरीथी पूछतां भगवाने कह्युं के-'चोथी नरक- भूमिए जाय.' ए प्रमाणे पुनः पुनः पूछतां ते ' त्रीजी, बीजी ने पहेली नरक- भूमिए जाय' एवो उत्तर भगवाने आप्यो. फरीथी श्रेणिक राजाए पूछ्युं के- ' हवे क्यां जाय ? ' त्यारे भगवाने कह्युं के-' प्रथम देवलोकमां जाय.' एम पुनः पुनः पूछतां ' ते बीजा त्रीजा चोथा, पांचमा, छट्ठा, सातमा, आठमा, नवमा, दशमा, अग्यारमा ने बारमा देवलोके जाय.' ए प्रमाणे अनुक्रमे ' नव ग्रैवेयक- मां अने पांच अनुत्तर विमानो पर्यंत ते जाय' एवो उत्तर श्रेणिक राजाए पूछतां भगवाने आप्यो. आ रीते सभामां प्रश्नोत्तर चालता हता तेवे समये आकाशमां देवदुंदुभिनो नाद सांभळीने श्रेणिके पूछ्युं के-' हे प्रभु! आ दुंदुभिनो नाद क्यां थाय छे ?' प्रभुए कह्युं के-' प्रसन्नचंद्र राजर्षिने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं; तेथी देवो दुंदुभि वगाडे छे अने जय जय शब्द करे छे. ' श्रेणिके पूछ्युं के-' प्रभु ! आ कौतुक शुं ते मारा समजवामां आवतुं नथी, माटे आनुं स्वरूप शुं छे ते जाणवा माटे हे स्वामिन ! तेनो सघळो वृत्तांत कहेवा कृपा करो. ' प्रभुए कह्युं के-' हे श्रेणिक ! सर्वत्र मन एज प्रधान छे.' कह्युं छे के-

मन एव मनुष्याणां, कारणं बंधमोक्षयोः।
क्षणेन सप्तमीं याति, जीवस्तंदुलमत्स्यवत् ॥

" मनुष्योने मन एज बंध तथा मोक्षनुं कारण छे. जीव क्षणमात्रमां तंदु- लमत्स्यनी जेम सातमी नरके जाय छे." वळी कह्युं छे के—

मणमरणेंदिअ मरणं, इंदियमरणे मरंति कम्माइं ।
कम्ममरणेण मुक्खो, तम्हा मणमारणं पवरं ॥

"मनने मारवाथी इंद्रियो मरे छे, इंद्रियोने मारवाथी कर्म मरे छे अने [illegible] मारवाथी मनुष्य मोक्षने पामे छे; माटे मनने मारवुं एज श्रेष्ठ छे."

वळी प्रभुए कह्युं के–" हे श्रेणिक ! जे अवसरे तें प्रसन्नचंद्रने वांद्या ते अवसरे तारा चोपदार दुर्मुखनां वचन सांभळीने ते ध्यानथी चलित [illegible] हता. अने शत्रुओनी साथे मनमां युद्ध करता हता. तुं तो एम जाणतो हतो [illegible] आ एक मोटा मुनीश्वर छे. ते एकाग्र मनथी ध्यान करे छे; परंतु तेणे तो [illegible] शत्रुओ साथे मनमां मोटुं युद्ध आरंभ्युं हतुं: तो ते युद्धथी तेणे सातमी [illegible] [illegible] योग्य आयुष्यनां पुद्गलो मेळव्यां हतां, पण ते पुद्गलो निकाचित [illegible] [illegible]. [illegible] तुं तो तेमने वांदीने अहीं आव्यो अने तेणे तो [illegible] [illegible] सर्व शत्रुओने हण्या अने हासो पण सघळां खपी [illegible] [illegible] उगामी दीधो; पण पोतानी पासे एके शस्त्र [illegible] [illegible] प्रसन्नचंद्रे विचार्युं के–'आ मारा मस्तक [illegible] [illegible] आ [illegible] मारुं.' [illegible]

र्यां. शुभ अध्यवसायना बळथी साते नरकभूमिने योग्य कर्मदलोनुं छेदन करीने उत्तरोत्तर सर्वार्थसिद्धि विमान पर्यंत जवा योग्य कर्मदलने मेळवीने अनुक्रमे द्र पामती शुभ परिणामनी धारावडे परमपदनी प्राप्तिमां परम कारण रूप क्षपक ीनो आश्रय करी, घातिकर्मनो नाश करी तरतज अति उज्वल केवळज्ञान मेळ- तेना प्रभावथी देवताओ एकठा थइ गीतगानादि पूर्वक तेनो महोत्सव करेछे."

आ प्रमाणे प्रभुना मुखथी सांभळीने श्रेणिक राजाए सविस्मय वारंवार ानुं मस्तक धुणाव्युं, अने वीरप्रभुने वदन करी संदेहरहित थइ स्वस्थाने ा. प्रभुए पण अन्यस्थाने विहार कर्यो. प्रसन्नचंद्र राजर्षिए पण घणां वर्षो ो केवलीपणे भूमि उपर विहार करीने अंते मोक्षपद प्राप्त कर्युं.

'आ दृष्टांत उपरथी सार ए ग्रहण करवो के आत्मसाक्षीए करेलुं आचरणज ापापना फळने आपनार छे.'

एकला वेषनी अप्रामाण्यता बतावे छे—

वेसोपि अप्पमाणो, असंजमपहेसु वट्टमाणस्स ।
किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २१ ॥

शब्दार्थ—" असंयममार्गमां वर्तता मुनिनो वेष पण अप्रमाण छे. केमके शुं परावर्तन करेल मनुष्यने विष खाधु सतुं मारतुं नथी? मारे छे."

भावार्थ—षट्कायना आरंभादिकमां वर्तता एवा मुनिनो रजोहरणादि वेष मनो नथी, केवल वेषवडे आत्मशुद्धि थती नथी. अहीं दृष्टांत कहे छे के— वेष मूकीने बीजो वेष लीधो होय ते जो विष खाय तो मरण न पामे? मे. तेम संक्लिष्ट चित्त रूप विष असंयम मार्गमां प्रवर्तनारा मुनिने मुनिवेष ां पण अनेक जन्म मरण आपे.

अहीं कोइ एम कहे के त्यारे तो वेषनुं शुं काम छे? केवळ भावशुद्धिज वी. तेने गुरु कहे छे के एम नहि, वेष पण धर्मनो हेतु होवाथी मुख्य छे आ प्रमाणे—

धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं ॥
उमग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवउव्व ॥ २२ ॥

शब्दार्थ—" वेष धर्मनुं रक्षण करे छे, वेषे करीने हुं दीक्षीत छुं एम धारीने कायछे, अने राजा जनपदने राखे तेम उन्मार्गे पडताने वेष राखेछे." २२

गाथा २१—असंजमपएसु. गाथा २२—जणवउव्व

भावार्थ-चारित्रधर्मनी जेम रक्षा करेछे अने जोकेपण प्रमादना पापमार्गमां आच-
रता हूं मुनिवेषधारकछुं-दीक्षीतछुं एवा विचारथी मारग उपरांत लज्जा पामे
छे-पाप करी शकतो नथी. वळी राजा जेम जनपदनी प्रजाने पोताना देशना लो-
कोनी रक्षा करेछे अर्थात् राजाना भयथी जेम प्रजावर्ग उन्मार्गे चाली शकतो नथी
प्रवर्त्यो होय तोपण राजभयथी पाछो निवर्ते छे; तेम वेष प्राणीने उन्मार्गे पडत
रोके छे-उन्मार्गे पडी शकतो नथी-पडयो होय तोपण पाछो ओसरे छे.

अप्पाण जाणइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो ॥
अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होइ ॥ २३ ॥

शब्दार्थ-"आत्माज यथास्थित पोताना आत्माने जाणे छे, माटे आत्मसा-
क्षिक धर्म (प्रमाण छे.) तेथी आत्माए जे क्रियानुष्ठान आत्माने सुखकारक
होय ते तेवा प्रकारेज करवुं के जे परभवमां हितकारक थाय." २३

भावार्थ-पोतानो आत्मा शुभ परिणाममां वर्तेछे के अशुभ परिणाममां वर्ते
छे तेनी खरी खबर पोताना आत्मनेज पडे छे, कारणके पारकी चेतोवृत्ति
छद्मस्थ जाणी शकता नथी; पण पोते जाणी शके छे.

जं जं समयं जीवो, आविसइ जेण जेण भावेण ॥
सो तम्मि तम्मि समये, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ २४ ॥

शब्दार्थ-" जीव जेजे समये जेवा जेवा भावे वर्तछे ते ते समये ते (तेवा
प्रकारना) शुभाशुभ कर्मने बांधे छे. " २४

भावार्थ-समय ते अति सूक्ष्म काळ समजवो. जेवा शुभ के अशुभ परिणाममां
आत्मा प्रवर्ततो होय तेवां शुभ के अशुभ कर्मो बांधेछे, अर्थात् शुभ परिणामे
वर्ततां शुभ कर्म बांधेछे, अशुभ परिणामे वर्ततां अशुभ कर्मो बांधेछे; ते कारण
माटे शुभ भावज करवो, गर्वादिथी दूषित भाव न करवो. ते संबंधे हवे कहे छे.

धम्मो मएण हुंतो, तो नवि सीउन्हवायविज्झडिओ ॥
संवच्छरमणसिओ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २५ ॥

शब्दार्थ-" जो अभिमाने करीने धर्म थतो होत तो शीत उष्ण वायु वि-
गेरेथी पराभव पामता अने एक वर्ष पर्यंत अशन विना रहेला बाहुबलि तेवा
प्रकारनो क्लेश न पामत." २५

गाथा २४—१ आविसइ. २ आवसइ. - आसक्तो भवति.
गाथा २५.-जत्तो अहमिओ मणसिओ तो अणसिओ-अनशितः-अशनं विना स्थित

भावार्थ—एक वर्ष पर्यंत आहाररहित उपवासी रह्या छतां अने अनेक प्रकारना परिसहो सहन कर्या छतां 'हुं मारा नाना भाइओने वंदना केम करुं?' एवुं अभिमान हतुं त्यांसुधी बाहुबळिने केवळज्ञान न थयुं. अने मान तज्युं के तरत थयुं;माटे अभिमानवडे धर्म थइ शकतो नथी. अहीं बाहुबलिनुं दृष्टांत जाणवुं ते आ प्रमाणे—

बाहुबलिनुं दृष्टांत.

भरतचक्रीए छ खंडनो विजय कर्या पछी पोताना अठाणुं भाइओने बोलाववाने तेणे दूतो मोकल्या. दूतोए जइने कह्युं के—'आपने भरत राजा बोलावे छे,' तेथी सघळा बंधुओ एकठा थइ विचार करवा लाग्या के—'भरत लोभ रूप पिशाचथी ग्रस्त थइ मत्त बनेलो छे. तेणे छ खंडनुं राज्य प्राप्त कर्युं छे छतां तेना लोभनी तृष्णा शांत थती नथी. अहो केवी लोभांधता!' कह्युं छे के—

लोभमूलानि पापानि, रसमूलानि व्याधयः ।
स्नेहमूलानि दुःखानि, त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भव ॥

"लोभ पापनुं मूळ छे, रस (स्वाद) व्याधिनुं मूळ छे, अने स्नेह दुःखनुं मूळ छे; माटे ए त्रणे वानांने त्यजीने सुखी था."

वळी कह्युं छे के—

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ता ।
कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा॥

"अमे भोग भोगव्या नहि पण अमे जाते भोगवाया, अमे तप कर्युं नहि पण अमे तप्त थया, काळ गयो नहि पण अमे गया अर्थात् अमारी वय गइ,अने तृष्णा जीर्ण थइ नहि पण अमे जीर्ण थया अर्थात् अमारी वय जीर्ण थइ."

"एटला माटे बलात्कारथी पण ते आपणुं राज्य ग्रहण करशे अने आपणे एनी सेवा करवी पडशे; माटे तेनी सेवा करवी के नहि?" आ प्रकारना विचारने अंते 'तेनी सेवा करवी नहि' एवुं दरेक भाइए कबुल कर्युं—मुकरर कर्युं. पछी सघळा भाइओ श्रीऋषभस्वामी पासे पोतानो वृत्तांत निवेदन करवा गया. प्रभुने वंदन करी हाथ जोडीने विज्ञापना करी के—"हे प्रभु! भरत मत्त थयोछे अने ते अमारुं राज्य ग्रहण करवाने उद्यक्त छे; माटे अमारे क्यां जवुं? अमे तो आपे आपेला एक एक देशना राज्यथी पण संतुष्ट छीए; अने भरत तो छ खंडनुं राज्य मळ्या छतां पण संतुष्ट थतो नथी." एवां तेमनां वचन सांभळीने प्रभु बोल्या

के–" हे पुत्रो ! परिणामे नरकगतिने आपनारी ए राज्यलक्ष्मीथी शुं वि छे ? आ जीवे अनंतीवार राज्यलक्ष्मी अनुभवेली छे, तो पण आ जीव तृप्त थये नथी. आ राज्यलीलानो विलास स्वप्न तुल्य छे" कह्युं छे के—

स्वप्ने यथायं पुरुषः प्रयाति, ददाति गृह्णाति करोति वक्ति।
निद्राक्षये तच्च न किंचिदस्ति सर्वं तथेदं हि विचार्यमाणम्॥

" आ पुरुष (जीव) जेम स्वप्नने विषे प्रयाण करे छे, आपे छे, ग्रहण करे छे, कांइ कार्य कांइ करे छे अथवा बोले छे, पण निद्रानो क्षय थतां जेम तेमांनुं होतुं नथी तेम विचार करतां आ सघळुं–संसारी पदार्थमात्र तेवाज छे. "

वळी—

संपदो जलतरंगविलोला, यौवनं त्रिचतुराणि दिनानि।
शारदाभ्रमिव चंचलमायुः, किं धनैः कुरुत धर्मसनिध्यम्॥

" संपत्तिओ जळनां तरंगो जेवी चपळ छे, यौवन त्रण चार दिवसनुंज छे अने आयुष्य शरद ऋतुना मेघनी पेठे चलित छे, तो धनथी शुं विशेष छे ! सुत्य एवो धर्मज करो. "

" माटे हे पुत्रो ! तमारे आटलो बधो मोहविलास शो ! कोना पुत्रो ? राज्य ? कोनी स्त्री ? कोइ पण साथे आववानुं नथी. " कह्युं छे के–

द्रव्याणि तिष्ठंति गृहेषु नार्यो, विश्रामभूमौ स्वजनाः श्मशाने
देहश्चितायां परलोकमार्गे, कर्मानुगो याति स एव जीवः

" द्रव्य तो घरमांज पड्युं रहे छे, नारी विश्रामभूमि सुधी आवे छे, स्वजन स्मशान सुधी आवे छे, अने छेवट देह चिता सुधी रहे छे. पछी परलोकमां कर्म सहित जीवज एकलो जायछे."

" माटे तमे आ विनाशी राज्य लक्ष्मीने तजो अने अमर एवुं मोक्षराज्य मेळवो."

आ प्रमाणेनी प्रभुनी देशना सांभळीने भरतना भाईओए दीक्षा लीधी अने निर्मळ चारित्र पाळवा मांड्या. दूतोए आवीने भरतने ए हकीकत निवेदन करी. भरत चक्रवर्तीए ते भाईओना पुत्रोने बोलावीने तेमना पिताओनुं राज्य आप्युं.

हवे भरत राजा अयोध्या नगरीमां आव्या त्यां चक्र आयुधशालामां प्रवेश करतुं नथी. तेथी सुषेण सेनापतिए तेमनी समीपे आवीने जणाव्युं के 'हे स्वामी! चक्र आयुधशालामां प्रवेश करतुं नथी.' भरतचक्रीए पूछ्युं के–'तेनुं शुं कारण छे?' सुषेण सेनापतिए कह्युं के–'स्वामिन! हजु पण कोइ शत्रु रह्यो होय तेम जणाय छे.' चक्रीए कह्युं के–'आ छखंडमां तो मारा माथा उपर कोइ शत्रु नथी.' सुषेणे कह्युं के–"आपनो नानो भाइ बाहुबलि आपनी आज्ञा मानतो नथी. भाइ छतां पण जो मोटा भाइनी आज्ञा माने नहि तो तेने शत्रुज समजवो. आज्ञा पोताना घरमां पण चालती नथी ते स्वामी शेनो? तेथी तेने आज्ञा-करवो जोइए." भरत राजाए विचार्युं के–'मारा भयथी मारा रायळा भाइओए चारित्र ग्रहण कर्युं छे, हवे बाहुबलि रूपे मारे एकज भाइ रहेलो छे अने ते पण अनुज धु छे तो तेना उपर शुं कराय?' सुषेणे कह्युं के–"स्वामिन! आ बाबतमां चार न करवो. गुणहीन भाइथी शो लाभ छे? सोनानी छरी कांइ पेटमां मराय नहि. माटे दूत मोकलीने तेने अहीं बोलावो; परंतु हुं धारुं छुं के ते कोइ पण रीते अहीं आवशे नहि." एवां सुषेणनां वचनथी क्रोधित थयेल भरते सुवेग नामा दूतने बोलावीने कह्युं के–'तुं तक्षशिला नगरीमां मारा नाना भाइ बाहुबलि पासे जा अने तेने अहीं बोलावी लाव' आ प्रमाणे भरतचक्रीनां वचन सांभळीने पुण्यनी माफक तेमनी आज्ञा माथे चडावी रथमां बेसीने परिवार सहित ते चाल्यो. मार्गे जतां तेने घणां अपशुकन थया; परंतु ते अपशुकनोए वार्यो स्वामीनी आज्ञा पाळवामां उत्सुक थयेलो ते अविच्छिन्न चाल्यो. केटलेक ते बहलीदेशमां पहोंच्यो. त्यांना लोकोए तेने पूछ्युं के–'तुं कोण छे? क्यां जाय छे?' सुवेगना अनुचरोए कह्युं के–'आ सुवेग नामनो भरत रानो दूत छे अने ते बाहुबलिने बोलाववा माटे जाय छे.' त्यारे लोकोए फरीथी कह्युं के–'ए भरत कोण छे?' सुवेगना सेवकोए कह्युं के–'ते छखंडनो धणी छे, जगतनो स्वामी छे, अने ते लोकोमां पण प्रख्यात छे.' त्यारे ते लोको बोल्या के–"आटला दिवस पर्यंत तो अमे तेने सांभळ्यो नथी के ते क्यां रहे छे? अमारा देशमां तो स्त्रीओना स्तननी कंचुकी उपर भरत होय छे तेने अमे भरत तरीके सांभळीए छीए, परंतु भरत राजा तो कोइ सांभळ्यो नथी. अमारो राजा क्यां! अने ए भरत क्यां! अमारा स्वामीना भुजदंडप्रहारने सहन करे तेवो आ दुनियामां कोइ नथी." आ प्रमाणे लोकोना मुखथी बाहुबलिना बळनो उत्कर्ष सांभळीने चकित थतो सतो सुवेग अनुक्रमे तक्षशिलाए पहोंच्यो; नगरीमां दाखल थयो अने बाहुबलिना सभामंडप पासे आव्यो. द्वारपाळे राजानी आगळ निवेदन कर्युं. तेनी आज्ञाथी दूत रथमांथी उतरी बाहुबलिनी स-

मीपे जइ तेने पगे लाग्यो. बाहुबलिए दूतने पोताना भाइना कुशल समाचार आदि पूछतां दूते कह्युं के–"तमारो भाइ भरत कुशल छे, अयोध्या नगरी कुशल छे अने तेमना सवाक्रोटी पुत्रो पण कुशल छे. जेना घरमां चौद रत्न अने नव निधि आदि मोटी ऐश्वर्यसंपत्ति छे तेनुं अकुशल करवाने कोण शक्तिवान छे? जोके तेणे सर्व संपत्ति प्राप्त करी छे तथापि तेने स्वबन्धुनां दर्शननो लाभ थ वानी घणी उत्कंठा छे. माटे तमे त्यां आवीने तमारा समागमथी उत्पन्न थ सुखवृद्धिथी तेने अति प्रमुदित करो; कदि जो तमे नहि आवो तो ते तमारा उ कुपित थइने तमने घणी पीडा पमाडशे. जेनी बत्रीश हजार राजाओ सेवा क तेनी चरणसेवाथी तमारो कोइ पण रीते उपहास (मश्करी) नथी, पांच माण... साथे भोगववुं ते दुःख नथी' एवी लोकोक्ति छे; तेथी मान त्यजोने त्यां चालो."

एवां दुतनां वचन सांभळीने बाहुबलि अति क्रोधायमान थइ ललाटमां त्रिवलि चडावी भुजास्फोट करीने बोल्या के–"अरे दुत! भरत कोण मात्र छे? तेनां चौद रत्नो शुं मात्र छे? अने तेना सेवको पण कोण मात्र छे? में बाल्यवस्थामां भरतने गंगाकांठे दडानी माफक आकाशमां उछाळ्यो हतो अने पछी गगनमांथी पडतां मेंज तेने मारा हाथमां झीली लीधो हतो, ते शुं भरत भूली गयो? मारं ते बल तेने विस्मृत थयुं होय तेम जणाय छे, जेथी तने अहीं मोकल्यो छे. आ टला दिवस सुधी तो में पिता तुल्य गणीने मोटा भाइनी आराधना करीछे; पण हवे तो हुं तेनी उपेक्षा करुं छुं. केमके गुणहोन अने लोभी एवा मोटा भाइथी पण शुं! तेणे अट्ठाणुं नाना भाइओनां राज्यो लइ लीधां अने तेओए तो बीक पणाने लीधे लोकापवादथी डरी राज्य त्यजीने संयम ग्रहण कर्युं, परंतु हुं तेने नहि सहन करुं. मारो भुजप्रहार केवळ भरतज सहन करशे, पण ते स करवा माटे अन्य कोइ आवशे नहि, माटे तुं जा. दुत होवाथी तुं अवध्य तेथी मारी दृष्टिथी तत्काळ दूर था."

आ प्रमाणे क्रोधथी लालचोळ नेत्रवाळु सूर्यमंडळनी माफक उद्दीप्त तेनुं रूप जोइने सुवेग भय पामी धीमे धीमे त्यांथी बहार नीकळयो अने बनो मानभंग थइ रथमां बेसी अयोध्या तरफ चाल्यो. मार्गमां बहुली देशं ... हाळमां तेणे आ प्रमाणे लोकोनां वाक्यो सांभळ्यां–"अरे! भरत कोण छे ... अमारा स्वामीनी साथे युद्ध करवाने इच्छे छे? परंतु तेना जेवो कोइ मूर्ख ... नथी के जेणे सूतेला सिंहने जगाड्यो छे." ए प्रमाणे लोकोनां वाक्यो ... सुवेग विस्मित थइने विचारवा लाग्यो के–"अहो! आ देशना लोको ... ... परंतु तेमना स्वामीनोज प्रभाव छे, तेओनो प्रभ ... ... घणो छे!

…भरते आ शुं कर्युं ! मेणे ठीक न कर्युं, अयोग्य कर्युं." ए प्रमाणे विचार करतो …ने म्होंकोने भय पमाडतो सुवेग केटलेक दिवसे अयोध्या नगरीए पहोंच्यो.

तेणे सभामां जइने सर्व हकीकत भरत चक्रीने निवेदन करी. छेवटे तेणे …युं के—'ए तमारो नानो भाइ तमने तृणवत् गणे छे, वधारे शुं कहुं !' एवा दु-…ा शब्दो सांभळीने सैन्य सहित भरत चक्रीए ते तरफ प्रयाण कर्युं. भरतनी मोटी …ना चाली. तेथी दिग्मंडळ पण धुजवा लाग्युं. तेना सैन्यनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे—

दिग्चक्रं चलितं भयाज्जलनिधिर्जातो महाव्याकुलो ।
पाताले चकितो भुजंगमपतिः क्षोणिधराः कंपिताः ॥
भ्रांताः सुपृथिवी महाविषधरा क्ष्वेडं वमत्युत्कटम् ।
वृत्तं सर्वमनेकधा दलपतेरेवं चमूनिर्गमे ॥

"दिगमंडळ कंपवा लाग्यु, भयथी समुद्र आकुळव्याकुळ थयो, पातालमां …नाग चकित थयो, पर्वतो कंपायमान थया, पृथ्वी भमवा लागी, मोटा विष-…ो उत्कट विषनुं वमन करवा लाग्या; सेनापतिनुं सैन्य चालतां अनेक प्रकारे …प्रमाणे थवा लाग्युं."

अढारकोटी घोडेस्वारोनुं लश्कर एकठुं करी भरत राजा पोताना हस्तीरत्न …र स्वार थइने बाहुबलिने जीतवा माटे चाल्यो. केटलेक दिवसे ते बहुली …मां पहोंच्यो.

भरत आव्यो छे एवुं बाहुबलिए पण सांभळ्युं एटले ते पोताना त्रण लाख पुत्रो-… परिवृत थइ सोमयशा नामना पोताना पुत्रने सेनाधिपति बनावीने मोटी सेना …हित सामे नीकळ्यो. बन्ने सैन्यो सामसामा मळ्यां. बंने सैन्यना चोराशी ह-…र रणतुरीना अवाजो थवा लाग्या. भेरीओना भांकारोथी अने वाजिंत्रोना श-…ोथी कान उपर पडतो शब्द पण न संभळावा लाग्यो. पछी उद्धत, रणभूमिमां …कट, अनेक हस्तीओनी घटामां जेओए प्रवेश करेलो छे तेवा, सिंहनुं पण मर्दन …नारा अने जेओनो कीर्तिपट चारे तरफ फेलायेलो छे एवा योद्धाओए युद्ध …कर्युं. योद्धाओना वीरशब्दो थवा लाग्या. आखुं जगत शब्दमय भासवा ला-…. अश्वोनी खरीथी उडती रजवडे घेरायलुं सूर्यमंडल वायुसमूहनी अंदर रहेला …क पलाश पत्रनी जेवुं देखावा लाग्युं. ते वखते त्यां आ प्रमाणे युद्ध थवा लाग्युं.

एके वै हन्यमाना रणभुवि सुभटा जीवशेषाः पतन्ति
ह्येके मूर्छाप्रपन्नाः स्युरपि च पुनरुन्मूर्छिता वै पतन्ति ।

मुंचन्त्येकेऽट्टहासान्निजपतिकृतसन्मानमाद्यं प्रसादं
स्मृत्वा धावंति मार्गे जितसमरत्वयाः प्रौढिवंतो हि भक्त्या

"केटलाएक सुभटो रणभूमिमां हणावाथी जीवशेष थइने पडे छे, मूर्छित थयेला केटलाएक सुभटो शुद्धिमां आवीने पाछा मूर्छित थाय छे, केटलाएक सुभटो अट्टहास करे छे अने केटलाएक पोताना स्वामीए करेला सन्मानने तेमज प्राथमिक प्रसादने संभारीने युद्धनो भय दुर करी भक्तिवडे प्रौढ बनी रणमां दोडे छे." ए प्रमाणे मोटा युद्धमां केटलाएक योद्धाओ हाथीओना झुंडने पग पकडी आकाशमां फेरवे छे, केटलाएक उछळता योद्धाओने पकडीने भूमि पर पाडे छे, केटलाएक सिंहनाद करे छे अने केटलाएक हस्तना आस्फोटनथी वैरीओनां हृदयने फाडी नाखे छे. ए प्रमाणे स्वामीए भ्रकुटीसंज्ञाथी उत्तेजित करेला सुभटोए उत्कट युद्ध आरंभ्युं. कह्युं छे के-

राजा तुष्टोपि भृत्यानां, मानमात्रं प्रयच्छति ।
ते तु सन्मानमात्रेण, प्राणैरप्युपकुर्वते ॥

" राजा संतुष्ट थतां सेवकोने मात्र मान आपे छे. पण सेवको तो मानथी पोताना प्राण आपीने बदलो वाळे छे."

रणमां एक मित्र बीजा मित्रने कहे छे के-'हे मित्र ! बीकण ना था; रणके युद्धमां तो बंने प्रकारे सुख छे. जीत मेळवशुं तो आलोकमां सुख छे; मृत्यु थशे तो परलोकमां देवांगनाना आलिंगननुं सुख प्राप्त थशे.' कह्युं छे

जिते च लभ्यते लक्ष्मीर्मृते चापि सुरांगना ।
क्षणविध्वंसिनी काया, का चिंता मरणे रणे ॥

" रणमां जीतवाथी लक्ष्मी प्राप्त थाय छे अने मरवाथी देवांगना प्राप्त थाय छे; आ काया क्षणमां नाश पामे एवी छे, तो युद्ध करतां मृत्युनी चिंता शा माटे राखवी ?"

ए प्रमाणे युद्ध थतां बार वर्ष व्यतीत थयां, तो पण तेमांथी एकेनुं सैन्य हठयुं नहि. ते प्रसंगे करोडो देवो ते युद्ध जोवाने माटे गगनमंडलमां आव्या हता. तेमां इंदर सौधर्मेन्द्रे आवीने विचार कर्यो के-'अहो! कर्मनी गति विचित्र छे ! के जेथी ते सगा भाइओ अंशमात्र राज्य मेळववाने माटे कोटी मनुष्योनो विनाश करे छे. माटे हुं त्यां जइने युद्धने अटकावुं.' एवो विचार करी इंद्र आ भरतने कहे छे-" हे छ खंडना अधिपति! जेणे अनेक राजाओने किंकर

ध्या छे एवा हे भरत राजा ! आ शुं आरंभ्युं छे ? मात्र राज्य कारणमां तमे जगतनो शा माटे संहार करो छो ? श्रीऋषभदेवे लांबा वखतथी पाळेल प्रजानो क्षय केम करवा मांड्यो छे ? सुपुत्रने आवुं आचरण घटतुं नथी. सुपुत्रने तो पिताए जेप्रमाणे आचरेलुं होय ते प्रमाणे आचरवुं-वर्तवुं जोइए;माटे हे राजेन्द्र! जनना संहारथी तमे निवृत्त थाओ." भरते कह्युं के-"तातना भक्त एवा आपे कह्युं ते सत्य छे. हुं पण ते जाणुं छुं, परंतु शुं करुं? चक्र आयुधशाळामां पेसतुं नथी. तेथी बाहुबलि मात्र एकवार मारी समीपे आवी जाय तो पछी मारे बीजुं कांइ कार्य नथी. तेनुं राज्य लेवानी मारे जरुर नथी; माटे तमो त्यां जइने मारा बंधुने समजावो." एवां भरतनां वचनो सांभळीने शक्रेन्द्र बाहुबलि पासे गया. बाहुबलिए तेमनुं घणुं सन्मान कर्युं अने कह्युं के-'हुकम करो, आपने आववानुं शुं प्रयोजन छे ?' इन्द्रे कह्युं के-'तमे पितृ तुल्य मोटा भाइनी साथे युद्ध करो छो ए तमने घटतुं नथी, तेथी तमे तेनी पासे जइने नमो, अपराधनी क्षमा मागो अने लोकसंहारथी निवृत्त थाओ.' बाहुबलिए कह्युं के-'एमां दोष भरतनो छे, अहींआं तेने कोणे बोलाव्यो हतो ? ते अत्रे शामाटे आव्यो छे ? अतृप्त एवा तेने लज्जा नथी. ते सर्व बंधुओनां राज्यो ग्रहण करीने हवे मारुं राज्य लेवा आव्यो छे; परंतु ते जाणतो नथी के सर्व दरोनी अंदर कांइ उंदरो होता नथी; माटे हुं पाछो हठनार नथी; कारणके मानहानि करतां प्राणहानि वधारे सारी कह्युं छे के—

अधमा धनमिच्छंति, धानमानौ च मध्यमाः ।

उत्तमा मानमिच्छंति, मानो हि महतां धनम् ॥

"अधम लोको धनने इच्छे छे, मध्यम लोको मान अने धनने इच्छे छे, उत्तम लोको मानने ज इच्छे छे, कारणके मान ए मोटाओनुं धन छे." वळी—

वरं प्राणपरित्यागो, ना मानपरिखंडनम् ।

मृत्युस्तत्क्षणिका पीडा, मानखंडे दिने दिने ॥

"प्राणनो त्याग करवो ए वधारे सारो छे, पण मानखंडन सारुं नथी. कारणके मृत्यु तेज क्षणे मात्र पीडा आपे छे, पण मानखंडन तो दररोज पीडा करे छे."

ए प्रमाणे बाहुबलिनुं निश्चयवाळुं वचन सांभळीने इन्द्रे कह्युं के-"जो एवोज आग्रह होय तो तमारे बंने भाइओएज युद्ध करवुं, आ लोकसंहार शामाटे करो

छो ?' बाहुलिए ते वात कबूल करी. पछी दृष्टि पांच प्रकारनां युद्धो स्थापित कर्यां दृष्टियुद्ध, वाग्युद्ध, बाहुयुद्ध, मुष्टियुद्ध अने दंडयुद्ध. भरते पण ए प्रमाणे कबूल कर्युं. पछी बने भाइओ सैन्यने युद्ध करतुं बंध करीने सामसामा आव्या.

प्रथम दृष्टियुद्ध शरु थयुं. परस्पर दृष्टि साथे दृष्टि मळतां प्रथम भरतचक्रीना नेत्रमां अश्रुजळ आवी गयां. तेथी साक्षीभूत देवताओए कह्युं के–'चक्री हार्या अने बाहुबलि जीत्या' एम पांचे युद्धोमां बाहुबलि जीत्या. एटले निलज्ज थयेल भरते क्रोधे मर्यादा मूकी चक्रने छोड्युं. त्यारे बाहुबलिए कह्युं के–'ए प्रमाणे न करो. सत्पुरुषोए मर्यादानो त्याग करवो ए योग्य नथी.' छतां पण तेणे बाहुबलि उपर चक्र मूक्युं, एटले बाहुबलिए मुष्टि उगामीने विचार कर्यो के–'आ मुष्टिवडे चक्र सहित भरतने चूर्ण करी नाखुं.' एटलामां चक्र तो बाहुबलि पासे आवी त्रण प्रदक्षिणा करीने पाछुं वळ्युं. कारणके गोत्रमां चक्र चालतुं नथी. पछी बाहुबलिए चिंतव्युं के–'आ वज्र जेवी मुष्टि वडे माटीना वासणनी माफक भरतने चूर्ण करी नाखुं.' वळी तेणे विचार कर्यो के–"अहो ! में अंशमात्र सुखने अर्थे आ बांधवनो नाश शामाटे चिंतव्यो ? जेने अंते नरक प्राप्त थाय छे एवा राज्यने धिक्कार छे! विषयोने धिक्कार छे! मारा नाना भाइओने धन्य छे के जेओए अनर्थहेतुक राज्यने तजी दइने संयम ग्रहण कर्युं छे." आ प्रमाणे जेना हृदयमां वैराग्य उत्पन्न थयो छे एवा बाहुबलिए उगामेली मुठी पोताना माथा उपर पाछी वाळीने पंचमुष्टि लोच कर्यो; ते वखते देवताए रजोहरण विगरे साधुनो वेष तेने अर्पण कर्यो. बाहुबलिए स्वयमेव चारित्र ग्रहण कर्युं.

पछी जेणे साधुनो वेष ग्रहण करेलो छे एवा पोताना भाइने जोइने भरत पोते आचरेला कर्मथी लज्जा पाम्यो एटले बंने नेत्रमांथी अश्रु वर्षावतो वारंवार तेना चरणमां पड्यो अने बोल्यो के–'तने धन्य छे ! मारो अपराध क्षमा कर अने आ राज्यलक्ष्मी ग्रहण करवानी कृपा कर.' बाहुबलि मुनिए कह्युं के–'आ राज्यलक्ष्मीनो विलास अनित्य छे, यौवन अनित्य छे अने शरीर पण अनित्य छे, तेमज आ विषयो परिणामे दुःख आपनारा छे.' इत्यादि उपदेश आपवा वडे भरतने वैराग्यवान करीने बाहुबलि मुनि तेज स्थाने ध्यानमुद्राथी उभा रह्या. तेमणे मनमां विचार कर्यो के–'हुं छद्मस्थ होवाथी दीक्षाए वडेरा एवा लघु बन्धुओने केम जइने वंदन करुं ?' ए प्रमाणे मानथी उन्नत ग्रीवावाळा थइ कायोत्सर्ग धारण करीने त्यांज उभा रह्या.

भरतचक्री तेमने वांदी सोमयशाने बाहुबलिनुं राज्य आपीने स्वस्थाने गया. बाहुबलिए पण एक वर्ष पर्यंत शीत, वात, आतप आदि परीसहोने सहन

ध्यानथी हारेला आत्मा रूपा वेशं पोतानुं शरीर फरी नाख्युं. तेनुं शरीर [illegible] ओथी नीरस थयुं. तेना कानमां रहेली शुळीओ उगी नीकळी. तेनी आस-पास [illegible] भरा गया. तेनी दाढी दिशेरेना वेशोमां पक्षीओए माळा नां-खीने प्रसव कर्यो.

वर्षने अंते भगवान ऋषभदेवे बाहुबलिने प्रतिबोध करवाने माटे ब्राह्मी [illegible]ने सुंदरी नामनी तेनी बे बहेनोने मोकली. भगवाने तेमने कह्युं के-' तमारे [illegible]यां जइने ए प्रमाणे कहेवुं के-' हे बन्धु ! हाथी उपरथी उतरो.' ते बहेनो बाहु-बली समीपे जइ तेने वांदी ए प्रमाणे बोली के-' हे भाइ ! हाथी उपरथी उत-रो.' ए प्रमाणेनां पोतानी बहेनोनां वचन सांभळी ते मनमां विचार करवा लाग्या के-" में सर्व संगनो त्याग कर्यो छे तो मारे हाथी क्यांथी ? मारी बहे-नो आ शुं कहे छे ? अरे ! मे जाण्युं. हुं मान रूपी हाथी उपर चडयो छुं, तेथी [illegible] बहेनुं कहेवुं सत्य छे. अरे ! आ चित्तने धारण करनार एवा मने धिक्कार छे ! [illegible] ते नाना भाइओ मारे वंद्य छे. तेथी तेमने वांदवाने हुं जाउं." ए प्रमाणे निश्चय करीने चरण उपाडतांज तेमने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी प्रभु पासे [illegible] वांदीने केवलज्ञानीओनी सभामां बेठा. माटे "मदथी धर्म थतो नथी ए यो-ग्य कह्युं छे. मुमुक्षुए धर्मकर्ममां विनयज करवो. पण मान राखवुं नहि." आ कथानो ए उपदेश छे.

निअगमइ विगप्पिअ-चिंतिएण सच्छंदबुद्धिरइएण ।

कत्तो पारत्तहिअं कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २६ ॥

शब्दार्थ—"गुरुना उपदेशने अयोग्य, पोतानी मतिना विकल्पथी विचार करवावाळो अने स्वतंत्रगति पूर्वक चेष्टा करवावाळो प्राणी परलोकनुं हित शो-रीते करे ? अर्थात् न करे." २६.

भावार्थ—भारेकर्मी जीव गुरुना उपदेशने अयोग्य समजे छे. तेवो स्वेच्छा-चारी प्राणी पोतानी बुद्धिमात्रथी आ स्थूळ ने आ सूक्ष्म इत्यादिक विचारो करे छे; तेवो मनुष्य परलोकनुं हित करी शकतो नथी.

थद्धो निरोवयारी, अविणीओ गव्विओ निरुवणामो ।

साहुजणस्स गरहिओ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २७ ॥

अर्थ—"स्तब्ध, निरुपकारी, अविनीत, गर्वित अने कोइने नहीं नमवावाळो एवो पुरुष साधुजनथी निंदाय छे अने लोकमां पण हीलनाने पामे छे." २७.

गाथा २६- पारत्रहितम् अनुपदेश्येन. गाथा २७-वयणिज्जियं. वचनीयतां

स्तब्ध ते अभिमानी-अक्कड रहेनारो-कोइने नहि नमनारो, निरुपकारी
कोइना करेला उपकारने नहि जाणवावाळो-कृतघ्न, अविनीत ते आसन आ
ना विगेरेवडे वडीलनो विनय नहि करनारो, गर्वित ते पोताना गुणो प्रगट
वानो उत्सुक, निरुपनाम ते गुरुने पण नमस्कार नहि करवावाळो-एवा पुरु
साधुजनो पण गर्हा करे छे अने लोको पण आ दुष्ट आचारवाळो छे एम
तेने निंदे छे, तेथी विनीतज श्लाघाने पामे छे एम समजवुं.

थोवेणवि सप्पुरिसा, सणंकुमारुव्व केइ बुझंति।
देहे खणपरिहाणी, जं किर देवेहिं से कहियं ॥ २८ ॥

अर्थ-" कोइ सत्पुरुषो (सुलभबोधीओ) थोडा निमित्त मात्रे करीने
सनत्. कुमार चक्रीनी जेम बोध पामे छे. जे कारण माटे 'देहने विषे क्ष
णमां पण रूपनी हानी थइ गइ छे' एम देवताए तेने (सनतकुमारने) कहुं
तेटलुं वचनमात्रज तेने बोधनुं कारण थयुं. एम सांभलीए छीए. " २८.

अहींसनत्कुमार चक्रीनुं दृष्टांत जाणवुं. ते आ प्रमाणे—

हस्तीनापुर नगरनां सनत्कुमार नामे चक्रवर्ती राजा हतो. ते अति रू
पवो, अने ते छखंडनुं राज्य करतो हतो. एक दिवस इंद्रे सभामां सनत्कुम
रूप संबंधी एवुं विवेचन कर्युं के ' पृथ्वी उपर तेना जेवो रूपवान कोइ न
पे देवोए इंद्रनुं कहेलुं वचन कबुल कर्युं नहि. तेथी तेओ कुतूहल जोवा मा
मनुं रूप धारण करीने हस्तीनापुर आव्या. ते वखते स्नान करवानो अ
होवाथी तेओए सनत्कुमारने न्हावाने आसने बेठेलो, आभूषणरहित अने
तेलथी मर्दन करातो जोयो; तेना रूपथी मोहित थइने तेओ वारंवार मस्त
धुणाववा लाग्या. त्यारे सनत्कुमारे तेमने पूछ्युं के-'तमे शिर शामाटे धुण
छो ?' तेओए कहुं के-' हे देव ! आपना दर्शननुं कौतुक हेतुं अमे गा
रुनुं तेवुंज अमे जोयुं.' ए प्रमाणे ते ब्राह्मणोनुं वचन सांभळी चक्री बोल्या
" अरे ! हमणां आ स्थितिमां मारुं रूप तमे शुं जुओछो ? स्नान कर्या
पछी हुं उत्तम वस्त्रो पहेरुं, अलंकारो धारण करुं, मारा मस्तक उपर छत्र
ए, चामर ढोळाय अने बत्रीश हजार राजाओ ज्यारे मारी सेवा करे त्यारे
रूप जोवा जेवुं छे." ए प्रमाणे चक्रीनुं वचन सांभळीने ते बंने देवोए
के-' उत्तम पुरुषने [illegible] पोताना मुखे करवी घटती नथी ' कहुं

सौख्यसौभाग्यकरा नृणां गुणाः, स्वयंगृहीता युवतीकुचा इव ।
गृहीता ह्रितयं वितन्वते न तेन गृह्णन्ति निजं गुणं बुधाः ॥

" युवती जो पोताना स्तनने पोताना हाथे ग्रहण करे तो ते जेम तेने सौ-
भाग्य अने सुखना करवावाळा थता नथी, तेम पोताना मुखथी वर्णवाता पो-
ताना गुणो मनुष्योने सौभाग्य ने सुख आपनारा थता नथी; पण तेज गुणो
युवाना स्तननी जेम बीजाओथी ग्रहातां—वर्णवातां सौभाग्य अने सुख बंने आपे
छे तेथीज डाह्या पुरुषो पोताना गुणोनी प्रशंसा पोताना मुखे करता नथी."

पछी चक्रवर्तीनु वचन मान्य करी ते बंने विप्रो त्यांथी चाल्या गया, अने
ज्यारे चक्री सभामां बिराजमान थया त्यारे त्यां आव्या. ते वखते चक्रीना रू-
पने जोइने तेओ खिन्न थया. चक्रीए पूछ्युं के—' तमने खेद थवानुं शुं कारण
छे ?' तेओ बोल्या के—'संसारनुं विचित्रपणु अमारा खेदनुं कारण छे.' चक्रीए
पूछ्युं के—' केवी रीते ?' तेओए कह्युं के—'अमे पहेलां आपनुं जे रूप जोयुं हतुं
तेना करतां आ वखते अनंतगुणहीन छे.' चक्रीए कह्युं के—' तमे ते शीरीते जा-
ण्युं ?' तेओए कह्यु के—' अवधिज्ञानथी.' चक्रीए कह्यु के—' तेमां प्रमाण शुं ?'
तेओए कह्युं के—" हे चक्री ! मुखमां रहेल तांबूलनो रस भूमि उपर थुंकीने
जुओ के तेनो उपर जे मक्षिका बेसे ते मृत्युवश थाय छे ? आ अनुमानथी तमे
जाणजो के तमारुं शरीर विषरूप थइ गयुं छे तमारा शरीरमां सात मोटा रोगो
उत्पन्न थयेला छे." आ प्रमाणे देवताओनां वचन सांभळीने चक्री विचार
करवा लाग्या के—' अहो ! आ देह अनित्य छे, आ असार देहमां कांइ पण
सार नथी.' कह्युं छे के—

इदं शरीर परिणामदुर्बलं, पतत्यवश्यं श्लथसंधिजर्जरं ।
किमौषधैः क्लिश्यसि मूढ दुर्मते, निरामयं धर्मरसायनं पिब॥

" आ शरीर परिणामे दुर्बल छे, तेथी तेना सांधा शिथिल थवाथी जर्ज-
रित थइने ते अवश्य पडेछे; माटे हे मूढ ! हे दुर्मति ! तुं औषधो करवा वडे शा
माटे क्लेश पामेछे सर्व रोगथी निवृत्त करनार धर्मरसायननुंज पान कर."
वळी—

कस्तूरी पृषतां रदाः करटिनां कृत्तिः पशूनां पयो
धनूनां छदमंडलानि शिखिनां रोमाण्यवीनामपि ।

पुच्छस्नायुवशाविषाणनखरस्वेदादि किं किं च न
स्यात् कस्याप्युपकारि मर्त्यवपुषो नामुष्य किंचित्पुनः ॥

" मृगोनी कस्तुरी, हाथीओना दांत, पशुओनुं चर्म, गायोनुं दुध, मयूरनां पीछां, घेटाना वाळ अने अन्य पशुओनां पुच्छ, स्नायु, चरबी, शींगडां, नख, स्वेद आदि कांइ कांइ कोइने पण उपयोगमां आवे छे; परंतु मनुष्यना शरीरनं तो कांइ पण उपयोगमां आवतुं नथी. "

ए प्रमाणे वैराग्यपरायण थयेल राजाए राज्यलक्ष्मी तजी दईने संयमलक्ष्मी ग्रहण करी. जेम भुजंग कांचळीनो त्याग करी पाछुं जोतो नथी तेम ते पोतानी पाछळ आवती समृद्धि तरफ दृष्टि पण करी नहि. स्त्रीरत्न सुनंदा आदि पोतानी स्त्रीओना विलाप सांभळतां छतां पण ते जरा पण डग्यो नहि. छ मास सुधी निधिओ, रत्नो अने सेवको तेनी पाछळ फर्या, परंतु तेणे तेमना तरफ जोयुं पण नहि. सनत्कुमार मुनि दीक्षा लीधा पछी बबे उपवासने अंते पारणुं करवा लाग्या, अने पारणे पण नीवी के आचाम्लादि (आंबिल आदि) तप करवा लाग्या. ए प्रमाणे विषयना त्यागी, धर्मना अनुरागी अने रोगथी भरेली कायावाळा ते मुनि मायारहितपणे भूमि उपर विहार करे छे, ए अवसरे सौधर्मेन्द्रे फरीथी सभामां तेनी प्रसंसा करी के-'अहो आ सनत्कुमार मुनिने धन्य छे के जे मोटा रोगथी पीडित शरीरवाळा छतां पण ओषध आदिनी किंचित् पण स्पृहा करता नथी.' एवां इंद्रनां वचन सांभळी तेने नहि श्रद्धनारा बे देवो ब्राह्मणनुं रूप धारण करी सनत्कुमार मुनिनी पासे आव्या अने बोल्या के-'हे मुनि! तमारुं शरीर रोगथी जीर्ण थयेलुं अने घणुं पीडातुं जणाय छे; अमे वैद्य छीए. जो तमारी आज्ञा होय तो अमे तेनो उपाय करीए.' मुनिए कह्युं के-" आ अनित्य शरीर माटे उपाय शो करवो? तमारामां शरीरना रोगने दूर करवानी शक्ति छे, पण कर्मना रोगने दूर करवानी शक्ति नथी; अने ते शक्ति (देहरोग दूर करवानी शक्ति) तो मारामां पण छे. " एटलुं कही आंगळीने थुंक लगाडी बतावतामां आवी तो ते सोना जेवी थइ गइ. पछी कह्युं के-' मारामां आवी शक्ति तो छे, परंतु तेथी सिद्धि शी ज्यां सुधी कर्मरोगनो क्षय थयो नथी त्यां सुधी देहरोगना नाशथी शुं? तेथी मारे रोगनो प्रतिकार करवा साथे काइ पण प्रयोजन नथी." बंने देवो आश्चर्य पाम्या अने तेमने वांदी पोतानुं स्वरूप प्रकाशी स्वर्गमां गया.

सनत्कुमार मुनि पण सातसे वर्ष सुधी रोगोने अनुभवी एक लाख वर्ष सुधी निर्दोष चारित्र पाळीने एकावतारीपणे त्रीजे स्वर्ग उत्पन्न थया. त्यांथी च्यवीने महाविदेहमां मनुष्य थइ सिद्धिपदने प्राप्त करशे.

हवे आयुष्यनी अनित्यता दर्शावे छे.

जइ ता लवसत्तमसुर-विमाणवासीवि परिवडंति सुरा ।
चिंतिज्जं तं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ २९ ॥

अर्थ—"जो ते अनुत्तर विमानवासी देवताओ पण आयुक्षये त्यांथी पडे छे—च्यवे छे तो विचारी जो के बाकी संसारमां शुं शाश्वत-स्थिर छे? अर्थात् कांइपण शाश्वत–नित्य नथी, एक धर्मज नित्य छे." २९

अनुत्तर विमानवासी देवो लवसत्तमीआ देवता कहेवाय छे. तेवा सर्व जीवथी अधिक आयुष्यवाळा देवताओनुं ३३ सागरोपम जेटलुं आयुष पण पूर्ण थइ जाय छे अने ते त्यांथी च्यवे छे तो तेनी अपेक्षाए हीन स्थितिवाळा आ संसारमां बीजुं शुं शाश्वत छे? कांइ नथी.

कह तं भन्नइ सुक्खं, सुचिरेणवि जस्स दुक्ख मल्लिअइ।
जं च मरणावसाणे, भवसंसाराणुबंधिं च ॥ ३० ॥

अर्थ—"घणा काळे पण जेना परिणामे दुःख वेठवुं पडे तेने सुख केम कहेवाय? न कहेवाय. जे कारणमाटे मरण पछी नरकादि गति रुप संसारमां परिभ्रमण करवुं पडे अथवा गर्भावासादि दुःख सहेवुं पडे ते सुखज न कहेवाय." ३०

पल्योपम सागरोपमना सुखने अंते पण दुःखनुं आस्वादन करवुं पडे तो ते सुख दुःखज छे. चार गति रुप संसारनो अनुबंध जेथी थया करे ते सुखज नथी. संसारनो छेद थाय तेज वास्तविक सुख छे.

गुरुनो कहेलो उपदेश पण भारेकर्मीने लागतो नथी.

उवएस सहस्सेहिवि, बोहिज्जंतो न बुज्झइ कोइ ।
जह बंभदत्तराया, उदायि निवमारओ चेव ॥ ३१ ॥

अर्थ—"कोइ (भारेकर्मी जीव) हजारो उपदेश वडे बोध पमाड्यो छतो पण बुझतो नथी. जेम ब्रह्मदत्त चक्री बोध पाम्यो नहि अने उदायि नृपने मारनार बारवर्ष पर्यंत तप तप्यो–मुनिपणे रह्यो पण भव्यत्व पाम्यो नहि."३१

ब्रह्मदत्त चक्रीने तेना पूर्वभवना भाइमुनिए घणी रीते उपदेश आप्यो पण किंचित् मात्र बोध लाग्यो नहि तेनुं तथा उदायि नृपमारकनुं दृष्टांत अहीं जाणवुं. ७–८. ते आ प्रमाणे—

गाथा ३० मल्लीअइ. भवसंसाराणुबंधं गाथा ३१–कोइ–कोपि. नृपमारक

ब्रह्मदत्त चक्रीनी कथा.

प्रथम ब्रह्मदत्तना भवना कारणभूत चित्रसंभूति मुनितुं (ब्रह्मदत्तना पूर्वभवनुं) स्वरूप आ प्रमाणे छे—

पूर्वभवमां कोइएक गाममां भद्रिक परिणामी चार गोवाळीआ हता. एक दिवस ते चारे गोवाळीआओ ग्रीष्म ऋतुमां गायो चारवाने माटे वनमां गया. मध्यान्हसमये ते चारे जणा एकठा मळीने वातो करवा बेठा; एवामां मार्गथी भूला पडेला, जेने ते वनमां मार्ग जडतो नथी, जेनुं गळुं अति तीव्र तृषाथी रुंधाइ गयुंछे अने जेनुं तालुपुट सुकाइ गयुं छे एवा कोइएक साधुने वृक्षनी छायामां बेठेला तेओए जोया; एटले तेओए विचार्युं के–' आ कोण हशे ? ' पछी ते चारे जणा मुनिनी समीपे आव्या. त्यां तृषातुर थवाथी अति पीडा पामता अने जेना प्राण कंठगत थयेला छे एवा ते मुनिने जोइने मनमां विचार करवा लाग्या के–'अरे आ मुनि जंगमतीर्थ जेवा जणाय छे, पण ते पाणी विना मृत्यु पामशे; तेथी जो कोइ जग्याएथी पाणी लावीने तेमने आपीए तो मोटुं पुण्य थाय' आम विचारी पाणीने माटे तेओए आखा वनमां शोध करी पण मळ्युं नहि. त्यारे तेओ एकठा थइ गाय दोही दूध लइने साधु समीपे आव्या. साधुना मुखमां दूधनां टींपां मूकीने तेमने सावधान कर्या. साधु सचेतन थया एटले मनमां विचार करवा लाग्या के–' आ लोकोए मारा उपर मोटो उपकार कर्यो छे; केमके तेओए मने जीवितदान आप्युं छे. पछी ते साधुए तेओने सरळ स्वभाववाळा जोइने देशना आपी. ते देशना सांभळीने ते चारे वैराग्यने प्राप्त थया, अने तरत ज चारे जणाए दीक्षा लीधी अने सम्यक्त्व मेळव्युं ते साधुए तेओने साथे लइने अन्यत्र विहार कर्यो.

हवे ते चारे जणा चारित्र पाळेछे, पण तेमां बे जण चारित्रनी अवज्ञा करे छे के–' आ साधुनो वेष तो सारो छे, पण स्नानादि विना शरीरनी शुद्धि केवी रीते थाय ? मेलां वस्त्र पहेरवां, दांत साफ न राखवां इत्यादि महा कष्ट छे.' ए प्रमाणे विचारणा करवाथी ते बे मुनिए चारित्रनी विराधना करी; अने बे जणाए निर्दोष चारित्र पाळ्युं. ते बंने जणाएतो तेज भवमां केवळज्ञान प्राप्त करीने मोक्षसुख मेळव्युं

जे बनेए चारित्रनी विराधना करी हती तेओ अंतसमये ते पापने आलोव्या सिवाय मृत्यु पामीने स्वर्गे गया. तेओ त्यांथी च्यवत सुधी देव संबंधी सुख भोगवी त्यांथी च्यवीने साधुपणानी निंदा करवाथी दशार्ण देशमां कोइएक ब्राह्मणना घरमां दास [illegible] स्त्री तेना कुक्षिने विषे उत्पन्न थया. अनुक्रमे तेओ युवावस्था पाम्या अने [illegible] कामकाज करवा लाग्या.

एक दिवसे वर्षाऋतुमां क्षेत्रनी रक्षा करवा माटे ते बंने भाइओ गया. मध्यान्हसमये ते बेमांनो एक जण क्षेत्र समीपे आवेला वडना झाड नीचे शीतल छायामां सुतेलो छे तेवामां ते वडना कोतरमांथी एक सर्प नीकळयो, अने ते सुतेलाने दंश दइयो. ते वखते दैवयोगथी बीजो भाइ पण त्यां आव्यो. तेणे सर्पने जोयो. एटले तेणे सर्पने गाळ दीधी के–'अरे दुरात्मन ! मारा भाइने हणीने तुं क्यां जाय छे ?' एवां तेनां वचन सांभळीने कोपित थयेला सर्प फरीने तेने पण करडयो. बंने भाइओ मृत्यु पाम्या. बीजा भवमां कालिंजर पर्वतनी अंदर हरिणीनी कुक्षिमां तेओ मृगपणे उत्पन्न थया. तेओ परस्पर अति स्नेहयुक्त ा. एकदा कोइ शिकारीना बाणप्रहारथी तेओ मरण पाम्या. त्रीजा भवमां ा नदीना किनारे हंसीनी कुक्षिने विषे हंसपणे उपन्या. ते भवमां पण तेओ ्पर घणा स्नेहवाळा थया. तेओ गंगाने किनारे रहेला कमळना बिसतंतु खो ाय छे अने सुखमां काळ व्यतीत करे छे: तेवामां कोइएक शिकारीए ते ंने मारी नाख्या.

चोथे भवे साधुवेषनी निंदा करवाना फळथी काशी नगरीमां कोइ चंडाळने ं पुत्रपणे उत्पन्न थया. ते चंडाले पुष्कळ धन खर्ची ने बंने छोकरानां नाम ्र अने संभूति पाडयां. तेओ पूर्वभवना स्नेहथी अन्योन्य अति रागयुक्त थया. क क्षण पण बीजानो वियोग सहन करी शकता नथी. हवे ते नगरनो जे राजा तेनी सभामां नमुचि नामनो प्रधान छे. ते प्रधान राजानुं परम विश्वासस्थान . परंतु ते राजानी पट्टराणीनी साथे प्यारमां संलग्न थयो छे, अने तेनी साथे रोज भोग भोगवे छे. पट्टराणीने पण तेनी साथे अत्यंत स्नेह बंधायो छे,तेथी पोताना भर्तारनी अवगणना करीने ते नमुचिनी साथे भोग भोगवे छे. अहो ! ामनो अंधता अपूर्व छे. कह्युं छे के—

दिवा पश्यति नो घूकः, काको नक्तं न पश्यति ।
अपूर्वः कोऽपि कामांधो, दिवा नक्तं न पश्यति ॥

" घुड दिवसे जोइ शकतो नथी, कागडो रात्रिए देखतो नथी; पण कामांध कोइ अपूर्व अंध छे के जे दिवसे तेमज रात्रिए जोइ शकतो नथी."

वळी कह्युं छे के—

या चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः ।
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचि-
। च ॥

"जे स्त्रीनुं हुं हमेशां चिंतवन करुं छुं ते मारामां निरस रहे छे अने ते अन्य पुरुषने इच्छे छे, ते पुरुष बीजी स्त्रीमां आसक्त थयेलो छे, अने ते बीजी कोइ स्त्री मने चाहे छे: माटे ते (राणी) ने धिक्कार छे, तेना यारने धिक्कार छे, मदनने धिक्कार छे अने मने पण धिक्कार छे."

ए प्रमाणे घणा दिवसो जतां तेन पाप कोइनी मारफत फरी नीकळ्युं, राजाए ते वात जाणी, एटले ते मनमां विचार करवा लाग्यो के-'आ पापात्मा प्रधान दुष्ट छे के जेणे आवुं नीच काम कर्युं: पण पोताने हाथेज मृत्यु मागी लीधुं छे. ए जोके बुद्धिमान छे छतां पण नीच होवाथी उपेक्षा करवा योग्य छे." कह्युं छे के—

लूणह धुणह कूमाणसह, ए त्रिहुं इक्क सहाओ।
जिहां जिहां करे निवासडो, तिहां तिहां फेडे ठाओ॥

भावार्थः-"लुणो, घुणो ने कुमाणस ए त्रणे एक सरखा स्वभाववाळा होय छे. ते ज्यां ज्यां निवास करेछे त्यां त्यां रेहेवानां स्थानकनोज नाश करे छे, लुणो भींत विगेरे ने पायमाल करे छे; घुणो लाकडामां थाय छे ते तेने कोतरी नाखे छे, अने खराब माणसने जे आश्रय आपे तेने ज ते पायमाल करे छे. 'तेथी आ प्रधान वध्य छे' एम विचारी चंडालने बोलावीने कह्युं के-'एने वध्यभूमिमां लइ जइने मारी नाखो राजानी आज्ञा थतां चंडाल नमुचिने वध माटे लइ गयो. ते चंडाले विचार कर्यो के-'अरे! कोइ माठा कर्मना योगथी आ काम थयेलुं छे. विनाशकाळे बुद्धिमान पुरुषोनी बुद्धि पण नाश पामे छे. कह्युं छे के--

न निर्मिता केन न दृष्टपूर्वा, न श्रूयते हेममयी कूरंगी।
तथापि तृष्णा रघुनंदनस्य, विनाशकाले विपरीतबुद्धिः॥

"सोनानी हरिणी कोइए बनावेली नथी, कोइए पूर्वे जोयेली नथी के सांभळेली पण नथी, तोपण तेने माटे रघुनंदन (राम) नी तृष्णा थइ," विनाशकाळे विपरीत बुद्धि ज थाय छे." वळी कह्युं छे के--

रावण तणे कपाळ, अट्ठोतरसो बुद्धि वसे;
लंका फीटणकाळ, एको बुद्धि न संचरी.

"रावणना कपाळमां एकसो ने आठ बुद्धि वसती हती, छतां पण ज्यारे लंकानो फीटणकाळ आव्यो त्यारे एके बुद्धि स्मरणमां आवी नहि."

वळी चांडाळे विचार्युं के-'आ प्रधान महा बुद्धिशाळी छे अने मारा छोकरा भणवा लायक थयाछे, पण बीजो कोइ तेमने भणावशे नहि; तेथी जो

तेने भणाववानुं कबुल करे तो हुं तेनो बचाव करुं.' ए प्रमाणे विचारी मुचिने पूछ्युं के-'जो तुं मारा पुत्रोने भणाव तो हुं तारुं रक्षण करुं, तेणे रवानुं कबुल कर्युं, तेथी चांडाले तेने गुप्तपणे पोताना घरे आण्यो अने ा भयथी तेनेभोंयरामां राख्यो. त्यां रहीने ते चित्र अने संभूत नामना लपुत्रोने भणाववा लाग्यो. तेओ बुद्धिवान होवाथी थोडा वखतमां सकल ां पारंगत थया. नमुचि प्रधान त्यां रहेतो सतो चित्रसंभूतनी मानी साथे मां पडयो. अहो ! आ कामनो दुष्ट स्वभाव दुस्त्यज छे. कारणके आवी अव- पाम्या छतां पण नीच माणस विषयनी आशंसा तजतो नथी. कह्युं छे के—

कृशः काणः खञ्जः श्रवणरहितः पुच्छविकलो ।
व्रणीपूयक्लिन्नः कृमिकुलशतैरावृततनुः ॥
क्षुधाक्रांतो जीर्णः पिठरककपालार्पित गलः ।
शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च हंत्येव मदनः ॥

" शरीरे दुर्बल, काणो, लंगडो, बहेरो, पुच्छ विनानो, जेना अंगपर चांदां ेलां छे, परथी खरडायेलो छे अने जेनुं शरीर हजारो कृमिथी घेरायेलुं छे वो क्षुधाक्रांत, जीर्ण अने जेना गळामां ठीबनो कांठो वळगेलो छे एवो श्वान ण जो कुतरीने देखे छे तो तेनी पाछळ जाय छे; तेथी दिलगीरीनी वात छे कामदेव मरायेलाने पण मारे छे." कामनो स्वभावज दुस्त्यज छे. कह्युं छे के-

उखल करे धबुकडां, घरहर करे घरट्ट;
जिहां जे अंग सहावडा, तिहां ते मरण निकट्ट.

जेम खारणीओ धबकारा करे छे अने घंटी घरघराट करे छे तेम जे अंग नो जेवो स्वभाव पडयो होय छे ते मरण पर्यंत रहे छे, फरतो नथी."

ए प्रमाणे घणा दिवसो जतां चांडाले ते वात जाणी, एटले ते विचारवा ो के-'अहो ! आ विषयांधने धिक्कार छे ! तेना उपर करेलो उपकार पण ळी गयो छे. आना करतां कूतरो पण वधारे सारो होय छे के जे करेल ारने भूली जतो नथी.' कह्यु छे के—

ाशनमात्रकृतज्ञतयागुरोर्न पिशुनोऽपि शुनो लभते तुलाम् ।
ापि बहूपकृते सखिता खलैर्न खलु खेलति खेलतिका यथा ॥

" भोजनमात्रथी कृतकृत्यपणावडे गुरु तरीके माननार एवा कृतघ्नानी पण क[illegible] रोवडी पिशुन [खळ पुरुष] करी शकतो नथी; केमके जेनी उपर घणा उपकार कर्या छे एवा खळ साथेनी मित्रता पण आकाशमां रेखा टकी शकती नथी तेम [लांबो वखत] टकती नथी."

' में पहेलांज विपरीत कार्य कर्युं के आ दुष्टनुं रक्षण कर्युं. आ तो वध करवानेज लायक छे.' आ प्रमाणे विचारीने तेणे तेने मारी नांखवा माटे खड्ग काढयो. ते वखते चित्रसंभूतिए विचार्युं के–' आपणो पिता आपणी नजर आगळ आपणा विद्यागुरुने हणे ए मोटो अनर्थ थाय छे.' पछी तेना रक्षणना उपाय मनमां विचारीने तेओए पोताना पिताने कह्युं के–'हे पिताजी ! आ पापी माठा दुराचरणी छे, ए हणवा लायकज छे, रक्षण करवा लायक नथी. तेथी अमने तमे हुकम आपो के अमे तेने स्मशानभूमिमां लइ जइने मारी नांखीए.' त्यार पछी तेमने आज्ञा आपी, एटले तेओ तेने लइने रात्रिना वखते नीकळ्या. पछी दूर जइने तेओए तेने एकांतमां कह्युं के–'तमे अमारा विद्यागुरु छो तेथी अमे तमने छोडी दइए छीए, माटे तमे आ गाम छोडी दूर चाल्या जाओ.' ए उपरथी नमुचि त्यांथी नीकळी गयो. अनुक्रमे ते हस्तीनापुर आव्यो अने सनत्कुमारनो सेवक थइने रह्यो.

अहीं चित्र अने संभूति नामना ते बंने भाइओ संगीतकळामां घणा कुशळ थया हता, तेथी हाथमां वीणा लइने नगरना चोकमां संगीत करवा लाग्या. त्यां तेमना रागथी मोहित थइने घणा लोको आवता हता. जेओ सूर्यने पण जोती नहोती एवी युवतीओ पण तेमना रागथी मोहित थइ लज्जा छोडीने सांभळवाने माटे त्यां आवती हती. केटलीक स्त्रीओ तो अर्ध शृंगार कर्यो छे अने अर्ध बाकीमां छे एवी स्थितिमां त्यां आवती हती; तेमां केटलीके अंजन [illegible] पण रह्यो हतो, केटलीक स्त्रीओए एकज आंख आंजी हती अने केटलीक स्त्रीओना माथा उपरनां कपडां पवनथी उडी गयां हतां, केटलीक स्त्रीओए स्तन उपर कांचळी पहेरी हती, केटलीक स्त्रीओ अन्य स्त्रीओनां बाळकोने पोतानां छे एवी बुद्धिथी उपाडीने आवी हती, केटलीक स्त्रीओ पोताना भर्तारने वहार काढी 'आवुं छुं' एम कही त्यां आवेली हती, केटलीक स्त्रीओ [illegible] भोजननी थाळी छोडीने जोवा माटे दोडी आवी हती, केटलीक स्त्रीओ गाय दोवाने माटे वाछडाने गायना आंचळे वळगाडीने आवी हती, केटलीक स्त्रीओ तो पोताना भर्तारनी नजरे उंचुं मुख करीने एमने जोती हती. [illegible] नगरमां [illegible] वनेचर कामिनीओ [illegible] कामराज [illegible] [illegible] पराक्रम केवो छे! कह्युं छे के–

सुखिनि सुखनिदानं, दुःखितानां विनोदः ।
श्रवणहृदयहारी, मन्मथस्याग्रदूतः ॥
रणरणकविधाता, वल्लभः कामिनीनाम् ।
जयति जगति नादः, पंचमश्चोपवेदः ॥

नाद ए सुखी जनोना सुखनुं कारण छे, दुःखी माणसोने विनोद आपनार श्रवण अने हृदयना हरनार छे, कामदेवनो अग्रेसर दूत छे, विधाताए रण- ... करेलो छे अने कामिनीओने वहालो छे-एवो नाद के जे पांचमो उपवेद ... जगतमा जय पामे छे."

... प्रमाणे सघळी स्त्रीओ रागमां मोहित थइने तेमनी पाछळ भम्या करेछे. ... लोकोए विचार्युं के-'चांडालकुळमां उत्पन्न थयेला आ बन्ने छोकराओए ... घळुं नगर मलिन कर्युं छे.' पछी तेओए राजा पासे जइने अरज करी के ... देव! आ चित्र संभूति नामना बंने चांडालपुत्रोने गाममांथी बहार काढो ... जोइए, कारणके तेओए आखुं नगर दूषित कर्युं छे. जो तेओ वधारे व- ... रहेशे तो आचारशुद्धि बिलकुल रहेशे नहि. राजाए तरतज तेओने नगर- ... काढी मूक्या.

हवे चित्रसंभूतिए मनमां विचार कर्यो के-'दुष्कुलना दोषथी दुषित थये- ... आपणी कलाथी शो लाभ छे?' ए प्रमाणे विचार करी कोइ पर्वत उपरथी ... पात करवाने तेओ चाल्या; अने कोइ पर्वत उपर चढी बंने हाथे ताळी दइ ... ओ जेवा पडवाने तत्पर थया तेवाज नजीकनी गुफामां तप करता कोइ सा- ... ए तेमने जोया. एटले ते साधु बोल्या के-'अरे तमे पडशो नहि.' ए प्रमाणे ... ओए साधुनुं वाक्य त्रणवार सांभळीने पडवामां विलंब कर्यो अने आसपास ... जोवा लाग्या के 'आपणने पडतां कोण वारे छे?' तेटलामां गुफानी अंदर त... करता कोइ मुनिने जोइने तेओ त्यां गया. मुनिए पूछयुं के-'तमारे दुःखनुं ... कारण छे?' तेओए सर्व बीना निवेदन करी. एटले साधु बोल्या के-'कुळ... ... सिद्धि छे? अने आवी रीते अज्ञानपणे मरवाथी पण शो लाभ छे? मा... ... मे जिनेश्वर भगवाने कहेलो धर्म आचरो के जेथी आ लोकमां तेमज परल... ... मां तमारा कार्यनी सिद्धि थाय.' ए प्रमाणेना साधुना वाक्यथी तेओने वै... ... य उत्पन्न थयो, एटले तरतज तेमणे दीक्षा ग्रहण करी अने निरतिचारपणे अ... दुष्कर तप करवा लाग्या.

अन्यदा एक गामथी बीजे गाम विहार करतां ते बंने मुनि हस्तीनापुर
उद्यानमां आव्या. बंने मुनि मासक्षमण करता हता तेथी मासक्षमणने पारणे सं
भूति मुनि आहार लेवा निमित्ते गजपुरमां गया. त्यां भिक्षा अर्थे नाना मो
कुळमां फरता ते मुनिने नमुचि प्रधाने जोया. ' अरे ! आ तो संभूति नामनो च
डाळपुत्र जणायछे. ते अहीं क्यांथी आव्यो ? माटे ते मारुं चरित्र कहेने राजाने क
हे. ' एम विचारी नोकर पासे गरदन पकडावी तिरस्कार करीने तेने शहेर
बहार काढी मूक्या संभूति मुनिए विचार्यु के–'अरे ! आ दुष्ट नमुचिए शुं क
अमे तेने मरणथी बचाव्यो छे छतां पण तेने लाज न आवी, तो हवे हुं
बाळी नांखुं. ' पछी ते मुनि दीपायमान थयेला क्रोध रुपी अग्निवडे तेना
तेजोलेश्या मूकवाउद्युक्त थया. मुखमांथी धूमाडाना गोटेगोटा नीकळवा ला
तेथी सर्व नगर अच्छादित थइ गयुं. ते जोइ शोकथी आकुल थयेला लोक
आ शुं थयुं ! ' एम बोलतां त्यां एकठा थइ गया. सनत्कुमार चक्री, पण ते ह
कत सांभळी. एटले भयथी आकुळव्याकुळ थइ ते पण त्यां आवी संभूति मुनि
चरणमां पडया अने बोल्या के–" हे प्रभु ! अपराध क्षमा करो अने कृपा क
लोकना संहारथी पाछा ओसरो, मारा पर एटलो अनुग्रह करो. तमे कृपा
छो, नतवत्सल छो, क्षमाशील छो, हुं दीन छुं अने बंने हाथ जोडी अरज
छुं. तेथी कृपा करीने क्रोध तजी दो. "

कोह पइट्ठो देहघरे, तिन्नि विकार करेइ ।
आपं तावे पर तवे, परत्तइ हाणि करेइ ॥ २ ॥

" देह रूप घरमां क्रोध पेठो तो ते त्रण विकार करे. १ पोते तपे, २ बीजाने तपावे अने ३ परभवना स्नेहनी हानी करे."

" माटे ते क्रोधना आश्रयभूत आ देहनेज तजी देवो जोइए, अवगुणोना निवासस्थान एवा आ देहने धारण करवानो शो लाभ छे ?" आ प्रमाणे विचार करीने चित्र अने संभूति बंने मुनिओए वनमां जइने अनशन ग्रहण कर्युं. लोको 'धन्य ! धन्य !' एम कहीने तेमनी प्रशंसा करवा लाग्या. घणा लोको तेमने वांदवा गया, एटले सनत्कुमार चक्री पण पोताना परिवार सहित तेमने वांदवाने गयो. ते वांदी प्रशंसा करीने पाछो आव्यो. पछी चक्रवर्तीनो स्त्रीरत्न सुनंदा घणी स्त्रीओथी परिवृत थइने वांदवा गइ, अने ते भक्तिथी बंने हाथ जोडी चित्र मुनिना चरणने वांदीने पछी संभूति मुनिना चरणमां पडी. ते समये काजळ जेवो श्याम तेनो केशपाश संभूति मुनिना चरणमां अथडायो. तेना स्पर्शथी जेने अत्यंत राग उत्पन्न थयो छे एवा संभूति मुनिए नियाणुं कर्युं के—'जो मारा तपनुं फळ होय तो आवुं स्त्रीरत्न मने परभवमां प्राप्त थाओ.' आ प्रमाणे निकाचित नियाणुं कर्युं. ते अवसरे चित्र मुनिए कह्युं के—'हे बन्धु ! तमे ए शुं करो छो ? आ दुष्ट परिणामवाळा विषयो आ जीवे अनंतीवार भोगव्या छे तथापि ते तृप्ति पाम्या नथी. माटे आवुं नियाणुं न करो.' संभूति मुनिए कह्युं के—'में दृढ मनथी जे नियाणुं करेलुं छे ते फरवानुं नथी, माटे हवे तुं कांइ कहीश नहि.' ते सांभळी चित्रमुनि मौन रह्या.

अनुक्रमे बंने मुनि अनशन पाळीने स्वर्गे गया. बंने जणा एकज विमानमां उत्पन्न थया. त्यां चिरकाळ भोग भोगवी प्रथम चित्रनो जीव त्यांथी च्यवीने पुरिमताल नगरमां एक शेठने घेर पुत्रपणे उत्पन्न थयो; अने संभूति निदानना माहात्म्यथी कांपिल्यपुर नगरमां ब्रह्मदत्त नामनो बारमो चक्रवर्ती थयो. तेनी उत्पत्तिनुं स्वरूप आगळ कहीशुं. अनुक्रमे तेणे छखंडनो विजय कर्यो. एक दिवस सभामां बेठेला ब्रह्मदत्तने पुष्पनो गुच्छ जोवाथी जातिस्मरणज्ञान थयुं. तेथी पूर्वभवमां अनुभवेलुं नलिनीगुल्म विमान तेने याद आव्युं. ते साथे पाछला पांच भव तेने याद आव्या. तेणे मनमां चिंतवन कर्युं के—'जेनी साथे मारे पांच भवथी संबंध हतो ते मने केवी रीते मळशे ? ते क्यां उत्पन्न थयो हशे ?' पछी तेणे पोताना बंधुने मळवाने माटे अर्धी गाथा रची ते नीचे प्रमाणे—

आश्वदासनो ... ।

"प्रथम ... पछी वे मातंग (चांडाल) अने पछी ... आ गाथानो अर्ध भाग पूरो करशे ते ... शकाय तेम नथी' एवो निश्चय करीने तेणे लोकोमां ... थानो उत्तरार्द्ध पूरो करशे तेने ... सर्व लोकोए ते अर्धी गाथा कंठे करी, परंतु कोइ ते ... पूर्ण करी ... नहि. ए प्रमाणे घणा दिवसो व्यतीत थया.

हवे एवे समये पुरिमताल नगरमां शेठना कुळमां उत्पन्न थयेला ... जीवे गुरु पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. तेने जातिस्मरणज्ञान थयुं, तेथी तेणे पण ... छलो पांच भवनो संबंध जाण्यो. पछी तेणे विचार्युं के–'मारा ... नियाणुं करेलुं होवाथी ते भिन्न कुळमां चक्रवर्ती थयेलो छे, माटे हुं तेने प्रतिबोध ... हुं.' एवो विचार करी ते कांपिल्यपुरना उद्यानमां आव्या. त्यां रेंट चलावना... मुखथी पेलो अरधो गाथा सांभळी चित्रमुनिए उत्तरार्द्ध पूरुं कर्युं. ते नीचे प्र...

एषा नौ षष्ठिका जातिरन्योन्याभ्यां वियुक्तयोः ॥

"एक बीजाथी जुदा पडेला एवा आपणो आ छट्ठो भव छे." ए प्र... मुनिमुखथी उत्तरार्द्ध सांभळीने रेंट चलावनारे राजा पासे जइ गाथानुं उत्त... पूरुं कर्युं. ते सांभळी अति स्नेहथी राजा मूर्छित थइ गयो. पछी सावधान ... इने पूछवा लाग्यो के–'अरे! आ समस्या कोणे पूरी करी छे?' तेणे कह्युं ... 'मारा रेंटनी पासे एक मुनि आवेला छे तेणे आ उत्तरार्द्ध पूरुं करेलुं छे.' ... मुनिनुं आगमन सांभळी घणोज खुशी थयो अने सपरिवार वांदवा गयो. ... देशना आपी; तेमां आ संसारनी अनित्यता वर्णवीने कह्युं के–"हे ब्रह्म... वीजळीना चमकारा जेवुं चंचळ विषयसुख तजी दे अने जिनेश्वर भगवाने ... धर्म सेव, विषयमां अनुरागनुं परिणाम घणुं खराब छे; तें पूर्वभवमां ... कर्युं ते वखते में तने घणो वार्यो हतो छतां पण तें मोक्षसुखने आपनारुं ... अंशमात्र एवा राज्य अने स्त्रीना सुखने अर्थे गुमावी दीधुं छे. हजु पण प... नरक आपनारा राज्यथी विरक्त था." ए प्रमाणेनां बंधुनां वचन सांभळी ... बोल्यो के–"हे बंधु! मोक्षसुख कोणे जोयुं छे? आ विषयादि सुख तो ... क्ष छे; माटे हे भाइ! तुं पण मारे घेर चाल अने सांसारिक सुखनो अनुभ...

आ माथुं मुडाववाथी शुं विशेष छे? आपणे प्रथम सारी रीते भोग भोगव्या पछी संयम ग्रहण करशुं." ए प्रमाणेनां संभूतिनां वचन सांभळीने चित्रमुनिए कह्युं के-"एवो कोण मूढ होय के जे भस्मने माटे चंदन बाळे? एवो कोण मूर्ख होय के जे जीववानी इच्छाथी कालकूट विषनुं भक्षण करे? एवो कोण नीच होय के जे लोढाना खीला माटे प्रवहणने तोडी नांखे? एवो कोण मूर्ख होय के दोराने माटे मोतीनो हार तोडी नाखे? माटे हे भाइ! तुं प्रतिबोध पाम, प्रतिबोध पाम." ए प्रमाणेनां बधुनां वचन अनेकप्रकारे सांभळ्यां पण तेने वैराग्य प्राप्त थयो नहि. तेथी 'आ दुर्बुद्धि छे' एम जाणी चित्रमुनिए बंधुने जणावीने त्यांथी विहार कर्यो. ब्रह्मदत्त पण पोताने घेर आव्यो. अने अनेक पापाचरण करवा लाग्यो.

चित्रमुनि लांबाकाळ सुधी साधुमार्गने सेवी केवलज्ञान प्राप्त करीने मोक्षे गया; अने जेणे पूर्वभवे नियाणुं करेलुं छे एवो ब्रह्मदत्त धर्म पाम्या शिवाय अनेक पापकर्म आचरीने सातसें वर्षनुं आयुष्य भोगवी सातमी नरके गयो.

ए प्रमाणे बीजा माणस पण भारेकर्मी होय छे ते प्रतिबोध पामता नथी; माटे सुलभ बोधिपणुं ए घणुं दुर्लभ छे एवो आ कथानो तात्पर्य छे.

हवे बीजुं उदायी नृपने मारनारनुं दृष्टांत कहे छे—

पाटलीपुत्र नगरमां कोणिक राजानो पुत्र उदायी नामे राजा थयो. तेणे कोइ राजानुं राज्य लइ लीधुं. तेथी ते नृपे राजाए पोतानी सभामां कह्युं के—'जे कोइ उदायी राजाने मारी आवे तेने हुं मागे ते आपुं.' ते उपरथी तेना कोइ सेवके ते प्रमाणे करवानुं कबुल कर्युं. ते सेवक पाटलीपुत्र आव्यो अने अनेक उपायो चिंतव्या. परंतु कोइ उपाय लागु पड्यो नहि; तेथी ते दुष्टे विचार्युं के 'उदायी राजा विश्वास विना मृत्यु पामे तेम नथी' तेथी तेणे एक गुरु समीपे जइने कपटथी चारित्र ग्रहण कर्युं. ते आचार्य (गुरु) उदायी राजाने घणा मान्य हता. पेलो सेवक चारित्र ग्रहण करीने आचार्य पासे अभ्यास करवा लाग्यो अने साधुओनो अत्यंत विनय करवा लाग्यो. अनुक्रमे विनयगुणथी तेणे आचार्य विगेरेनां चित्त वश कर्यां.

हवे उदायी राजा आठमने दिवसे अने चौदशने दिवसे रात्रिदिवसना पोसह करे छे, त्यारे आचार्य धर्मदेशना आपवाने रात्रिए तेनी पौषधशाळामां जायछे. आठमने दिवसे त्यां जवाने गुरु प्रवृत्त थया ते वखते पेला नवदीक्षित साधुए कह्युं के—'हे स्वामिन! आपनी आज्ञा होय तो हुं साथे आवुं.' परंतु हृदय नहि जाणवाथी साथे लीधो नहि ए प्रमाणे दर वखते मागणी करे

पण तेने गुरु साथे तेना [illegible], [illegible] पोतानी [illegible] दिवसे सांजवारे गुरु त्यां [illegible] ते ते [illegible] तेना [illegible] के–'हे स्वामी! हुं साथे [illegible]!' [illegible] सोते [illegible] धी ते गुरु साथे गयो. गुरु [illegible] रा उपर बेटेला उदायी राजाए तेमने [illegible]. [illegible] रापोरपी भणावीने राजाए [illegible]. [illegible] शिष्ये उठीने छानी रीते राखेली कंक जातिना [illegible] राजाने [illegible] रवी, जेथी तत्काल ते मरण पाम्यो. [illegible] वहार रहेला राजसेवकोए 'आ साधु छे' [illegible] तेने [illegible] अनुक्रमे रुधिरनो प्रवाह गुरुना संथारा पासे आव्यो. तेना स्पर्शथी गुरु उ[illegible] उठया अने विचार करवा लाग्या के–'आ शुं ?' तेणपासे शिष्यने जोयो [illegible] एटले धार्यु के 'आ कुशिष्य राजाने मारीने नाशी गयेलो जणाय छे.' [illegible] ते वातनी खात्री करीने विचारवा लाग्या के–'आ मोटो अनर्थ थयो छे. [illegible] काळे जैन शासननो मोटो उड्डाह थशे के मुनिओ आवुं दुष्ट कर्म आचरे [illegible] तेथी तेम न थवा माटे गुरु पण पोताना गळा पर छरी फेरवीने मृत्युवश थ[illegible] बंने जणा मरण पामीने स्वर्गे गया.

ए प्रमाणे बीजा अभव्य जीवो बहु उपदेशथी पण प्रतिबोध पामता नथ[illegible] पेलो दुष्ट सेवक साधुवेष छोडीने पोताना राजानी पासे गयो अने सघळी [illegible] कीकत कही. ते सांभळीने राजाए कह्युं के–'तने धिक्कार छे! अरे दुष्ट! तें [illegible] शुं कर्युं ?' ए प्रमाणे तिरस्कार करी तेने देशमांथी हांकी काढयो. माटे जीवे ए कोइ पण प्रकारे भारेकर्मी न थवुं एवो आ दृष्टांतनो उपनय छे.

गयकन्नचंचलाए, अपरिच्चत्ताए रायलच्छीए।
जीवा सकम्मकलिमल–भरिय भरांतो पडंति अहे ॥३२॥

अर्थ–"हाथीना काननी जेवी चपळ राज्यलक्ष्मीने-नहीं छोडनारा जीवो पोताना कर्मकिल्बिपथी भरेला भारवडे अधोभूमिमां पडे छे अर्थात् नरके जाय छे." ३२

कुणुणवि जीवाणं, सुदुक्कराइंति पावचरियाइं।
भयवं जासा सासा, पच्छाएसो-हु इणमो ते ॥३३॥

गाथा ३२-अपरिचत्ताए भरांतो भरंतो
गाथा-३३ कुतुण कूतुण सुदुक्करायंमि पच्चाणमोय. पच्चापसोहु

अर्थ—"केटलाक जीवोनां पापकर्मो एवा प्रकारे कहेवाने पण मुदुष्कर होय छे, अर्थात् कहेवा योग्य पण होता नथी. ते उपर निश्चये देशित्य? 'भगवंत! ते शी ते? (मारी बहेन?), भगवंते कह्युं 'हा तेने' आ सारे दृष्टांत जाणवुं."२३

केटलाक प्राणीनां पापकर्मो एवां होय छे के जे बीजानी समक्ष कहेतां पण लज्जा आवे. एटलामाटे एक पुरुषे समवसरणमां आवीने भगवंतने पूछयुं के 'ते, ते?' भगवंते कह्युं 'हा. ते.' अहीं 'जासा सासानुं' दृष्टांत जाणवु.

'जासा सासा' नुं दृष्टांत.

वसंतपुर नगरमां अनंगसेन नामे एक सोनी रहेतो हतो. ते अति स्त्रीलंपट हतो. ते पांचसो स्त्रीओ परण्यो हतो. ते दरेक अति रूपवती हती. ते सोनी पोतानी स्त्रीओने बहार काढतो न्होतो, घरमांज राखतो हतो. एक वखत ते जमवाने माटे पोतानाकोइ मित्रने घेर गयो. त्यारे ते सर्व स्त्रीओए विचार कर्यो के—'आज आपणने वखत मळ्यो छे.' एम विचारीने स्नान, विलेपन, काजळ, सिंदुरना तिलक विगेरे करीने तथा आभरणो पहेरीने सर्व स्त्रीओ पोतानां हस्तमां आदर्श (काच) लइ पोताना रूपने जोवा लागी; अने हसवुं, रमवुं, गीतगान करवां इत्यादि क्रीडा परस्पर करवा लागी. तेओ अन्योन्य कहेवा लागी "आपणामांथी जेनो वारो होय छे तेनेज आपणो स्वामी तो आभूषण विगेरेथी सुशोभित करे छे, बीजी स्त्रीओने शणगार पण करवा देतो नथी; तो हवे आपणे आजे तो मरजी मुजब क्रीडा करवी जोइए." एवामां सोनी पोताने घेर आव्यो, तेणे पोतानी स्त्रीओनी पूर्वोक्त चेष्टा जोइ; एटले तेमांथी एक स्त्रीने पकडीने मर्मस्थानमां मार मार्यो. जेथी ते मृत्युवश थइ गइ. त्यारे बीजी स्त्रीओए विचार्युं के 'आणे एकने मारी नांखी तेम बीजीओने पण मारी नांखशे माटे एनेज मारी नांखवो जोइए.' ए प्रमाणे विचार करी, ते सघळी स्त्रीओए ते वखते पोतपोताना हाथमां रहेलां दर्पणो तेना तरफ फेंक्यां. ते दर्पणोना प्रहारथी सोनी मृत्यु पाम्यो. पाछळ स्त्रीओ लोकोना अपवादथी भय पामीने बळी मुइ. तेओ बधी मरण पामीने एक पाळमां चोर थइ. जे स्त्री प्रथम मृत्यु पामी हती ते कोइएक गाममां कोइ व्यापारीने घेर पुत्र तरीके उत्पन्न थइ, अने सोनीनो जीव ते श्रेष्ठीने घरे पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. तेणे पूर्वभवमां अति विषय सेव्यो हतो तेथी ते जन्म पामतांज अति कामातुर थइ रुदन करती हती. एकदा तेना भाइनो हस्त तेनी योनिने लाग्यो, एटले ते रोती बंध थइ गइ. आ प्रमाणे तेने छानी राखवानो उपाय हाथ आ[illegible] ज्यारे ते [illegible] तेनो भाइ दर-

रोज ए प्रमाणे करे [illegible]
तेने ए प्रमाणे करतो जोगो तेणी तेने [illegible]
नहि त्यारे तेने घरमांथी काढी मूक्यो. ते चोरनी टोळी [illegible] पांचसो चोरो-
नो स्वामी थयो. एक दिवस ते सर्व चोरोए एकठा थइ कोइ गाममां धाड पाडी.
त्यांथी बीजे गाम गया. त्यां तेनी [illegible] जेने यौवन
प्राप्त थइ छे ते आवी हती. तेने चोरोए जोइ [illegible] स्नेहथी कामातुर
थइ तेणेज चोरोने कह्युं के–'मने स्त्री तरीके स्वीकारो.' ए प्रमाणे प्रार्थना क-
रवाथी तेओए तेने स्वीकारी. आ प्रमाणे ते पांचसो चोरोनी पत्नी थइ. परंतु
ते पांचसो पुरुषोथी पण तृप्ति पामती नथी. अहो! स्त्रीओनी कामलोलुपता
केवा प्रकारनी छे! कह्युं छे के–

नाग्निस्तृप्यति काष्ठौघैर्, नापगाभिर्महोदधिः ।
नांतकः सर्वभूतेभ्यो, न पुंभिर्वामलोचना ॥

"काष्ठना समूहथी अग्नि तृप्त थतो नथी, नदीओथी समुद्र तृप्त थतो नथी, स
प्राणीओथी यम राजा तृप्त थतो नथी, अने पुरुषोथी स्त्री तृप्त थती नथी." वळी

नागरजातिरदुष्टा, शीतोवह्निर्निरामयः कायः ।
स्वादु च सागरसलिलं, स्त्रीषु सतीत्वं न संभवति ॥

"नागरजातिमां अदुष्टपणुं, वन्हिमां शीतळपणुं, कायामां निरोगपणुं, स
मुद्रजळमां स्वादिष्टपणुं अने स्त्रीओमां सतीपणुं संभवतुंज नथी."

एक दिवसे चोरोए विचार्युं के–'आ स्त्री पांचसे पुरुषोथी सेवातां दु
पामे छे, तेथी बीजी स्त्री लाववी जोइए.' ए प्रमाणे दयाथी तेओए बीजी
आणी; तेने जोइ पहेली स्त्रीए विचार्युं के–'अरे! मारा उपर आ बीजी
आणी! आ मारा विषयभोगमां भाग पाडशे.' एवी बुद्धिथी तेणे तेने कूव
नांखी दीधी, जेथी ते मृत्यु पामी. ए वात पल्लीपतिए सांभळी तेथी विचा[illegible]
लाग्यो के 'अहो! आ कामथी अतिविन्हल छे अने महापापकारिणी छे.' वळी
तेणे विचार कर्यो के–'आवी तीव्र कामरागवाळी कदि मारी बहेन हशे!
कारणके तेनामां अति कामबुद्धि हतो.' पछी ए प्रकारनो संशय दूर करवाने
माटे ते श्री वर्धमान स्वामीना समवसरणमां गयो.

पल्लीपतिए प्रभुने वांदीने पूछ्युं के–'हे भगवन्! 'आ ते?' त्यारे भग-
वाने कह्युं के–'ते ते.' ए प्रमाणे सांभळी वैराग्यपरायण थइ, व्रत अंगीकार
करी, पाळीने ते शुभगतिने प्राप्त थयो.

अहीं गौतम स्वामीए प्रभुने पूछ्युं के-" हे भगवन् ! आपने पल्लीपतिए पूछ्युं के-'आ ते ?' त्यारे आपे उत्तर आप्यो के 'जे ते' एटले शुं ? अमे कांइ समज्या नहि." भगवाने कह्युं के-" एणे समस्यामां पूछ्युं के-'जे पेली मारी बहेन हती ते आ छे के नहि ? ' ए प्रमाणे लज्जाथी तेणे पोतानी स्त्रीनुं स्वरूप पूछ्युं. एटले में पण समस्याथी जवाब दीधो के 'तारी पत्नी ते तारी बहेनज छे.' ते सांभळी घणा लोक प्रतिबोध पाम्या.

'कर्मे प्रेरायेलो जीव न आचरवानुं पण आचरे छे' आवो आ कथानो उपनय छे.

पडिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पायवडियाए ।
तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलंनाणम् ॥ ३४ ॥

अर्थ-" पोताना दोषने अंगीकार करीने सम्यक् प्रकारे त्रिकरण शुद्धे पगे पडेली एवी (गुरुणीनी सेवा करनारी) मृगावतीने तेज कारणथी निश्चये निरावरण एवुं केवळज्ञान उत्पन्न थयुं." ३४. तेथी विनयज सर्व गुणोनुं निवासस्थान छे.

अहीं मृगावती साध्वीनुं दृष्टांत जाणवुं.

मृगावतीनुं दृष्टांत.

कोशाम्बी नगरीए श्रीमहावीर स्वामी समवसर्या ते वखते सर्व सुर अने असुरोना इंद्र करोडो देवताओथी परिवृत थइ वांदवाने माटे आव्या; तेमज सूर्य अने चंद्र पण पोताना मूळ विमानमां बेसीने वांदवाने आव्या. आर्य चंदना साध्वी पण मृगावतीने साथे लइने वांदवाने आव्या. आर्य चंदना आदि साध्वीओ प्रभुने वांदीने पोताना उपाश्रये आवी, पण मृगावती तो समवसरणमांज बेसी रही. ते वखते संध्याकाळ थयो हतो छतां पण सूर्यना तेजथी ते तेना जाणवामां आव्यो नहि; कारणके उद्योत तेवो ने तेवोज रहेलो हतो. अनुक्रमे रात्रि घणी गइ, अने सर्व लोको प्रभुने वांदीने पोतपोताने घेर गया; पण मृगावतीए रात्रि घणी गइ छे एम जाण्युं नहि. पछी ज्यारे सूर्य चंद्र पोताना विमानमां बेसीने पोताना स्थानके गया त्यारे समवसरणमां तेमज पृथ्वी उपर अंधकार प्रसरी गयो, तेथी मृगावती संभ्रमित थइ. 'घणी रात्रि गइ छे' एम जाणी शहेरमां आर्य चंदनाना उपाश्रये आवी. ए समये आर्य चंदना साध्वी पण प्रतिक्रमण करी, संथारापोरषी भणावी, संथारामां बेसीने मनमां विचार करती हती के-'मृगावती क्यां गइ हशे ? अने क्यां रही हशे ?' एवामां मृगावतीने आवेली जोइ तेने ठपको आपवा लाग्या के-'हे मृगावती ! तने आ न

घटे. तारा जेवी प्रधानकुळमां जन्मेली. साध्वीने रात्रिए बहार रहेवुं ए उचित नथी; तें आ विरुद्ध आचरेलुं छे.' आ प्रमाणेनां आर्य चंदनानां वचन सांभळीने नेत्रमांथी गळतां अश्रुथी संतापने वहन करती ते पश्चात्ताप करवा लागी के–'में आ गुणवती साध्वीने संताप उत्पन्न कर्यो.' ए प्रमाणे पोताना आत्माने निंदती ते हाथ जोडी कहेवा लागी के–'हे भगवती! मारो आ एक अपराध क्षमा करो, हुं मंदभागी छुं; प्रमादवशथी हुं रात्रिनुं स्वरूप जाणी शकी नहि, हुं फरीथी आवुं करीश नहि.' ए प्रमाणे वारंवार खमावीने तेमना चरणमां पडी तेमनी वैयावच्च करवा लागी. आर्य चंदना तो संथारामां सुइ गया, पण मृगावती तो पोताना आत्मानी निंदा करे छे. एम करतां करतां मृगावतीनो शुक्लध्यान रूपी अग्नि वृद्धि पाम्यो अने कठिन कर्म रूपी इन्धनसमूह बळी गयो; तेथी मृगावतीने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. एवामां कोइएक सर्प आर्य चंदनाना संथारानी पासे आवतो मृगावतीए केवलज्ञानथी जोयो, एटले संथारानी बहार रहेलो आर्य चंदनानो हाथ तेणे संथारामां मूक्यो. तेथी आर्य चंदना जागी गया अने पूछ्युं के–'मारो हाथ कोणे हलाव्यो?' त्यारे मृगावतीए कह्युं के–'स्वामिनी! मारो अपराध क्षमा करो, में तमारो हाथ हलाव्यो छे.' ते सांभळी चंदनाए 'केम हलाव्यो?' एम पूछतां मृगावतीए कह्युं के–'सर्प आवे छे तेथी.' चंदनाए पूछ्युं के–'आवा अंधकारमां तें ते केम जाण्युं?' मृगावती बोली के–'अतिशयथी.' आर्य चंदनाए पूछ्युं के–'आ अतिशय केवा प्रकारनो?' मृगावतीए कह्युं के–'केवलज्ञान रूपी अतिशय.' ते सांभळी आर्य चंदना केवलज्ञानीनी आशातना थयेली जाणी पश्चात्ताप करवा लाग्या अने मृगावतीना चरणमां पडया. ए प्रमाणे आत्मनिंदामां तत्पर थयेला आर्य चंदनाने पण केवलज्ञान उत्पन्न थयुं.

जेवी रीते मृगावतीए कषाय न कर्यो तेवी रीते बीजाओए पण कषाय करवो नहि, एवो आ दृष्टांतनो उपनयथी उपदेश आपेलो छे. इति.

किं सक्का वुत्तुं जे, सरागधम्मंमि कोइ अकसाओ।
जो पुण धरिज्ज धणियं, दुव्वयणुज्जालिए स मुणी ॥३५॥

अर्थ—"शुं एम कही शकाय के आधुनिक सराग धर्ममां–रागद्वेष सहित चारित्रमां (कोइ मुनि) अकषायी–सर्वथा कषाय रहित होय, आ वात संभवित नथी कारण के सर्वथा कषायरहितपणुं [illegible] क्यांथी होय? परंतु जे दुर्वचन रूप [illegible] प्रज्वलित [illegible] कषाय रूप अग्निने धरी राखे–उदय आ-

[illegible]

ळाने पण प्रगट न थवा दे तेज मुनि, तेज महापुरुष; कारणके सर्वथा कषा-
त्याग तो बहु दुर्लभ छे. सर्वथा कषायरहितपणुं तो आ काळमां संभवतुंज नथी,
रंतु जेओ कोइना कहेलां दुर्वचनोथी उदयमां आववाने तैयार थयेला कषायने
ण रोकी राखे तेने धन्य छे, ते महापुरुष छे." ३५

करुअ कसायतरूणं, पुप्फं च फलं च दोवि विरसाइं।

ण झाइ कुविओ, फलेण पावं समायरइ ॥ ३६ ॥

र्थ—"कडवा कषाय वृक्षनां पुष्प अने फळ बंने निःस्वादु छे. तेनां पु-
कोपायमान थयो सतो परने मारवा विगेरे अनर्थ चिंतवे छे—ध्याय छे.
ाय वृक्षनां पुष्पो छे अने फळे करीने परने ताडन तर्जन करवा रुप पाप
छे ते फळ छे. तेथी कषायरूप वृक्षनां पुष्प ने फळ बंने कडवां छे अने
थी गति नरकनी प्राप्त थाय छे." ३६

ते वि को वि उज्झइ, को वि असंतेवि अहिलसइ भोए।

यइ परपच्चएणवि पभवो दट्ठूण जह जंबू ॥ ३७ ॥

अर्थ—"कोइ (महापुरुष) छता भोगने तजे छे, कोइ (नीचकर्मी जीव)
ता भोगनो अभिलाप करे छे, अने कोइ परना निमित्ते करीने पण भोगने
दे छे. अन्यने छता भोग तजतो देखी पोते बोध पामे छे. जेम जंबूस्वा-
र भोग तजतां जोइने पांचसे चोर सहित प्रभव स्वामीए पण भोग तजी दीधा
. ३७. अहीं जंबू स्वामीनुं दृष्टांत जाणवुं. ११

श्री जंबूस्वामीनुं दृष्टांत.

प्रथम तेमना पूर्वभवनुं स्वरूप कहे छे—

एकदा राजगृह नगरे श्री महावीर स्वामी समवसर्या. श्रेणिक राजा वांद-
ाने माटे आव्या. ते समये कोइ देवताए प्रथम देवलोकथी आवी सूर्याभदेवनी
ेम नाटक करीने पोताना आयुष्यनुं स्वरूप पूछयुं. भगवाने कह्युं के—'आज-
ी सातमे दिवसे तुं च्यवीने मनुष्यभव पामीश.' ए प्रमाणे सांभळीने ते देव
ोताने स्थानके गयो. पछी श्रेणिक राजाए पूछयुं के—'हे स्वामी! आ देव
्यां जन्म लेशे!' वीर प्रभुए कह्युं के—'आ राजगृह नगरमांज जंबू नामे ए
ेल्ला केवली थशे.' श्रेणिक राजाए कह्युं के—'हे प्रभु! एना पूर्वभवनुं स्वरूप
ाने कहो.' भगवाने कह्युं के—"जंबूद्वीपनां भरतक्षेत्रमां सुग्रीव नामना गाममां
्र [illegible] नामनो कोइ रंक रहेतो हतो. तेने [illegible] नामे स्त्री हती. तेनाथी भवदेव
े भावदेव नामना बे पुत्रो थया हता.

गाथा ३६—झाइ झाइ-ध्यायति.

एकदा भवदेवे दीक्षा लीधी. विहार करतां ते एक दिवस पोताना गामे आव्या ते वखते भावदेवे पोतानी नवी परणेली नागिला नामनी स्त्रीने तजी दइने ज्जावडे पोताना बंधु भवदेव मुनि समीपे चारित्र ग्रहण कर्युं. भवदेव मृत्यु पामीने स्वर्गे गया. भावदेव भवदेवना मरण पछी चारित्रथी भ्रष्ट थया. ते लज्जा तजी दइ नवी परणेली नागिलाने संभारता भोगनी आशाथी घर तरफ चाल्या अनुक्रमे पोताना गामे आवी गामनी बहार श्री ऋषभदेव भगवानना मंदिरमां रह्या. ते समये तपथी कृश थयेली नागिला पण त्यां दर्शनार्थे आवी. तेणे पोताना पतिने ओळख्या अने इंगिताकारथी तेने कामातुर पण जाण्या. नागिलाए पूछ्युं के–' हे मुनि ! आप अहीं शा अर्थे पधार्या छो ? ' साधुए कह्युं के–' मारी नागिला नामनी स्त्रीना स्नेहने लीधे हुं आव्यो छुं. में लज्जाने लीधे संयम ग्रहण कर्युं हतुं, परंतु प्रेमभाव केम जाय ? माटे जो नागिला मळे तो मारुं सर्व मनवांछित सिद्ध थाय. " त्यारे नागिलाए कह्युं के–" अरे मुनि ! चिंतामणिने छोडीने कांकरो कोण ग्रहण करे ? हाथीने छोडीने रासभ उपर कोण स्वारी करे ? नावने दूर छोडी दइने मोटी शिळानो आश्रय कोण करे ? कल्पतरुने छोडी धंतुरो कोण वावे ? " इत्यादि उपदेश आपी पोताना धणीने चारित्रमां दृढ कर्या. भावदेव पाप आलोवी चारित्र पाळीने त्रीजा स्वर्गमां सागरोपमना आयुष्यवाळा देवता थया. नागिला पण मरण पामीने स्वर्गे त्यांथी च्यवी एक अवतार करीने मोक्षे जशे.

भावदेवनो जीव त्रीजा देवलोकथी च्यवी जंबूद्वीपमां पूर्व विदेहने विषे वीतशोका नगरीमां पद्मरथ राजाने घेर वनमाला राणीनी कुक्षिथी पुत्रपणे उत्पन्न थयो. तेनुं शिवकुमार नाम पाड्युं. युवान वय पामतां ते पांचसो राजकन्याओ परण्यो. एक दिवसे ते गोखमां बेठो हतो तेवामां तेणे एक साधुने जोया. एटले गोखमांथी उतरी नीचे आवीने तेणे साधुने पूछ्युं के–' तमे आटलो क्लेश शामाटे सहन करो छो ' ? साधुए कह्युं के–' धर्मनिमित्ते. ' शिवकुमारे पूछ्युं के–' आ धर्म कया प्रकारनो ? ' साधुए कह्युं के–' जो तमारे सांभळवानी इच्छा होय तो अमारा गुरु पासे आवो. ' शिवकुमार तेनी साथे धर्मघोष आचार्य पासे गयो. त्यां धर्म सांभळतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पछी ते [illegible] नमीने घेर आव्यो. तेणे मातपिता पासे दीक्षानी आज्ञा मागी. तेमणे [illegible] आज्ञा आपी नहि; तेथी ते घरमां रही निरंतर छट्ठ तप करवा लाग्यो. पारणे आंबिल करवा लाग्यो. ए प्रमाणे बार वर्ष सुधी तप करीने [illegible] सागरोपम आयुष्यवाळो विद्युन्माली नामे देव थयो.

हे श्रेणिक ! ते विद्युन्माली देव अहीं आव्यो हतो. " आ प्रमाणे जंबूस्वामीना चार भव वीर प्रभुए श्रेणिक राजाने आगळ कह्या.

पांचमा भवमां विद्युन्माली देव स्वर्गथी च्यवी राजगृह नगरमां ऋषभदत्त श्रेष्ठीने घेर धारणी देवीनी कुक्षिमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. स्वप्नमां शाश्वत जंबूतरु देखवाथी ते जन्म्यो त्यारे तेनु जंबूकुमार नाम राख्युं. तेणे बाल्यावस्थामां सकल कलानो अभ्यास कर्यो. अनुक्रमे यौवन प्राप्त थतां ते अति रुपवान होवाथी तरुणी रुपी हरिणीओने पाश रुप थयो. ते समये तेज नगरमां रहेनारा आठ शेठीआओए जंबूकुमारनी साथे पोतानी आठ कन्याओनुं वेशवाळ कर्युं.

अन्यदा श्री सुधर्मा स्वामी गणधर राजगृह नगरे समवसर्या कोणिक राजा वांदवा आव्यो. श्री सुधर्मा स्वामीए संसार रुपी दावानलना तापनी शांति अर्थे मेघजलनी धारा जेवी देशना आपी, अने संसारना स्वरूपनी अनित्यता दर्शावी तेमणे कह्युं के–' जेम कामीओनुं मन चंचळ होय छे, मूषा (सोनुं गाळवानी कुरडी)नी अंदर रहेलुं प्रवाही बनेलुं सोनुं चंचळ होय छे, जळनी अंदर पडतु चंद्रनुं प्रतिबिंब चंचळ होय छे अने वायुथी हणायेलो ध्वजनो प्रांत भाग जेम चंचळ होय छे तेवीज रीते आ संसारनुं स्वरूप अस्थिर छे. वळी जेवी रीते अंगुठो चूसी पोतानीज लाळनुं पान करतो बाळक जेम सुख माने छे, तेम आ जीव पण निंदित भोग भोगवी सुख माने छे. अहो ! आ लोकोनुं मूर्खपणुं केवुं छे ! के ते जेमां उत्पन्न थयो छे तेमांज आसक्त थाय छे, जेनुं पान करेलुं छे तेज स्तनोनो स्पर्श करवाथी मनमां खुशी थाय छे. ' इत्यादि देशना सांभळीने जंबूकुमार प्रतिबोध पाम्या. तेमणे सुधर्मा स्वामीने कह्युं के–' हे स्वामी ! मने संसारनो निस्तार करनारी दीक्षा आपीने मारो उद्धार करो, ' सुधर्मा स्वामीए कह्युं के–' हे देवानुप्रिय ! प्रमाद कर नहि. ' ए प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळी ते मातापितानी आज्ञा लेवा माटे घेर आवतां राजमार्गमां आव्यो. त्यां घणा राजकुमारो हथियारोनो अभ्यास करे छे. त्यांथी एक लोढानो गोळो जंबूकुमार पासे आवीने पडयो. जंबूकुमारे विचार्युं के–' जो मने आ गोळो लाग्यो होत तो हुं मनवांछित केवी रीते करी शकत ? ' ए प्रमाणे विचारी पाछा वळी गुरु पासे आवी तेणे लघु दीक्षा ग्रहण करी; पछी घेर आव्या, अने मातापिताना चरणमां पडीने कहेवा लाग्या के–" हु दीक्षा लइश, आ संसार अनित्य छे, आ बाह्य कुटुंबपरिवारथी शो लाभ छे ? हुं तो अंतरंग कुटुंबमां अनुरक्त थयेलो छुं, तेथी हुं उदासीनपणा रुपी घरनी अंदर वास करीश अने विरति रुपी मातानी सेवा करीश, योगाभ्यास रुपी पीता, समता रुपी धात्रमाता, निरागता रुपी

प्रिय वहेन, विनय रुपी अनुयायी बंधु, विवेक रुपी पुत्र, सुमति रुपी
णप्रिया, ज्ञान रुपी अमृतभोजन अने सम्यकत्व रुपी अक्षय भंडार—आ कुटुं
मारो प्रेम छे. तप रुपी अश्व उपर स्वारी करी, भावना रुपी कवचने धा
करी, अभयदान आदि उमरावो सहित संतोष रुपी सेनापतिने अग्रेसर क
संयमना नाना प्रकारना गुण रुपी सेनाने सज्ज करी, क्षपकश्रेणि रुपी गजघटा
परिवृत थइ, गुरुनी आज्ञा रुपी शिरस्त्राण[1] धारण करी, धर्मध्यान रुपी खड्ग
महा दुःख देनारी एवी अंतरंग मोहराजानी सेनाने हणीश." आ
पुत्रना वचन सांभळीने मातापिता बोल्यां के—" हे पुत्र ! एक वखत आठ कन्या
ओने परणी अमारो मनोरथ पूर्ण करो पछी व्रत ग्रहण कर." ए प्रमाणेनां पि
तानां वचनथी तेणे आठे कन्याओनी साथे पाणिग्रहण कर्युं: परंतु ते मन
तद्दन निर्विकारी हतो. एक एक कन्या नव नव क्रोड सोनामहोर करी
लावी हती, आठ क्रोड सोनामहोर आठ कन्याना मोसाळपक्ष तरफथी आवी हती
अने एक क्रोड जबूकुमारना मोसाळपक्ष तरफथी आवी हती. ए प्रमाणे एकाणुं
क्रोड सोनामहोर आवेली हती. अने अढार क्रोड सोनामहोर पोताना घरमां हती
आ प्रमाणे जबुकुमार नवाणु क्रोड सोनामहोरना अधिपति थया हता.

हवे जंबुकुमार रात्रिए रंगशाळा (शयनगृह) मां स्त्रीओ साथे बेठा
पण ते तेमने रागवाळी दृष्टिए जोता पण नथी, तेम वचनथी पण संतोष आ
नथी. स्त्रीओए तेने प्रेममय वचनोथी चलित करवा माटे घणो प्रयत्न कर्यो
ने चलित थया नहि. ते समये प्रभव नामनो चोर पांचसे चोरोथी परिवृत
जंबुकुमारना घरमां आव्यो, तेमणे क्रोड सोनामहोर लइ तेनी गांसडीओ
अने मस्तकपर मूकीने नीकळवा लाग्या, ते अवसरे जबुकुमारे स्मरण करेला
पंचपरमेष्ठी नमस्कार मंत्रना महात्म्यथी ते सर्वे भींत उपर काढेल चित्रानी
स्थिर थइ गया त्यारे प्रभवे कह्युं के 'हे जंबुकुमार ! तुं जीवदयापालक छे.
अभयदानथी वधारे दुनियामां बीजुं कोइ पण पुण्य नथी; अमे जो अहीं
तो प्रातःकाळे कोणिक राजा अमने सर्वने मारी नाखशे. माटे अमने छोडी
अने मारी पासे तालोद्घाटिनी (ताळ उघाडनारी) अने अवस्वापिनी (
[illegible] करनारी) नामनी बे विद्या छे ते तुं ले अने तारी स्तभिनि विद्या
आप.' जंबुकुमारे कह्युं के—'मारी पासे तो धर्मकला नामनी एक मोटी
छे. ते विद्यानो बीजी कोइ [illegible] दुनिया छे [illegible] तो तमनी मारा
[illegible] [illegible] दीर्घ[illegible] करनारी छे. आ [illegible]

1 [illegible] मस्तकना रक्षण माटे माथापर मूके छे ते लोढानी [illegible]

बिंदु जेवा छे.' प्रभवे कह्युं के-' मने मधुबिंदु पुरुषनुं दृष्टांत कहो.' एटले कुमार कहेवा लाग्या के-सांभळ !

" एक वनमां सार्थथी विखुटो पडी गयेलो कोइएक पुरुष भटके छे. एवे एक जंगली हाथी तेने मारवाने माटे सन्मुख दोडयो. एटले ते नाठो. ... हाथीना भयथी कुवानी अंदर रहेल ... शाखानो आश्रय करीने ते कुवामां लटकी रह्यो. कुवामां तेनी नीचे ... मुख करीने रहेला बे अजगरो छे. अने चारे पडखे चार मोटा सर्पो ... हाथमां पकडेली वडनी शाखा उपर रसथी भरेलो एक मधपुडो छे. बे उंद- ... शाखाने कापे छे अने मधपुडामांथी उडेली माखीओ तेने डंख मार्या ... छे. ... माणस घणे लांबे वखत मधपुडामां- ... मधुबिंदु चाखीने तेना स्वादथी पोताने सुखी माने छे. एवे ... कोइएक विद्याधर त्यां आव्यो. तेणे तेने कह्युं के-' तुं आ विमानमां ... हुं तने दुःखमांथी मुक्त करुं.' त्यारे ते मूर्ख माणसे जवाब आप्यो के- ... क्षण थोभो, हुं आ मधना एक बिंदुनो स्वाद लइने आवुं छुं.' ते सांभ- ... विद्याधर चाल्यो गयो अने ते मूर्ख दुःख पाम्यो."

माटे हे प्रभव ! आ विषयनो विपाक मधुबिंदुना जेवो छे. आनो उपनय ... छे के-' आ संसार रूपी मोटुं जंगल छे. तेमां जीव रूपी विखुटो पडी ग- ... एक छे, जन्म, जरा ने मरण रूपी कुवो छे. ते विषय रूपी जळथी भरेलो ... नारकी गति अने तिर्यंच गति रूपी बे अजगरो छे, कषाय रूपी चार सर्पो ..., आयुष्य रूपी वडनी शाखा छे, शुक्ल ने कृष्ण पक्ष रूपी बे उंदरो छे. मृत्यु ... पी हाथी छे,अने विषय रूपी मधपुडो छे.तेमां आसक्त थइ आ जीव रोग,शोक, ... योग आदि अनेक उपद्रवोने सहन करे छे. माटे धर्म एज मोटुं सुख छे, तेवा सुखने आपनार गुरु ते विद्याधरनी जेवा छे.' आ प्रमाणे मधुबिंदुनुं दृष्टांत जाणवुं.

प्रभवे फरीथी कह्युं के-' भर यौवनमां पुत्र स्त्री विगेरे सघळा परिवारनो ...ग करवो उचित नथी.' जंबूकुमारे कह्युं के-' एक एक जीवने परस्पर अनं- ...र दरेक संबंध थयेला छे. जेम के एक भवमां थयेला अढार नातरानो सं- ... छे.' प्रभवे कह्युं के-' ते अढार नातराना संबंधनुं स्वरूप केवुं छे ते मने ....' जंबूकुमारे कह्युं के-' मथुरापुरीमां कुबेरसेना नामे वेश्या हती. तेनी ...थी छोकरा ने छोकरीनुं युगल उत्पन्न थयुं. छोकरानुं नाम कुबेरदत्त राख्युं ... छोकरीनुं नाम कुबेरदत्ता राख्युं. ते युगलने तेमनां नामथी अंकित मुद्रा ...रावी वस्त्रमां वींटी पेटीमां नाखीने ते पेटी यमुना नदीना प्रवाहमां वहेती

करी. प्रातःकाळे ते पेटी सोरीपुर नामना नगर पासे पहोंची. त्यांना बे... ओए ते पेटी बहार काढी एक शेठे पुत्र ग्रहण कर्यो अने बीजाए पुत्री करी. तेओ युवान थतां कर्मयोगे लग्ननी गांठथी परस्पर जोडायां. एकदा गठाबाजी रमतां कुबेरदत्ताए पोताना पतिना हाथमां पेली मुद्रा जोइ. 'आ मारो भाइ छे' एम जाणी ते विरक्त थइ. तेणे संयम ग्रहण कर्युं. तेने अवधिज्ञान प्राप्त थयुं. एवे समये कुबेरदत्त कार्य अर्थे मथुराए गयो. कुबेरसेना वेश्या जे तेनी माता हती तेनी साथे लपटायो. तेमने पुत्रप्राप्ति... कुबेरदत्ता साध्वीए अवधिज्ञानथी जाण्यु के—'आ मोटो अनर्थ थाय छे.' तेमने प्रतिबोध पमाडवाने माटे ते त्यां आव्या. ते कुबेरसेनाने घरे... त्यां रुदन करता पेला बाळक पासे आवीने कहेवा लाग्या के—"हे ... तुं केम रुवे छे? मौन ग्रहण कर. तुं मने वहालो छे. तारी साथे मारे छ ... छे. (१) तुं मारो पुत्र छे, (२) तुं मारा भाइनो पुत्र छे, (३) तुं मारो भाइ ... (४) तुं मारो दीयर छे, (५) तुं मारो काको छे, अने (६) तुं मारो पौत्र छे. हे वत्स! तारा पिता साथे पण मारे छ संबंध छे. (१) ते मारो पति छे, ... मारो पिता छे, (३) मारो ज्येष्ठ बंधु छे, (४) मारो पुत्र छे, (५) मारो ... छे, अने (६) मारो प्रपिता (पितानो पिता) छे. तारी मानी साथे पण मारे ... संबंध छे. [१] ते मारी भ्रातृपत्नी (भोजाइ) छे. [२] मारी सपत्नी (शोक) [३] मारी माता छे, [४] मारी सासु छे, [५] मारी वहु छे, अने [६] ... मातामही (बापनी मा) छे." ए प्रमाणेनां साध्वीनां वचन सांभळी पूर्व ... स्वरूप जाणी कुबेरसेनाए व्रत ग्रहण कर्युं, अने संसारना पारने पामी. ... माणे हे प्रभव! आ संसारमां अनंतवार दरेक संबंध थयेला छे. कोण कोई... धर्म एज परम बंधु छे.

प्रभवे फरीथी कह्यु के—"हे जंबूकुमार! तमे जे कह्युं ते खरुं छे. परंतु ... पुत्र नथी तेने सद्‌गति नथी' एवुं पुराणवाक्य छे. तेथी भोग भोगवी... पुत्रने घरे मूकीने पछी संयममां मन राखजो" जंबूकुमारे कह्युं के—"पु... तो सुगति थाय अने ते न होय तो कुगति थाय एवो कांइ नियम नथी; ... संसारी जीवोने केवळ मोहजन्य भ्रम छे. जेम महेश्वरदत्तने पुत्र काममां आ... ...न." प्रभवे पूछ्युं के 'ते महेश्वरदत्त कोण हतो?' जंबूकुमारे कह्युं के ...

"विजयपुर नगरमां महेश्वरदत्त नामे एक शेठीओ हतो. तेने महे... एक पुत्र हतो. महेश्वरदत्ते पोताना मरणसमये पुत्रने कह्युं के—' मारा

* आ प्रबंध प्रथमनुं स्मरण.

से एक पाडाने मारीने तेना मांसथी आपणा सघळा परिवारने तृप्त करजे.'
महेश्वरदत्त मरी गयो. पुत्रे पितानुं वचन याद राख्युं. महेश्वरदत्त मरीने
ां पाडो थयो. महेश्वरनो माता घरमां बहु मोह होवाथी मरीने तेज घरमां
ी थइ. दैवयोगथी श्राद्धने दिवसे तेज पाडो आण्यो. महेश्वरनी स्त्री व्यभि-
णी हती. तेनी साथे क्रीडा करनारा जारपुरुषने महेश्वरे मारी नांख्यो. ते
ने तेनेज घरे पुत्रपणे उत्पन्न थयो. तेने लाड लडाववामां आवे छे. हवे
पाडाने प्राणमुक्त करवामां आव्यो, अने कुटुंबीओए ते पाडानुं मांस भक्षण
एवे समये श्रीधर्मघोष नामना मुनि गोचरीने माटे त्यां पधार्या. तेमणे म-
ना घरनुं सघळुं चरित्र ज्ञानथी जाणीने कह्युं के—

मारितो वल्लभो जातः पितापुत्रेण भक्षितः।
जननी ताड्यते सेयं, अहो मोहविजृंभितम्॥

"जारने मारी नांखवाथी ते पुत्ररूपे वल्लभ [प्रिय] थयो, पाडा थयेला
ने पुत्रे भक्षण कर्यो; अने कुतरी थयेली माताने ताडन करवामां आवे छे.
! मोहनो विलास विचित्र छे."

ए प्रमाणेनो श्लोक सांभळीने महेश्वरे पूछ्युं के—'हे स्वामी! ए केवी
?' साधुए सर्व हकीकत कही. ते महेश्वरे मानी नहि, एटले कुतरी पासे
खजानो बतावीने साधुए विश्वास उत्पन्न कर्यो महेश्वर श्राद्ध छोडीने श्रा-
थयो. कुतरीने पण जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त थवाथी तेणे मिथ्यात्वनो त्याग
ो अने ते स्वर्गे गइ. माटे हे प्रभव! पुत्रथी शी कार्यसिद्धि थाय ते कहे."
प्रमाणे महेश्वरदत्तनुं दृष्टांत जाणवुं.

हवे प्रभव कहे छे के—'हे जंबूकुमार! तुं मने आ जिवितदान आपे छे ते
तारुं पहेलुं पुण्य छे, हवे जो आ मारो परिवार बंधनथी छुटो थाय तो हुं
तमारी साथे चारित्र ग्रहण करीश.' ए प्रकारनो तेनो निश्चय सांभळीने समु-
-नामनी प्रथम स्त्री बोली के—"तमारा जेवा दुष्ट कर्म करनाराओमे तो
रित्र घटे छे? दुःखी प्राणीओ सुखनी अपेक्षाथी चारित्र ग्रहण करे छे, परंतु
ी लोकोने संयम-रूपी कष्ट अनिष्ट छे, अने प्राये करीने लोको पारका घरने
नाराज होय छे. हे प्रभव! जो आ जंबूकुमार तारा कहेवाथी व्रतने ग्रहण
शे तो एक हाळीनो पेठे तेन पस्तावु पडशे." प्रभवे कह्युं के—'ए हाळी
ण हतो?' समुद्रश्री कहे छे के सांभळ—

मरु देशना अंदर एक वग नामनो पामर वसतो हतो. ते खेती करतो अने कोद्रा, कांग विगेरे धान्य वावतो हतो. ते एक दिवस पोतानी दीकरीने सरे गयो. त्यां तेने गोळमिश्रित मालपुडा जमाडया. त्यां तेणे शेरडीनो अ गोळनी उत्पत्ति जाणी. तेथी पोताने घेर आवीने तेणे पुष्प ने फळथी खी क्षेत्रने निर्मूळ करी नांखीने तेमां शेरडी वावी. तेनी स्त्रीए तेने घणो वार्यो ते अटक्यो नहि, आपमतिलो थयो. मरुभूमि होवाथी पाणी विना शेरडी तो नहि अने पूर्वनुं धान्य हतुं ते पण गयुं. पछी ते पश्चात्ताप करवा लाग्यं 'मिष्ट भोजननी आशाथी मे प्रथमनुं पाकेलुं धान्य पण गुमाव्युं.' ते प्रमा प्राणवल्लभ! तमे पण पश्चात्ताप पामशो. माटे प्राप्त थयेल सुखनो त्याग अधिक सुखनी वांछा करवी नहि.

इति वगपामर दृष्टांत १.

जंबूकुमारे कह्युं के-" तुं जे कहे छे ते सत्य छे, परंतु जेओ आ लं सुखना अभिलाषी होय छे तेओ दुःख पामे छे. पण ज्ञानथी उत्कृष्ट बीजुं नथी, शमता जेवुं बीजुं सुख नथी, 'दीर्घ काळ जीवो' ए आशीर्वाद उ बीजो उत्तम आशीर्वाद नथी, लोभ जेवुं बीजुं दुःख नथी, आशा जेवुं बंधन अने स्त्री जेवी बीजी जाळ नथी. तेथी जे स्त्रीओमां अतिलुब्ध रहेछे ते का नी माफक अनर्थ प्राप्त करेछे." स्त्रीए पूछयुं के-'ए वायस कोण हतो'

जंबूकुमार कहेछे के-मृगुकच्छमां रेवा नदीने किनारे एक हाथी पाम्यो. त्यां बहु कागडाओ भेगा थइ आवजाव करवा लाग्या. जेम दान मां ब्राह्मणो मळे तेम त्यां कागडाओ एकठा थयेला हता. तेमांथी एक ते मरेला हाथीना गुदाद्वारमां प्रवेश कर्यो अने मांसलुब्ध थइने त्यांज लाग्यो. एवामां ग्रीष्म काळ आवतां गुदाद्वार संकुचित थइ गयुं. तेथी अंदरज रह्यो. वर्षाऋतु आवतां ते हाथीनुं शब पाणीना प्रवाहमां तणायुं. गु विकसित थवाथी ते विचारो कागडो बहार तो नीकळ्यो, पण चारे दिशा नीनुं पूर जोइने त्यांज मरण पाम्यो. आ दृष्टांतनो एवो उपनय छे के मरे थीना कलेवर जेवी स्त्रीओ छे, अने कागडा जेवा विषयासक्त पुरुष छे, मारनी जळमां बुडेछे, विषयना अतिशय लोभथी ते शोकने पामे छे.

इति काक दृष्टांत २.

हवे [illegible] कागो के-'हे प्रिय! अति लोभथी मनु

रनी पेठे दुःख पामे छे.' प्रभव चोरे कह्युं के–'ते वानरनुं दृष्टांत कहो.' पद्मश्री कहे के सांभळो–

एक जंगलमां कोइ वानरनुं जोडुं सुखे रहेतुं हतुं. एक दिवस देवाधिष्ठित पाणीना धरामां ते जोडामांथी वानर पडयो एटले तेने मनुष्यपणुं प्राप्त थयुं ते जोइ वानरी पण पडी एटले ते पण मनुष्यणी थइ. पछी वानरे कह्युं के–' एकवार आ धरामां पडवाथी मनुष्यत्व प्राप्त थयुं छे तेथी जो बीजीवार पडीए तो देवत्व प्राप्त थाय.' तेनी स्त्रीए तेने तेम करतां वार्यो छतां ते पड्यो, तेथी ते पाछो वानर थइ गयो. ए समये कोइ राजा त्यां आव्यो. ते पेली दिव्य रूपवाळी स्त्रीने पोताने घरे लइ गयो. वानर कोइ मदारीना हाथमां पड्यो, ते मदारीए तेने नृत्य शीखव्युं. ते वानर नृत्य करतो सतो एकदा राज्यद्वारे आव्यो. त्यां पोतानी स्त्रीने जोइ ते अति दुःखित थयो.

इति वानर दृष्टांत ३.

जंबूकुमार कहे छे के–हे प्रिये ! आ जीवे अनंतीवार देव संबंधी भोगो पण भोगवेला छे परंतु ते तृप्त थयो नथी तो आ मनुष्यनां सुख तो शी गणत्रीमां छे? जेम एक कवाडी कायला पाडवा माटे वनमां गयो हतो. त्यां मध्यान्हकाळे अति तृषित थवाथी तेणे बधां जलपात्रा पीने खाली कर्यां, तोपण तेनी तृषा मटी नहीं. पछी ते एक झाडनी छायामां सुतो, अने तेणे स्वप्नमां सर्व समुद्रो ने नदीओनुं जळ पीधुं तो पण ते तृप्त थयो नहीं.छेवट एक भागमां रहेल कादवथी मळेलुं जळ पीवा मांड्युं पण कांइ तृप्त थयो नहि. समुद्रजलथी तृप्ति न थइ तो कीचडवाळा जळथी तृप्ति क्यांथी थाय ! अहीं समुद्रजळ जेवा देवना भोगो छे, अने कादवना जळ जेवा मनुष्यशरीरना भोगो छे एम जाणवुं.

इति कवाडी दृष्टांत ४.

हवे त्रीजी पद्मसेना स्त्रीए कह्युं के–'सहसा कार्य करवाथी नूपुर पंडितानी पेठे पश्चात्ताप थशे' प्रभवे कह्युं के–'नूपुर पंडितानुं दृष्टांत कहो.' तेणे ते दृष्टांत कह्युं.[1] तेना उपर जंबुकुमारे विद्युन्मालीनुं दृष्टांत कह्युं, जेणे मातंगीना संगथी बधी विद्या गुमावी हती. ते दृष्टांत आ प्रमाणे—

आ भरतक्षेत्रमां कुशवर्धन गाममां विप्रना कुळमां विद्युन्माली ने मेघरथ नामे बे भाइओ उत्पन्न थया हता. एक दिवसे तेओ वणमां गया हता, त्यां तेमने कोइ विद्याधरे मातंगी नामनी विद्या आपी. विद्याधरे तेमने कह्युं के–'ते ...ी देवी भोगनी प्रार्थना करशे, पण जो तमे मननी स्थिरता राखशो अने

१ आ दृष्टांत परिशिष्ट पर्वादिथी जाणी लेवुं, अहीं आप्युं नथी

चलित थशो नहि तो विद्या सिद्ध थशे. पछी बंने भाइओ विद्या साधवा बेठा. तेमां एक विद्युन्माली विह्वल मननो होवाथी चलित थयो, अने बीजो मेघरथ गुरुनुं वचन याद राखीने चलित थयो नहि तेने विद्या सिद्ध थइ अने छ मासमां पुष्कळ धन प्राप्त थयुं; विद्युन्माली दुःखी थयो आ दृष्टांत कहीने जंबूकुमारे कह्युं के–मातंगी सदृश मनुष्य स्त्रीना भोगो छे, तेथी बहु सुखना अर्थी पुरुषोए तेनो त्याग करवो योग्य छे.

इति विद्युन्माली कथा ५–६.

चोथी कनकसेना नामनी स्त्री बोली के–'हे स्वामी! जो अमे मातंगी सदृश हता तो तमे शा माटे परण्या! हवे पाणी पीने घर पूछवुं ते घटित नथी. वळी हे स्वामी! अतिलोभथी तमे पेला कणबीनी पेठे पश्चात्ताप पामशो.' ते दृष्टांत आ प्रमाणे--

सुरपुर नगरमां एक कणबी वसतो हतो, तेणे पोताना खेतरमां खेड करी हती. तेथी रात्रिए पक्षी उडाडवाने माटे ते शंख वगाडतो हतो एक दिवस चोरो गायोनुं धण लइने ते क्षेत्र पासे आव्या. तेवामां शंखनो ध्वनि सांभळीने तेओ भयाक्रांत थइ गया. एटले गायोने छोडीने नासी गया. पेलो कणबी ते गायो वेचीने सुखी थयो. ए प्रमाणे घणवार बन्युं. एक दिवस ते चोरोए कणबीनी तमाम हकीकत जाणी, एटले तेओए त्यां आवीने कणबीने बांध्यो अने महारथी सीधो कर्यो. ए प्रमाणे हे स्वामी! अतिलोभी माणसो दुःख पामे छे.

इति शंख वगाडनार कणबीनुं दृष्टांत ७.

जंबूकुमार कहे छे के–' अति कामनी लालसावाळा मनुष्यो वानरनी पेठे बंधन प्राप्त करे छे. ते वानरनुं दृष्टांत आ प्रमाणे---

एक वानर ग्रीष्म ऋतुमां तृषातुर थवाथी जळनी भ्रांतिए चीकणा जळवगरना कीचडमां पड्यो. जेम जेम शरीरनी उपर कोचडनो स्पर्श थतो गयो तेम तेम टाढो लागतो गयो, तेथी तेणे आखुं शरीर कादवथी लींप्युं; पण तेथी तेनी तृषा गइ नहि; अने मध्यान्हना तापथी ज्यारे कादव सूकायो त्यारे तेने शरीरे घणी पीडा थइ. तेथी तेम हे प्रिये! विषयसुख रूपी कोचडथी हुं मारा शरीरने लेपन करीश नहि.

इति वानर दृष्टांत ८.

[illegible] बोली के–'हे स्वामी! अतिलोभ न करो [illegible] बुद्धि नष्ट [illegible] सिद्धि अने बुद्धिनुं दृष्टांत छे.' तेम

'सिद्धि बुद्धिनुं दृष्टांत'[1] छे. ते सांभळी जंबूकुमारे उत्तर आप्यो के-'हे प्रिये ! बहु कहेवाथी पण जातिवंत घोटानी पेठे हुं अवळे मार्गे चालनार नथी.' ते जातिवंत घोडानुं दृष्टांत आ प्रमाणे छे--

वसंतपुर नगरमां जितशत्रु नामे राजा राज्य करतो हतो तेने घेर एक घोडो हतो. ते घोडो तेणे जिनदत्त नामना श्रावकना घरे राखेलो हतो. ते घोडो अनेक सारां लक्षणवाळो होवाथी एक दिवसे कोइ पल्लीपतिए तेने उपाडी ला-ववा माटे पोताना एक सेवकने मोकल्यो. तेणे खातर पाडीने ते घोडाने बहार काढयो. परन्तु ते घोडो उन्मार्गे चालतो नथी. तेणे घणो प्रयास कर्यो, पण तेणे अनुभवेला राजमार्ग शिवाय ते अन्य रस्ते कोइ रीते चाल्यो नहि. एटलामां शेठ जागी जवाथी ते जाण्य थतां चोरने बांधीने घोडो लइ लीधो. पछी चो-रने पण मुक्त कर्यो. एवी रीते हे प्रिये ! हुं पण घोटानी पेठे शुद्ध संयम रुपी मार्गने छोडी चोरो समान जे तमे तेनाथी आकर्षण करानो कुमार्गे जइश नहि.

इति घोटक दृष्टांत ९-१०

हवे छट्ठी स्त्री कनकश्री कहेवा लागी के-'हे स्वामी ! तमे अति हठ करो छो ते युक्त नथी. सम्जु मनुष्ये आगामी काळनो विचार करवो जोइए ब्राह्म-णना छोकरानी पेठे गधेडानुं पूछडुं पकडी राखवुं न जोइए.' प्रभवे कह्युं के-'ए द्विज कोण हतो ?'

कनकश्री कहे के सांभळो-एक गाममां एक ब्राह्मणनो पुत्र हतो ते घणो मूर्ख हतो. तेने तेनी माताए कह्युं के-' पकडेलु छोडी देवु नहि ए पण्डितनुं लक्षण छे. ते मूर्खाए पोतानी मानुं वचन मनमां पकडी राख्युं. एक दिवस कोइ कुंभारनो गधेडो तेना घरमांथी भाग्यो. कुंभार तेनी पछवाडे दोडयो. कुंभारे पेला ब्राह्मणना छोकराने कह्युं के-' अरे ! आ गधेडाने पकड, पकड.' ते मूर्खाए गधेडानुं पूछडुं पकडयुं अने गधेडो पगनी लातो मारवा लाग्यो, तोपण तेणे पूछडुं मूक्युं नहि एटले लोको कहेवा लाग्या के-' अरे मूर्ख ! पूछडु छोडी दे. त्यारे पेला छोकराए कह्युं के-' मारी माताए मने एवी शिखामण आपी छे के पकडेलु छोडवुं नहि.' आ प्रमाणेना कदाग्रहथी ते मूर्ख कष्टपाम्यो.

इति विप्रपुत्र दृष्टांत ११

जंबुकुमार कहे छे के 'तमोए जे कह्यु ते बरोबर छे, परंतु तमे गधेडा खरजेवो छो,अने तमारो स्वीकार करवो ए खरना पूछडाने पकडी राखवा बराबर छे.वळी

---

१ सिद्धिबुद्धिनुं दृष्टांत पण परिशिष्ट पर्वादिथी जाणी लेवुं.

तमे [illegible] [illegible] प्रत्यो ते
सहन करे छे के, तेने [illegible] [illegible] नी जेम
पूर्वभवनो करजदार होय [illegible] [illegible] ते जिन
दृष्टांत आ प्रमाणे—[illegible] [illegible] तेने [illegible]
घोडी हती. तेनी चाकरोने [illegible] [illegible] हतो. ते [illegible]
हमेशां घोडीने माटे जे खावानुं [illegible] [illegible] हतो
खोराक ओछो मळवाथी [illegible] [illegible] मरी गइ. [illegible]
पामीने तेज नगरने विषे वेश्या थइ, अने तेनो मामस [illegible] उत्पन्न थयो
एक दिवसे तेणे ते वेश्याने जोइ, पछी पूर्वभवना [illegible] ने लइने ते वेश्याना
घरमां दास थइने रह्यो अने तेना घरनुं कामकाज करवा लाग्यो. ए दासनी जे
हुं पण भोगनी आशाथी दास थइने घरमां रहीश नहि.

इति विप्रकथा १२.

हवे सातमी स्त्री रूपश्री कहेवा लागी के-'हे स्वामी! हमणां तमे अम
कहेवुं नहि मानो, पण पछीथी मासाहस पक्षीनी पेठे तमने संकट प्राप्त थ
त्यारे समजशो;' ते कथा आ प्रमाणे—

एक मासाहस नामनुं पक्षी कोइ वनमां रहेतुं हतुं. ते पक्षी सुतेला वाघ
मुखमां पेसी, तेनी दाढमां वळगेल मांसनो पिंड लइ बहार आवीने एम बोल
हतो के-'आ प्रमाणे कोइए साहस करवुं नहि.' आटला उपरथीज तेनुं न
'मासाहस' पड्युं हतुं. ते पक्षी जे प्रमाणे कहेतो हतो ते प्रमाणे पोतेज वर
नहोतो. तेने बीजां पक्षीओए घणो वार्यो छतां पण मांसमां लोलुप थइने ते
रंवार वाघना मुखमां पेसतो हतो. एम करतां करतां वाघ जाग्यो एटले ते
क्षीनो कोळीओ करी गयो.

इति मासाहस पक्षी दृष्टांत १३.

जंबूकुमार कहे छे के 'हे स्त्रीओ! आ संसारमां कोइ रक्षण करनार न
मात्र जेम प्रधानने तेना धर्ममित्रे सहाय आपी तेम धर्ममित्र शरणे जतां र
करेछे.' ते दृष्टांत आ प्रमाणे—

सुग्रीवपुर नामनां नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेने सुबुद्धि
मत्री हतो. ते मंत्रीने त्रण मित्रो हता. एक नित्यमित्र, बीजो पर्वमित्र अने त्र
प्रणाममित्र. राजा तरफथी कष्ट प्राप्त थये आ त्रण मित्रमांथी प्रण ममित्रे
रीते रक्षण आपी प्रधानने बचाव्या तेनी कथा परिशिष्ट पर्वादिथी जाणी ले

ते प्रण मित्रनो उपनय आ प्रमाणे छे—

नित्यमित्रसमोदेहः स्वजनाः पर्वसन्निभाः
जुहारमित्रसमोज्ञेयो धर्मः परमबांधवः ॥

" नित्यमित्र समान देह छे, पर्वमित्रो समान सगांवहालां छे, अने प्रणाम
ी जेवो परमबंधु धर्म छे." ते धर्म प्राणीने अंतसमये पण सहाय करेछे अने जे
तेनुं शरण करे तेने कुशळक्षेमे स्वस्थाने पहोंचाडे छे."

इति त्रणमित्र दृष्टांत १४

हवे आठमी स्त्री जयश्री जे धनावह शेठनी पुत्री हती ते जंबूकुमारने कहेवा लागी
' हे स्वामी ! आ वचनविवाद शो ? अमने नवी परणेलीओने आपनी साथे
ाद करवो युक्त नथी; परंतु तमे आवी कल्पित वार्ताओ कहेवा वडे अमने शामाटे
छे ? आपे जे जे कथाओ कही छे ते तमाम कल्पित छे; अने जेवी रीते एक
णनी पुत्रीए कल्पित वार्ताओथी राजानुं मन रंजित कर्युं हतुं तेवी रीते तमे पण
त वार्ताओथी अमारुं मन रंजन करो छो. ते समये सर्व स्त्रीओए कह्युं के-
जयश्री ! ते कथा कहे के जे सांभळीने आपणो प्रियतम घरमां रहे.' जयश्री
छे के सावधान थइने सांभळो—

रक्षेत्रमां 'लक्ष्मीपुर' नगरमां 'नयसार' नामनो राजा राज्य करतो हतो. ते राजा
कथा, नाटक, महेलीका, अंतर्लापिका विगेरेमां घणोज निपुण हतो, अने नवीन कथा
ळवामां घणो रसिक हतो. ते दररोज माणसो पासेथी नवी नवी वार्ताओ सांभळतो
एक दिवस ते राजाए नगरमां ढंढेरो पीटाव्यो के 'सर्व लोकोए वारा प्रमाणे राजा
आवीने नवीन नवीन वार्ता कहेवी.' ए प्रमाणे राजानी आज्ञा थवाथी जे माणसनो
आवेछे ते राजा पासे जइ वार्ता कहेछे. एम करतां एक दिवस एक ब्राह्मणनो वारो
यो. ते ब्राह्मण अति मूर्ख होवाथी तेने वार्ता कहेतां आवडती नहोती तेने एक कन्या
ते घणी चतुर हती. तेणे पोताना पिताने कह्युं के-'आप निश्चित रहो, हुं राजा पासे
नवी वार्ता कहीश.' पछी ते राजा समीपे गइ. राजाए ते बाळाने कह्युं के-'जे
ंथी मारुं मन रंजन थाय एवी वार्ता कहे.' ब्राह्मणपुत्रीए कह्युं के-' हे राजन ! हुं
अनुभवेलीज वार्ता कहुं छुं ते सावधान थइने सांभळो-हुं पिताना घरमां नव-
नवती थइ, त्यारे मारा पिताए योग्यकुळमां उत्पन्न थयेला एक ब्राह्मणपुत्र साथे
विवाह कर्यो. जेनी साथे मारो विवाह कर्यो ते भर्ता मारुं रूप जोवाने माटे मारे

घेर आव्या. ते वखते मारां मातापिता ... रीते स्नान भोजन आदिथी तेने अति संतोष ... कामज्वरथी अति पीडित थयो. ते पलंग उपर ... वाळां वचनो बोले छे, अने वारंवार मारा तरफ ... एटले में तेने कह्युं के–' हे स्वामी! उतावळ न करो. पाणिग्रहण विना ... थतुं नथी. घणो भूख्यो माणस शुं बे हाथे खावा लागे छे? माटे हमणां ... योग्य नथी.' एवुं मारुं वाक्य सांभळीने घणाज ... थयेला मारा पतिने शूळ उत्पन्न थयुं, अने ते व्याधिथी ते मरण पाम्यो. तेने में मारा घरनी ... दीधो. ते वात कोइए जाणी नहि. मारां मातापिताए पण ते वात जाणी ... राजन्! मारी अनुभवेली आ वार्ता में कहेली छे.' ते वार्ता सांभळीने राजा ... थयो अने ते कन्या पोताने घरे आवी. जयश्री कहे छे के–" जेवी रीते ... वार्ताथी ते विप्रपुत्रीए राजानुं मनरंजन कर्युं तेवी रीते तमे पण अमारा ... करो छो, परंतु ए प्रवृत्ति मिथ्या छे; माटे ते माणस विचारीने पगलुं ... माणसनी लाज रहे छे. तेथी हे स्वामी! भोगो भोगवी पछी चारित्र ग्रहण ... पोतानो अर्थ साधवो उचित छे."

इति ब्राह्मणपुत्री दृष्टांत १५

ए प्रमाणे जयश्रीनुं वाक्य सांभळीने जंबूकुमारे कह्युं –' हे जयश्री! ... तुर थयेला प्राणीओ अधर्ममां धर्मबुद्धि मानी विषयोने स्थापित करी ... परंतु ए विषयो घणाज खराब परिणामवाळा छे. विषथी पण विषयो ... खरेखरुं छे. कारणके विषयो तो मरेलाने पण मारे छे. कह्युं छे के—

भिक्षाशनं तदपि नीरसमेकवारं
शय्या च भूः परिजनो निजदेहमात्रं ।
वस्त्रं च जीर्णशतखंडमयी च कंथा
हाहा तथापि विषया न परित्यजन्ति ॥

" खावामां भिक्षानुं भोजन–ते पण नीरस अने एकवार, सुवामां मात्र ... जनमां मात्र पोतानोज देह अने लुगडामां जीर्ण अने तद्दन फाटेली ... स्थितिवाळा माणसने पण हा हा इति खेदे! विषयो छोडता नथी." तेथी ... जो जन्म, जरा, मरण, रोग, वियोग ने शोक आदि शत्रुओ मारी समी...

हु तमारी साथे भोग भोगवुं. ते शिवाय जो तमे मने बळात्कारे घरमां राखशो तो
गेग आदिथी रक्षण करवामां तमारी शक्ति छे?' त्यारे स्त्रीओए कह्युं के-हे स्वामिन्!
समर्थ कोण होय के जे संसारस्थितिने अटकावी शके ?' त्यारे जंबूकुमारे कह्युं
तमे असमर्थ छो तो अशुचि वस्तुथी भरेली अने मोहनी कुंडी रूप जे
मां हु प्रीतिवाळो थतो नथी. कारणके स्त्रीओनो जन्म अनंती पापनी
थाय छे. कह्युं छे के--

अणंता पापरासीओ, जया उदयमागया ।
तया इत्थीत्तणं पत्तं, सम्मं जाणाहि गोयमा ॥

गौतम ! अनंती पापनी राशिओ ज्यारे उदयमां आवे छे त्यारे स्त्रीपणुं
छे एम बराबर जाणजे " वळी कह्युं छे के--

दर्शने हरते चित्तं स्पर्शने हरते बलं ।
संगमे हरते वीर्यं, नारी प्रत्यक्षराक्षसी ॥

"दर्शन थतां चित्तने हरे छे, स्पर्श थतां बळने हरे छे, संगम थतां वीर्यने हरे छे–
रीते नारी साक्षात् राक्षसी छे " माटे हु ललितांगकुमारनी पेठे मोहमां निमग्न
लो नथी, के जेथी अपवित्र वस्तुना कुवा रूप आ भवकूपनी अंदर पडुं.' त्यारे
ह्युं के-'हे स्वामिन् ! ललितांगकुमार कोण हतो ? के जेने आपे उपनय
तरीके ग्रहण कर्यो छे.' जंबूकुमारे कह्युं के सांभळो—

पुर नगरमां 'शतप्रभ' नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने 'रूपवती' नामे
हती. ते घणी रूपवती, यौवन आदि गुणोथी युक्त अने मोहराजानी राजधानी
ति मोहक हती. ते राजाने घणी वहाली हती परंतु व्यभिचारिणी हती. एक
ते रूपवती राणी बारीमां बेसी नगरकौतुक जोती हती; ते समये 'ललितांग'
ना अति रूपवान युवकने मार्गे जतां तेणे जोयो. तेनुं रूप जोइ मोह उत्पन्न थवाथी
अति कामातुर थइ गइ, तेथी तेणे दासीने कह्युं के-'अरे ! तुं आ युवकने अहीं
.' दासीए जइने ललितांगने कह्युं के-'तमने मारी राणी बोलावे छे, माटे मारी
राणीना मकाने पधारो.' ते पण विषय रूपी भिक्षाने माटे भटकनार व्यभि-
तेथी ते राणीना महेलमां गयो. ललितांगने जोइ हावभाव विलास आदिने
ी, आळस मरडती, हस्तना मूळ भागने बतावती अने नाभिमंडळने वस्त्ररहित
राणीए तेना मनने वश कर्युं. कह्युं छे के—

स्त्री कांतं वीक्ष्य नाभिं प्रकटयति मुहुर्विक्षिपंति कटाक्षान्,
दोर्मूलं दर्शयन्ती रचयति कुसुमापीडमुत्क्षिप्तपाणिः
रोमांचस्वेदजृंभाः श्रयति कुचतटं स्रंसिवस्त्रं विधत्ते,
सोल्लंठं वक्ति नीवीं शिथिलयति दशत्योष्टमंगं मनक्ति ॥

" स्त्री पोताना प्रियपुरुषने जोइ वारंवार नाभि बतावे छे, कटाक्षो फेंके छे, [illegible] मूळ बतावे छे, हाथ उंचा करी कामदेवने उत्पन्न करे छे, रोमांच, स्वेद अने [illegible] धारण करे छे, जेना उपरथी वस्त्र खसी जाय छे एवा स्तनोने देखाडे छे, [illegible] बोले छे, वस्त्रग्रंथीने शिथिल करे छे, ओष्ठने डसे छे अने अंगने भांगे छे."

तेनुं तेवुं स्वरूप जोइ कामथी उछळता अंगवाळो ललितांग तेनो साथे भोग [illegible] ववा लाग्यो; विषयथी चेतना हराइ जवाथी तेणे निःशंकपणे तेनी साथे भोग [illegible] तेवामां ते राणीनो पति राजा आव्यो. ते समये बारणा पासे उभेली दासीना [illegible] राजानुं आगमन सांभळीने भयथी विह्वळ बनेली राणीए ते ललितांगने अपवित्र [illegible] थी भरेला कूवानी अंदर उतार्यो; अने आवेला राजानी साथे हास्यविनोद [illegible] वार्ता करवा लागी.

अशुचि कूपमां रहेलो ललितांग पण क्षुधा अने तृषानी पीडा अत्यंत सहन [illegible] लाग्यो. कारणके त्यां ते तद्दन परवश पडेलो हतो. ते मनमां विचार करवा [illegible] 'अकृत्य करनार मारा विषयलंपटपणाने धिक्कार छे!' ए प्रमाणे तेवी [illegible] रहेता तेने घणा दिवसो वीति गया. राणी पण तेने भूली गइ. 'स्त्रीओना [illegible] प्रेमने धिक्कार छे!' ललितांग त्यां रहेतां मृत्यु तुल्य थइ गयो. अनुक्रमे [illegible] [illegible] भराता अपवित्र जळना प्रवाहमां खेंचाइने ते बहार नीकळ्यो [illegible] पोताना आप्त जनोने मळ्यो. तेणे पोतानी सव हकीकत तेओने कही. ते [illegible] [illegible] थयो. केटलाक दिवस घरमां रहेवाथी तेना शरीरनी स्थिति [illegible] [illegible] बहार नीकळ्यो एटले फरीथी राणीए तेने दीठो अने ओळख[illegible] दासीने तेडवा मोकली एटले ललितांगे कह्युं के–'हुं फरीथी एवुं करीश [illegible] [illegible] पीडा भोगवी छे.' ते सांभळी दासी पाछी वळी. [illegible] [illegible] थयो. माटे हे जीवो! जो हुं विषयमां [illegible] [illegible] हुं पण दुःखी थाउं. तेथी विषयमां प्रीति रा[illegible] [illegible].

सम्यक्त ने शील रूप वे तुंबडांवडे आ भवसमुद्र सुखे तरी शकाय छे; तेवा वे धारण करनारो जंबूकुमार स्त्री रूपी नदीमां केम बुडे ? ”

इति ललितांग दृष्टांत १६.

ए प्रमाणे जंबूकुमारे घणो उपदेश दीधो. एम परस्परना उत्तर प्रत्युत्तरमां रात्रि त थइ. एटले स्त्रीओ पण वैराग्यरसथी पूर्ण थइ गइ. तेमणे कह्युं के–‘ हे स्वामी ाळवां ते दुष्कर छे, बाकी आ वैराग्यरस तो अनुपम छे. जेओए आ वैराग्यरसने रीने सेवेलो छे तेओए मुक्तिपद अलंकृत करेलुं छे. ’ ए प्रमाणे कहेवा वडे स्त्री- जंबूकुमारनुं वचन मान्य कर्युं.

ते समये प्रभवे कह्युं के—“ मारुं पण मोटुं भाग्य के में चोर छतां पण आवी पनो वार्ता सांभळी. आ विषयनो अभिलाप महा विषम छे. विषयरोग तजवो दुष्कर छे. जेणे युवावस्थामां पण इन्द्रियोने वश करी लीधी छे एवा तमने धन्य ” जंबूकुमारे पण तेनो उद्धार करवा माटे तेने घणो धर्मोपदेश आप्यो. एटले ग्युक्त थइ प्रभव चोरे कह्युं के–‘ तमे मारा उपर घणो उपकार कर्यो छे. हुं पण ा साथे व्रत ग्रहण करीश. ’

अनुक्रमे प्रातःकाळ थयो, एटले कौणिक राजाए तमाम हकीकत सांभळी; पछी ा जंबूकुमारने गृहवासे राखवा माटे बहु उपायो कर्या, पण जंबूकुमारे मनमां ा कर्या नहि. पछी सवारमां मोटा उत्साह पूर्वक साते क्षेत्रमां पुष्कळ द्रव्य वापरी क राजाए कर्यो छे दीक्षामहोत्सव जेमनो एवा प्रभव आदि पांचसे चोरो, पोतानां पिता, आठे स्त्रीओ अने तेओनां मातापिता सहित जंबूकुमारे, श्री सुधर्मा स्वामी चारित्र ग्रहण कर्युं. अनुक्रमे द्वादशांगीनुं अध्ययन करी, चौद पूर्वधारी थइ, चार माप्त करी श्री सुधर्मा स्वामीनो पाटना भूषण रूप थया. त्यार पछी घातिकर्मनो करी, केवळज्ञान मेळवी मोक्षपदने पाम्या.

धन्योऽयं सुरराजराजिमहितः श्रीजंबूनामामुनि ।
स्तारुण्येऽपि पवित्ररूपकलितो योनिर्जिगाय स्मरम् ।
त्यक्त्वा मोहनिबंधनं निजवधूसंबंधमत्यादरान्
मुक्तिस्त्रीवरसंगमोद्भवसुखं लेभे मुदा शाश्वतम् ॥

“ अनेक इंद्रोथी पूजायेल श्री जंबू नामना मुनिने धन्य छे; कारणके तेमणे रूपवाळी युवावस्थामां पण कामदेवने जीत्यो अने मोहनां मूळ कारणभूत एवा

निज वधूना संबंधने पण छोडी दइ अति आदरथी मुक्ति रूपी स्त्रीना श्रेष्ठ सं उत्पन्न थयेला शाश्वत सुख (मोक्ष) ने हर्षपूर्वक मेळव्युं."

ए प्रमाणे जंबूकुमार जेवा पुरुषो क्षणभंगुर विषयसुखोने छोडी दइ शाश्वत मां रमण करे छे अने तेमनी प्रतीतिथी प्रभव जेवा सुलभबोधी जीवो पण संसार तरवाने शक्तिवान थाय छे. ए प्रमाणे साडत्रीशमी गाथानो संबंध जाणवो.

इति जंबूकुमार चरित्र.

दीसंति परमघोराविं, पवरधम्मप्पभावपडिबुद्धा ।
जह सो चिलाइपुत्तो, पडिबुद्धो सुसुमाणाए ॥ ३८ ॥

अर्थः—" परमघोर, प्रबर रौद्रध्यानयुक्त एवा पण घणा प्राणीओ प्रवर एवो जे धर्मनो प्रभाव तेथी प्रतिबोध पामेला देखाय छे. जेम सुसमाना दृष्टांत चिलातीपुत्र प्रतिबोध पाम्यो तेम." ३८.

अर्हद्दर्शनना महात्म्यथी मिथ्यात्व निद्रा दूर जवाने लीधे धनावह शेठनी द पुत्र, अतिरौद्र कर्मनो करनारो चिलातीपुत्र प्रतिबोध पाम्यो. तेनुं दृष्टांत आ प्र

चिलातीपुत्रकथा.

प्रथम थोडुं चिलातीपुत्रना पूर्वभवनुं स्वरूप कहे छे.

क्षितिप्रतिष्ठित नगरमां 'यज्ञदेव,' नामे ब्राह्मण वसतो हतो. ते काव्य, तर्क अने मिमांसादि शास्त्रोना विचारमां घणो चतुर हतो अने शास्त्रोनो पारगामी हतो. तेणे एवी प्रतिज्ञा करी हती के 'जे मने वाद तेनो हुं शिष्य थाउं.' ए प्रमाणे प्रतिज्ञाने धारण करनार यज्ञदेवे वादमां प्रतिवादीने जीत्या. एक दिवस एक नाना साधुए तेने जीती लीधो. ए प्रतिज्ञ ते यज्ञदेवे ते क्षुल्लक पासे दीक्षा लीधी अने भावयुक्त थइ व्रत पाळ्यो; परंतु जातिगुणने लीधे ते देहवस्त्र आदिनी मलिनता रूप परीसहने छे. ते विचारे छे के 'अरे! आ मार्गमां सर्व सारुं छे परंतु स्नान अभाव छे ते मोटुं जुगुप्सास्थान छे.' ए प्रमाणे मलपरीसहने सहन अत्यन्त [illegible] चारित्रभंगना भयथी ते स्नान आदि वडे देहादिनी शुद्धि कर

एक दिवसे उपवासना पारणे भिक्षामाटे भटकतां कपोतवृत्तिना न्याये पोतानी ने घेर गयो. त्यां मोह रूप पिशाचथी ग्रस्त थयेली ते स्त्रीए पूर्व स्नेहना वशथी नेरूपमां रहेला पोताना पतिने कामण कर्यु. ते कामणथी मुनि शरीरे अति क्षीण ा. केटलेक दिवसे ते विहार करवामां पण अशक्त थइ गया, तेथी अनशन ग्रहण ी काळधर्मने प्राप्त थइ स्वर्गमां देव थया.

पेली स्त्रीए मुनिरूपमां रहेला पोताना पतिनी मरणवार्ता सांभळी, तेथी ते श्चात्ताप करवा लागी के–'अरे! मने धिकार छे! पतिने मारवाथी मने मोटुं पाप ाग्युं. साधुनी हत्या करनार मने नरकमां पण स्थान नहि मळे. तेथी अशरण पेली मने तेनो वेषज शरण रूप छे.' ए प्रमाणे वैराग्यपरायण थइ तेणे चारित्र ण कर्युं अने अतिउग्र तप कर्युं. पूर्वकृत पापनी सारी रीते आलोचना ग्रहण करी काळ चारित्र पाळीने ते स्वर्गे गइ.

बीजा भवमां यज्ञदेव ब्राह्मणनो जीव देवलोकथी च्यवीने चारित्रनी जुगु-ाथी बांधेला नीच गोत्रवडे राजगृह नगरमां 'धनावह' शेठने घेर 'चिलाती' नामनी सीनी कुक्षिमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. तेनु नाम 'चिलातीपुत्र' पाडवामां आव्युं. तेनी ना जीव देवलोकथी च्यवीने तेज शेठने घेर शेठनी स्त्री भद्रानी कुक्षिमां पुत्रीपणे उत्पन्न ा. ते कन्यानुं नाम 'सुसमा' पाडयुं. चिलातीपुत्र ते बाळाने हमेशां रमाडे छे. ते प्राणथी पण अति वहाली थइ. एक वखत ते चिलातीपुत्रने तेनी साथे कुचेष्टा तो जोइने ते कन्यानां मातापिताए विचार्युं के "आ दासीपुत्र व्यसनी, मद्यपानमां र अने कजीआखोर होवाथी घरमां राखवा योग्य नथी.' एम विचारी तेने घर-ी काढी मूक्यो. ते चोरनी पाळ (चोरलोकोने वसवानुं स्थान) मां जइ चोरोमां ी गयो. तेओए तेने साहसिक जाणीने पल्लीपति नीम्यो. ते पाप करवामां अति वाळो होवाथी जीवोनो वध करवामां पाछो हठतो नथी.

क दिवसे तेणे चोरोने एकठा करी कह्युं के–'चालो आपणे धनावह शेठने घेर करवा जइए; पण धन मळे ते तमारुं ने सुसिमा कन्या मारी.' ते चोरोए ठ कर्युं. पछी घणा चोरोने एकठा करीने ते राजगृह नगरमां धनावह शेठने घेर यो. तेओए शेठनुं घर लुटयुं. चिलातीपुत्रे कन्याने ग्रहण करी अने बीजा चोरोए ळ धन लीधुं. पछी सर्व पाछा फर्या. त्यारपछी धनावह शेठे बूम पाडी; एटले ट योधाओना समूह सहित दुर्गपाळ चोरोनी पाछळ दोडयो. शेठ पण पुत्र परि-सहित दुर्गपालनी साथे दोडयो. ते चोरो पण घणा लोको पछवाडे लागवाथी अने

अन्यदा भगवान श्री अरिष्टनेमी अढार हजार साधुओथी परिवृत्त थइ द्वारकापुरीना मोटा उद्यानमां समवसर्या. तेमने वांदवाने माटे 'कृष्ण वासुदेव ढंढण कुमार सहित नीकळ्या. वांदीने योग्य स्थाने बेठा. एटले प्रभुए कुमतरूप अंधकारने दूर करनारी, पतित जनोनो उद्धार करनारी, अमृतना निझरणा जेवी, मोह मल्लने नाश करनारी, सर्व जनने आनंद आपनारी, मालव कोशिक रागनो अनुवाद करनारी अने समग्र क्लेशने नष्ट करनारी देशना आपवी शरु करी. ते सांभळतां 'ढंढण कुमारनुं मन वैराग्यरसथी व्याप्त थइ जवाने लीधे तेणे श्री नेमिनाथ स्वामी पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. चारित्र ग्रहण कर्या पछी ते द्वारिकापुरीमां भिक्षार्थे फरे छे, परंतु कृष्ण वासुदेवना पुत्र तरीके तेमज श्री नेमिनाथ स्वामीना शिष्य तरीके प्रसिद्ध छतां पण तेने शुद्ध भिक्षा मळती नथी अने अशुद्ध भिक्षा ते ग्रहण करता नथी. एकदा श्री नेमिश्वर भगवाने तेने कह्युं के–' हे ढंढण ! तें पूर्वभवमां बांधेलुं अंतराय कर्म उदयभावमां आवेलुं छे, तेथी तने शुद्ध आहार मळतो नथी; माटे बीजा मुनिए आणेलो आहार ग्रहण कर.' त्यारे हाथ जोडी ते ढंढण कुमारे कह्युं के–' हे त्रिलोकीनाथ ! ज्यारे मारुं अंतराय कर्म क्षय पामशे त्यारेज मारी पोतानी लब्धिथी मळेल शुद्ध आहार हुं ग्रहण करीश, बीजाए लावेलो आहार ग्रहण करवो मने उचित नथी.' आ प्रमाणे कहीने तेणे तेवो अभिग्रह स्वामीनी साक्षीए लीधो. पछी प्रतिदिन [illegible] भिक्षार्थे फरे छे, परंतु तेने शुद्ध आहार मळतो नथी. तेथी ते तप अने क्षुधा सहन करे छे. आ प्रमाणे तेने केटलोक काळ व्यतीत थयो.

एक दिवस नेमीश्वर भगवानने वांदवाने माटे कृष्ण वासुदेव आव्या. प्रभुने वांदीने कृष्ण वासुदेवे पूछ्युं के–' आपना अढार हजार साधुओमां दुष्कर कार्य करनार [illegible] ?' [illegible] भगवाने कह्युं के–' दुष्कर करनार तो सर्व साधुओ छे, [illegible] ढंढण मुनि विशेष छे.' वासुदेवे कह्युं के–' हे भगवन ! कया गुणथी ते [illegible] ?' [illegible] अभिग्रह कह्यो. ते सांभळी [illegible] हर्षित थइ कृष्णे [illegible] के– [illegible] ढंढण मुनि क्यां छे ? तेने वांदवानी मने तीव्र इच्छा थइ छे.' [illegible] के– [illegible] गयेला छे, ते तमने मार्गमां मळशे, पछी [illegible] [illegible] आनंद पामेला कृष्णे ढंढण मुनि [illegible] कृष्णे [illegible] ढंढण मुनिनी [illegible] के– हे मुनि ! तमने धन्य छे ! [illegible] [illegible] नथी.' [illegible] [illegible]

ाइने चिंतव्युं के ' अहो ! आ मुनि महानुभाव देखाय छे, जेथी महा समृद्धि-न कृष्ण आदि राजाओ पण तेमना चरणकमलमां पडे छे. माटे मारे तेमने शुद्ध दक व्होरावीने लाभ लेवो. तेमने व्होराववाथी मने मोटुं पुण्य थशे.' आ प्रमाणे चारीने ढढण मुनिने पोताने घरे तेडी लावी तेणे बहुमावथी मोदक व्होराव्या.

ढंढण मुनिए भगवाननी समीपे आवीने पूछयुं के-' हे भगवन् ! मारुं अंतराय ं आजे नष्ट थयुं ?' भगवाने कह्युं के-' हे मुनि ! हजु ते नष्ट थयुं नथी.' ढढण निए पूछयुं के-' हे स्वामिन् ! त्यारे आजे मने भिक्षानो लाभ केम थयो ?' स्वा-ए कह्युं के-' कृष्ण वासुदेवनी लब्धिथी तने आ आहार मळेलो छे, पण अंतरा-कर्मना क्षयथी उत्पन्न थयेली तमारी लब्धिथी मळेलो नथी.' आ प्रमाणेनां भगवा-नां वचन सांभळीने ढंढण मुनि ते आहारने शुद्ध भूमिमां परठववाने गया. त्यां द्र अने अतिशुद्ध अध्यवसायथी प्रबल शुक्ल ध्यानरूपी अग्निवडे कर्मरूपी इंध-े बाळी दइ पोतानां पूर्वकृत कर्मोनो समूह होयनी तेम मोदकने चूर्ण करतां तां तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वखते देवोए दुंदुभि वगाडी चारे तरफ जय र शब्द कर्यो अने कृष्ण आदि सर्व भव्य जनो खुशी थया. घणा काळ सुधी वळीपणे विहार करीने प्रांते ढंढण मुनिए मुक्ति प्राप्त करी. आ प्रमाणे अन्य ात्माए पण वर्तवुं.

इति ढंढण मुनि कथा.

आहारेसु सुहेसुअ; रम्मावसहेसु काणणेसु च

साहूण नाहिगारो; अहिगारो धम्मकज्जेसु ॥ ४० ॥

अर्थ—" शुभ एवा आहारने विषे, रम्य एवा उपाश्रयने विषे अने (विचित्र ा) उद्यान-बागबगीचाने विषे साधुने अधिकार (आसक्तपणुं) नथी; निर्म-व होवाथी. तेओने तो मात्र धर्मकार्यमां अधिकार छे. मुनिने इंद्रियोने सुखकारी ा पदार्थोमां आसक्ति होती नथी." ४०

साहू कांतार महाभएसु, अवि जणवएवि मुइयम्मि ।

अवि ते सरीरपीडं, सहंति न लहंति य विरुद्धम् ॥ ४१ ॥

अर्थ—" अटवीमां के राज्यविप्लवादि महा भयमां पण मुनि ऋद्धिवाळा रूपद्रव जनपदमां होय तेम निर्भयपणे वर्ते छे. वळी ते मुनिओ शरीरनी पीडाने हन करे छे पण विरुद्ध वस्तु ग्रहण करता नथी." ४१. अर्थात् मुनि गमे तेवा

गाथा ४०-रम्या आयसथा=उपाश्रया
गाथा ४१-कंतार. मुइअंमि नयलंतिम.

अन्यदा भगवान श्री अरिष्टनेमी अढार हजार साधुओ साथे परिवृत थइ द्वारका-पुरीना मोटा उद्यानमां समवसर्या. तेमने वांदवाने माटे 'कृष्ण वासुदेव ढंढण कुमार सहित नीकळ्या. वांदीने योग्य स्थाने बेठा. पछी भगवान् कृष्णना अंधकारने दूर करनारी, पतित जनोनो उद्धार करनारी, अमृतना निर्झरणा जेवी, घोर मदनो नाश करनारी, सर्व जनने आनंद आपनारी, मालव कौशिक रागनो अनुवाद कर-नारी अने समग्र क्लेशने नष्ट करनारी देशना आपवी शरू करी. ते सांभळतां 'ढंढण कुमारनुं मन वैराग्यरसथी व्याप्त थइ जवाने लीधे तेणे श्री नेमिनाथ स्वामी पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. चारित्र ग्रहण कर्या पछी ते द्वारिकापुरीमां भिक्षार्थे फरे छे, परंतु कृष्ण वासुदेवना पुत्र तरीके तेमज श्री नेमिनाथ स्वामीना शिष्य तरीके प्रसिद्ध छतां पण तेने शुद्ध भिक्षा मळती नथी अने अशुद्ध भिक्षा ते ग्रहण करता नथी. एकदा श्री नेमिश्वर भगवाने तेने कह्यु के-' हे ढंढण ! तें पूर्वभवमां बांधेलु अंतराय कर्म उदयभावमां आवेलुं छे, तेथी तने शुद्ध आहार मळतो नथी; माटे बीजा मुनिए आणेलो आहार ग्रहण कर.' त्यारे हाथ जोडी ते ढंढण कुमारे कह्युं के-' हे त्रिलोकीनाथ ! ज्यारे मारुं अंतराय कर्म क्षय पामशे त्यारेज मारी पोतानी लब्धिथी मळेलो शुद्ध आहार हुं ग्रहण करीश, बीजाए लावेलो आहार ग्रहण करवो मने उचित नथी.' आ प्रमाणे कहीने तेणे तेवो अभिग्रह स्वामीनी साक्षीए लीधो. पछी प्रतिदिन अव्याकुळ मने भिक्षार्थे फरे छे, परंतु तेने शुद्ध आहार मळतो नथी. तेथी ते तृषा अने क्षुधा सहन करे छे. आ प्रमाणे तेने केटलोक काळ व्यतीत थयो.

एक दिवस नेमीश्वर भगवानने वांदवाने माटे कृष्ण वासुदेव आव्या. प्रभुने वांदीने कृष्ण वासुदेवे पूछ्युं के-' आपना अढार हजार साधुओमां दुष्कर कार्य करनारो कयो साधु छे?' ते वखते भगवाने कह्युं के-' दुष्कर करनार तो सर्व साधुओ छे, पण तेमां ढंढण मुनि विशेष छे.' वासुदेवे कह्युं के-' हे भगवन् ! कया गुणथी ते विशेष छे?' त्यारे भगवाने तेनो सर्व अभिग्रह कह्यो. ते सांभळी अति हर्षित थइ कृष्ण बोल्या के-'ते धन्य एवा ढंढण मुनि क्यां छे? तेने वांदवानी मने तीव्र इच्छा थइ छे.' भगवाने कह्युं के-' भिक्षार्थे शहेरमां गयेला छे, ते तमने सामा मळशे, पछी स्वामीने वांदीने द्वारिकापुरीमां पाछा आवतां गजेंद्र उपर आरूढ थयेला कृष्णे ढंढण मुनिने बजारमांथी सामे आवता जोया; कृष्णे हाथी उपरथी उतरी ढंढण मुनिनी त्रण प्रदक्षिणा करी घणा भाव पूर्वक तेमने वांद्या अने कह्यु के-' हे मुनि ! तमने धन्य छे ! तमे पुण्यशाळी छो. अति भाग्य विनाय तमारा दर्शन थवा सुलभ नथी.' ते समये सोळ हजार राजाओ पण ते मुनिना चरणमां पड्या. ते वखते बारीमां बेठेला एक वणिक

मोइने चिंतव्युं के 'अहो! आ मुनि महानुभाव देखाय छे, जेथी महा समृद्धिवान कृष्ण आदि राजाओ पण तेमना चरणकमलमां पडे छे. माटे मारे तेमने शुद्ध मोदक व्होरावीने लाभ लेवो. तेमने व्होराववाथी मने मोटुं पुण्य थशे.' आ प्रमाणे विचारीने ढंढण मुनिने पोताने घरे तेडी लावी तेणे बहुमानथी मोदक व्होराव्या.

ढंढण मुनिए भगवाननी समीपे आवीने पूछ्युं के-'हे भगवन्! मारुं अंतराय कर्म आजे नष्ट थयुं?' भगवाने कह्युं के-'हे मुनि! हजु ते नष्ट थयुं नथी' ढंढण मुनिए पूछ्युं के-'हे स्वामिन्! त्यारे आजे मने भिक्षानो लाभ केम थयो?' स्वामीए कह्युं के-'कृष्ण वासुदेवनी लब्धिथी तने आ आहार मळेलो छे, पण अंतराय कर्मना क्षयथी उत्पन्न थयेली तमारी लब्धिथी मळेलो नथी.' आ प्रमाणेनां भगवाननां वचन सांभळीने ढंढण मुनि ते आहारने शुद्ध भूमिमां परठववाने गया. त्यां शुद्ध अने अतिशुद्ध अध्यवसायथी प्रबल शुक्ल ध्यानरूपी अग्निवडे कर्मरूपी इंधनने बाळी दइ पोतानां पूर्वकृत कर्मोनो समूह होयनी तेम मोदकने चूर्ण करतां करतां तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वखते देवोए दुंदुभि वगाडी चारे तरफ जय जय शब्द कर्यो अने कृष्ण आदि सर्व भव्य जनो खुशी थया. घणा काळ सुधी केवळीपणे विहार करीने अंते ढंढण मुनिए मुक्ति प्राप्त करी. आ प्रमाणे अन्य महात्माए पण वर्तवुं.

इति ढंढण मुनि कथा.

आहारेसु सुहेसुअ; रम्मावसहेसु काणणेसु च

साहूण नाहिगारो; अहिगारो धम्मकज्जेसु ॥ ४० ॥

अर्थ—"शुभ एवा आहारने विषे, रम्य एवा उपाश्रयने विषे अने (विचित्र एवा) उद्यान-बागबगीचाने विषे साधुने अधिकार (आसक्तपणुं) नथी; निर्भय होवाथी. तेओने तो मात्र धर्मकार्यमां अधिकार छे: मुनिने इंद्रियोने सुखकारी बाह्य पदार्थोमां आसक्ति होती नथी." ४०

साहू कांतार महाभएसु, अवि जणवएवि मुइयम्मि ।

अवि ते सरीरपीडं, सहंति न लहंति य विरुद्धम् ॥ ४१ ॥

अर्थ—"अटवीमां के राज्यविप्लवादि महा भयमां पण मुनि ऋद्धिवाळा निरूपद्रव जनपदमां होय तेम निर्भयपणे वर्ते छे. वळी ते मुनिओ शरीरनी पीडाने सहन करे छे पण विरुद्ध वस्तु ग्रहण करता नथी." ४१, अर्थात् मुनि गमे तेवा

गाथा ४०-रम्या आवसथा=उपाश्रया
गाथा ४१-कंतार. मुइअंमि नयर्लतिअ.

करनारा छो, मुखथी न कहेवाय एवा स्त्रीना गुह्य स्थानना मर्दन करनारा छो, उत्तम प्रकारना ज्ञानथी दूर करायेला छो, माटे हुंज सुपात्र छुं तमारा भाग्यथी तमारा यज्ञमंडपमां आवेलो छुं; माटे मने शुद्ध अन्न आपो." एवां वाक्योथि... स्कार करायेला ब्राह्मणो ते मुनिने मारवा तैयार थया. तेओए लाकडी अने ... मुनिने केटलाक प्रहारो कर्या. एटले रुष्टमान थयेला यक्षे ते ब्राह्मणो ने प्रहा... मुखमांथी रुधीर वमता करी दीधा, अने शरीरना सांधा शिथिल करी नाख्या ... तेओ पृथ्वी उपर पड्या. मोटो कोलाहल थइ गयो, एटले सघला त्यां एक... कोलाहल सांभळीने सुभद्रा राजकन्या पण बहार नीकळी. तेणे मुनिने जोय... तरत ओळख्या. पछी भयथी विह्वल बनी जइने तेणे रुद्रदेव विगेरेने कहुं के ... दुर्बुद्धिवाळाओ! आ मुनिने पीडशो तो यममंदिरमां पहोंची जशो. आ तो ति... पूजेला महा प्रभाववाळा तपस्वी मुनि छे, में पूर्वे तेमने चळित करवा मा... यत्न कर्यो हतो; परंतु ते जरा पण ध्यानथी चलित थया नहोता. माटे आ... धन्य छे धन्य छे.' एम बोलती सुभद्रा मुनिना चरणमां पडी अने कहुं ... कृपासिंधु! हे जगत्बंधु! मारा आग्रहथी आ मूर्ख लोकोए करेलो अपरा... क्षमा करो.' मुनिए कहुं के-" मुनिने कोप करवाना अवकाश नथी. कारणके क्रो... अनर्थकारी छे. कहुं छे के-

> जं अज्जियं चरित्तं, देसूणाए य पुव्वकोडीए ।
> तंपिअ कसायमित्तो, हारेइ नरो मुहुत्तेण ॥

" देशे ऊणा क्रोड पूर्व पर्यंत जे चारित्र पाळ्युं होय तेने पण प्राणी ... मात्र कषाय करवाथी हारी जाय छे."

माटे साधुने कोप करवो योग्यज नथी. तेथी में कोप करेल नहि, परंतु ... पर क्रोध करनार यक्षने तमे प्रसन्न करो." मुनिना कहेवाथी ब्राह्मणोए ते यक्ष... कर्यो, एटले ते सर्व ब्राह्मणो साजा थया. पछी तेओ यज्ञकर्म छोडी दइने ... चरणमां पड्या अने शुद्ध अन्नवडे मुनिने पडिलाभ्या. ते वखते त्यां पण दि... थया. ते जोइ 'आ शुं?' एम बोलतां कुतूहल जोवा माटे घणा लोको एकठा ... ... हकीकत जाणीने त्यां आव्या. सघळाओ सुपात्र दानना प्रशं... करवा मांड्या कहुं छे के-

व्याजे स्याद्द्विगुणं वित्तं, व्यवसाये स्याच्चतुर्गुणम् ।
क्षेत्रे शतगुणं प्रोक्तं, पात्रेऽनंतगुणं तथा ॥ १ ॥

" व्याजमां धन बमणुं थाय छे, व्यापारमां धन चोगणुं थाय छे, क्षेत्रमां वाव-सोगणुं थाय छे, अने सत्पात्रने आपवाथी अनंतगणुं थाय छे. "

वळी—

मिथ्यादृष्टिसहस्रेषु, वरमेकोह्यणुव्रती ।
अणुव्रतिसहस्रेषु, वरमेको महाव्रती ॥ २॥
महाव्रतिसहस्रेषु, वरमेको हि तात्विकः ।
तात्विकस्य समं पात्रं, न भूतं न भविष्यति ॥ ३ ॥

" हजार मिथ्यात्वीओ करतां एक श्रावक व्रतधारी वधारे श्रेष्ठ छे, हजार श्रावक [illegible]ारीओ करतां एक महाव्रती (साधु) वधारे श्रेष्ठ छे; हजार महाव्रतीओ करतां तत्त्ववेत्ता मुनि (गणधर महाराजा) वधारे श्रेष्ठ छे, एवा तात्विक मुनिनो व-[illegible]ो करनारुं पात्र बीजुं कोइ थयुं नथी अने थशे पण नहि. "

माटे आ जैन साधुने दान देवुं ए धन्य छे. पछी त्यां मुनिए देशना आपी. [illegible] माणसो मुनिनो देशनाथी प्रतिबोध पाम्या अने सघळा ब्राह्मणो पण [illegible]क थया.

हरिकेशि मुनि शुद्ध व्रत आराधी केवलज्ञान पामीने मोक्षे गया. माटे कुळनुं [illegible]ान्य नथी, पण गुणोनुंज प्राधान्य छे; गुण न होय तो कुळ कंइ करी शकतुं नथी. [illegible] आ आत्मा नटनी माफक नवां नवां रूप धारण करी संसारमां परावर्तन कर्या छे (अनेक देह धारण करे छे). माटे कुळाभिमाननो अवकाशज क्यां छे ? आ [illegible]कृतने त्रण गाथा वडे स्पष्ट करे छे—

देवो नेरइउत्तिय, कीड पयंगुत्ति माणुसोवेसो ॥
रूवस्सीअ विरूवो, सुहभागी दुक्खभागीअ ॥ ४५ ॥
राउत्तिय दमगुत्तिय, एस सपागुत्ति एस वेयविऊ ॥
सामी दासो पुज्जो, खलत्ति अधणो धणवइत्ति ॥ ४६ ॥

गाथा ४६–स्वपाकश्चंडाल । खलुत्ति.

नवि इत्थ कोंति नियमो, ... ॥ ४६ ॥
अनुन्न रूववेसो, नडुव्व परियत्तए जीवो ॥ ४७ ॥

अर्थ—" आ जीव देवता थयो, नारकी थयो, कीडा अने पतंगीयो थयो, ... थयो अनेक प्रकारनो नियंच थया, मनुष्य ... थयो ... थयो, विरुप एटले कद्रुप पण थयो, सुखनो भाजन थयो. दुःखनो भाजन-दुःख भो... वनार पण थयो. ४५ राजा थयो, द्रमक एटले भिक्षुक पण थयो, एज जीव ... थयो, एज वेदनो जाणनारो प्रधान ब्राह्मण पण थयो, स्वामी थयो, सेवक थयो, ... एवो उपाध्यायादि थयो, खळ दुर्जन पण थयो, निर्धन थयो, अने धनवान पण थ... ४६. आ संसारमां कोइ प्रकारनो नियम नथी अर्थात् मनुष्य मरीने मनुष्य ज थ... पशु मरीने पशु थाय ने देवता चवीने देवता थाय एम केटलाको कहे छे पण एवो ... कुल नियम नथी. पोतानां कर्मोनो जेवो उदय होय ते प्रमाणे चेष्टा करनारो आ ... नवां नवां रूप ने वेष धारण करनारा नटनी जेम आ संसारमां (नवा नवा रू... परिभ्रमण पण करे छे." ४७. आ प्रमाणेनुं संसारनुं स्वरुप जाणीने विवेकी प्र... मोक्षना अभिलाषीज होय छे, धनादिना इच्छक होता नथी. ते उपर कहे छे—

कोडीसएहिं धणसंचयस्स, गुणसुभरियाए कन्नाए ॥
नवि लुद्धो वयररिसी, अलोभया एस साहूणं ॥ ४८ ॥

अर्थ—" द्रव्यसमूहना सेंकडो कोडीए सहित आवेलो, रूप लावण्यादि ... भरेली एवी कन्या (अपरिणीता) ने विषे पण वैरऋषि (वज्र स्वामी मुनि) ... णा नहीं, लुब्ध थया नहीं. आवी अलोभता सर्व साधुओए करवी." ४८. अर्था... निर्लोभी थवुं.

पुष्कळ द्रव्य सहित अत्यंत रूपवंत 'रुक्मिणि' नामनो कन्या वज्रस्... गुणोथी मोह पामीने तेमने वरवा आव्या छतां वज्रस्वामीए किंचित् पण द्र... स्त्रीमां न लोभातां तेने उपदेश आपी धर्म पमाडी चारित्र आप्युं. आवी निर्लोभ... मुनि महाराजाए राखवा योग्य छे. अहीं वज्रमुनिनुं दृष्टांत कहे छे—

गाथा ४७-स्वकर्मविनिविष्टसदृशकृतचेष्ट । अत्रन गाथा ४८-गुणसुभरि...

श्री वज्रमुनिनुं दृष्टांत.

तुंबवन गाममां 'धनगिरि' नामनो एक व्यापारी वसतो हतो. ते अति भद्रिक हतो. 'सुनंदा' नामनी स्त्री हती. तेनी साथे भोग भोगवतां तेणे घणा दिवसो सुखथी त कर्या. एक दिवस वैराग्य उत्पन्न थवाथी धनगिरिए सगर्भा भार्याने छोडीने गिरि गुरु पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. ते उग्र तप करवा लाग्या; अने गुरुसेवाना क थइ सारणा, वारणा, चोयणा, पडिचोयणा विगेरे[1] ग्रहण करवामां कुशळ थया. पाछळ सुनंदाने पुत्र प्रसव थयो. ते वखते, आना पिताए दीक्षा लीधेली छे अने न्यवाद आपवा लायक मुनि थयेल छे.' एवुं ते पुत्र जन्मतांज स्वजनमुखथी सांभ- मनमां चिंतन करवा लाग्यो के-'अरे! आ लोको शुं बोले छे? आ दीक्षाधर्म ा होय छे? में कोइ पण वखत तेनो अनुभव करेलो लागे छे.' ए प्रमाणे ध्यानमां र थएला ते बाळकने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं एटले तेणे पूर्वे अनुभवेलुं चारित्र नुं स्वरूप जाण्युं. तेथी संसारथी विरक्त थइने ते विचार करवा लाग्यो के-' आ ी जरा आदिनो दुःखपरंपराथी व्याप्त एवो संसारनो विलास क्यां! अने शाश्वत ानो ज्यां प्रकाश एवो चारित्र धर्मने विषे निवास क्यां! अरे! अनंतीवार भोगव्या ां पण आजीव विषयोमां तृप्ति पामतो नथी.' कह्युं छे के—

धनेषु जीवितव्येषु, भोगेष्वाहारकर्मसु ।
अतृप्ताः प्राणिनः सर्वे, याता यास्यन्ति यान्ति च ॥

द्रव्यमां, जीवितव्यमां, भोगमां अने आहारकर्ममां अतृप्त रह्या सताज सर्व प्राणी- ला छे, जशे अने जाय छे."

ळी कह्युं छे के—

ा न भुक्ता वयमेवभुक्ता-स्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः ।
ो न यातो वयमेव याता-स्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा ॥

भोगो भोगवाया नथी पण अमे ज भोगवाया छीए, तप तप्युं नथी, पण अमे ा छीए, काळ गयो नथी पण अमेज गया छीए, अने अमारी तृष्णा जीर्ण थइ ण अमे पोते ज जीर्ण थया छीए." माटे सांसारिक सुखो सुलभ छे, परंतु धिरत्न परम दुर्लभ छे. कह्युं छे के—

---

[1] सारणा-संभारी आपवुं, वारणा-अशुद्ध भणतां वारवुं, चोयणा-प्रेरणा करवी, यणा-वारंवार प्रेरणा करवी इत्यादि.

सुलहो विमाणवासो, एगच्छत्तावि मेइणी सुलहा।
दुल्लहो पुण जीवाणं, जिणंदवरसासणे बोहि ॥

" विमानवासी एटले देवता थवुं ते सुलभ छे अने एकछत्र पृथ्वी पण छे. अर्थात् चक्रवर्ती थवुं ते सुलभ छे, परंतु जिनेंद्रना श्रेष्ठ शासनमां बोधिबीज ते जीवोने परम दुर्लभ छे."

आ प्रमाणे विचार करीने ते बाळक पोतानी माताने उद्वेग पमाडवा गाढ स्वरथी रुदन करवा लाग्यो. माताए घणा उपायो कर्या, परंतु ते जरा पण बंध थतो नथी. जो के मातानुं मन तेना पर स्नेहयुक्त हतुं तोपण आथी विरक्त थयुं. बाळक पण जेम जेम मातानुं मन विरक्त थतुं जाणवा लाग्यो तेम तेम ते रुदन करवा लाग्यो. ए प्रमाणे छ मास व्यतीत थया. ए समये श्री 'सिंहगिरि' सूरि त्यां पधार्या. नगरना लोको तेमने वंदन करवाने गया. गुरुए देशना दी[illegible] देशनाने अंते सभा वीखराइ जतां धनगिरिए गुरु पासे आवीने भिक्षा माटे ज[illegible] आज्ञा आपी. त्यारे गुरुए कह्युं के–' आज गोचरीमां सचित्त के अचित्त जे म[illegible] सघळु ग्रहण करवुं.' ए प्रमाणेनुं गुरुनुं वाक्य स्वीकारीने धनगिरि भिक्षा माटे न[illegible] मां गया. गोचरी माटे फरतां फरतां ते पोतानी स्त्री सुनंदाने घेर आव्या अने [illegible] लाभ आप्यो त्यारे सुनंदाए कह्युं के–' हे स्वामी ! आ पुत्रने ग्रहण करो, आ पुत्रे [illegible] घणो संताप उपजाव्यो छे.' एवुं सांभळीने गुरुनुं वचन जेमणे स्मृतिमां राख्युं [illegible] एवा धनगिरिए सुनंदाए आपेला पुत्रनी भिक्षा स्वीकारी. झोळीमां पुत्रने लइने ते [illegible] समीपे पाछा आव्या. गुरुए वज्र जेवा ते बाळकमां भार जाणीने तेनुं नाम [illegible] पाड्युं. ते बाळकने साध्वीओना उपाश्रये सोंप्यो. त्यां घणी श्राविकाओ तेनी [illegible] करवा लागी. श्रीसंघने पण ते अति प्रिय थयो त्यां पारणामां सूतां सूतां ते बा[illegible] अनेक प्रकारनां सिद्धांतोनो अभ्यास करती साध्वीओना मुखथी सांभ[illegible] अग्यार अंगोनुं अध्ययन कर्युं. अनुक्रमे ते त्रण वर्षनो थयो. तेनी माता [illegible] दर्शने आवती हती. ते पुत्रने दिव्य रूपवाळो जोइने मोहथी मन विह्वळ करी [illegible] लेवाने आवी. तेणे कह्युं के–' आ मारो पुत्र छे [illegible] जइश.' धनगिरिए कह्युं के–' [illegible] [illegible] नहि. कारणके तमे पोते आ बाळक अमारा हाथमां अर्पण कर्यो छे. [illegible] विचार करतां सुनंदा पुत्र सहित राजानी कोर्टमां [illegible] [illegible] आ पुत्र [illegible] छे. [illegible] तेना आ पुत्र, [illegible] छे.' ते बाळकाने सुनंदा अनेक प्रका[illegible]

वानी चीजो. सुखडी. विविध प्रकारनां आभरणो अने बाळकना चित्तने रंजित
एवी वस्तुओ (रमकडांओ) मोटा आगळ मूकीने पुत्रने बोलाववा लागी के-'हे
! आ ले, आ ले.' परंतु तेणे ए प्रमाणे बोलती माताना सन्मुख पण जोयुं नहि
ी ते खिन्न थइ. पछी धनगिरिए कह्युं के-'हे बाळक! अमारी पासे तो आ धर्म
न (रजोहरण) छे, जो तने पसंद पडे तो ते ग्रहण कर.' एवुं सांभळी ते बाळक
तो गुरु पासे जइ धर्मध्वजने माथे चडावी प्रफुल्लित नेत्र करीने नृत्य करवा लाग्यो.
ाए कह्युं के-'आ पुत्र गुरुनोज छे.' सर्व लोको ते जोइने आश्चर्य पाम्या के 'अरे!
त्रण वर्षना बालकनुं ज्ञान तो जुओ!' पछी सघळा संघना माणसो गुरु सहित
ाश्चर्य आवीने पोतपोताना स्थाने गया.

अनुक्रमे ते बाळक आठ वर्षनो थयो एटले गुरुए तेने दीक्षा दीधी. पुत्रना
हथी शून्य थयेली सुनंदाए पण चारित्र ग्रहण कर्युं. पछी गुरुए 'आ बाळक योग्य
' एम जाणी पोताना स्थाने (आचार्यपदे स्थापित कर्या. दश पूर्व जाणनार अने
ग्र तप करनार एवा वज्रमुनिने पूर्वभवना मित्र कोइ देवे आवीने वैक्रिय लब्धि अने
ाकाशगामिनी विद्या आपी.

एकदा विहार करता अतिशयोथी युक्त श्री वज्रस्वामी पाटलीपुत्र नगर (पटणा)-
मां आवतां वांदवाने माटे नगरना लोको आव्या. वज्रस्वामीए पण विद्याना बळथी
ातानुं रूप विशेष करीने धर्मदेशना आपी ते देशनावडे लोकोनां चित्त बहु आक-
र्षायां अने परस्पर बोलवा लाग्या के-'अहो! आ गुरुमहाराजनो रूपने अनुसरतोज
र्णविलास छे!' पछी देशनानी समाप्ति थये सर्व लोको स्वस्थाने गया अने ते
वस व्यतीत थयो.

हवे ते नगरमां 'धनावह' नामनो एक शेठ वसे छे. तेने 'रुक्मिणी' नामे घणी
ूर्ती पुत्री छे. तेणे एक दिवस कोइ आर्याना मुखथी वज्रस्वामीना गुणो सांभळ्या
ा, अने आर्या पण रुक्मिणीनी पासे वारंवार वज्रस्वामीना गुणोनुं कथन करती हती.
ी तेना रूप, लावण्य, विद्या विगेरे अतिशयोथी मोहित थइने रुक्मिणीए प्रतिज्ञा
ी के-'वज्रस्वामी शिवाय अन्यने हुं परणीश नहि.' तेणे पोताना पिताने पण कह्युं
-'हुं वज्रस्वामी शिवाय अन्यने वरवानो नथी.' आ प्रमाणे केटलोक काळ व्य-
त थया पछी वज्रस्वामीनुं आगमन सांभळीने धनावह शेठ पुत्री उपरना स्नेहने
धे बीजे दिवसे अनेक कोटि रत्नो सहित देवांगनाओनां करतां पण वधारे सुंदर
ी अने अलंकृत करेली पोतानी पुत्रीने लइने भगवान् वज्रस्वामी पासे आव्या. शेठ

हाथ जोडी बोल्या के 'हे भगवन ! प्राणथी पण अधिक वहाली एवी आ मारी कन्या रत्नराशि सहित पाणिग्रहण करवा कृपा करो.' भगवान वज्रस्वामीए कह्युं के "हे भद्र! आ कन्या मुग्ध छे. ते कइ पण समजती नथी. अमे तो मुक्तिरूपी कन्याना आलिंगनमां उद्युक्त होवाथी अशुचिथी भरेली स्त्रीओमां रति पामता नथी. स्त्रीनुं शरीर मळमूत्रनी खाण छे. तेने स्पर्श करवो ए पण अनर्थकारी छे." कह्युं छे के—

वरं ज्वलदयस्तंभःपरिरंभो विधीयते ।
न पुनर्नरकद्वाररामाजघनसेवनम् ॥

"प्रज्वलित लोढाना थांभलाने आलिंगन करवुं ए वधारे सारुं छे, पण नरकना द्वाररूप स्त्रीना जघननुं सेवन करवुं सारुं नथी." माटे आ मोहना निवासरूप स्त्रीनो देह प्राणीओने पाशरूपज छे. कह्युं छे के—

आवर्तः संशयानामविनयभवनं पत्तनं साहसानां
दोषाणां सन्निधानं कपटशतमयं क्षेत्रमप्रत्ययानाम् ।
स्वर्गद्वारस्य विघ्नं नरकपुरमुखं सर्वमायाकरंडं
स्त्रीयंत्रं केन सृष्टं विषममृतमयं प्राणिनामेकपाशः ॥

"संशयोनुं वमळ, अविनयनुं घर, साहसनुं नगर, दोषोनो भंडार, हजारो कपटथी भरेलु, अविश्वासनुं क्षेत्र, स्वर्गद्वारनुं विघ्न, नरकपुरनो दरवाजो, सर्व प्रकारनी मायानो कंडीयो—एवुं आ स्त्रीरूप यंत्र कोणे सर्ज्युं हशे ? के जे प्राणीओने विष छतां अमृतमय देखातुं पाशरूप छे." माटे ब्रह्मचारीओने स्त्रीनो संगज करवो योग्य नथी अने तेनां अंगोपांग पण जोवां योग्य नथी. वळी—

स्नेहं मनोभवकृतं जनयंति भाव
नाभीभुजस्तनविभूषणदर्शितानि ।
वस्त्राणि संयमनकेसविमोक्षणानि
भ्रूक्षेपकंपितकटाक्षनिरीक्षणानि ॥

"स्त्री कामदेवथी उत्पन्न थयेला स्नेहने पेदा करेछे, हावभावथी भुजा, स्तन, विभूषण, वस्त्र अने छूटा करेला केस देखाडेछे, तेमज भ्रगुटीना आक्षेपथी कंपित कटाक्ष

पूर्वक जुए छे." तिकरी पण अधिक विस्तार एवा आ विषयोनुं वर्णन करवाथी पण [illegible]. वळी मानस सरोवर उपर प्राप्त थयेलो, वर्ण पक्षथी शुद्ध, सुगति हंसीथी युक्त [illegible]क ज्ञानरूप मुक्ताफळनो भोगक, जड अने चैतन्यना तफावतने जाणनार अने [illegible] अने विभावनुं पृथक्करण करनार एवा राजहंस तुल्य आत्माने रुधिर, मज्जा ने [illegible] वडे पूर्ण एवा अपवित्र स्त्रीना देहरूपी कूपमां वसवुं उचित नथी, तेथी आ [illegible] रहित स्त्रीने योग्य वरनी करवानी पण नथी. हे श्रेष्ठी! जो मारा उपर तारी आ स्थानो रागी प्रेम होय तो ते पोताना अर्थ साधवा वडे मारा चित्तने मळे आनंदित [illegible]. ए प्रमाणेना श्रीवज्रस्वामीना वचन सांभळीने ज्ञानरूपी दीपक जेने प्रदीप्त [illegible] छे, स्वभाव अने विभावनुं स्वरूप जेणे जाण्युं छे अने अति हर्षथी अनुकूळ जेनां [illegible]मांथी थयेल छे एवा रुक्मिणीए हाथ जोडीने कह्युं के "हे स्वामी! आपनां कहेलां वचन [प्र]माणे वर्तवाथी पण हुं कृतार्थ छुं." पछी धन सार्थवाहे तेने आज्ञा आपी एटले तेणे [वज्र]स्वामीनी पासे दीक्षा ग्रहण करी अने सम्यक् प्रकारे चारित्र पाळीने स्वर्गे गई.

दश पूर्वने धारण करनार वज्रस्वामी अनेक भव्य जीवोनो उपदेश देवावडे उद्धार [क]री आठ वर्ष गृहस्थपणामां रही, चुंमाळीश वर्ष गुरुसेवामां काढी, छत्रीश वर्ष युगप्रधानपणे विचरी अठ्यासी वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी श्री महावीर स्वामीना निर्वाणथी पांचसो चोराशी वर्ष व्यतीत थया पछी देवपणाने प्राप्त थया.

आनुं नाम धर्म स्थैर्यता के जेमां आटला बधा प्रभाववाळाओमां पण आवा प्रकारनी निर्लोभता होय छे. अन्य जनोए पण वज्रस्वामीनी पेठे निर्लोभी थवुं एवो आ कथानो उपनय छे.

इति वज्रस्वामी कथा १६.

अंतेउर पुरबल वाहणेहिं, वरसिरिघरेहिं मुणिवसहा ।
कामेहिं बहुविहेहि य, छंदिज्जंता वि नेच्छंति ॥ ४९ ॥

"रमणिक स्त्रीओ, नगरो, चतुरंगिणी सेना अने हस्ति अश्वादि वाहनोए करीने, वरश्रीगृह एटले प्रधान द्रव्य भंडारे करीने अने बहु प्रकारना काम जे पांच इंद्रियोना विषयो तेणे करीने निमंत्रित कर्या छतां पण मुनिवृषभो (मुनिश्रेष्ठो) तेने इच्छता नथी." ४९. एवो पोताना चारित्रधर्मनेज इच्छे छे.

छेओ भेओ वसणं आयास किलेस भय विवागो अ ॥
मरणं धम्मब्भंसो अरई अत्थाओ सव्वाइं ॥ ५० ॥

गाथा ४९—मुणिवसभा. बहुविहेहिं. गाथा ५०—विवादः कलहः । अत्थाउ.

कर्मणो हि प्रधानत्वं, किं कुर्वन्ति शुभा ग्रहाः ।
वसिष्टदत्तलग्नोऽपि, रामः प्रव्रजितो वने ॥

" कर्मनुंज प्रधानत्व छे, तेमां शुभ ग्रहो पण शुं करे ? रामने गादीए माटे वशिष्ट मुनिए मुहूर्त्त आपेलुं हतुं छतां पण ते मुहूर्त्ते तेने वनमां जवुं पड्युं

आ प्रमाणे विचारी दुःखगर्भित वैराग्यवडे ते मामाना घरमांथी नीकळी फरतो रत्नपुर नगरे गयो. त्यां उपवनना कोइ एक भागमां वस्त्ररहित थइ क्रीड कामरसथी उन्मत्त थयेलुं. परस्पर गाढ आलिंगनथी जोडायेलुं स्त्रीपुरुषनुं जोडुं नंदिषेण मनमां बहुज खिन्न थयो अने आत्महत्या करवा माटे वनमां गयो. त सुस्थित नामना मुनि मळ्या. मुनिए कह्युं के:–हे मुग्ध ! आवा अज्ञान मृत्यु शो लाभ थवानो छे ? पूर्वे अनंतीवार विषयादिकना सेवनथी कोइ पण सिद्धि थइ नथी; माटे कांइक धर्मकार्य कर के जेथी कार्यसिद्धि थाय. आ फण जेवा भयंकर अने परिणामे अति कटु एवा विषयसुखथी शो लाभ छे रोगनो भंडार एवुं आ शरीर पण अनित्य छे.' कह्युं छे के—

पणकोडी अडसट्ठी, लक्खा नवनवइ सहस्स पंचसया ।
चुलसी अहिआ निरए, अपइट्ठाणंमि वाहिओ ॥

"सातमी नरकना अप्रतिष्ठान नामना नरकावासमां पांच क्रोड अडसठ नवाणुं हजार पांचसें ने चोराशी व्याधिओ छे."

तेथी आ अनित्य देहवडे सारभुत एवा धर्मने अंगीकार कर. कार मनुष्यभव अत्यंत दुर्लभ छे अने ते धर्म विना व्यर्थ छे. कह्युं छे के—

संसारे मानुष्यं सारं, मानुष्ये च कौलिन्यम् ।
कौलिन्ये धर्मित्वं, धर्मित्वे चापि सदयत्वम् ॥

संसारमां मनुष्यजन्म साररूप छे, मनुष्यजन्ममां कुलिनपणुं सा कुलिनपणामां धर्म पाळवो ए साररूप छे अने धर्म पाळवामां पण दयायुक्त सारभूत छे."

---

१ आ व्याधिना व्याधि सत्तागत सर्व शरीरमां रहेला होय छे. फक्त नरकना नारकीने विपाकोदये वर्ते छे अने अन्य जीवोने विपाकमां वर्तता न [illegible] क्रोड रोमराय कहेवाय छे तेनी साथे संबंध करत [illegible]ओ गणो शकाय छे.

आ प्रमाणेनी गुरुमहाराजनी अमृत तुल्य देशना सांभळीने विषयतापथी निवृत्त तेणे गुरु पासे दीक्षा लीधी, अने उग्रविहारीपणे गुरुनी सेवा करतां विचरवा पा. तेओ छट्ठ छट्ठने अंते पारणुं करवा लाग्या अने अत्यंत वैराग्यथी मनने पूर्ण 'दरराज मारे पांचशे साधुओनी वैयावच्च करवी' एवो नियम ग्रहण कर्यो. साधुनो वच्चनुं मोटुं पुण्य कह्युं छे के—

> वेयावच्चं नियमं, करेह उत्तमगुणे धरंताणं ।
>
> सव्वं किर पडिवाई, वेयावच्चं अप्पडिवाई ॥

" उत्तम गुण धारण करनाराओनो वैयावच्च निरंतर कर. कारणके सर्व गुण पाति छे अने वैयावच्च गुण अप्रतिपाती छे."

आ प्रमाणे विचारीने नंदिषेण मुनि गाममां आहार पाणी वहोरी लावी पछी साधुओने अर्पण करीने पारणुं करे छे. आ कारणथी संघनी अंदर तेनी घणी ा थइ. एक दिवस सौधर्म इंद्रे नंदिषेणना नियमनी प्रशंसा करी. तेने नहि सर्द- बे देवो नंदिषेणना नियमनी परीक्षा करवाने माटे रत्नपुरे आव्या एक देव नगर र उद्यानमां ग्लान मुनिनुं रूप धारण करीने रह्यो, अने बीजो देव मुनिने रूपे नग- अंदर ज्यां नंदिषेण मुनि छट्ठनु पारणु करवा बेसेछे त्यां आव्यो. जेवामां पहेलो । (कोळीओ) मुखमां मूके छे तेवामां पेलो साधुवेषवाळो देव त्यां आवीने बोल्यो अरे! नंदिषेण! मारा गुरु नगरनो बहार उध्यानमां अतिसारना रोगथी पीडा पामेछे तुं वैयावच्च करनार कहेवाय छे छतां निश्चितपणे भोजन करवा केम बेठो छे?' वचन सांभळतांज हाथमां लीधेलो ग्रास छोडी दइ आहार उपर वस्त्र ढांकीने ते साथे नंदिषेण मुनि बहार चाल्या. साधुदेवे कह्युं के 'अरे! प्रथम देहशुद्धि ाने माटे तुं जळ लइ ले.' एटले नंदिषेण जळ वहोरवा चाल्या. परंतु ते ज्यां जायछे त्यां त्यां अशुद्ध जळ मळे छे तोपण ते खिन्न थता नथी. ए प्रमाणे आखा रमां बेवार फरतां छतां देवना उपरोधथी तेने शुद्ध जळ मळ्युं नहि. त्रीजी वार लेवा फरतां लाभांतराय कर्मना क्षयोपशनी प्रबलता थवाथी अने तपलब्धिथी देवे लो उपरोध निवृत्त थतां शुद्ध जळ मळ्युं, ते जळ लइने देवमुनिनी साथे वननी र ग्लान मुनि पासे आव्या. ग्लान मुनिए नंदिषेणने घणां कर्कश वचनो कह्यां, तु नंदिषेण पोतानोज दोष जुएछे. मननी अंदर जराये क्रोधथी कलुषित थता नथी. ो कह्युं के 'हे ग्लान मुनि! मारो अपराध क्षमा करो.' एटलुं बोली तेनुं शरीर ज्वडे साफ करी कह्युं के 'हे स्वामी! आप उपाश्रये पधारो, जेथी औषध करवा

वने समाधि पमाडी शकाय.' तेटलामां साधु गया के 'हे नंदिषेण! मारा
चालवानी शक्ति नथी तेथी हुं केवी रीते चालुं?" त्यारे नंदिषेण ग्लान मुनिने
खांध उपर बेसाडीने चाल्या. मार्गमां तेने तेओ ... पगले पगले दुर्गंधवाळो अशुचि
अने 'अरे नंदिषेण! तने धिक्कार छे। उतावळे तुं चालवाथी उछाळो वागे छे.
मने बहु कष्ट थाय छे.' इत्यादि कटु वाणीथी तेनी बहु तर्जना करे छे. परंतु ते
तो तीव्रतर शुभ परिणामवाळा थया सता चिंतवे छे के 'आ महात्मा केवी रीते
(निरोगी) थशे.' आम विचारीने ते बोल्या के-'अरे ग्लान मुनि! मारुं
मिथ्या थाओ. हवे हुं तमने सारी रीते लइ जइश' एम बोलता आगळ चालवा
पछी देवे विचार कर्यो के 'अहो! आ मुनिने धन्य छे! तेने अत्यंत खेद प
छतां ते जरा पण चलित थया नहि. माटे इंद्रनुं वचन सत्य छे.' आ प्रमाणे
करी देवमायाने संहरी लइ दिव्य रूप धारण करीने बोल्यो के-'हे स्वामी! इं
रीते तमारुं वर्णन कर्युं हतुं तेवुंज में जोयुं पवित्र आत्मावाळा तमने धन्य छे!
क्रोधने जीत्यो छे. मारो अपराध क्षमा करो.' आ प्रमाणे वारंवार कही
मुनिना पगमां पडी ते देव पोताने स्थाने गयो.

गोशीर्षचंदनथी जेना शरीर उपर लेप करायेलो छे एवा नंदिषेण मुनि
स्थाने आव्या. पछी घणा काळ सुधी वैयावच्च करी नाना प्रकारना अ
पाळतां दुष्कर तप कर्युं. बार हजार वर्ष पर्यंत चारित्रधर्म पाळी अंत समये सं
करीने दर्भना संथारा उपर बेसी चतुर्विध आहारनो त्याग कर्यो. हवे ते समये
कोइ प्रकारना कर्मनो उदय थवाथी पोतानुं संसारीपणानुं दुर्भाग्य याद करी
मुनिए एवुं नियाणुं कर्युं के 'आ तपचारित्रादिना प्रभावथी हुं आवता भवे
स्त्रीप्रिय थउं.' ए प्रमाणे निदान करी, मरण पामीने आठमा सहस्र
देवपणे उत्पन्न थया.

देवलोकथी च्यवीने नंदिषेणनो जीव सोरीपुर नगरमां अंधकविष्णु
सुभद्रा राणीनी कुक्षिमां समुद्रविजय आदि नव मोटा भाइओ पछी वसुदेव नामे
भाइ तरीके जन्म्यो. तेणे पाछला भवमां निदान करेलुं होवाथी ते अति सौं
सुभग अने लोकप्रिय थयो. ते निश्चितपणे नगरमां स्वेच्छाए फरे छे. तेनुं रूप जो
पामेली नगरवासी स्त्रीओ घरकाम छोडी तेनी पाछळ भम्या करे छे. लाजवाळ
वान स्त्रीओ पण पोतानो धर्म तजी दे छे आ प्रमाणे स्त्रीओनुं व्याकुळपणुं जाणी
थयेला नगरवासी लोकोए समुद्रविजय पासे आवी अरज करी के "स्वामि

ा परनी अंदरज राखवा जोइए. कारणके तेना रूपथी मोहित थयेली पौरस्त्री-
व्याचार आदिनो पण त्याग करेल छे. तेने लीधे कुलांगनाना आचारनी हानि
, अने आ अनाचारने नहि अटकाववाथी तमारो पण दोष गणाय छे." ए
सांभळीने समुद्रविजये वसुदेवने योग्य रीते शिखामण आपीने महेलनी अंदर
. ते त्यां कल्याम्वास करवा लाग्या.

क दिवसे उनाळानी ऋतुमां शीवादेवीए गोशीर्षचंदन घसी सोनानुं कचोळुं
सीना हाथे पोताना पति समुद्रविजयने मोकल्युं. मार्गमां वसुदेवे बळात्कारथी
नुं पोताना शरीर उपर विलेपन कर्युं. तेथी दासीए कह्युं के—अटकचाळा छो
आवा 'गुप्तिस्थानमां राखवामां आव्या छे. पछी ते संबंधी बधो व्यतिकर
ने पाछली राते एकाकी नगरना द्वार नीकळी कोइ स्थानेथी एक मृतक लइ
दरवाजा पासे तेने बाळीने प... के—'वसुदेव अत्र बळी मुओ छे, तेथी
रना सर्व लोकोए कुशळथी रहेवुं' आ प्रमाणे लखीने ते नगरमांथी नीकळी
ातःकाळे समुद्रविजये ते वात जाणी अति शोक कर्यो अने विचारवा लाग्या
"आ मारीए दुष्कृत्य उचित शुं कर्युं? पण हवे शुं करीए" भावि कोइ प्रकारे
थतुं नथी" वसुदेव पण पृथ्वीमां भ्रमण करता सता नवां नवां रूप, नवानवां
नवा नवां आचरणाथी भाग्यवशात् हजारो विद्याधरनी कन्याओ अने हजारो
याओ परण्या. ए प्रमाणे एकसो वीश वर्ष पर्यंत देशाटन करतां तेणे ७२०००
पाणिग्रहण कर्युं. पछी रोहिणीना स्वयंवरमां आवीने कुब्जरूपथी तेने परणी,
साथे युद्ध करी, चमत्कार देखाडी, पोतानुं स्वरूप प्रगट करी समुद्रविजय
आनंद उत्पन्न कर्यो. लोको आश्चर्य पाम्या अने कहेवा लाग्या के "अहो!
वे पुण्यनो मागमार तो बहु विशेष जणाय छे." पछी स्वजनोनी साथे वसुदेव
नगरे आव्या. अने छेवटे देवक राजानी पुत्री देवकीनुं पाणिग्रहण कर्युं. ते
ी कुक्षिथी श्रीकृष्ण वासुदेव उत्पन्न थया अने तेना पुत्रो शांब, प्रद्युम्न विगेरे
ा प्रमाणे वसुदेव हरिवंशना पितामह थया.

ा सघळुं पूर्व भागमां आचरेला वैयावच्च रूप अभ्यंतर ने छठ्ठ अट्ठमादि बाह्य
ळ जाणवुं. ए प्रमाणे बीजाओए पण बने प्रकारनां तपने विषे प्रयत्न करवो.

सपरक्कम राउलवाइएण, सिसे पलाविए निअए।
गयसुकमालेण खमा, तहा कया जह शिवं पत्तो ॥५५॥

---

[1] बंदीखानामां.

" पराक्रमवाळा अने राजाना बंधु बहु लालनपालन करेला एवा मुनिए पोतानुं मस्तक बळते सते पण एवी क्षमा करी के जेथी तेओ मोक्ष प्रत्ये अहीं गजसुकमाळनुं दृष्टांत जाणवुं. १८.

गजसुकमाळनी कथा.

द्वारिका नगरीमां श्री कृष्ण नामे वासुदेव राजा हता. तेनी माता देवकी हती. त्यां श्री नेमिनाथ जिनेश्वर समवसर्या. देवोए आवीने समवसरण कर्युं ने भगवाने देशना आपी. सभाजनो पोतपोताना स्थाने जतां भद्दिलपुरमां भाइ साधुओ भगवाननी आज्ञा लइ छठ्ठने पारणे बबेना संघाडे त्रण भागे भिक्षा अर्थे नीकळ्या. तेमांना पहेला बे मुनि फरतां फरतां देवकीना मंदिरे तेमने जोइने मनमां अति हरखाती देवकीए लाडुवडे प्रतिलाभ्या. तेओना ग बीजा बे मुनि पण त्यांज आव्या. तेमनुं पण देवकीए भाव पूर्वक मोदक सन्मान कर्युं. तेओना गया पछी दैवयोगे त्रीजा बे मुनि पण आव्या. सरखं तिवाळा अने अति उल्लास उत्पन्न करनारा तेमने जोइने देवकी विचार करवा के 'आ प्रमाणे एकने एक ठेकाणे त्रीजीवार आहार माटे आववुं शुद्ध साधुओ नथी, तेथी आनुं शुं कारण हशे?' ए प्रमाणे विचार करी तेमने पूछयुं के-' नुभाव ! आ द्वारका नगरी बहु विशाल छे, तेमां श्रावको पण घणा छे; वारेवारे अहीं आववानुं शुं प्रयोजन छे? शुं आ नगरीमां आहार मळतो अथवा शुं साधुओ वधारे छे? के भूलथी आववुं थयुं छे?" ए प्रमाणे पूछवाथी ते साधु बोल्या के-'हे सुश्राविका ! अमे छ भाइओ छीए. छठ्ठ प्रथक् प्रथक वहोरवा नीकळतां जुदा जुदा तमारे घेर आवेला छीए. अमे ए आकृतिवाळा होवाथी तमने संशय उत्पन्न थयेलो छे.' ते सांभळी देवकीए कर्यो के "आ छए मुनि सरखी आकृतिवाळा छे अने कृष्ण जेवा देखाय पण एओने जोवाथी पुत्रदर्शन तुल्य आनंद थायछे. पूर्वे पण 'अतिमुक्त' मु कह्युं हतुं के 'तने आठ पुत्र थशे.' तेथी आ मारा पुत्रो तो नहि होय संदेह तेने थयो. बीजे दिवसे ते नेमीश्वर भगवान पासे गइ अने वांदीने पूछ के-'हे स्वामिन ! गइ काले छ साधुओना दर्शनथी मने घणो आनंद थय ते उपरना अति स्नेहनुं शुं कारण छे?' भगवाने कह्युं के-" ए छए साधु पुत्रो छे. कंसना भयथी हरिणगमेषी देवे तेने जन्मतांज उपाडी तेने बदले मृतक पुत्रो मूकीने भद्दिलपुरमां नागपत्नी 'सुलसा'ना घरे तेमने सोंप्या

ओ मोटा थया. युवान वय पामतां तेओने बत्रीश बत्रीश कन्याओ परणावी. ते मोए री देशना सांभळीने वैराग्य प्राप्त थवाथी संसारनो त्याग करी चारित्र ग्रहण कर्युं. ओ कायम छठनो तप करवा लाग्या. आजे छठने पारणे मारा आदेशथी नगरीमां हार अर्थे नीकळ्या, अने तमारे घेर पृथक् पृथक् जोडले आव्या. तमने जोवाथी संबंधने लीधे तमने हर्ष उत्पन्न थया."

आ प्रमाणे भगवाननां वचन सांभळीने देवकी घरे आवी पश्चात्ताप करती सती मां विचारवा लागी के 'विकसित मुखवाळा अने कोमळ हाथ पगवाळा पोताना ने जे रमाडे छे अने खोळामां बेसाडे छे ते स्त्रीने धन्य छे! हुं तो अधन्य अने भागी छुं; कारणके में मारा एक पुत्रने पण रमाडयो नथी.' आ प्रमाणे चिंता- क्त थइने भूमि तरफ द्रष्टि राखी रहेला पोतानी माता देवकीने कृष्णे दीठा, एटले मणे चितानुं कारण पूछयुं. देवकीए चितानुं कारण कही बताव्युं. पछी मातानो नोरथ पूर्ण करवा माटे अठम तप करीने तेणे देवनुं आराधन कर्युं. देवे आवी रदान आप्युं के 'देवकीने पुत्र थशे, पण ते घणा काळ सुधी घरमां रहेशे नहि.' वुं कही देव स्वस्थाने गयो.

अनुक्रमे सिंहना स्वप्नथी सूचित पुत्र थयो. तेनुं नाम 'गजसुकमाल' राखवामां व्युं, क्रमे करीने ते आठ वर्षनो थयो. माताना आग्रहथी तेने सोमिल ब्राह्मणनी ाठ पुत्री परणावी. पछी नेमीश्वर भगवाननी देशना सांभळी संसारनी असारता ाणी गजसुकमाले चारित्र ग्रहण कर्युं; अने प्रभुनी आज्ञा लइ स्मशानभूमिमां कायो- र्ग मुद्राए रह्या.

ते अवसरे फरतां फरतां त्यां आवेला सोमिले तेने जोइने कह्युं के–'आ दुष्टे ारी निरपराधी बाळाओने फोगट परणीने वगोवी.' आ प्रमाणे उत्पन्न थयेल छे. प जेने एवा सोमिले तेना मस्तक उपर माटीनी पाळ बांधीने तेमां धगधगता अंगारा र्या. अग्निवडे मस्तक बळतां छतां पण गजसुकमाले अपूर्व क्षमा धारण करी अने क्ल ध्यानवडे अंतकृत् केवली थइने मोक्षे गया.

बीजे दिवसे श्रीकृष्ण प्रभुने वांदवा आव्या. तेणे प्रभुने पूछयुं के–'गजसुकमाल यां छे?' भगवाने कह्युं के–'तेणे पोतानुं काम साधी लीधुं.' एम कहीने पछी तेनुं कळ वृत्तांत कह्युं. कृष्णे कह्युं के–'हे स्वामिन्! आ कुकर्म कोणे कर्युं?' भगवा- कह्युं के–'तने जोइने जेनुं हृदय फाटी जाय ने मृत्यु पामे तेनाथी ए कार्य थयुं छे म समजजे.' शोक[illegible]

सोमिल सामो मळयो. भयथी नासतां तेनुं हृदय फाटी जवाथी ते मरण पा
हत्याना पापथी सातमी नरके गयो.

धैर्यवान गजसुकमाले जे प्रमाणे क्षमा धारण करी ते प्रमाणे अन्य
पण समग्र सिद्धिने देनारी क्षमा धारण करवी एवो आ कथावडे उपदेश

रायकुलेसुवि जाया, भीया जरमरणगब्भवसहीणं ।
साहु सहंति सव्वं, नीयाणवि पेसपेसाणं ॥ ५६ ॥

अर्थ-" राजकुळमां उत्पन्न थएला छतां पण जरा मरण ने गर्भावासनां
पामेला एवा मुनि पोताना दासना करेला सर्व उपसर्गो पण सहन करे

पणमंति य पुव्वयरं, कुलया न नमंति अकुलया पु
पणओ पुव्विं इह जइ-जणस्स जह चक्कवट्टिमुणी

अर्थ-" कुळवान पुरुषो प्रथम नमे छे. अकुलीन नमता नथी. अहीं
न (पूर्वना) यतीजनने प्रथम नम्या [तेनुं दृष्टांत जाणवुं). ५७. अ
ऽनी ऋद्धि छोडीने मुनि थयेला छतां पूर्वना-दीक्षा पर्याये ज्येष्ठ मु
ने प्रथम नम्या ". ५७.

जह चक्कवट्टीसाहू सामाईअ साहूण निरुवयारं ।
भणिओ नचेव कुविओ, पणओ बहूअत्तण गुणेणं

अर्थ-" जेम चक्रवर्ती साधुने (प्रथम बीजा मुनिओने नमस्कार
सामान्य साधुए निष्ठुरपणे तुंकारो करीने कह्युं के तुं आ ताराथी दी
मुनिओने वंदना कर तथापि ते बिलकुल कोपायमान थया नहि अ
चारित्र गुणवडे श्रेष्ठ-बहुपणावाळा मुनिओने नम्या." ५८.

अहीं सामान्य साधु ते दीक्षापर्याये लघु समजवा.

ते धन्ना ते साहू, तेसिं नमो जे अकज्ज परिविरया ।
धीरा वय मसिहारं-चरंति जह थूलिभद्दमुणी ॥ ५९ ॥

गाथा ५६—भीताः स्वमाः साह   गाथा ५८— चकवट्टि. साहू.
साहुण. निरुवयारं.   गाथा ५९.—परिवरिया. थूलभद्दमुणी.

र्थ–" ते पुरुष धन्य–कृतपुण्य, ते साधु–सत्पुरुष, ते पुरुषने नमस्कार थाओ कार्यथी निवृत्त थया छे. एवा धीर पुरुषो जेम थूलिभद्र मुनिए आचर्युं तेम चतुर्थ व्रत ते असिधार सदृश–खड्गनी धार उपर चालवानी जेवुं आचरे छे ." ५९. अहीं श्रीस्थूलिभद्रनुं दृष्टांत जाणवुं. १९.

श्री स्थूलिभद्रनुं दृष्टांत.

लीपुरमां नंद नामे राजा हतो. तेने 'शकडाल' नामे नागरब्राह्मण ज्ञातिनो मंत्री ने लाच्छलदे नामनो स्त्री हती. तेने 'स्थूलिभद्र' नामे मोटो पुत्र हतो अने बीजो ' नामे हतो, तथा 'यक्षा' आदि सात पुत्रीओ हती. स्थूलिभद्र युवावस्थामां विनोद ततो एक दिनस मित्रोथी परिवृत्त थइ वन जोवाने गयो. पाछो आवतां तेने 'कोशा' वेश्याए जोयो. तेना रूपथी मोहित थयेली ते वेश्याए तेने वात करवाना मिष- ते करी चातुर्यगुणथी तेनुं चित्त वश करी लीधुं.स्थूलिभद्र पण तेना गुण ने रूपथी थइ ते वेश्याने घेर रह्यो; अने तेनी साथे विषयसुख भोगवतो सतो ते नवा नवा करवा लाग्यो.तेना पिता पण पुष्कळ द्रव्य मोकलवा वडे तेनुं इच्छित पूर्ण करवा . ए प्रमाणे त्यां बार वर्ष सुधी रहेला स्थूलिभद्रे साडीबार क्रोड सोनामहोरनो व्यय ते अवसरे वररुचि ब्राह्मणे करेला प्रयोगथी शकडाल मंत्रीनुं मरण थयुं. ते वखते जाए श्रीयकने प्रधानपद आपवाने माटे बोलाव्यो. त्यारे श्रीयके कह्युं के–' हे ! मारो मोटो भाइ कोशा वेश्याने घरे छे, ते प्रधानपदने योग्य छे.' नंदे बोला- सेवको मोकल्या. ते आव्यो. तेने मंत्रीपद आपतां तेणे एकाएक न स्वीकार्युं. कारण पूछतां स्थूलिभद्रे कह्युं के–' स्वामीन् ! विचार करीने ग्रहण करीश.' र विचार करवानी रजा आपी, एटले अशोकवाटिकामां एकांत स्थले जइने विचार लाग्यो के–" आ संसारमां कोइ कोइनुं नथी सर्व स्वार्थी छे.' कह्युं छे के–

वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः शुष्कं सरं सारसाः ॥
पुष्पं पर्युषितं त्यजन्ति मधुपा दग्धं वनांतं मृगाः ।
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिका भ्रष्टं नृपं सेवकाः॥
सर्वः स्वार्थवशाज्जनोभिरमते नो कस्य को वल्लभः ॥

"पक्षीओ फळ विनाना वृक्षनो, सारस पक्षीओ जळ विनाना सरोवरनो, भ्रमरो गयेलां पुष्पोनो मृगो बळेला वननो, गणिका निर्धन पुरुषनो अने सेवकलोको

घोळवा लागी.

अहीं स्थूलिभद्रने मळवा [illegible] चातुर्मास उपर एक स
पासे आवीने कह्युं के–' सिंहगुफा पासे चातुर्मास करवा इच्छुं छुं. ' ए प्रमा
मागी एटले बीजा मुनिए कह्युं के–' हुं सर्पना बील पासे चातुर्मास करवा इ
त्रीजा मुनिए कह्युं के–' हुं कुवानी अंतराळे रहेल लाकडा उपर (भार
चातुर्मास करवा इच्छुं छुं. ' त्यारे चोथा साधु स्थूलिभद्रे कह्युं के–' हुं कोश
घरमां चातुर्मास करवा इच्छुं छुं.' गुरुए योग्यता जाणीने चारे मुनिने आ

स्थूलिभद्र गुरुने नमीने कोशा वेश्याने घेर गया. तेने आवतां जोइ को
पित थइ अने सामे आवीने पगमां पडी. तेनी आज्ञा लइ स्थूलिभद्र तेनी चित्रश
तुर्मास रह्या. ते हमेशां षट्रसनो आहार करे छे, समय पण वर्षा ऋतुनो छे, f
शाळामां छे, प्रीति कोशानी छे, अने परिचय बार वर्षनो छे. वळी नेत्र न
विलास, हावभाव, गान, तान, मान, वीणा ने मृदंगना मधुर शब्दो सहित नाट्या
विगेरे नाना प्रकारना विषयोने स्थूलिभद्र आगळ प्रगट करती अने पोतानो
बतावती कोशा कहे छे के–' हे स्वामिन् ! स्वाधीन एवी कामिनीनां कुचस्प
आलिंगन आदि छोडीने आवुं कठोर तप शामाटे करो छो ? ' कह्युं छे के–

संदष्टेऽधरपल्लवे सचकितं हस्ताग्रमाधुन्वती ।
मामा मुंच शठेति कोपवचनैरानर्त्तितभ्रूलता ॥
सीत्कारांचितलोचना सरभसं यैश्चुंबितो मानिनी ।
प्राप्तं तैरमृतं श्रमाय मथितो मूढैस्सुरैः सागरः ॥

अधर पल्लवनो दंश करतां चकित थइने हस्तना अग्र भागने धूणावती, अने हि, हे शठ ! छोडी दे' ए प्रमाणे कोपवचन बोलवा साथे भ्रूलताने नचावती त्कारथी सत्कार करायेलां जेनां नेत्र छे एवी मानिनीने जुस्साथी जेणे चुंबन तेओए खरुं अमृत मेळव्युं छे एम हुं मानुं छुं, बाकी मूढ देवताओए तो श्रमने माटेज समुद्र मथेलो छे." तेथी हे स्थूलिभद्र ! आ त्याग साधवानो समय ाटे मारी साथे यथेच्छ विषयसुख भोगवी तेनो स्वाद ल्यो. फरीथी आ मनु-पामवो दुर्लभ छे. अने आ यौवन पण दुर्लभ छे. माटे हे स्वामिन् ! हमणा अंगसंगथी उत्पन्न थयेलुं सुख भोगवो. पाछळथी वृद्धावस्थामां आ तप करवो त छे." ते सांभळीने स्थूलिभद्र बोल्या-'हे भद्रे ! अपवित्र अने मलमूत्रनुं ा कामिनीना शरीरने आलिंगन करवाने कोण इच्छे ? कह्युं छे के-

स्तनौ मांसग्रंथी कनककलशावित्युपमितौ ।
मुखं श्लेश्मागारं तदपि च शशांकेन तुलितम् ॥
स्रवन्मूत्रक्लिन्नं करिवरशिरःस्पर्द्धिजघनं ।
मुहुर्निंद्यं रूपं कविजनविशेषैर्गुरुकृतम् ॥

स्तनो मांसनी गांठ छे छतां कविजनोए तेने सोनाना कळशनी उपमा आपी श्लेश्म (कफ)नुं स्थान छे तोपण कविओए तेनी चंद्र साथे सरखामणी करी छे वता मूत्रथी व्याप्त एवा जघनने हाथीना गंडस्थलनी साथे सरखाव्युं छे. ए प्रमाणे निंदवा लायक स्त्रीना स्वरुपने कविआएज विशेष महत्वता आपी छे." वळी—

वरं ज्वलद्यस्तंभः, परिरंभो विधीयते ।
न पुनर्नरकद्वाररामाजघनसेवनम् ॥

तपावेला लोढाना थांभलाने आलिंगन करवुं ए सारुं छे, परंतु नरकना द्वार ना जघननुं सेवन करवुं ए सारु नथी." वळी एक वखतना स्त्रीसंभोगथी अनेक घात थाय छे. कह्युं छे के-

मेहुणसन्नारूढो, नवलक्ख हणेइ सुहुमजीवाणं।
तित्थयराणं भणियं, सद्दहियव्वं पयत्तेणं ॥

" मैथुनसंज्ञाने विषे आरूढ थयेलो जीव नव लाख सूक्ष्म जीवोने हणे तीर्थंकर भगवंते कहेलुं छे तेने प्रयत्न पूर्वक सर्दहवुं.

वळी हे कोशा ! आ विषयो अनेकवार भोगव्या छतां तेनाथी तृप्ति कह्युं छे के–

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषया ।
वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून् ॥
व्रजंतः स्वातंत्र्यादतुलपरितापाय मनसः ।
स्वयं त्यक्त्वा ह्येते शिवसुखमनंतं विदधति ॥

" आ विषयो लांबा वखत सुधी रहीने पण छेवटे जनारा छे ए तो नक्की तो पछी तेना वियोगमां फेर शो छे के जेथी माणसो पोतानी मेळे विषयाने छो नथी; केमके जो ए विषयो पोतानी मेळे आपणाथी छुटा पडे छे तो मनने अति ताप उत्पन्न करे छे. पण जो आपणे पोतेज खुशीथी तेनो त्याग करीए छीए तो मोक्षसुख आपे छे." एटला माटे सर्पनी फण जेवा आ विषयोने छोडी दइ शील अलंकारथी तारा सुंदर अंगने अलंकृत कर. आ मनुष्यभव फरीथी मळवो मुश्केल अने ते भव धर्म विना हारी जइश. कारण के सर्व कार्योमां उत्तम कार्य धर्म कह्युं छे के—

न धम्मकज्जा परमत्थि कज्जं, न पाणिहिंसा परमं अकज्जं।
न पेमरागा परमत्थि बंधो, न बोहिलाभा परमत्थि लाभो ॥

धर्मकार्यथी उत्कृष्ट बीजुं कोइ कार्य नथी, प्राणीनी हिंसा उपरांत बीजुं कोइ अकार्य नथी, प्रेमरागथी विशेष कोइ बंधन नथी, अने बोधि (सम्यक्त) ना लाभ उपरांत बीजो कोइ परम लाभ नथी. " इत्यादि उपदेश आपीने जेनुं मन वाळेलुं एवी कोशा बोली के–' हे कंदर्पनु विदारण करनार ! हे शासननो उद्योत करनार ! मिथ्यात्वने निवारनार ! तमने धन्य छे, तमेज खरेखरुं जीवितनुं फळ मेळव्युं छे. हुं अधन्य छुं, मैं तमने बहु रीते चळाववा प्रयास कर्यो पण तमे चळ्या नहि. हवे कृपा फरीने सम्यक्त्व आपीने मारो उद्धार करो.' आ प्रमाणे कहीने स्थुलिभद्रनी पासे प्रयत्नना उच्चार पूर्वक बार व्रत अंगीकार करी ते कोशा परम श्राविका थइ. ते

ाए मोकलेल पुरुष शिवाय अन्य पुरुषनो वचनथी पण हुं स्वीकार करीश नहि' ाणे भोग संबंधी पच्चख्खाण लीधुं, तेमज जीव अजीव आदि तत्त्वोनो पण ार थइ.

् प्रमाणे कोशा वेश्याने प्रतिबोध पमाडी चातुर्मास पूर्ण करी स्थूलिभद्र मुनि श्री विजयाचार्यनी पासे आव्या. पेला त्रण मुनिओ स्थूलिभद्रनी पहेलां आव्या हता. ते त्रणेने 'दुष्कर कार्य कर्युं' ए प्रमाणे एकवार कहीने मान आप्युं हतुं; परंतु भद्र मुनिने 'दुष्कर कार्य कर्युं' एम त्रणवार कही घणा आदर पूर्वक मान आप्युं. ाइ सिंहगुफावासी मुनिना मनमां मत्सर आव्यो के "गुरुनो विवेक तो जुओ के ् क्षुधा ने तृषाथी पीडायेला अमोने 'दुष्कर कर्युं' एम मात्र एक वखत कह्युं, ड्रसने खानार तथा मोह उपजावे एवा स्थाननी अंदर रहेनारने 'दुष्कर दुष्कर एम त्रण वखत कह्युं." ए प्रमाणे तेणे मनमां मत्सर धारण कर्यो.

हवे एक दिवस नंद राजानी आज्ञाथी कोइ रथकार कोशा वेश्याना मंदिरे ो. तेनी बारीमां रहीने तेणे बाणसधान विद्याथी आम्रफलनी लुंब त्यां बेठा बेठा पोतानी कला बतावी, एटले कोशाए पण पोताना आंगणामां सरसवनो ढग- ्रावी, तेना उपर सोय मूकी, तेना उपर एक पुष्प मूकीने तेना उपर नृत्य कर्युं. ाइ रथकार चमत्कार पामीने बोल्यो के–' आ अति कठिन काम छे. ' त्यारे ए कह्युं के—

डुक्करं अंबयलुंबतोडणं, न डुक्करं सिरसव नच्चिआए ॥
डुक्करं तं च महानुभावं, जं सो मुणी पमयवणंमि वुच्छो ॥१॥

" आंबानी लुंब तोडवी ते दुष्कर नहि तेमज सरसव उपर नाचवुं ते पण दुष्कर दुष्कर तो ए छे के जे ते महानुभाव स्थुलिभद्रे कर्युं अने प्रमदा रुपी वनमां न पामतां शुद्ध रह्या."

गिरौ गुहायां विजने वनान्तरे, वासं श्रयंतो वशिनः सहस्रशः ।
र्म्येति रम्ये युवतीजनांतिके, वशी स एकः शकडालनंदनः॥२॥

" पर्वतमां, गुफामां, एकांतमां अने वननी अंदर निवास नारा हजारो छे, पण अति रम्य हवेलीमां अने ा राखनार तो ते शकडालनंदन एकज छे."

ए प्रमाणे जेम स्थूलिभद्रे दुर्धर व्रतने धारण करी चोराशी चोवीशी सुधी तानुं नाम राख्युं तेम अन्य मुनिओए पण गुरुनी आज्ञाने अनुसरी ग्रहण करेला पाळीने कीर्तिवंत थवुं.

विसयासिपंजरमिव, लोए असिपंजरंमि तिख्खंमि ॥
सिंहा व पंजरगया, वसंति तवपंजरे साहु ॥ ६० ॥

अर्थ–" लोकने विषे जेम तीक्ष्ण खड्गना पंजरथी भय पामेल सिंह काष्टना रामां वसे छे तेम विषय रूप खड्ग पंजरथी भय पामेला मुनिओ तप रूप पंजरमां छे, अर्थात् बार प्रकारनो तप आचरे छे." ६०

विषय पांच इंद्रियोना शब्दादि जाणवा. तद्रुप पंजरथी अथवा तत्तुल्य जे तेथी भय पामेला मुनिओ संसार तजी दृढ चारित्र अंगीकार करीने बाह्य अभ्यंतर आचरे छे, एटले तप रूप पंजरमां वसे छे.

जो कुणइ अप्पमाणं, गुरुवयणं नय लहेइ उवएसं ।
सो पच्छा तह सोअइ उवकोसघरे जह तवस्सी ॥ ६१ ॥

अर्थ–" जे प्राणी आत्ममान करे छे अर्थात् पोताना गुणनुं अभिमान करे छे गुरुना वचनने–उपदेशने–आज्ञाने अंगीकार करतो नथी ते प्राणी पाछळथी एवो करे छे के जेवो उपकोशाने घरे गयेला तपस्वी मुनिए कर्यो." ६१

'अहीं जे गुरुना वचनने अप्रमाण करे छे' एम कह्युं छे त्यां 'जे गुरुना उप ने मानतो नथी' एवो अर्थ पण थाय छे.

स्थूलिभद्रजीनी ईर्ष्याथी कोशा वेश्याना बहेन उपकोशा वेश्याने घरे ग सिंहगुफावासी मुनि जे चतुर्मासमां चारे मासना उपवास करीने सिंहनी गुफाने कायोत्सर्गे रहेता हता तेमनुं दृष्टांत अहीं जाणवुं. २०

सिंहगुफावासी मुनिनुं दृष्टांत.

एक दिवस पाडलीपुरमां श्रीसंभूतिविजय आचार्यना सिंहगुफावासी शिष्ये स भद्र उपर ईर्ष्या करी बीजुं चातुर्मास कोशा वेश्यानो बेन 'उपकोशा' वेश्याने घेर वानी गुरु पासे आज्ञा मागी. गुरुए अयोग्यता जाणी आज्ञा आपी नहि. गुरुए कर्युं

गाथा ६०—सिंहा. गाथा ६१—नयलएइ न लहेइ.

संबंधी चिंतन करतां तेने याद आव्युं के 'उत्तर दिशामां नेपाल देशनो राजा (नवा) साधुने लक्ष मूल्यनुं रत्नकंबल आपे छे, माटे त्यां जइ, रत्नकंबल [illegible] आनी साथे विषयसुख सेवीने मनइच्छित परिपूर्ण करुं.' आ प्रमाणे विचारी [illegible] मेघनी पुष्कळ वृष्टि थती हती छतां नेपाल देश प्रति प्रयाण कर्युं. घणा [illegible] र्दन करतो अने अनेक कष्टो सहन करतो केटलेक दिवसे ते नेपाल देशे पहोंच्यो [illegible] आशिर्वाद पूर्वक राजानी पासे रत्नकंबल माग्युं. राजाए ते आप्युं. ते लइने [illegible] फरतां मार्गमां चोरोए लूंटी लीधुं, तेथी तेणे फरीवार नेपाल जइ राजाने [illegible] पछी तेने फरीथी रत्नकंबल आपवामां आव्युं. ते रत्नकंबलने वांसमां नाखी [illegible] लाखनां चोरनी पाळना पोपटे चोरोने ते जणाववाथी तेओने तेने घेरी लीधो के 'एक लाखनी किंमतनुं रत्नकंबल तारी पासे छे ते बताव.' तेणे कह्युं के [illegible] पासे कंइ नथी.' चोरोए कह्युं के-'अमारो आ पोपट खोटुं बोले नहि माटे [illegible] [illegible] ते खरुं नहि.' तेथी तेणे सत्य कहेवाथी भिक्षुक जाणीने तेने [illegible] [illegible] ते पाटलीपुर आव्यो अने रत्नकंबल उपकोशाने आप्युं. तेणे तेनावडे [illegible] [illegible] तेने दूर अपवित्र स्थानमां फेंकी दीधुं. त्यारे साधुए कह्युं के 'अरे [illegible] [illegible] आ रत्नकंबल अतिदुर्लभ छे.' ते सांभळी वेश्याए कह्युं के-' [illegible] [illegible] कोण [illegible] शिरोमणि छे? में तो आ लक्ष्य मूल्यनुं रत्नकंबल [illegible] दीधुं छे, पण तें तो अमूल्य एवा ज्ञान दर्शन चारित्र रूप रत्न [illegible] [illegible] साधना दुर्लभ ते नर बीट पुरुषने थुंकवाना पात्र जेवा [illegible] [illegible] [illegible] फेंकी दीधा छे; माटे नगर विचार्य करनार [illegible] [illegible] आ मनुष्यभव दुर्लभ छे, तेमां पण उत्तम कुळ दुर्लभ छे; तेमां [illegible] [illegible] श्रद्धा रूप [illegible] दुर्लभ छे, अने तेमां पण साधुपणुं [illegible] [illegible] [illegible] साधुपणाने [illegible] अंगमां मोह पामी [illegible] [illegible] [illegible] चारित्रनो त्याग करनारा [illegible] [illegible] वेदनाने तुं केवी रीते सहन करीश!" इत्यादि [illegible] [illegible] [illegible] मुनि कहेवा लाग्या के-'तने धन्य छे; [illegible] [illegible] [illegible] निरुप थयो छुं.' त्यारे तेणे [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] पूर्वक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

स्थूलिभद्रने जे कह्युं ते सत्य छे.' ए प्रमाणे कही पापनी आलोचना करी, फरीथी व्रत ग्रहण करीने ते मुनि सद्गतिए गया. माटे गुरुनी आज्ञा पूर्वक जे आचरवुं श्रेष्ठ छे, एवो आ कथानो उपदेश छे.

जिट्ठव्वयपव्वयभर–समुव्वहणववसिअस्स अच्चंतं ।
जुवइ जण संवइयरे, जइत्तणं उभओ नट्ठं ॥ ६२ ॥

अर्थ–" ज्येष्ठव्रत जे महाव्रत ते पर्वतना भार सदृश छे, तेने वहन करवामां अत्यंत उद्यमी एवा मुनि पण युवतिजननो संसर्ग कर्ये सते द्रव्यथी ने भावथी बंने प्रकारना यतिपणाथी भ्रष्ट थाय छे. "

जइ ठाणी जइ मोणी, जइ मुंडी वक्कली तवस्सी वा ।
पत्थिंतो अ–अबंभं, बंभावि न रोचए मज्झं ॥ ६३ ॥

अर्थ–"जो स्थानी के० कायोत्सर्ग करनारो होय, जो मौनी के० मौन धारण करनार होय, जो मुंडी के० माथे मुंडन करावनारो होय, अथवा वल्कली के० झाडनी छालनां वस्त्र पहेरनारो होय के तपस्वी के० अनेक प्रकारनां तप करनारो होय तो पण अब्रह्म जे मैथुन तेने प्रार्थतो–वांछतो होय तो ते कदि ब्रह्मा होय तो पण ते मने रुचतो नथी. अर्थात् गमे तेवुं कष्ट करनार होय पण जो ते मैथुनाभिलाषी होय तो ते श्रेष्ठ नथी." ६३

तो पढियं तो गुणियं तो मुणियं तो अ चेइओ अप्पा ।
आवडिय पल्लिया मंतिओवि, जइ न कुणइ अकज्जं ॥६४॥

अर्थ–"जो अकुलिनना संसर्ग रूप आपदामां पडयो सतो एटले कुमित्रे प्रेर्यो अने स्त्रीए आमंत्रित कर्यो सतो–बोलाव्यो सतो पण जे अकार्य प्रत्ये जतो नथी. आचरतो नथी तो तेनुं भणेलुं प्रमाण, गणेलुं प्रमाण, जाणेलुं प्रमाण अने आत्म स्वरूपनुं चिंतवन पण प्रमाण समजवुं." ६४. नहीं तो ते बधुं अप्रमाण जाणवुं.

पागडिय सव्वसल्लो, गुरुपायमूलंमि लहइ साहू पयं ।
अविसुद्धस्स न वड्ढइ, गुणसेढी तत्तिया ठाइ ॥ ६५ ॥

गाथा ६२—स्त्रीजनससंर्गेकृते. गाथा ६३—ठाणि. पथ्थंतो. रोयए.
गाथा ६४— मुणीयं. पिल्लिया. गाथा ६५—पादमुलंमि. साहुपयं तित्तिया.

अर्थ–" गुरु महाराजना पादमूले–गुरुसमीपे जेणे सर्व शल्य प्रगट कर्यां, पाप आलोव्यां छे ते प्राणी साधुताने पामे छे; अने अविशुद्धनी–अनालोचित कर्मवाळानी गुणश्रेणि तेटलीज रहे छे–वृद्धि पामती नथी."६५. अर्थात् पाप आलोचीने निःशल्य थया विना गुणो वृद्धि पामता नथी; तेटलेज अटको रहे छे.

जइ दुक्कर दुक्करकारउत्ति, भणिओ जहट्ठिओ साहू।
तो कीस अज्जसंभूअ–विजयसीसेहिं नवि खमियं ॥६६॥

अर्थ–' जो यथास्थित एवा श्री स्थूलिभद्र नामना साधुने गुरुए (... चोमासुं रहीने आव्या त्यारे) 'दुष्कर दुष्कर कारक' एवा बहुमानपूर्वक ... ने गुरुवचनने श्री संभूतिविजयना शिष्य सिंहगुफावासी मुनिए शामाटे न सहन कर्युं ?" आ तेमनुं निर्विवेकीपणुं छे; माटे यथास्थित गुणोने जोइने ...ने तेना पर तो अनुरागज करवो; द्वेष न करवो.

जइ ताव सव्वओ सुंदरुत्ति, कम्माण उवसमेण जइ।
धम्मं वियाणमाणो, इयरो किं मच्छरं वहइ ॥ ६७॥

... कोइ प्रथम कर्मना उपशमवडे करीने सर्व प्रकारे सुंदर ... जाणतो मनो शामाटे तेना उपर मत्सर वहन करे ?" ... आ सर्व प्रकारे कोइ जीवनी 'आ सर्व प्रकारे सारो छे' ... धर्मना जाण एवा मुनिए तेना प्रत्ये मत्सर धारण करवो ते व्यर्थज छे.

... गुणसमुद्धोत्ति, जो न सहइ जइ ... नवा महापीढपीढ रिसी ॥ ६८

पीठ अने महापीठ मुनिनी कथा.

ांविदेह क्षेत्रमां 'वज्रनाभ' चक्री राज्य छोडी चारित्र ग्रहण करी चौदपूर्वधारी ना बीजा चार नाना भाइओ बाहु, सुबाहु, पीठ अने महापीठ पण दीक्षा लइ अंगने धारण करनारा थया. तेमां बाहु मुनि पांचसे साधुने आहार लावीने हता, सुबाहु मुनि तेटलाज साधुओनो वैयावच्च करता हता, अने पीठ महा- ने अध्ययन करता हता. एक दिवसे गुरुए बाहु अने सुबाहु मुनिनी प्रशंसा करी. ओने पीठ अने महापीठने इर्ष्या उत्पन्न थइ. तेओ विचारवा लाग्या के 'अहो! अविवेकीपणुं तो जुओ! तेओ हजु राजस्वभाव तजता नथी. पोतानी वैयावच्च अने अन्न पाणी लावी आपनारने वखाणे छे. आपणे बंने जणा दररोज अ- ने तप करीए छीए' परंतु गुरु आपणी प्रशंसा करता नथी.' ए प्रमाणे इर्ष्या- रेत्र पाणता छेवटे पांचे साधुओ काळ करीने सर्वार्थसिद्ध विमानमां देवपणे थया. त्यांथी च्यवी वज्रनाभनो जीव श्रीऋषभदेव थया, बाहु सुबाहुना जीवो वना पुत्र भरत अने बाहुबलि थया अने पीठ महापीठना जीवो इर्ष्या करवा- वेद बांधेल होवाथी ऋषभदेवनी पुत्रीओ ब्राह्मी अने सुंदरी थया.

: प्रमाणे जेओ गुणप्रशंसामां इर्ष्या करेछे तेओ पीठ अने महापीठनी पेठे हीनप- ामे छे; तेटलामाटे विवेकीओए कदि पण गुणी प्रत्ये मत्सर धारण करवो नहि.

परपरिवायं गिण्हइ, अट्ठमयविरल्लणे सया रमइ ।
डज्झइ य परसिरीए, सकसाओ दुक्खिओ निच्चं ॥ ६९ ॥

अर्थ-"जे पारका अपवादने ग्रहण करे छे-बोले छे, आठ मदने विस्तारवामां रमे छे-मदमां आसक्त रहे छे अने पारकी लक्ष्मी-शोभा देखीने दाझे छे-बळेछे सकषायी पुरुष निरंतर दुःखीओ जाणवो."

विग्गहविवायरुइणो, कुलगणसंघेण बाहिरकयस्स ॥
नत्थि किर देवलोए वि, देवसमिइसु अवगासो ॥ ७० ॥

अर्थ-"विग्रह ने विवादनी रुचिवाळा अने कुळ गण संघे बहार करेला एवाने ोकमां देवसभाने विषे पण अवकाश एटले प्रवेश प्राप्त थतो नथी."७०-अर्थात् युद्ध मां के मिथ्या विवाद करवामां तत्पर एवा अने कुळ ते नागेंद्रादि, गण ते कुळनो

ा ६९—अष्टमदविस्तारणे. गाथा ७०—देवसभायां अवकाशः प्रवेशः

समुदाय अने संघ चतुर्विध (साधु, साध्वी, श्रावक ने श्राविका) तेमणे अयोग्य ने जेने वहार कर्यो होय-कुळ, गण के संघथी दूर करेल होय तेने स्वर्गमां देवसभामां पण अवकाश मळतो नथी एटले ते किल्बिष जातिना नीच देवपणे उपजे छे. तेने देवसभामां बेसवानो हक मळतो नथी. ए किल्बिष देवो मनुष्यमां जेम ढेढ छे तेम देवताओमां हलकी जातिना देव गणाय छे.

जइ ता जणसंववहार-वज्जिय मकज्ज मायरइ अन्नो ।
जो तं पुणो विकत्थइ, परस्स वसणेण सो दुहिओ ॥ ७१ ॥

अर्थ-"जो प्रथम कोइ अन्य, जनव्यवहार-लोकाचारमां वर्जित-निषिद्ध एवां चौर्यादि अकार्यने-पापकर्मने आचरे छे अने जे पुरुष ते पापकर्मने (लोकसमक्ष) विस्तारे छे ते पारके दुःखे दुःखीओ थाय छे अर्थात् बीजो माणस परनिंदा करवाथी निरर्थक पापनो भाजन थाय छे." ७१

सुट्ठुवि उज्जमसमाणं, पंचेव करिंति रित्तयं समणं ।
अप्पथुइ परनिंदा, जिब्भो वत्था कसाया य ॥ ७२ ॥

अर्थ-"तपसंयम क्रियाने विषे भले प्रकारे उद्यमवंत एवा साधुने पण १ आत्मस्तुति, २ परनिंदा, ३ जीह्वा, ४ उपस्थ इंद्रिय अने ५ कषाय ए पांच दोष, गुणरिक्तगुण, रहित करे छे. अर्थात् तप संयम क्रियावान् होय छतां पण जो आ पांच दोषमांथी कोइ दोष होय तो ते मुनि गुणरहित थइ जाय छे." ७२

आत्मस्तुति ते पोतानी प्रशंसा स्वमुखे करवी, परनिंदा ते पारका अपवाद बोलवा, जीह्वा शब्दे रसेंद्रियनुं परवशपणुं, उपस्थ शब्दे पुरुषचिन्ह या स्त्रीचिन्ह तेना विषयनुं अभिलाषीपणुं अने कषाय ते क्रोधादि चार-आ पांच प्रकारना दोषथी गुणरहित थवाय छे.

परपरिवायमईओ, दूसइ वयणेहिं जेहिं जेहिं परं ।
ते ते पावइ दोसे, परपरिवाई इअ अपिच्छो ॥ ७३ ॥

अर्थ-"पारका अपवाद बोलवामां निपुण बुद्धिवाळा पुरुष जे जे वचनोए करीने

गाथा ७१—कश्चित्. गाथा ७२—सुट्ठवि उज्जममाणं करंति अप्पथुइ निन्दोरन्या जिह्वा उपस्थाः गाथा ७३—परपरिवायमइय. अपिच्छा—अप्रेक्ष्य

रने दोषवंत करेछे ते ते दोषने पोते पामे छे. ए हेतु माटे परपरिवादी पुरुष अप्रेक्ष्य–अदर्शनीय–न जोवा लायक छे, अर्थात् परनिंदाकारक पुरुषनुं मुख पण जोवा लायक नथी." ७३

थद्धा छिद्दप्पेही अवन्नवाई सयंमई चवला ।
वंका कोहणसीला, सीसा उव्वेअगा गुरुणो ॥ ७४ ॥

अर्थ–"स्तब्ध ते अनम्र–अभिमानी, छिद्रान्वेषी ते अवर्णवादि, स्वयंमति ते स्वेच्छाचारी, चपळ स्वभावी, वक्र अने क्रोधस्वभावी–एवा शिष्यो गुरुने उद्वेगना करावनारा होय छे." ७४

जस्स गुरुंमि न भत्ती, न य बहुमाणो न गउरवं न भयं ।
नवि लज्जा नवि नेहो, गुरुकुलवासेण किं तस्स ॥ ७५ ॥

अर्थ–" जे शिष्यने गुरुने विषे भक्ति न होय, बहुमान न होय, गुरुनुं गौरव न होय, गुरुनो भय न होय, गुरुनी लज्जा न होय अने गुरु उपर स्नेह पण न होय तेवा शिष्यने गुरुकुलवासे करीने शुं ? अर्थात् तेवा दुर्विनीत शिष्यने गुरु समीपे वसवाथी कांइ पण फळ नथी." ७५

भक्ति एटले विनय–गुरुने आवता देखीने उभा थवुं, आसन आपवुं विगेरे अने बहुमान ते अभ्यंतर भक्ति समजवी.

रूसइ चोइज्जंतो, वहइ हियएण अणुसयं भणिओ ।
नय कम्हिं करणिज्जे, गुरुस्स आलो न सो सीसो ॥ ७६ ॥

अर्थ–"जे शिष्य गुरुए प्रेरणा कर्यो सतो रोष करेछे अने बोलाव्यो सतो अनुशय एटले क्रोधने हृदयमां धारण करे छे तथा कोइ पण कार्यमां काम आवतो नथी. तेवो शिष्य ते गुरुने आळरूप छे, शिष्य नथी." ७६ शिक्षाने ग्रहण करे ते शिष्य कहेवाय जेनामां शिक्षाग्रहणनो अभाव छे ते शिष्य कहेवायज नहि.

उव्विल्लण सूअण परिभवेहिं, अइ भणिय दुठ भणिएहिं ।
सत्ताहिया सुविहिया, नचेव भिंदंति मुहरागं ॥ ७७ ॥

गाथा ७४—उवेअगा–उद्वेगकारकाः गाथा ७५— गोरवं.
गाथा ७६—चोयंज्जंतो. कम्मिं. गाथा ७७—परभवेहिं. भिंदंति.

थी अल्प फळवाळो थयो." ८१ एटलो तप जो दयायुक्त कर्यो होत तो तेनुं मुक्ति फळ प्राप्त थात. तेथी जिनाज्ञायुक्त तपज प्रमाण छे.

अहीं आटला बधा तपथी मात्र जेने इशानइंद्रपणानी प्राप्ति थइ एवा तामलि नुं दृष्टांत जाणवुं. २२.

तामलि तापसनी कथा.

तामलिप्ती नगरीमां 'तामलि' नामे शेठ वसतो हतो. एक दिवस तेणे पोताना गृहभार सोंपीने वैराग्यपरायण थइ तापसी दीक्षा लीधी अने नदीना कांठा उपर लाग्यो. तेमज कायम छठ्ठ करीने पारणुं करवा लाग्यो पारणाना दिवसे पण जे ार लावतो तेने नदीना जळथी एकवीशवार धोइ निरस करीने खातोहतो अने उपर छठ्ठ करतो हतो. ए प्रमाणे साठ हजार वर्ष सुधी तेणे दुष्कर अज्ञानतप कर्युं.छेवट ान अंगीकार कर्युं. ने अवसरे बलींद्र च्यवी गयेल होवाथी बलिचंचा राजधानीना ारा असुरोए आवी, अनेक प्रकारना नाट्य अने समृद्धि बतावी तामलि तापसने ति करी के—'हे स्वामिन् ! तमे नियाणुं करी अमारा स्वामी थाओ. अमे स्वामी छीए.' ए प्रमाणे त्रणवार कह्या छतां पण तेणे तेमनुं वचन अंगीकृत कर्युं नहि. पछी पुर्ण थये कषाय अल्प होवाथी तेमज अत्यंत कष्ट करेलुं होवाथी तेना प्रभाववडे ते करीने इशान देवलोकमां इंद्रपणे उत्पन्न थया, अने तरतज समकित प्राप्त कर्युं. ज्ञानपूर्वक तप करवुं एज मोक्ष आपनारुं छे. तेथी थोडुं पण तप दया अने ज्ञानयुक्त ुं; पण तामलि तापसनी पेठे अज्ञान ने हिंसायुक्त करवुं नहि.

छज्जीवकायवहगा, हिंसकसत्थाइं उवइसंति पुणो ।
सुबहुंपिं तवकिलेसो, बालतवस्सीण अप्पफलो ॥ ८२ ॥

अर्थ—"छ जीवकायना वध करवावाळा अने वळी हिंसक शास्त्रोनो उपदेश करे छे बाळ तपस्वीओनो अति प्रचुर एवो तपक्लेष पण अल्प फळवाळो थाय छे. तेथी ाना त्यागवडेज तप महाफळने आपे छे एम समजवुं." ८२

अहीं छ जीवकाय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति अने बेइंद्रियादि त्रस ो समजवा. बालतपस्वी ते अज्ञान कष्ट करनारा तापसादि जाणवा.

परियच्छंति सव्वं, जहट्ठियं अवितहं असंदिद्धं ।
तो जिणवयणविहिन्नू, सहंति बहुअस्स बहुआइं ॥ ८३ ॥

गाथा ८३—परियच्छंतिय. बहूअस्स. बहुआए.

अर्थ-"(जे साधु होय छे ते) यथास्थित, सत्य अने संदेह विनानुं मा सर्व पदार्थोनुं स्वरूप जाणे छे तेथी तेवा जिनवचननी विधिना जाणवावाम घणां जनोनां घणां दुर्वचनादि सहन करे छे." ८३ तेथी तेमनुं तप अर्थे थाय छे.

जो जस्स वट्टए हियए, सो तं ठावेइ सुंदरसहावं।
वग्घी छावं जणणी, भद्दं सोमं च मन्नेइ ॥ ८४ ॥

अर्थ-"जे जेना हृदयमां वर्त्ततुं होय छे ते तेने सुंदर स्वभाववाळु स्था छे. अहीं दृष्टांत कहे छे के वाघण माता पोताना बाळकने भद्र अने सौम्य मा जेम वाघण अज्ञानपणाथी अभद्र अने अशांत-सर्व जीवनुं भक्षण कर पोताना बाळकने पण भद्र अने शांत माने छे तेम अज्ञानीओ पोताना गयेला पोताना अज्ञान तपने पण सम्यग् तप जाणेछे-मानेछे; परंतु ते मानवुं

मणिकणगरयणधणपूरियंमि, भवणंमि सालिभद्दोवि।
अन्नोवि किर मज्झवि, सामिओत्ति जाओ विगयकामो

अर्थ "मणि, कंचन, रत्न अने धनवडे पूरित-भरेला एवा भुवनमां पण शालिभद्र नामे श्रेष्ठी निश्चये 'मारो पण बीजो स्वामी छे' एम वि विषयाभिलापरहित थइ गयो." ८५ अर्थात् 'हजु मारे माथे पण बीजो' एम लक्षमां आवतां, जो एम छे तो तो आ मारा वैभवने धिक्कार छे' शालिभद्रे विषयभोग तजी चारित्र अंगीकार कर्युं.

अहीं शालिभद्रनो संबंध प्रसिद्ध होवाथी संक्षेपे कहे छे. २२

श्री शालिभद्रनुं दृष्टांत.

पूर्व भवमां शालिग्राममां रहेनारी 'धन्या' नामनी कोइ दरिद्री स्त्री हती. वाने माटे 'संगम' नामना पोताना पुत्रनेलइने राजगृह नगरीमां आवी, अने पा करवा लागी. संगम पण गामना वाछरडाओ चारवा लाग्यो. एक दिवस क मने दरेक घरे क्षीर थती जोइ ते खावानी इच्छा थवाथी सगमे पण पासे क्षीरभोजन माग्युं. तेणे पण पाडोशणोए आपेल दूध विगेरेथी क्षीर मने थाळीमां पीरसी. ते क्षीर अति उष्ण होवाथी संगम फुंके छे तेवामां

गाथा ८४- छावं-सुत. गाथा ८५--पूरयंमि. अन्नो.

ोइ साधु त्यां वहोरवा माटे पधार्या. तेमने जोइ संगमने अति हर्ष थवाथी ; भावपूर्वक बधी क्षीर ते मुनिने वहोरावी दीधी. पछी ते विचार करवा के–'आजे साधु रूपी सत्पात्र मने प्राप्त थवाथी हुं अति धन्य छु!' ए प्रमाणे कार्यनी प्रशंसा करवा लाग्यो. आ प्रमाणे अनुमोदना सहित दान घणुं फळ थाय छे. कह्युं छे के—

ानंदाश्रूणि रोमांचो, बहुमानं प्रियंवचः ।
कैंचानुमोदना पात्र–दानभूषणपंचकम् ॥

आनंदथी नेत्रमां आंसु आववां, रोमराय विकस्वर थवा, बहुमान सहित ुं, प्रिय वचन बोलतां आपवुं अने तेनी अनुमोदना करवी; ए पांच सुपात्र ूषण छे."

ों संगमे साधुने दान आपवाथी घणुं पुण्य उपार्जन कर्युं. कह्युं छे के—

याजेस्याद्द्विगुणं वित्तं, व्यवसाये चतुर्गुणम् ।
ेत्रे शतगुणं प्रोक्तं, पात्रेऽनंतगुणं भवेत् ॥

व्याजनी अंदर धन बमणुं थाय छे, व्यवसाय (व्यापारादि)थी चारगणुं क्षेत्रमां सोगणुं थायछे, अने पात्रमां आपवाथी तो अनंतगणुं थायछे." वळी दान आप्युं ते अति दुष्कर छे कारणके–

ाणं दरिद्दस्स पहुस्स खंती, इच्छानिरोहोय सुहोइयस्स ।
ारुण्णए इंदियनिग्गहोय, चत्तारि एयाइं सुदुक्कराइं ॥

दरिद्री छतां दान आपवुं, सामर्थ्य छतां क्षमा राखवी, सुखनो उदय छतां ोध करवो अने तरुणावस्थामां इंद्रियोनो निग्रह करवो–आ चार वातो अति ."

धुना गया पछी संगमनी मा आवी. तेणे थाळी खाली जोइने बाकी रहेली सी. पछी ते विचार करवा लागी के–"आटली बधी भुखवाळो मारो पुत्र दर- ्योज रहेतो जणाय छे, तेथी मारा जीवितने धिक्कार छे!" ए प्रमाणेनी स्नेह- ोपथी (पुत्रने दृष्टि लागवाथी) तेज रात्रिए शुभ ध्यानथी मृत्यु पामीने संग- ्र तेज शहेरमां गोभद्र नामना शेठने घेर तेनी स्त्री भद्रानी कुक्षिमां परिपूर्ण शालि (डांगर)थी भरपूर क्षेत्रना स्वप्नथी सूचित पुत्रपणे उत्पन्न थयो.

पिताए तेनुं नाम शालिकुमार पाड्युं. युवावस्था प्राप्त थतां तेने बत्रीश स्त्रीओ एक लग्ने परणावी. त्यारपछी गोभद्र शेठ चारित्र ग्रहण करी प्रांते अनशन सौधर्म देवलोकमां देवता थया पछी अवधिज्ञानथी पोताना पुत्रने जोइने अति वनी त्यां आवी तेने दर्शन दीधुं अने भद्राने कह्युं के-'शालिभद्रने सर्व प्रकारनी मग्री हुं पूरी पाडीश.' एटलुं कहीने ते गयो. पछी गोभद्रनो जीव देवता तेमने पूरवा लाग्यो. दररोज ३२ स्त्रीओ अने शालिभद्रने माटे ३३ पेटी वस्त्रोनी, ३ आभूषणोनी अने ३३ पेटी भोजनादि पदार्थोनी कुल ९९ पेटी मोकलवा लाग्यं

यद्गोभद्रः सुरपरिदृढो भूषणाद्यं ददौ य-
ज्जातं जायापदपरिचितं कंबलिरत्नजातम् ।
एण्यं यद्भाजनि नरपतिर्यच्च सर्वार्थसिद्धि-
स्तद्दानस्याद्भुतफलमिदं शालिभद्रस्य सर्वम् ॥

"देवताओमां श्रेष्ठ एवा गोभद्रे जेने भूषणादि आप्यां, रत्नकंबल जेनी पगनी साथे परिचयवाळां थयां, एटले जेनी स्त्रीओए रत्नकंबल तो पग लुछवामां जेने राजा (श्रेणिक) करियाणा रूप बन्यो अने जेणे प्रांते सर्वार्थसिद्धि विम कर्युं-आ प्रमाणे शालिभद्रने दाननुं सर्व प्रकारनुं अद्भुत फळ प्राप्त थयुं."

पादांभोजरजः प्रमार्जनमपि क्ष्मापाललीलावती-
दुःप्रापाद्भुतरत्नकंबलदलैर्यद्वल्लभानामभूत् ।
निर्माल्यं नवहेममंडनमपि क्लेशाय यस्यावनी-
पालालिंगनमप्यसौ विजयते दानात्सुभद्रांगजः ॥

'जेनी स्त्रीओना चरणकमळ उपर लागेली रजनुं प्रमार्जन राजानी रा वीओने पण दुष्प्राप्य एवा रत्नकंबलना ककडावडे थयुं, जेने नवीन सुवर्णनां ण दरेक दिवसे निर्माल्य रूप थया, अने जेने भूपतिनुं आलिंगन पण क्लेश रूप हतुं एवो सुभद्रानो पुत्र शालिभद्र पूर्वे करेला दानथी विजय पामे छे."

आवी शालिभद्रनी समृद्धि जोइने श्रेणिक राजाए पण आ प्रमाणे वि कर्युं के—

स्फुटं महानर्थकिर्दद्भानुर्यथोच्यते ।
मारकेणापि योगेऽपि नरेंद्रास्तथा वयम् ॥

" जेम स्नुही नामनुं झाड बहु नानुं होयछे छतां महातरु कहेवायछे, अने अग्नि जेटलो होय छतां पण ते वृहद् भानु (मोटामां मोटो सूर्य) कहेवाय छे, तेवोज अमे सारभूत तेज वगरना छतां पण नरदेव कहेवाइए छीए. "

शालिभद्रे पण पोताने घेर आवेला श्रेणिक राजाने पोताना स्वामी जाणीने युं के–'आ मारी पराधीन लक्ष्मीने धिक्कार छे !' ए प्रमाणे वैराग्यपरायण बनी ज एकेक स्त्रीने तजवा लाग्यो. ते हकीकत सांभळीने धन्य नामना तेना बनेवीए ने एक साथे सर्वस्त्रीओनो त्याग करी दीक्षा लेवानी तेने प्रेरणा करी. आ प्रमा- प्रेरणाथी उत्साहित बनी श्री महावीर स्वामीनी पासे जइ चारित्र ग्रहण करी र तप तपी बार वर्ष पर्यंत दीक्षापर्याय पाळी अंते एक मासनी संलेखना करी र्थसिद्धि विमानमां तेत्रीश सागरोपम आयुष्यवाळा अहमिन्द्र[1] देवपणे उत्पन्न थया. आ मुनिने धन्य छे के जेमणे सघळुं अनुत्तर (सर्वथी उत्तम) प्राप्त कर्युं.

अनुत्तरं दानमनुत्तरं तपो, ह्यनुत्तरं मानमनुत्तरं यशः ।
श्रीशालिभद्रस्य गुणा अनुत्तरा, अनुत्तरं धैर्यमनुत्तरं पदम् ॥

" तेनां (शालिभद्रनां) दान, तप, मान, यश, गुणो, धैर्य अने पद[2]–ए सर्व त्तर (जेनाथी अन्य श्रेष्ठ नथी एवां) छे. "

आ प्रमाणे ज्ञान सहित तप करवामां आवे तो मोटुं फळ प्राप्त थायछे.

न करंति जे तव संजमं च ते तुल्लपाणिपायाणं ।
पुरिसा सम पुरिसाणं, अवस्स पेसत्तण मुविंति ॥ ८६ ॥

अर्थ–" जे प्राणी तप (बार प्रकारे) अने संयम (सत्तर प्रकारे) करता–आदरता ते पुरुषो समान हाथपगवाळा अने सदृश पुरुषाकार धारण करनारनुं सेवकपणुं श्य प्राप्त करे छे. " ८६

शालिभद्रे एज विचार कर्यो हतो के–" श्रेणिकमां ने मारामां कांइ पण हाथपगनुं ोषपणुं नथी ते छतां ते स्वामी ने हुं सेवक, तेनुं कारण मात्र में पूर्वजन्ममां सुकृत नथी ते ज छे. " आम विचारीने तेणे चारित्र ग्रहण कर्युं.

सुंदर सुकुमाल सुहोइएण, विविहेहिं तवविसेसेहिं ।
तह सोसविओ अप्पा, जह नवि नाओ सभवणेपि ॥८७॥

---

१ जेने स्वामी तरीके इन्द्र होता नथी तेओ पोतेज पोताना विमानना ाथी अहमिंद्र कहेवाय छे. २ पद ते स्थान–अनुत्तरविमान. ८६
ा ८७—सभवणेवि.

अर्थ-"सुंदर (रूपवान), सुकुमाळ(मृदु शरीरवाळा)अने सुखोचित अर्थात् सुखना अभ्यासी एवा शालिभद्रे विविध प्रकारनां तप विशेषवडे करीने पोताना एवो शोषव्यो-दुर्बळ कर्यो के जेथी पोताने घेर पण ते ओळखी शकाया नहि."

शालिभद्र मुनि थया पछी पाछा राजगृहीए आव्या त्यारे पोतानी माताने गोचरी निमित्ते जतां तेना सेवकपुरुषोए पण तेमने ओळख्या नहि एवो तपस्यावडे देह सुकवी नाख्यो हतो.

दुक्कर मुद्धोसकरं, अवंतिसुकुमाल महरिसीचरियं ।
अप्पावि नाम तह तज्ज-इत्ति अच्छेरयं एयं ॥ ८८ ॥

अर्थ-"दुष्कर अने सांभळतां पण रोमोत्कंप करे-रुंवाडां उभां थाय एवुं अवंतिसुकुमाळ महर्षिनुं चरित्र छे; जे महात्माए पोताना आत्माने पण एवा प्रकारे पीडा कर्यो के जेमनुं चरित्र संपूर्ण आश्चर्यकारक थयुं." ८८

अहीं अवंतिसुकुमाळनो संबंध जाणवो. २४

अवंतिसुकुमाळ कथा.

अवंती देशमां उज्जयिनी नगरीमां भद्रा नामनी एक शेठनी स्त्री हती तेने नलिनीगुल्म विमानथी च्यवीने आवेलो अवंतिसुकुमाल नामे पुत्र थयो. ते बत्रीश स्त्रीओ साथे विषयसुखनो अनुभव करतो हतो. एक दिवस पोताना घरनी नजीक सुस्थित आचार्यना मुखथी रात्रिनी पहेली पोरषीमां नलिनीगुल्म विमान सांभळी जातिस्मरणज्ञान थवाथी पूर्वभवनु स्वरूप जाणी, त्यां (नलिनीगुल्म विमानमां) जवाने उत्सुक थयेलो अवंतिसुकुमाल गुरु पासे जइ विनयपूर्वक पूछवा लाग्यो 'आपे नलिनीगुल्म विमाननुं स्वरूप केवी रीते जोयुं?' गुरुए कह्युं के 'सिद्धांतरूप नेत्रथी जोयुं छे.' पछी अवंतिसुकुमाले पूछयुं के 'ते केवी रीते प्राप्त थाय?' गुरुए कह्युं के 'चारित्र पाळवाथी. कारणके चारित्र आलोक अने परलोकमां सर्व प्रकारनुं सुख आपे छे.' कह्युं छे के-

नो दुष्कर्मप्रयासो न कुयुवतिसुतस्वामिदुर्वाक्यदुःखम् ।
राजादौ न प्रणामोऽशनवसनधनस्थानचिंता न चैव ॥
ज्ञानाप्तिर्लोकपूजा प्रशमपरिणतिः प्रेत्यनाकाद्यवाप्ति ।
चारित्रे शीवदायके सुमतयस्तत्र यत्नं कुरुध्वम् * ॥

गाथा ८८— चरीयं. २ तज्जयति. * आ चोथुं पद भूलवाळुं जणाय छे.

" जेनी अंदर दुष्कर्म संबंधी प्रयास नथी, जेनी अंदर खराब स्त्री, पुत्र के स्वा- दुर्वाक्यश्रवणनुं दुःख नथी, जेनी अंदर राजा आदिने प्रणाम करवो पडतो नथी, अंदर भोजन, वस्त्र धन के स्थान माटे चिंता करवी पडती नथी, जेनी अंदर नी प्राप्ति थाय छे, लोको पूजा करे छे, शांतभाव परिणमे छे, अने परभवे दिनी प्राप्ति थाय छे एवा मोक्षदायक चारित्रमां हे विद्वान् पुरुषो! तमे न करो."

'माटे चारित्र ग्रहण करी, अनशन करवावडे नलिनीगुल्म विमान मेळवी शकाय ' ए प्रमाणे गुरुमुखथी सांभळीने अवंतिसुकुमाळे कह्युं के 'मैं चारित्र अने अनश- नवथी अंगीकार कर्युं छे.' गुरुए ज्ञानथी जाण्युं के 'आवुं कार्य आ प्रमाणेज थवानुं छे तेथी तेने रात्रिएज साधुवेष आप्यो. ते वेष धारण करीने ते शहेरथी र स्मशानभूमिए जइ कंथेर (थोर) ना वनमां कायोत्सर्ग मुद्राथी रह्या. त्यां जतां मां कांटा, कांकरा आदिना प्रहारथी अतिकोमळ एवा तेना चरणना तळीयामांथी र स्रववा लाग्युं. तेना गंधथी पूर्व भवमां अपमानित करेली स्त्रीनो जीव शियाळ- णां बच्चांओथी परिवृत्त थइ त्यां आवी अने तेनुं शरीर खावा लागी. परंतु ते मुनि पण क्षुभित थया नहि. तेमनुं चित्त स्थिर होवाथी अति वेदना सहन करता सता करीने ते नलिनीगुल्म विमानमां देवपणे उत्पन्न थया. प्रातःकाळमां ते सगळुं माता भद्राए जाण्युं. एटले एक गर्भवंती वहुने घरमां राखीने बाकीनी तमाम ी साथे भद्राए चारित्र ग्रहण कर्युं. घर आगळ रहेली वहुने एक पुत्र थयो. ते स्मशानभूमिमां एक जिनप्रासाद चणाव्यो अने तेमां जिनप्रतिमा स्थापी. स्मशा- नाम 'महाकाळ' पडयुं.

जे प्रमाणे अवंतिसुकुमाले धर्मने अर्थे पोताना शरीरनो त्याग कर्यो परंतु ग्रहण ा व्रतना भंग कर्यो नहि, तेवी रीते अन्य जनोए पण धर्मविषयमां यत्न करवो, आ कथानो उपदेश छे.

अच्चूढ सरीरघरा, अन्नो जीवो सरीर मन्नंति ॥
धम्मस्स कारणे सुविहिया, सरीरंपि छड्डंति ॥ ८९ ॥

अर्थ—" तजी दीधो छे शरीर रूपी घरनो मोह जेणे एवा सुविहितो—उत्तम पुरुषो कारणे 'आ जीव अन्य छे अने शरीर अन्य छे' एवीबुद्धिवडे करीने शरीरने जी दे छे." ८९

ाथा ८९—उच्छूढ, आच्छुढ.

आ देहनो संबंध एक भवनोज छे अने ते शरीर जन्मे जन्ममां नवुं नवुं छे, पण धर्म जो तजी दीधो तो ते फरीने प्राप्त थवो दुर्लभ छे, तेथी उत्तम धर्मने कारणे शरीरने तजे छे पण शरीरने कारणे धर्मने तजता नथी. माटे पण धर्मने न तजवो.

एकं दिवसंपि जीवो, पवज्जमुवागओ अनन्नमणो ।
जइवि न पावइ मुख्खं, अवस्सं वेमाणिओ होइ॥ ९०॥

अर्थ–" चारित्र धर्मनुं फळ कहेछे–अनन्य मनवाळो जीव एक दिवस पण (दीक्षा) प्रतिपन्न करे अर्थात् भवमांते एक दिवस पण शुद्ध दीक्षा पाळे तो ते संहनन काळादिना अभावथी–मोक्ष न पामे, परंतु अवश्य वैमानिक देव तो थाय."

एक दिवसना विशुद्ध मनयुक्त चारित्रनुं फळ आ काळमां पण वैमानिक देवपणानी प्राप्ति थवा रूप छे.

सीसावेढेण सिरंमि–वेढिए निग्गयाणि अच्छीणि ।
मेयज्जस्स भगवओ, नय सो मणसावि परिकुविओ ॥ ९१ ॥

अर्थ–" लीली चामडानी वाधरवडे मस्तकने वेष्टित कर्ये सते (ते सुकाइने) आंखो नीकळी पडी, परंतु ते मेतार्य भगवंत मनथी (लेश मात्र) पण (सोनी उपर) कोपायमान थया नहि." ९१

मेतार्य मुनिना मस्तके सोनीए लीली वाधर वींटी ते सुकावाथी नसोनुं खेंचाणे थवाने लीधे बंने नेत्र नीकळी पडयां, परंतु मेतार्य मुनि किंचित् मात्र पण ते उपर कोपायमान थया नहि. एवी रीते बीजा मुनिराजोए पण क्षमा करवी.

अहीं मेतार्य मुनिनुं दृष्टांत जाणवुं. २५

मेतार्यमुनिनी कथा.

साकेतनपुरमां 'चंद्रावतंसक' नामे अत्यंत धार्मिक राजा हतो. तेने 'सुदर्शना' नामनी स्त्री हती. ते स्त्रीनी कुक्षिथी 'सागरचंद्र' ने 'मुनिचंद्र' नामे बे पुत्र उत्पन्न थया हता. ते बेमां मोटाने युवराजपद आप्युं अने नानाने उज्जयिनी राज्य आप्युं. बीजी 'प्रियदर्शना' नामे राणीथी 'गुणचंद्र' अने 'बालचंद्र' नामे बे पुत्र थया. ए प्रमाणे चार पुत्र विगेरेथी परिवृत थइ ते राजा राज्य करतो हतो.

गाथा ९०–जइ नवि. अवस्स. गाथा ९१—सिरंमि आर्द्रचर्मणा.

क दिवस चंद्रावतंसक राजाए पौषध कर्यो हतो. ते रात्रिए एकांतवासमां रह्या
णे एवो अभिग्रह कर्यो के 'ज्यांसुधी आ दीवो बळे त्यांसुधी मारे कायोत्स-
थत रहेवुं' ते अभिग्रहने नहि जाणनारी कोइ दासीए ते दीवामां तेल पूर्यां
णो वखत कायोत्सर्गमां स्थित रहेवाथी राजाने शिरोवेदना थइ, तेथी ते
म्यो अने देवलोकमां गयो. ते जोइ सागरचंद्रे विचार्युं के–'आ देहनो संबंध
छे, जे प्रातःकालमां जोवामां आवेछे ते मध्यान्हे जोवामां आवतुं नथी अने
ान्हे जोवामां आवेछे ते रात्रिए नाश पामेछे. वायुए कम्पावेला पत्र जेवुं आ
क्षणे क्षणे क्षीण थतुं जाय छे. कह्युं छे के–

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितम्
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः कालो न विज्ञायते ॥
दृष्ट्वा जन्मजराविपत्तिमरणं त्रासश्च नोत्पद्यते
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत् ॥

'सूर्यना गमन ने आगमनथी आयुष्य दररोज क्षय पामेछे, बहु प्रकारना कार्य-
मोटा मोटा व्यवसायोथी काळ केटलो गयो ते जणातुं नथी, अने जन्म, वृद्धा-
विपत्ति ने मरण जोइने माणसोने त्रास उत्पन्न थतो नथी; तेथी (जणायछे के)
ी प्रमाद रूपी मदिरानुं पान करीने आ जगत उन्मत्त थयेलुं छे."

इत्यादि कारणथी जेनुं चित्त वैराग्यवान थयेलुं छे एवो 'सागरचंद्र राज्यथी परा-
हतो छतां पण तेनो ओरमान माताए कह्युं के 'मारा बंने पुत्रो हाल राज्यभार
करवाने अशक्त छे, तेथी तुं आ राज्यधुराने ग्रहण कर.' ए प्रमाणे बळात्कारथी
रचंद्रने राज्य उपर स्थापित कर्यो, परंतु ते विरक्त मनथी राज्यनुं पालन करेछे.
मे तेने समृद्धि ने कीर्तिथी वधी गयेलो जोइने तेनी ओरमान माता दुभाणी,
ते दररोज तेनी ईर्ष्या करेछे अने छिद्र खोळेछे. एक दिवस क्रीडाने वास्ते
ां गयेला 'सागरचंद्रने' माटे तेनी माताए दासी मारफत एक लाडु मोकल्यो. ते
ी लाडु आपवा जती हती ते वखते तेने बोलावीने ओरमान माताए पूछ्युं के–
शुं छे?' तेणे कह्युं के–'हुं राजाने माटे लाडु लइ जाउंछुं.' तेणे कह्युं के–'जोउं,
केवो छे?' दासीए तेने आप्यो, एटले ते ओरमान माताए विषथी खरडायेला
वडे ते लाडुने सारी रीते स्पर्श करी विषमिश्रित करीने दासीने पाछो आप्यो.
ीए ते लाडु लइ जइने राजा पासे मूक्यो. राजाए ते मनोरंजक लाडु ग्रहण कर्यो.

परंतु ते अवसरे पोतानी आगळ हाथ जोडीने उभेला पोताना बे सावक
जोइने स्नेहवश थइ तेणे विचार कर्यो के 'मारा लघु बंधुओने छोडीने मारे
ते उचित नथी.' एम विचारीने तेणे लाडुना बे भाग करी बनेने वहेंची दीध
खाधो नहि. थोडा वखतमां पेला बंनेने विष चडवाथी भूमि उपर पडेव
राजा घणो खिन्न थयो, अने मणि मंत्र आदि प्रयोगोवडे तेमनुं झेर उत
(तेनुं कारण शोधतां) दासोना मुखथी ओरमान माताना हस्तस्पर्शथी थयेल
जाणोने तेनी पासे जइ ' सागरचंद्र ' उपालंभ आपवा लाग्यो के-' तने
पहेलां मारा आपतां छतां पण तें राज्य अंगीकार कर्युं नहि, अने सांप्रत
अकार्य कर्युं ! स्त्रीओना चरित्रने धिक्कार छे !' कह्युं छे के-

नितंबिन्यः पतिं पुत्रं, पितरं भ्रातरं क्षणम् ।
आरोपयंत्यकार्येऽपि, दुर्वृत्ताः प्राणसंशये ॥

" दुराचरणी स्त्रीओ पोताना पतिने, पुत्रने, पिताने अने भाइने [illegible] शंकाय तेना अकार्यमां पग जोडी दे छे." 'हवे दुर्गतिना [illegible] [illegible] ' एप्रमाणे विचार करी ते ओरमान माताना पुत्र 'गुण [illegible] दीक्षा लइ चाल्यो नीकल्या.

[illegible] विहार करतां कालनी शास्त्रना पारगामी थया. एकदा [illegible] सागरचंद्र मुनिने कह्युं के ' हे स्वामिन् ! उज्जयि [illegible] अने पुरोहितपुत्र बंने मळी साधुओनो घोडी हीळ [illegible] सांभळी गुरुनी आज्ञा लइने तेमने प्रतिबोध [illegible] [illegible] आव्या अने त्यां राजपुत्र अने पुरोहितपुत्र [illegible] [illegible] पेला बंने जणा मुनी [illegible]

णो लइ नगरनी वहार नीकळी वनमां कायोत्सर्गमुद्राए स्थित थया. अहीं राज-
ने पुरोहितपुत्र बंनेने घणी वेदना थवाथी ते पोकार करवा लाग्या. एटले राजाए
ने पूछ्युं के–' तमने शुं थयुछे ? ' त्यारे बीजा लोकोए कह्युं के–' अहीं एक मुनि
ा हता तेणे कंइक करेलुं जणाय छे. ' एटले राजा ते मुनिने खोळतो खोळतो
गयो. त्यां पोताना मोटा भाइने जोइ वांदीने अरज करवा लाग्यो के–' हे
! आपनी जेवा महात्माओने बीजाने पीडा करवी घटती नथी. ' ते सांभळीने
रचंद्रे कह्युं के–' तुं चंद्रावतंसक राजानो पुत्र पांचमो लोकपाळ छे, छतां साधुओने
देतां तारा पुत्रने तेमज पुरोहितपुत्रने शामाटे अटकावतो नथी ? आवो अन्याय
वर्तावे छे ? ' त्यारे मुनिचंद्र राजाए कह्युं के–' मारो अपराध क्षमा करो ते
जेवुं कर्युं तेवु तेनुं फळ भोगव्युं. परंतु आप पिताने स्थाने छो, माटे कृपा
ते बंनेने साजा करो. आपना शिवाय तेओनां अस्थि ठेकाणे लाववाने बीजो कोइ
ान नथी." एम कहीने बंनेने सागरचंद्र मुनि समीपे लाववामां आव्या. त्यारे
कह्युं के ' जो जीववानी इच्छा करता हो तो संयम लेवानु कबुल करो. ' तेमणे
ाणे कबुल करवाथी तरतज तेओने साजा करवामां आव्या, एटले चारित्र ग्रहण
तेओ साथेज नीकळ्या.

ए बे मुनिमां पुरोहितपुत्र जाते ब्राह्मण होवाथी तेणे जातिमद करवाने लीधे
गोत्र बांध्युं. चारित्र पाळीने अंते ते बंने देवता थया. तेओ परस्पर स्नेहवाळा
तेथी तेओए संकेत कर्यो के ' आपणामांथी जे प्रथम च्यवीने मनुष्य थाय तेने
मां रहेला बीजाए प्रतिबोध पमाडवो.' पछी कालांतरे प्रथम पुरोहितजीव च्यवीने
ह नगरमां ' महेर ' नामना चंडालना घरमां ' मेती ' नामनी भार्यानी कुक्षिमां
मद करवाथी अवतर्यो. ते चंडालनी भार्या ते शहेरमां कोइ शेठने घेर हमेशां आवेछे.
शेठनी स्त्री साथे अत्यंत मैत्री थइछे. शेठाणी मृतवत्सा [छोकरां जीवे नहि ते]
ोषवाळी होवाथी तेने छोकरां जीवतां नथी. ते वात तेणे चांडालनी स्त्रीने कही
कह्युं के–' आ वखते जो मने पुत्र थशे तो हुं तमने आपीश. ' काळे करीने तेने
जन्म्यो एटले ते पुत्र तेणे शेठाणीने गुप्तपणे आप्यो. शेठाणीए पुत्रजन्मनो महोत्सव
र्यो, अने मेतार्य एवुं ते छोकरानुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते सोळ वर्षनो थयो.
वसरे मित्रदेव (राजपुत्रनो जीव) पूर्वनो संकेत होवाथी तेनी पासे आवीने तेने
करवा लाग्यो, पण ते प्रतिबोध पाम्यो नहि. अन्यदा तेना पिताए आठ
कपुत्राओनी साथे तेनो विवाह कर्यो. तेना लग्नवखते मित्रदेवे आवी चांडाल-
ना शरीरमां प्रवेश कर्यो तेथी ते लोकोने कहेवा लागी के–' आ मारो पुत्र छे.तमे

सुनक्षत्र मुनिनुं वृत्तांत.

एक वखत श्रीवीरप्रभु श्रावस्ती नगरीमां समवसर्या, त्यां गोशालक पण नगरमां एवी वात फेलाइ के आजे नगरमां बे सर्वज्ञ आवेला छे. एक अने बीजो गोशालक.ए वात गोचरीए गयेला श्रीगौतम स्वामीए सांभळी, तेथी भगवंतने पूछयुं के 'आ गोशालक कोणछे के जे लोकोनी अंदर सर्वज्ञ एवुं नाम छे.' भगवाने कह्युं के-"हे गौतम! सांभळ. सरवण नामना गाममां मंखलि नामनो जातिनो एक पुरुष हतो. तेने भद्रा नामनी स्त्री हती, तेनी कुक्षिथी ते जन्म्यो. घणी गायो हती तेवा एक ब्राह्मणनी गोशाळामां जन्मवाथी तेनुं नाम गोशालक हतुं. ते युवान थयो तेवामां हुं छद्मस्थ अवस्थाए फरतो राजगृह नगरने विशे रह्यो हतो.ते पण फरतो फरतो त्यां आव्यो.में चार मासक्षपणनां पारणां परमान्न वडे कर्यां.तेनो महिमा जोइने ते विचार करवा लाग्यो के 'जो हुं आनो शिष्य थाउं दररोज मिष्टान्न मळे.' ए प्रमाणे विचारी 'हुं तमारो शिष्य छुं' एम कही मारी लाग्यो.ते मारी साथे छ वर्ष पर्यंत भम्यो.एक दिवस कोइ योगिने जोइने तेणे करी के'आ जूओनुं शय्यातरछे' तेथी क्रोधितथयेला ते योगिए तेनापर तेजोलेश्या में शीतलेश्या मूकीने तेने बचाव्यो. पछी तेणे तेजोलेश्या उत्पन्न करवानो उपाय पूछ्यो.में पण भावि भाव जाणीने तेनो उपाय कह्यो,एटलेते माराथी जुदो पड्यो. छ मास कष्ट वेठी तेजोलेश्या साधी,अने अष्टांग निमित्तोनो पण जाण थयो.पछीथी प्रमाणे जनसमुदाय आगळ ते पोतानुं सर्वज्ञपणुं स्थापित करेछे; परन्तु ते खोडुं छे. कांइ जिन नथी अने सर्वज्ञ पण नथी." आ प्रमाणेनो भगवंते कहेली हकीकत सां ळीने त्रिक (त्रण मार्ग मळे ते स्थान) मां, चोकमां अने राजमार्गमां सघळा लोको कहेवा लाग्या के 'आ गोशालक सर्वज्ञ नथी.' ए सघळुं वृत्तांत गोशालके मुखथी सांभळ्युं, एटले तेने क्रोध उत्पन्न थयो. ते अवसरे आनंद नामना एक गोचरीए जतां जोइने तेणे बोलाव्या अने कह्युं के "हे आनंद! तुं एक दृष्टांत सां केटलाएक वाणीआ करियाणांना गाडां भरीने चाल्या. तेओ जंगलमां गया. त्यां घणी तृषा लागवाथी पाणीनी शोध करतां तेओए चार राफडानां शिखरो जोयां. ते एक शिखर तोडयुं, एटले तेमांथी गंगाजळ जेवुं निर्मळ जळ नीकळ्युं. सघळाओ ते वारंवार पीने संतुष्ट थया. बीजुं शिखर तोडवा जतां साथेना कोइ एक वृद्ध मा तेमने वार्या, परंतु तेओ वार्या रह्या नहि. ते शिखर तोडतां अंदरथी सोनुं नीक

— — णे त्रीजुं शिखर भेदतां अंदरथी रत्नो नीकळ्यां. चोथुं शिखर भेदवा वखते णा वार्या छतां पण तेओए ते शिखर तोडयुं तो तेमांथी अति भयंकर दृष्टि कळ्यो. तेणे सूर्य सामुं जोइने तेमनी उपर दृष्टि फेंको, जेथी ते सघळा

या. पेलो वृद्ध वाणीयो वच्यो तेवी रीते हे आनंद ! तारो धर्माचार्य पण पो-
ऋद्धिथी तृप्त न थतां मारी इर्ष्या करेछे तेथी हुं तेने बाळीने भस्म करी ना-
परंतु तुं तेने हितोपदेश देनार थवाथी तने हु बाळीश नहि." ए प्रमाणे सां-
भयभीत थयेला आनंदे भगवानने सर्व हकीकत कही. भगवंतनी आज्ञाथी गौ-
आदि मुनिओने ते वात जणावी; जेथी तेओ सर्व भगवतथी दूर पोतपोताने स्थाने
गया. एटलामां गोशालक त्यां आवी प्रभुने कहेवा लाग्यो के 'हे काश्यप ! तुं
पोतानो शिष्य कहेछे ते खोटु छे. ते तारो शिष्य तो मरी गयो. हुं तो तेनुं श-
बळवान जाणीने ते शरीरमां स्थिति करीने रह्यो छुं.' ए सांभळीने 'आ
ाननी अवज्ञा करेछे' एम जाणी गुरुभक्तिमां अत्यंत रागवाळा सुनक्षत्र नामना
र गोशालकने कह्युं के 'अरे ! तु तारा धर्माचार्यनी निंदा केम करेछे? तेज तुं
ालक छे (बीजो नथी).' ए सांभळीने गोशालके क्रोधवश थइ तेजोलेश्याथी
त्र मुनिने बाळी नाख्या. समाधिथी मृत्यु पामी ते आठमा देवलोकमां देवपणे
न थया. ए समये बीजा सर्वानुभुति नामना साधुए पण सर्व जीवोने खमावा
न करी गोशालकनी सन्मुख आवीने कह्यु के 'तुं स्वधर्माचार्यनी निंदा केम करे
तेथी दुष्ट गोशालके तेमने पण बाळी नाख्या. ते मरीने बारमा देवलोकमां उ
थया. पछी भगवाने कह्यु के " हे गोशालक ! तुं शा माटे तारा देहने गोपवे
ेम कोइ चोर भागतो सतो कोइ न देखे तेटला माटे तरणुं पोतानी आडुं धरेछे
तेथी ते छानो रहेतो नथी, तेवी रीते तुं पण माराथीज बहुश्रुत थयो छे अने
न अपलापना करेछे." इत्यादि वचनोथी क्रोधित थइने तेणे भगवाननी उपर
तेजोलेश्या मूकी ते तेजोलेश्या भगवानने त्रण प्रदक्षिणा करी पाछी वळीने
लकना शरीरमांज पेठी. पछी गोशालक बोल्यो के 'हे काश्यप तु आजथी सा-
दिवसे मरण पामीश.' त्यारे भगवाने कह्युं के 'हुं तो सोळ वर्ष सुधी केवळीपणे
ीश, परंतु तुंतो आजथी सातमे दिवसे मोटी वेदना भोगवीने मरण पामीश.'
गोशालक पोताने स्थाने आव्यो. सातमे दिवसे शांत परिणामथी समकित फ-
तेथी ते मनमां विचार करवा लाग्यो के 'अरे ! में आ अत्यंत विरुद्ध आचरण
में भगवाननी आज्ञानो लोप कर्यो ! में साधुओनो घात कर्यो ! आवता भवमां
शी गति थशे?' ए प्रमाणे विचारी शिष्योने बोलावी कह्यु के "मारा मरण पछी
कलेवरने पगथी बांधीने श्रावस्ती नगरीमां चारे तरफ फेरवजो. कारणके हुं
नहि छतां 'हु जिन छुं' एवुं में लोकमां कहेराव्युं छे." आ प्रमाणे आत्मनिंदा
सतो मरण पामीने ते बारमा देवलोकमां उत्पन्न थयो. पछी शिष्योए गुरुनुं
मान्य करवा माटे उपाश्रयनी अंदर श्रावस्ती नगरी आलेखी कमाड बंध करी
रने पगे रज्जु बांधीने चारे तरफ फेरव्युं.

ए प्रमाणे सुनक्षत्र मुनिनी पेठे अन्य साधुए पण गुरुभक्तिमां राग करवो, एवो
थानो उपदेश छे.

पुण्णेहिं चोइया पुरक्कडेहिं, सिरिभायणं भविअसत्ता।
गुरु मागमेसिभद्दा, देवयमिव पज्जुवासंति ॥ १०१ ॥

अर्थ-" पूर्वकृत पुण्यवडे प्रेरायला, लक्ष्मीना भाजन अने आगामि काळे कल्याण थवानुं छे एवा भव्य जीवो पोताना गुरुने देवतानी जेम सेवे छे. जेवी रीते देवनी सेवा करे तेवी रीते गुरुनी पण सेवा करे छे." १०१.

बहु सुख्ख सयसहस्साण, दायगा मोअगा दुहसहस्साणं
आयरिआ फुड मेअं, केसि पएसिअ तहेउ ॥ १०२ ॥

अर्थ-"बहु प्रकारना लाखोगमे सुखना आपनारा, अने सेंकडो अथवा दुःखथी मूकावनारा धर्माचार्य होय छे. ए वात प्रगट छे (एमां संदेह जेवुं प्रदेशी राजाने केशी गणधर तेवीज रीते सुखना हेतु थयेला छे." १०२.

अहीं केशी गणधर अने प्रदेशी राजानो उपनय जाणवो. ३९

जंबूद्वीपना भारतवर्षमां कैकयार्द्ध देशमां श्वेतांबी नामनी नगरी छे, त्यां नो शिरोमणि जेना हस्त निरंतर रुधिरथी लेपायेलाज रहे छे एवो, परलोकनी फार विनानो अने पुण्यपापमां निरपेक्ष प्रदेशी नामनो राजा हतो. तेने चित्र नामनो मंत्री हतो. तेने एक दिवसे प्रदेशी राजाए श्रावस्ती नगरीमां जितशत्रु पासे मोकल्यो. त्यां ते केशिकुमार नामना मुनिनी देशना सांभळीने परम थयो. पछी तेणे केशिकुमारने विज्ञप्ति करी के 'हे स्वामीन्! एक वखत आ तांबी नगरीए पधारवानी कृपा करवी. आपने तेथी लाभ थशे.' केशिगणधरे के 'तमारो राजा बहु दुष्ट छे तेथी केवी रीते आवीए?' चित्रसारथिए कह्युं के दुष्टछे तो तेथी शुं? त्यां बीजा भव्य जीवो पण घणा वसेछे.' त्यारे केशिकुमारे 'प्रसंगे जोइशुं' पछी चित्रसारथि श्वेतांबीए आव्यो. अन्यदा केशिकुमार पण मुनिओथी परिवृत थइ श्वेतांबीनी बहार मृगवन नामना उपवनमां सम चित्रसारथि तेमनुं आववुं सांभळी मनमां विचार करवा लाग्यो के 'हुं राज छतां दुर्बुद्धि अने पापी एवो मारो राजा नरके न जवो जोइए; माटे तेने आ पासे लइ जाउं.' एवुं विचारी अश्वक्रीडाना मिषथी राजाने नगर लइ गयो. पछी अति श्रमथी थाकी गयेल राजा श्री केशिकुमारे अलंकृत वनमां आव्यो. त्यां घणा लोकोने देशना देतां तेमने जोइने राजाए चि पूछ्युं के 'आ मुंडो जड अने अज्ञानी लोकोनी आगळ शुं कहे छे?' चित्रसा

गाथा १०१-पुण्णेहिं. गाथा १०२-दुहसयाणं. तेहेउ-तद्वत् सुखहेतुः

के 'हुं जाणतो नथी.' जो आपनी इच्छा होय तो चालो. त्यां जइने सांभळीए. प्रमाणे कहेतां राजा चित्रसारथिनी साथे त्यां गयो, अने वंदनादि विनय कर्या विना ने पूछयुं के 'आपनो हुकम होय तो बेसुं ?' गुरुए कह्युं के 'आ तमारी भूमि छे, इच्छा मुजब करो.' ए सांभळीने राजा तेमनी आगळ बेठो. तेने बेठेलो इने आचार्ये विशेषे करीने जीव आदिनुं स्वरूप वर्णव्युं. ते सांभळीने राजाए के "आ सर्व असंबद्ध छे. जे वस्तु प्रत्यक्ष देखाय तेज सत् होय छे. जेम पृथ्वी, तेज ने वायु प्रत्यक्ष देखाय छे तेम आ जीव प्रत्यक्ष देखातो नथी तेथी आकाशवत् अविद्यमान एवी जीवसत्ता केम मानी शकाय ?" त्यारे केशिकुमारे कह्युं के राजा ! जे वस्तु तारी नजरे देखाय नहि ते शुं सघळानी नजरे न देखाय ? हुं कहीशके ' जे हुं देखुं नहि ते सर्व असत्य छे' तो ते मिथ्या कथन छे. कारण सघळाए जोयुं होय अने एके न जोयुं होय तो ते असत्य ठरतुं नथी. वळी जो कही 'सघळाओ जोइ शकता नथी' तो तुं शुं सर्वज्ञ छे के जेथी बधा जोइ शकता नथी तने खबर पडी ? जे सर्वज्ञ छे ते तो जीवने प्रत्यक्ष जुए छे. तुं तारा शरीरना भाग जोइ शकेछे पण पृष्ठ भाग जोइ शकतो नथी तो जीवनुं स्वरूप के जे अरूपी ते तो शी रीते जोइ शके ? माटे जीवसत्ता छे एम मानीने परलोकनुं साधन छे प्रमाण कर." त्यारे प्रदेशि राजाए कह्युं के ' हे स्वामी ! मारो पितामह अत्यंत ी हतो ते तमारा मत प्रमाणे नरके जवो जोइए. तेने हुं घणोज प्रिय हतो, पण तेणे वीने मने कह्युं नहि के पाप करीश नहि. पाप करीश तो नरके जवुं पडशे, त्यारे वसत्ताने हुं केवी रीते मान्य करुं ?' केशिकुमार मुनिए कह्यु के 'तेनो उत्तर सांभळ-- री सूरीकंता राणीनी साथे विषयसेवन करतां कोइ परपुरुषने जो तुं जुए तो तेने शुं कर ?' राजाए कह्युं के 'हुं तेने एक घाए बे टुकडा करी मारी नाखुं, एक क्षण कुटुंबमेळाप करवाने माटे तेने घेर जवानी पण रजा आपुं नहि.' गुरुए कह्युं के ' ए प्रमाणे नारकीओ पण कर्मथी बंधायेला होवाथी अत्रे आवी शकता नथी.' फरीथी राजाए कह्युं के 'अति धर्मिष्ठ एवी मारी माता तमारा मत प्रमाणे स्वर्गमां गइ हशे. ते पण आवीने मने कह्युं नहि के वत्स ! पुण्य करजे. पुण्य करवाथी स्वर्ग मळे छे, हुं जीवसत्ताने केवी रीते प्रमाण करुं ?' त्यारे केशिगणधरे कह्युं के ' तमे भव्य पहेरी चंदन आदिथी शरीरने लिप्त करी स्त्रीनी साथे महेलमां क्रीडा करता हो वखते कोइ चंडाल तमने अपवित्र भूमियां बोलावे तो तमे त्यां जाओ के नहि ?' राजाए कह्युं के 'न जाउं.' गुरुए कह्युं के तेवी रीते देवो पण पोताना भोगोने छोडीने अपवित्र भरेला आ मृत्युलोकमां आवता नथी. कह्युं छे के:—

चत्तारिपंचजोयणसयाइं, गंधोअ मणुअ लोगस्स ।
उड्ढं वच्चइ जेणं, न हु देवा तेण आवंति ॥

"आ मनुष्यलोकनो दुर्गंध चारशे पाचशें योजन सुधी उचो जाय छे, देवताओ अहीं आवता नथी." फरीथी राजाए कह्युं के 'हे स्वामी! एकवार चोरने जीवतो पकड्यो अने लोढानी कोठीमां नाखी तेनुं बारणुं बंध कर्युं. काळे ते कोठीनुं बारणु उघाडी जोयुं तो चोर मरी गयो हतो अने तेना कलेवरमां जीवडांओ उत्पन्न थयां हतां पण तेमां छिद्र परेलां नहोतां तो ते जीवने नीकळवा अने बीजा जीवोने आववानां छिद्रो तो होवां जोइए. में ते जोयां नहि तेथी जीव नथी.' केशिकुमारे कह्युं के 'कोइ एक पुरुषने घरना गर्भागारमां राखवामां अने घरनां सर्व द्वार बंध करवामां आवे; पछी ते मध्ये रह्यो सतो शंख ने भेरी वाजिंत्र वगाडे, तो तेनो शब्द बहार संभळाय के नहि?' राजाए कह्युं के 'संभळाय.' गुरुए कह्युं के 'बहार शब्द आववाथी शु ओरडानी भींतमां छिद्रो पडेछे?' राजाए कह्युं के 'पडतां नथी.' गुरुए कह्युं के 'जो रूपी शब्दथी छिद्र पडतां नथी तो अरूपी जीवथी छिद्रो केम पडे?' फरीथी प्रदेशी राजाए कह्युं के 'हे स्वामी! एक चोरने में कटके कटका करी तेना दरेक प्रदेश जोया पण तेमां जीव जोवामां आव्यो नहि.' केशिगणधरे कह्युं के "तु कठीयारानी जेवो मूर्ख देखाय छे. केटलाएक कठीयारा लाकडां लेवाने माटे वनमां गया. तेमांथी एक कठीयाराने कह्युं के 'आ अग्नि राख तेथी रसोइनो वखत थाय त्यारे रसोइ करजे. कदि आ अग्नि बुझाइ जाय तो आ अरणीना काष्टमांथी अग्नि उत्पन्न करजे.' ए प्रमाणे कहीने तेओ गया. अग्नि बुझाइ गयो तेथी पेला मूर्ख कठीयारे अरणीनुं लाकडुं लावी तेना कटका कर्या. परंतु अग्नि उत्पन्न थयो नहि. तेटलामां पेला कठीयाराओ आव्या. तेनी मूर्खता जाणी बीजुं अरणीनुं काष्ट लावी तेनु मथन करीने तेमांथी अग्नि कर्यो, अने रसोइ करी भोजन कर्युं. पण जेवी रीते काष्टनी अंदर रहेलो अग्नि मथन करवाथी मथाय छे तेवी रीते देहमां रहेलो जीव पण साधी शकाय छे." फरीथी प्रदेशि राजाए कह्युं के "हे स्वामिन्! में एक चोरनुं वजन करी तेनुं मरण करीने तेने पाछो तोल्यो. तेने फरीथी तोल्यो तो ते तेटलोज थयो. त्यारे में जाण्युं के 'जीव नथी.' जो तेनामां जीव होत तो जीव जवाथी ते ओछो थात." केशिकुमारे कह्युं के "हे महीपति! जेम पूर्वे जोखेली चामडानी धमण वायुथी पूर्ण करीने जोखता पण ते तेटलीज थाय छे—भार वधतो नथी तेम [illegible] मार्गे गीने विचार कर. ज्यारे रुपी द्रव्य [illegible]

र वध्यो नहि तो अरूपी द्रव्य जीवना जवाथी न्यूनता शी रीते थाय? सूक्ष्म एवा रूपी योनी पण विचित्र गतिछे तो अरूपी द्रव्यनी विचित्र गति होय तेमां तो शुं कहेवुं! माटे बाबतमां तुं शामाटे शंकित थाय छे! आत्मा आपणने अनुमान प्रमाणथी गम्य छे केवलीने प्रत्यक्ष प्रमाणथी गम्य छे. वळी 'हुं सुखी छुं हुं दुःखी छुं' ए प्रकारनुं जे थाय छे ते आत्मानुंज लक्षण छे. माटे जेम तलनी अंदर तेल, दुधनी अंदर घी काष्टनी अंदर अग्नि रहेल छे तेम देहनी अंदर जीव रहेलो छे." इत्यादि अनेक ोना उत्तर शास्त्रयुक्तिथी आप्या. तेथी संदेहरहित थयेलो राजा विचार करवा लाग्यो 'आ वात सत्य छे, आ ज्ञानने धन्य छे, पछी गुरुने नमस्कार करीने राजाए वि-करी के 'हे भगवन्! तमारा उपदेश रूपी मंत्रथी मारा हृदयमां रहेलो मिथ्यात्व पिशाच भागी गयो, परंतु कुलपरंपराथी आवेला नास्तिक मतने हुं केवी रीते ़ं?' त्यारे केशिकुमार मुनिए कह्युं के "हे प्रदेशि राजा! तुं लोहवणिकनी पेठे केम बने छे? ते वार्ता आ प्रमाणे छे–

केटलाक वणिको व्यापार करवाने माटे परदेश जवा चाल्या. मार्गमां तेओए लोढानी खाण दीठी, एटले तेओए लाढानां गाडां भर्यां. आगळ चालतां तां-ी खाण जोइ, तेथी लोढुं खाली करीने तांबु भर्युं. मात्र एक वाणीआए लोढुं ली कर्युं नहि. आगळ चालतां तेओए रुपानी खाण जोइ, एटले तांबुं खाली करी भर्युं. घणुं कहेतां छतां पण पेला लोहवणिके लोढुं काढी नांख्युं नहि आगळ तां तेओए सोनानी खाण जोइ, तेथी रुपुं खाली करी सोनुं भर्युं. आगळ चालतां ोनी खाण जोइ, एटले सोनुं खाली करी रत्नो भर्यां. ते वखते तेओ पेला लोह-कने कहेवा लाग्या के 'हे मूर्ख! आ मेळवेलो रत्नसमूह तुं शामाटे गुमावे छे! तजी दइने रत्नो ग्रहण कर, नहि तो पाछळथी जरुर तने पश्चाताप करवो पडशे' प्रमाणे तेने घणुं कहेवामां आव्युं छतां तेणे मान्युं नहि अने कहेवा लाग्यो के मारामां स्थिरता नथी, तेथी एकने छोडी बीजाने ग्रहण करोछो अने बीजाने छोडी ाने ग्रहण करोछो पण हुं ए प्रमाणे करतो नथी. में तो जेनो स्वीकार कर्यो तेनो ी.' पछी ते सघळा घेर आव्या, अने रत्नना प्रभावथी पेला वणिको सुखी थया. ने सुखी थयेला जोइने लोहवणिक मनमां पश्चाताप करवा लाग्यो के 'अरे! में शुं कर्युं! तेओनुं कहेवुं में मान्युं नहि.' एम तेणे घणा काळ सुधी शोच कर्यो. ए ाणे हे प्रदेशि राजा! तने पण लोहवणिकनी पेठे पश्चाताप करवो पडशे. वळी जे की होयछे ते शुं कुळपरंपराथी आवेल रोग के दारिद्र्यनो त्याग करवा नथी इच्छ-? जो कुळमार्ग तेज धर्म होय तो पछी दुनियामां अधर्मनुं नाम पण नष्ट थशे. वळी–

दारिद्र्यदास्यदुर्नयदुर्भगतादुःखितादि मितनाक्तिम ।
नैवं त्याज्यं तनयैः स्वकुलाचारैककृतनमैः ॥

" दारिद्र, दासपणुं, अनीति, दुर्भागीपणुं अने दुःखीपणुं आदि जे पोताना ।तादिए आचर्युं होय तेने पोतानो कुळाचार एज नीति छे, एम कहेनारा पुत्रोए तजवुं जोइए." माटे हे राजा ! कुळाचार ए धर्म नथी, किंतु जंतुनी रक्षा करवी ए ज दिज धर्म छे." इत्यादि वचनोथी प्रतिबोध पामेलो प्रदेशि राजा विनय पूर्वक के ' हे भगवन् ! आ आपनुं वाक्य सत्य छे अने तत्त्व रूप छे, एज खरो अर्थ छे, शिवाय बीजुं सर्व अनर्थज छे.' ए प्रमाणे कहीने प्रदेशि राजाए समकितमूळ व्रतो ग्रहण कर्यां. फरीथी शिक्षाने अवसरे केशि गणधरे कह्युं के—

माणं तुम पएसी पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासिइति.

आं राजप्रश्नीय सूत्रनो आलावो छे. तेनो भावार्थ ए छे के ' प्रदेशि राजा तुं पूर्वे रमणिक थइने पश्चात् (हवे) अरमणिक न थइश. ' एटले प्रथम अन्यनो थइ सांप्रत काळे जिनधर्मनी प्राप्ति थवाथी तेमनो अदाता न थइश; केमके तेम अमने अंतराय कर्म बंधाय अने जिनधर्मनी अपभ्राजना (निंदा) थाय. वळी घणा वखतथी चाल्या आवता दाननो निषेध करवाथी लोकविरुद्धता अने अपभ्राजनादि तने पण प्राप्त थाय. माटे जेने आपतो हो तेने आपवुं पण पात्रबुद्धिए न आपवुं अर्हंत विगेरे पण उचित दाननो निषेध करता नथी, माटे तारे तो मिथ्यात्वने तजवुं सर्वथी उत्तम एवा दयादानने निरंतर धारण करवुं." ए प्रमाणे गुरुनी शिक्षा फरीने प्रदेशि राजा घेर आव्यो, अने पोताना धननो (राज्यनी आवदानीनो) भाग अंतःपुर माटे, बीजो भाग सैन्य माटे, त्रीजो भाग भंडार माटे अने चोथो दानशाला माटे उपयोगमां लेवो. ए प्रमाणे मुकरर करीने सर्व उपज चार भागमां हेंची दींधी. अनुक्रमे श्रावकपणुं पाळतां केटलोक काळ व्यतीत थया बाद एकदा पुरुषमां लुब्ध थयेली ' सूर्यकान्ता ' नामनी तेनी पट्टराणीए तेने भोजनमां विष ते वातनी भोजन कर्या पछी प्रदेशि राजाने खबर पडी, परंतु अव्याकुळ चित्ते राणी किंचित् पण क्रोध कर्या विना पौषधशालामां आवी, दर्भनो संथारो करी, ईशान सन्मुख बेसी, भगवान धर्माचार्य श्रीकेशि गणधरने नमस्कार करी, पोते लीधेला लागेला अतीचारोनी सम्यक् प्रकारे आलोचना प्रतिक्रमणा करीने तेणे काळ अने सूर्याभ नामना विमानमां चार पल्योपम आयुष्यवाळो सूर्याभ नामनो देव पाछो त्यांथी च्यवी महाविदेहमां अवतरीने मोक्षे जशे.

" प्रमाणे नरकमां जवाने तैयार थयेला अतिपापी प्रदेशि राजाए जे देवविमान प्राप्त
ते केशिगणधरनुंज महात्म्य छे. माटे "दुःखनुं निवारण करनार अने सुखने प्राप्त
नार धर्माचार्योनीज यत्न पूर्वक सेवा करवी" एवो आ कथानो उपदेश छे.

आज हकीकत गाथा १०३ मां ग्रंथकर्ता पोतेज कहे छे ते आ प्रमाणे—

नरयगइगमणपडिहत्थएकए, तह पएसिणा रन्ना ।
अमराविमाणं पत्तं, तं आयरियप्पभावेणं ॥ १०३ ॥

अर्थ—"तेमज नरकगतिए जवानुं प्रस्थानुं कर्या छतां प्रदेशि राजाए जे देवविमान
कर्युं ते आचार्यना प्रभावथीज जाणवुं." १०३. तेथी गुरुनी सेवनाज मोटा फळने
ारी छे. वळी—

धम्ममइएहिं अइसुंदरेहिं कारणगुणोवणीएहिं ।
पल्हायंतो य मणं, सीसं चोएइ आयरिओ ॥ १०४ ॥

अर्थ—"आचार्य धर्ममय, अतिसुंदर अने ज्ञान दर्शन चारित्र रूप कारण संबंधी
ए सहित एवां वचनो वडे (शिष्यना) मनने आनंद उपजावता सता शिष्यने
करे छे—शिक्षा आपे छे." १०४

धर्ममय ते धर्मनी प्रचूरतावाळां अने अतिसुंदर एटले दोषरहित एवां वचन
ां.

जीअं काऊण पणं, तुरमणि दत्तस्स कालिअज्जेण ।
अवि अ सरीरं चत्तं, नय भणिअ महम्मसंजुत्तं ॥ १०५ ॥

अर्थ—"तुरमणि नगरीमां कालिकाचार्ये दत्त राजानी आगळ जीवितव्यनुं पण करीने
पण (मनवडे) तज्युं, परंतु अधर्मसंयुक्त (असत्य वचन) बोल्या नहि." १०५

दत्त राजाए यज्ञनुं फळ पूछये सते कालिकाचार्ये तेनो भय मात्र अवगणीने
शरीर पण तजीदइने 'तेनुं फळ नरक छे' एम स्पष्ट कह्युं, पण धर्म विरुद्ध
आप्यो नहि. ए प्रमाणे अन्य मुनिए भयना प्रसंगमां पण असत्य वचन बोलवुं
अहीं कालिकाचार्यनो संबंध जाणवो. ३०

कालिकाचार्यनी कथा.

तुरमणि नामना नगरमां 'जितशत्रु' नामे राजा हतो. ते गाममां एक 'कालिक'
नो ब्राह्मण रहेतो हतो. ते ब्राह्मणने 'भद्रा' नामे बहेन हती, अने ते भद्राने 'दत्त'
पुत्र हतो. एकदा कालिक ब्राह्मणे पोतानी मेळे प्रतिबोध पामीने चारित्र ग्रहण

गाथा १०३—नरइगइ. प्रस्थानके कृत. गाथा १०४—धम्ममयेहिं. गाथा १०५—तुरिमणा. त्यक्त.

कर्युं अने अनुक्रमे तेमणे आचार्यपद मेळव्युं. तेमनो भाणेज दत्त स्वच्छंदी
द्यूत आदि व्यसनोथी पराभव पामी राजानो सेवा करवा लाग्यो. कर्मयोगे
मंत्रीपद आप्युं. अधिकार मळतां राजानेज पदभ्रष्ट करीने ते राज्य पचावी
राजा पण तेना भयथी नासी गयो अने गुप्तपणे कोइ स्थानके रह्यो. पछी
करनारो ते दत्त राजा मिथ्यात्वथी मोह पामीने अनेक यज्ञो कराववा ला
संख्याबंध पशुओनो घात करवा लाग्यो. अन्यदा अवसरे कालिकाचार्य म
समवसर्या, त्यारे भद्रा माताना आग्रहथी दत्त राजा वांदवाने आव्यो. गु
देशना आपी के—

धर्माद्धनं धनत एव समस्तकामा
कामेभ्य एव सकलेंद्रियजं सुखं च ।
कार्यार्थिना हि खलुकारणमेषणीयं
धर्मो विधेय इति तत्त्वविदो वदन्ति ॥

"धर्मथी धन मळे छे, धनथी समस्त कामनाओ सिद्ध थाय छे अने
नानी सिद्धिथी समग्र इंद्रियजन्य सुख प्राप्त थायछे माटे कार्यार्थीए तो
शोधवुं जोइए, तेथी धर्म करवो एवुं तत्त्ववेताओ कहे छे."

आ प्रमाणे सांभळीने दत्ते यज्ञनुं फळ पूछयुं. गुरुए कह्युं के 'ज्यां
त्यां धर्मनो अभाव छे.' कह्युं छे के—

दमोदेवगुरूपास्तिर्दानमध्ययनं तपः ।
सर्वमप्येतदफलं हिंसां चेन्न परित्यजेत् ॥

"इंद्रियोनुं दमन, देवगुरुनी सेवा, दान, अध्ययन अने तप-ए स
हिंसानो त्याग न करे तो व्यर्थ छे."

फरीथी दत्ते यज्ञनुं फळ पूछयुं. त्यारे गुरुए कह्युं के 'हिंसा दुर्गतिनुं
कह्युं छे के—

पंगुकुष्टिकुणित्वादि दृष्ट्वा हिंसाफलं सुधीः ।
निरागस्त्रसजंतूनां हिंसां संकल्पतस्त्यजेत् ॥

"डाह्या माणसे पांगळापणुं, कोढीआपणुं ने ठुंठापणुं विगेरे हिंसा
दृष्ट्वा जाणीने निरपराधी एवा त्रस प्राणीओनो हिंसा संकल्पथी पण न कर
वी." दत्ते कह्युं के 'तमे आवो आडो आडो उत्तर केम आपो छो? यज्ञनुं फ

त्य कहो.' त्यारे कालिकाचार्ये विचार कर्यो के 'जोके आ राजा छे अने प्रीतिवाळो छे ते छतां जे बनवानुं होय ते बनो पण हुं मिथ्या बोलीश नहि. पण मिथ्या बोलवुं कल्याणकारी नथी.' कह्युं छे के—

निंदन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

" नीपुण गणाता लोको भले निंदा करो अथवा स्तुति करो, लक्ष्मी भले प्राप्त अथवा मरजी मुजब चाली जाओ, मरण आज थाओ अथवा युगने अंते , परंतु धीर पुरुषो नीतिना मार्गथी एक पगलुं पण खसता नथी."

आ प्रमाणे विचारी कालिकाचार्ये कह्युं के 'हे दत्त ! हुं निश्चय पूर्वक कहुं छुं रकगति एज यज्ञनुं फल छे." कह्युं छे के—

यूपं छित्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम्
यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥

" यज्ञस्तंभ छेदो, पशुओने हणो अने रुधिरनो कोचड करी जो स्वर्गे जवातुं तो पछी नरकमां कोण जशे ?" दत्ते कह्युं के 'ए केवी रीते जणाय ?' गुरुए के 'आजथी सातमे दिवसे घोडाना पगना डाबलाथी उडेली विष्टा तारा मुखमां , अने पछी तुं लोढानी कोठीमां पूराइश. आ अनुमानथी तारी अवश्य नरकगति ो छे एम जाणजे.' दत्ते कह्युं के 'तमारी शी गति थशे ?" गुरुए कह्युं के धर्मना प्रभावथी स्वर्गे जइशुं.' आ प्रमाणे सांभळीने क्रोधित थयेला दत्ते विचार के 'जो सात दिवसनी अंदर आ वाक्य प्रमाणे नहि बने तो पछी हुं अवश्य ने मारी नांखीश.' आम विचारी कालिकाचार्यनी आसपास राजसेवकोने मूकी नगरमां आव्यो, अने आखा शहेरना तमाम रस्ताओमांथी अपवित्र पदार्थो काढी ी साफ कराव्या अने सर्व स्थळे पुष्पो वेराव्यां. पोते अंतःपुरमांज रह्यो. ए गे छ दिवसो व्यतीत थया पछी आठमा दिवसनी भ्रांतिथी सातमे दिवसे क्रोध- बनो घोडा उपर स्वार थइ गुरुने हणवा चाल्यो. तेवामां कोइएक वृद्ध माळी जवानी हाजतथी पीडा पामवाने लीधे रस्तामांज विष्टा करी तेने पुष्पोथी ढांकीने ी गयो. तेना उपर दत्त राजाना घोडानो पग पड्यो, तेथी विष्टानो अंश उछळीने ना मुखमां पड्यो. एटले गुरुना वचनपर विश्वास आववाथी राजा पाछो वळ्यो

त्यां एकांत जाणीने जितशत्रु राजाना सेवकोए तेने पकडी लीधो अने गादीए बेसार्यो. पछी सामंतराजाओए विचार्युं के 'जो आ जीवतो रहेशे तो दायी थशे.' एम विचारी तेओए तेने लोढानी कोठीमां नांख्यो. पछी मरण पर्यंत महान दुःख भोगवतो सतो विलाप करतो अने पोकार करतो ते मृत्यु मरीने ते सातमी नरके गयो, अने श्रीकालिकाचार्य तो चारित्रने सेवीने स्व

ए प्रमाणे साधुए प्राणांते पण मिथ्या भाषण न करवुं एवो आ उपदेश छे.

फुडपागडमकहंतो, जहट्ठिअं बोहिलाभ मुवहणइ ।
जह भगवओ विसालो, जरमरणमहोअही आसि ॥

अर्थ-" स्फुट प्रगट (सत्यार्थ) न कहेवाथी यथास्थित-सत्य एवा आगामी भवे धर्मप्राप्तिने हणी नाखे छे-विनाश करे छे. जेम भगवंत श्री स्वामीने (मरिचिना भवमां सत्य न कहेवाथी) विशाळ एवो जरा मरण रूप महासमुद्र थयो. अर्थात् कोटाकोटि सागरोपम प्रमाण संसार वधार्यो." १

अहीं श्री महावीर स्वामीना पूर्वभवनो संबंध जाणवो २१.

प्रथम भवमां पश्चिम महाविदेहने विषे 'नयसार' नामे कोइ ग्रामाधिप हतो. ते एक दिवस काष्ट लेवाने माटे वनमां गयो.मध्यान्हसमये भोजन ते अवसरे साथथी विखुटा पडी गयेला कोइ एक मुनि त्यां आव्या तेने जो घणो खुशी थयो अने भावथी श्रद्धा पूर्वक तेने आहार आप्यो. आहार करा पछी साधुने मार्ग बतावबाने माटे ते साथे गयो. साधुए पण योग्य जीव जा देशनावडे सम्यक्त्व प्राप्त कराव्युं. पछी ते साधुने नमीने घेर गयो. मरण पामीने ते सौधर्म देवलोकमां उत्पन्न थयो. ए बीजो भव थयो.

त्यांथी च्यवीने त्रीजा भवमां मरिचि नामे भरत चक्रवर्तीनो पुत्र थयो. षभदेव भगवाननी देशना सांभळी, भोगोनो त्याग करी स्थविर मुनि पासे ग्रहण कर्युं. पछी अग्यारअगनुं अध्ययन करी चारित्र पाळतां एकवार तापथी पीडित थइने ते विचार करवा लाग्यो के 'माराथी चारित्र पळवुं आ चारित्रधर्म अति दुष्कर छे, तेथी माराथी ते पाळी शकाय तेम नथी अने ए पण योग्य नथी.' ए प्रमाणे विचार करीने तेणे एक नवो त्रिदंडी वेष ग्रहण परंतु जे कोइ तेने धर्म पूछे तेनी आगळ साधुधर्म प्रकाशित करे अने जे देशनाथी प्रतिबोध पामे तेने भगवाननी पासे मोकले. आ प्रमाणे तेणे अने

गाथा १०६-महोअहि.

प्रतिबोध पमाड्यो. आ स्थितिमां पण मरीचि भगवाननी साथे विचरे छे. विहार करतां एक वार भगवान अयोध्यामां समवसर्या. भरत चक्री प्रभुने वांदवा अने देशनाने अंते पूछ्युं के ' हे भगवन् ! आ आवी मोटी सभामां कोइ पण (थनार) तीर्थंकर छे ? ' भगवाने कह्युं के ' आ त्रिदंडी सन्यासी वेषधारी मरीचि तारो पुत्र आ चोवीशीमा चोवीशमा 'वर्धमान' नामे तीर्थंकर, महाविदेहने विषे नगरीमां ' प्रियमित्र' नामे चक्रवर्त्ती अने आ भरतक्षेत्रमांज 'त्रिपृष्ठ' नामे पहेलो व थशे. ए प्रथम बे पदवीने भोगवी छेवटे तीर्थंकर थशे. ' ए सांभळी भरते पासे जइ, त्रण प्रदक्षिणा दइ, नमस्कार करीने कह्युं के " हे मरीचि ! आ मां जेटला लाभ छे तेटला बधा तें मेळव्या छे. कारणके तुं चक्रवर्त्ती, वासुदेव तीर्थंकर थनार छे; माटे हुं तारा परिव्राजक वेषनी अनुमोदना करतो नथी; परंतु शो तीर्थंकर थनार छे तेथी हुं तने वांदु छुं. " ए प्रमाणे कहीने भरत चक्रीना पछी मरीचिए त्रण वखत पग पछाडी नाचतां नाचतां कह्युं के ' हुं त्रण पद श तेथी मारुं कुळ उत्तम छे. ' ए प्रमाणे वारंवार कुळनो मद करवाथी तेणे गोत्र बांध्युं. अन्यदा प्रथम प्रभु मोक्षे गया पछी साधु साथे विहार करतां तेना मांदगी आवी, परंतु साधुना आचारथी रहित होवाने लीधे तेनी कोइए सेवा चाकरी नहि. तेथी ते विचार करवा लाग्यो के 'जो हुं साजो थाउं तो एक शिष्य करुं.' क्रमे ते स्वस्थ थयो. एक दिवस कोइ ' कपिल ' नामे राजपुत्र मरीचिनी देशना थी प्रतिबोध पाम्यो. त्यारे मरिचिए कह्युं के ' हे कपिल ! तुं साधु पासे जइ चाग्रहण कर.' तेणे कह्युं के ' हुं तमारो शिष्य थइश. ' पछी मरीचिए पोतानुं स्वयथार्थ कही बताव्युं अने कह्युं के ' मारामां चारित्र नथी. ' तोपण कपिल मान्यो अने कहेवा लाग्यो के ' शुं तमारा दर्शनमां सर्वथा धर्म नथीज ? ' त्यारे मरीचिए के ' आ कपिल मने योग्य मळ्यो छे.' एम जाणी मरीचिए कह्युं के ' कपिला पि इहंपि ' हे कपिल ! साधु समीपे महान धर्म छे, अने मारी पासे अल्प धर्म ' ए प्रमाणे सूत्रविरुद्ध कथनथी तेणे एक कोटाकोटि सागरोपम प्रमाण संसारनी करी. तेनी आलोचना कर्या वगर चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पाळीने ते चोथा पांचमा देवलोकमां दश सागरोपमना आयुष्यवाळो देवता थयो.

त्यांथी च्यवी पांचमा भवमां कोल्लाग संनिवेष गाममां एंशी लाख पूर्वना आयुष्यनो ब्राह्मण थयो. ते भवमां त्रिदंडी थइ घणो काळ संसारमां भटक्यो. (आ भवो शीमां लीधा नथी, स्थूळ भवोज गणेला छे.) छठ्ठा भवमां स्थूणा नगरीमां बोंतेर लक्ष ना आयुष्यवाळो 'पुष्प' नामे ब्राह्मण थयो, ते त्रिदंडी थइ मरण पामीने सातमा भवे

प्रथम देवलोकमां मध्यम स्थितिवाळो देव थयो. त्यांथी च्यवी आठमा भवमां
निवेष नामना गाममां साठ लाख पूर्वना आयुष्यवाळो 'अग्निद्योत' नामे ब्रा
छेवटे त्रिदंडी थइ मृत्यु पामीने नवमा भवे बीजा देवलोकमां मध्यम स्थितिवाळो
त्यांथी च्यवी दशमा भवे मंदिरसन्निवेशे साठ लाख पूर्वना आयुष्यवाळो 'अग्नि
ब्राह्मण थयो. अंते त्रिदंडी थइ मृत्यु पाम्यो. अग्यारमा भवे त्रीजा देवलोकमां मध्यम
वाळो देव थयो. त्यांथी च्यवी बारमा भवमां श्वेताम्बी नगरीमां चोराशी लाख पू
ष्यवाळो भारद्वाज नामे ब्राह्मण थयो. छेवटे त्रिदंडीपणे मृत्यु पामी तेरमा भवे चोथा
कमां मध्यम स्थितिवाळो देव थयो. पछी घणो काळ संसारमां भटकी चौदमा
नगरमां चोत्रीश लाख पूर्वना आयुष्यवाळो 'स्थावर' नामे ब्राह्मण थयो. छेवटे
थइ मृत्यु पाम्यो. पदरमा भवे पांचमा देवलोकमां मध्यम स्थितिनो देव थयो
च्यवी सोळमा भवमां एक क्रोड वर्षना आयुष्यवाळो 'विश्वभूति' नामे
थयो. ते जन्ममां तेणे वैराग्यपरायण थइ सभूति मुनि पासे चारित्र ग्रहण क
तीव्र तप कर्युं. एक दिवस मासक्षपणने पारणे मथुरा नगरीमां गोचरीए गया
दुर्बलपणाथी एक गायना अथडावाथी ते भूमिउपर पडी गया. तेने जोइने तेना
छोकरो वैशाखनंदी हास्य करीने बोल्यो के 'तुं एक मुष्टिना प्रहारथी कोठा
तमाम फळने भूमि पर पाडी नाखतो हतो ते दिवस क्यां गयो ?' आ वच
क्रोधायमान थइ ते गायने शींगडावती पकडी आकाशमां फेरवीने एवु नि
'जो आ तपनुं फळ होय तो आगामी भवे हुं घणो बळवान थाउं.' ए
वर्ष तप करी अंते पापनी आलोचना कर्या विना मरण पामी सत्तरमा भवे
लोकमां उत्कृष्ट स्थितिवाळो देव थयो. त्यांथी च्यवी अढारमा भवे पोत
प्रजापति नामना राजाने घेर पोते परणेली पोतानी पुत्री जे मृगावती तेनी
स्वप्नथी सूचन करायेल 'त्रिपृष्ठ' नामनो वासुदेव थयो ते भवमां भरतार्धने साधी
पाप करी चोराशी लाख वर्षनुं आयुष्य भोगवी ओगणीशमा भवे सातमी नरके
त्यांथी च्यवीने वीशमा भवे सिंहपणे उत्पन्न थयो. एकवीशमा भवे चोथी नरकमां ना
पणे उत्पन्न थयो. त्यारपछी पाछो घणा काळ सुधी संसारमां भटक्यो. पछी बा
भवे एक क्रोड वर्षना आयुष्यवाळो मनुष्य थयो. ते भवमां शुभ कर्मो करी त्रेवीश
महाविदेहमां मूका राजधानीमां 'धनंजय' राजाने घेर धारिणी राणीनी कुक्षिम
स्वप्नथी सूचन करायेला 'प्रियमित्र' नामे चक्रवर्ती थयो अंते पोट्टिलाचार्य पासे
ग्रहण करी एक कोटी वर्ष सुधी चारित्र पाळी पूरेपुरुं चोराशी लाख पूर्वनुं

१ आ भवो पण गणत्रीमां नथी.

चोवीशमा भवे सातमा देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी च्यवी पचीशमा
त्रिका नगरीमां जितशत्रु राजाने घेर भद्रा नामनी राणीनो कुक्षिमां पचीश
वर्षना आयुष्यवाळो नंदन नामे पुत्र थयो. तेणे ते भवमां पोट्टिलाचार्य पासे
लइ यावज्जीव मासक्षपण करी वीशस्थानकनी आराधनावडे तीर्थकरनामकर्म
न कर्युं. एक लाख वर्ष सुधी चारित्र पाळीने अंते एक मासनी संलेखनवडे
मा भवने विषे दशमा देवलोकमां पुष्पोत्तरावतंस विमानमां वीश सागरोपमना
यवाळा देवता थया. त्यांथी च्यवी सत्तावीशमा भवे चोवीशमा तीर्थंकर थया.
आ प्रमाणे मरीचिना भवमां तेणे उत्सूत्र भाषणथी कोटाकोटि सागरोपम प्रमाण
नी वृद्धि करी. ए प्रमाणे अन्य जीवो पण जो उत्सूत्र भाषण करे तो संसारनी वृद्धि
माटे उत्सूत्र भाषण कदि पण करवुं नहि, एवो आ कथानो उपदेश छे.

कारुन्नरुन्नसिंगार–भावभयजीविअंतकरणेहिं ॥
साहू अविअ मरंति, नय निअनिअमं विराहंति ॥१०७॥

अर्थ–"कारुण्यभाव, रुदन, शृंगारभाव (हावभावादि) राजादिकनो भय अने
तांतकारी अनुकूळ प्रतिकूळ उपसर्गवडे साधु कदाचित् मरण पामे छे, परंतु
ना नियमने विराधता नथी." १०७अर्थात् पूर्वोक्त कारणो प्राप्त थतां प्राण तजी
पण व्रत तजता नथी–कारुण्यादिवडे व्रतनी विराधना करता नथी.

अप्पहिअ मायरंतो, अणुमोअंतो अ सुग्गइं लहइ ॥
रहकार दाणअणुमोअगो–मिगो जह य बलदेवो ॥ १०८ ॥

अर्थ–'आत्महित एटले तप संयमादि तेने आचरतो सतो प्राणी सद्गतिने
छे, तेमज तेने–दानादि धर्मने अनुमोदतो सतो पण सद्गतिने पामेछे. जेम मुनिने
देनार रथकार, तेना दाननी अनुमोदना करनार मृग अने तपसंयम आचरनार
देव मुनि सद्गतिने पाम्या तेम." १०८

बळदेवमुनि, रथकार ने मृग ए त्रणे पांचमे देवलोके गया, तेथी तप संयमादि
ज दान शीलादि धर्म कर्यो, कराव्यो अने अनुमोद्यो सतो पण बहु फळने आपेछे.
हीं बळदेव, रथकार ने मृगनो संबंध जाणवो. ३२

बळदेव रथकारने मृगनी कथा.

द्वारिका नगरीने बाळी नांखवानुं जेणे नियाणुं करेलछे एवा द्विपायन ऋषिए
सिकुमारपणे उत्पन्न थइ ज्यारे द्वारिकाने बाळी त्यारे मात्र कृष्ण अने बळदेव बेज

गाथा १०७-निअमधुर. गाथा १०८-सोग्गइ दाणुअणुमोइगो.

बचवा पाम्या. बीजा सर्व बळी गया. बंने भाइओ वनमां गया. त्यां कृष्णने तृषा लागी तेथी बलभद्र पाणी लाववाने गया. त्यां वैरीनी साथे युद्ध थतां रात्रि ... अहीं कृष्ण एक वृक्षनी नीचे पग उपर पग चढावीने सुता हता. त्यां कृष्णनुं पोताने हाथे थवानुं छे एवुं श्री नेमीश्वरना मुखथी जाणीने जेणे ते प्रमाणे न. माटेज वनवास ग्रहण करेलो छे एवो वसुदेवनी जरा राणीनो पुत्र जराकुमार आव्यो. तेणे फरतां फरतां रात्रिए कृष्णना पगने लखीए रहेलुं पद्म दूरथी दीठुं. आ चकचकित मृगनुं नेत्र जणाय छे एवुं धारी तेणे कर्ण पर्यंत बाण खेंचीने चरण वींधी नांख्यो. पासे आवतां ते पोतानो भाइ छे एम जाणी पश्चात्ताप करतां जराकुमार विलाप करवा लाग्यो. ते वखते कृष्णे कह्युं के 'हे पापी! तुं अहींथी चाल्यो जा, हमणा बलभद्र आवशे तो ते तने मारी नांखशे.' ए प्रमाणे कहेवाथी जराकुमार तरतज त्यांथी चाल्यो गयो. पछी आयुष्यना अंत भागे कृष्णने क्रोध उत्पन्न तेथी ते मनमां विचार करवा लाग्यो के 'अरे! जुओ त्रणसें ने साठ संग्रामनो ... एवो हुं महाबळवान छतां मने बाणथी हणीने आ राजकुमार क्षेमकुशळ गयो!' ए प्रमाणे दुर्ध्यानने वश थइ मरण पामीने कृष्ण त्रीजी नरके गया.

ते समये जळ लइने बलभद्र पण त्यां आव्या तेणे कृष्ण प्रत्ये कह्युं के 'हे ... में तारा माटे टंडु जळ आण्युं छे, तुं उठ अने जळ पी.' ए प्रमाणे कहेवामां आ... छतां कृष्णे उत्तर आप्यो नहि त्यारे बळदेवे विचार कर्यो के 'में जळ लाव... घणो वखत गुमाव्यो तेथी आ मारा बंधु क्रोधित थयेला जणाय छे तेथी हुं तेने ... मावुं.' ए प्रमाणे विचार करी पगमां पडीने अरज करवा लाग्या के 'हे बंधु! क्रोधनो अवसर छे? आ मोटा जंगलमां आपणे बंने एकला छीए माटे तुं उठ.' ए प्रमाणे वारंवार कहेतां छतां पण ज्यारे ते बोल्या नहि त्यारे बलदेव मोहवश कृष्ण मृत्यु पामेला छे छतां तेने जीवता जाणी पोताना स्कंध उपर लइने चाल्या. आ संसारमां पण स्नेह सर्वथी अधिक छे. कह्युं छे के—

> तीर्थकराणां साम्राज्यं, सपत्नीवैरमेव च ।
> वासुदेवबलस्नेहः, सर्वेभ्योऽधिककं मतम् ॥

अर्थ—" तीर्थकरोनुं साम्राज्य, सपत्नी (शोक) नुं वैर अने वासुदेव ने बळदेवनो स्नेह ए त्रण वानां सर्वथी अधिक गणायेलां छे."

छ मास पर्यंत मरण पामेला भाइने स्कंध उपर धारण करीने तेनी सेवा करता हता. ... देवने एक दिवसे सिद्धार्थ नामना देवे आवी पथ्थरमां कमळ रोपवानुं बतावीने बोध ... पण ते बंधु बळदेव ... 'मारा भाइने मरण पामेलो तुं केम

बोलता तेनी पछवाडे मारवाने दोडया,पण देव अदृश्य थइ गयो. वळी फरीथी ते पर्वतनी शिला उपर कमल वावतो जोइने वलदेवे कह्युं के 'रे मूर्ख ? शिलानी शुं कमलनी उत्पत्ति संभवे छे ?' देवे कह्युं के "जो तारो मृत्यु पामेलो भाइ उभो तने 'हे भाइ !' ए प्रमाणे कहेशे तो आ शिलानी विषे पण कमलनी उत्पत्ति थशे." ...ने कहेतां छतां पण वलदेवजी मोहने वश थयेला होवाथी पोतानो भाइ मृत्यु छे एम तेमणे जाण्युं नहि. ए प्रमाणे तेमणे छ मास सुधी परिभ्रमण कर्युं. पछी ते शरीरने विनाश पामेलुं जाण्युं एटले छोडी दीधुं. सिद्धार्थदेवे ते शरीरने समुक्षेपन कर्युं. पछी बहु विलाप करता एवा वलदेवने श्री नेमिनाथे मोकलेला चारण ...र आवीने प्रतिबोध पमाडयो,तेथी वैराग्यपरायण थइने तेमणे ते चारण मुनि पासे ...लीधी.पछी पर्वत उपर रही उग्र तप करवा लाग्या.एक वार मासक्षपणने पारणे ...नी अंदर आहार लेवाने माटे आवतां तेमने कुवाने कांठे उभेली एक स्त्रीए जोया. ...रूपथी मोहित थयेली ते स्त्रीए घडानी भ्रांतिथी पुत्रना गळामां दोरडानो गा...गो नांख्यो. ते जोइने वलराम मुनिए कह्युं के 'हे मुग्धे ! तुं आ शुं करे छे ? मोहथी ...धीन थइने पुत्रने केम मारे छे ?' पछी तेमणे विचार कर्यो के 'मारा रूपने धिक्कार ...हवेथी मारे नगरमां आववुं श्रेयस्कर नथी; वनवास सेववोज सारो छे.' ए प्रमाणे ...ग्रह करीने तुंगिका पर्वत उपर रह्या. त्यां पारणाने दिवसे जो कोइ सार्थ अथवा ...यारो आवे छे अने ते तेमने शुद्ध अन्न वहोरावे छे तो ते आहार करे छे. तपमां वृद्धि करेछे. ए प्रमाणे तप करतां तेमने अनेक लब्धिओ उत्पन्न थइ ...नावडे अनेक व्याघ्र तथा सिंह विगेरे प्राणीओने प्रतिबोध पमाडयो.पेलो सिद्धा... पण तेमनी सेवामांज रहेवा लाग्यो.त्यां एक अतिभद्रक मृग देशनाथी प्रतिबोध ...ते अहर्निश तेमनी सेवा करेछे अने वनमां भमेछे.ज्यां ते आहारनो योग जाणेछे ते संबंधी संज्ञावडे वलभद्र मुनिने जणावेछे.मुनि पण तेने आगळ करीने त्यां जायछे.

एक दिवस कोइ रथकार (सुतार) ते वनमां आव्यो. ते कोइ मोटा वृक्षनी ...ला कापतां कापतां अरधी मूकी तेनी रसोइ करवा लाग्यो. पेला मृगे ते जोइने ...वडे मुनिने निवेदन कर्युं. मुनि मृगनी साथे त्यां आव्या. साधुने आवेला जोइ ...कार घणो हर्षित थइने वहोराववा लाग्यो. ते वखते पेलो मृग पण आगळ उभो ...भावना भावेछे, तेवामां पेली अरधी कापेली डाळी एकाएक त्रुटी पडी ने ...ना उपर पडवाथी ते त्रणे जणा काल करी पांचमा देवलोके उत्पन्न थया. ...रनार बलदेव साधु,सहाय करनार रथकार अने अनुमोदना करनार मृग—ए ...सरखुं फळ मेळव्युं. माटे आ जैनधर्म आचर्यो होय,बीजा पासे पळाव्यो कोइ पाळनारनी अनुमोदना करी होय तो ते समान फळ पण आपेछे;

तेथी निरंतर धर्ममां उद्यम करवो. एवो आ कथानो उपदेश छे.

जं तं कयं पुरा पूरणेन, अइदुक्करं चिरकालं ।
जइ तं दयावरो इह, करिंतु तो सफलयं हुंतं ॥ १०९ ॥

अर्थ–" जे ते अतिदुष्कर एवो तप पूर्वे चिरकाल-घणा काळ पर्यंत पूरण करयो. ते तप जो आ संसारमां (ते भवमां) दयातत्परपणे कर्यो होत तो ते सफल थात. " १०९. परंतु तेणे करेलो तप घणो छतां अज्ञान दोषवाळो होवाने तुच्छ फळ प्राप्त थयेलु होवाथी ते निष्फळ गयोज कहेवाय.

पुरण तापसे तामली तापसनी जेवो बार वर्ष पर्यंत तप कर्यो तेने परिणामे चमेरन्द्र थयो, विशेष फळ मळयुं नहि. अहीं पूरण तापसनो संबंध जाणवो. ३३

पूरण तापसनो वृत्तांत.

विंध्याचळ पर्वत पासे पेढाल नामे गाममां पूरण नामे एक शेठ रहेतो हतो. दिवस वैराग्यवान थवाथी पोताना पुत्रने पोताने स्थाने स्थापीने तेणे तामलि पेठे तापसी दीक्षा लीधी. ते हमेशां छठ करीने पारणुं करेछे; अने पारणाने चतुष्कोण (चार खानावाळु) पात्र लइने परिमित घरे भिक्षा अर्थे भमेछे. तेमां अन्नादि पात्रना प्रथम खंडमां (खानामां) पडे ते पक्षीओने आपी देछे, बीजा खंड पड्युं होय ते मत्स्यने आपी देछे, त्रीजा खंडमां पड्युं होय ते स्थलचर जीवोने आ देछे, अने चोथा खंडमां पड्युं होय ते पोते खायछे. आ प्रमाणे अति उग्र अज्ञान बार वर्ष सुधी करी एक मासनी संलेखनाथी काळधर्म पामी चमरचंचा नामनी रा धानीमां चमरेन्द्र थयो. आटलुं तप जो तेणे दया पूर्वक कर्युं होत तो तेने बहु प्राप्त थात. माटे ज्ञान पूर्वक तप करवुं, एवो आ कथानो उपदेश छे.

कारण नीयावासी, सुट्ठुयरं उज्जमेण जइयव्वं ।
जह ते संगमथेरा, सपाडिहेरा तया आसि ॥ ११० ॥

अर्थ–" वृद्धावस्थादि कारणे करीने नित्यावासी एटले एक स्थानके रहेतां पण अतिशय उद्यमे करीने (चारित्रविषये) प्रयत्नवान रहेवुं. जेम तेवा–चारित्र उद्यमवंत ' संगम स्थविर ' नामे आचार्य ते काळे (देवसानिध्यथी) सप्राति के० महात्म्यवाळा होता हवा. " ११०

एगंत नीयावासी, घरस्सरणाइसु जइ ममत्तंपि ।
कह नपडिहंति कलिकलुसरोसदोसाण आवाए ॥ १११ ॥

गाथा १०९—पुरणेण चिरकालं करंतो होतं. गाथा ११०—नीयावासे. तया. गाथा १११—नीयावासे. घरसरणाइसु. आवाए-आपदि.

अर्थ-" रोगादि कारण विना एकांत नित्यावासी के० नित्य एक स्थाने रहेनार घर सज्ज करवा विगेरेमां एटछे पोते जे मकानमां रहेता होय ते मकान दुरस्त विगेरेमां जो ममत्वपणुं धारण करेछे तो ते मुनि कलि के० क्लेश-कळह,कलुष लेन आचरण अने रोष के० क्रोध तद्रुप अथवा तेना जे दोष तेनी आपदामां न पडे ? अर्थात् पडेज." १११.

अविकिंत्तिऊण जो वे कत्तो घरसरणगुत्तिसंठप्पं ।

अविकिंत्तिआइ तं तह, पडीआ असंजयाण पहे ॥ ११२ ॥

अर्थ-" जीवने हण्याविना घरनुं संमार्जन अने घर फरतुं वाड विगेरे नाखवा रक्षण क्यांथी थाय ? नज थाय. तेथी तेवा प्रकारना वेषधारी जीवघातको असंयतिना मार्गमां पडेलाज जाणवा." ११२

उपाश्रयने घर करी बेसनारा अने तेनी सारसंभाळ विगेरे करवा करावचा वाळा वेषधारीने माटे आ उपदेश जाणवो. तेमने असंयतिज जाणवा.

थोवोवि गिहिपसंगो, जइणो सुद्धस्स पंक मावहइ ।

जह सो वरित्तरिसि, हसीओ पज्जोअनरवइणा ॥ ११३ ॥

अर्थ-" थोडो पण गृहस्थनो प्रसंग शुद्ध मुनिने पण पाप रूप पंक के० कर्दमरूप लगाडेछे. जेम ते वार्तक नामना मुनिनी चंडप्रद्योत नामे राजाए हांसी करी के नैमित्तिक ! तमने वंदन करुं छुं.' माटे मुनि महाराजाए थोडो पण गृहस्थनो प्रसंग न करवो." ११३. अहीं वरदत्त मुनिनो संबंध जाणवो. वार्त्तक ऋषिनुं बीजुं नाम वरदत्तमुनि जाणवुं. ३४

वरदत्त मुनिनुं दृष्टांत.

चंपानगरीमां 'मित्रप्रभ' नामे राजा हतो.तेने 'धर्मघोष' नामे मंत्री हतो ते नगरमां 'धनमित्र' नामे एक अत्यंत राजमान्य शेठ हतो. ते शेठने 'धनश्री' नामे भार्या हती. तेमने 'सुजातकुमार' नामे अति कांतिवान, रूपलावण्यथी युक्त अने स्त्रीओने प्रिय लागे तेवो पुत्र थयो हतो. एक दिवस धर्मघोष मंत्रीना अंतःपुर पासे थइने जतो हतो, तेवामां 'प्रियंगुमंजरी' नामनी मंत्रीपत्नीए तेने जोयो. ते कुमारनुं रूपलावण्य जोइ मोहित थयेली मंत्रीनी सर्व स्त्रीओ परस्पर कहेवा लागी के 'हे सखीओ ! आपणने आ पुरुष घणो प्रिय लागेछे, परंतु जे स्त्रीनो आ भोक्ता थशे ते स्त्रीने धन्य छे' ए प्रमाणे विचार थयेलो होवाथी एक दिवसे प्रियंगुमंजरी गुप्तपणे सुजातकुमा-

गाथा ११२-अविकत्तिऊण. संठप्पं. अविकत्तिआय. पडिया. अस्संजयाण. अहवा पालका. गाथा ११३-थेवोवि. वारित्तरिसि. वारत्तिरिसि. नरवयणा

रनो वेष धारण करीने शोक्योनी साथे पुरुषनी पेठे क्रीडा करती परस्पर खेलवा [illegible]
मंत्रीए ते सघळुं जोयुं, तेथी तेना मनमां इर्ष्या उत्पन्न थइ. ते विचार करवा [illegible]
के 'अरे ! मारी सघली स्त्रीओ सुजातकुमारनी साथे विलास करेछे' पछी तेणे [illegible]
जातकुमार उपर द्वेष राख्यो, अने सर्व स्त्रीओनो त्याग कर्यो.

एक दिवस मंत्रीए कूटपत्र लखी राजाना हाथमां आप्यो अने कह्युं के 'आ
कूटलेख लखनार सुजातकुमारने मारी नांखवो जोइए.' ए प्रमाणे सांभलीने राजा
विचार कर्यो के 'जो हुं तेने अहीं एकदम मारी नांखीश तो मारी अपकीर्ति [illegible]
एम जाणी सुजातकुमारने कूटपत्र लखी आपीने 'चंद्रध्वज' राजानी पासे मोकल्यो.
पत्रमां लख्युं के 'आ पत्र लावनार सुजातकुमारने मारी नांखवो.' ते वाक्य वांची
चंद्रध्वज राजाए विचार कर्यो के 'आ पुरुषरत्नने मारी नांखवानुं शामाटे [illegible]
पछी गुप्त चर मोकली तेणे सर्व हकीकत जाणी लीधी. पछी तेणे पेलो कूटपत्र गुप्त
पोतानी पासे साचवी राख्यो, अने पोतानी बेन 'चंद्रयशाने' सुजातकुमारनी [illegible]
परणावी तेने पोताना महेलमां राख्यो. चंद्रयशाना संयोगथी सुजातकुमारने रोग [illegible]
थयो. तेथी चंद्रयशा विचारवा लागी के 'मने धिक्कार छे के मारा संयोगथी आ पु
रोगी थयो.' त्यारे सुजातकुमारे कह्युं के 'हे सुलोचना ! आमा तारो कांइ [illegible]
नथी, मारां अशुभ कर्मनोज आ दोष छे.' इत्यादि वचनोथी चंद्रयशा प्रतिबोध पामी
[illegible] गइ, अनशन अंगीकार करीने समाधिथी मृत्यु पामी देवपणे उत्पन्न [illegible]
[illegible] पूर्वभव जाणी त्यां आवी अने सुजातकुमारने कह्युं के 'हे स्वामिन् ! तमा
[illegible] हुं चंद्रयशानो जीव देव थयेल छुं, माटे जे आज्ञा होय ते करुं.' सुजातकुमार
कह्युं के 'मने मारां मातापिता पासे पहोंचाड अने मारुं कलंक उतार, जेथी हुं [illegible]
[illegible]. देवे तत्काळ ते प्रमाणे कर्युं. सुजातकुमारने चंपानगरीना उद्यानमां मू
अने [illegible] शिला विकुर्वीने चंद्रप्रभ राजाने भय पमाडी कह्युं के 'हे [illegible]
आ सुजातकुमार उपर विरुद्ध आचरण केम कर्युं ?' तेथी राजाए भयभ्रांत थइ [illegible]
[illegible] हकीकत यथार्थ निवेदन करी अने सुजातकुमारना पगमां पडी [illegible]
[illegible] पण शिला सहरी लीधी. पछी राजाए सुजातकुमारने हाथी [illegible]
[illegible] साथे नगरमां आण्यो. सुजातकुमार पिता साथे [illegible]
[illegible] करीने मोक्षे गयो.

[illegible] राजाए देशनिकाल कर्यो. तेना [illegible] तथा [illegible]
[illegible] नगरे आव्यो त्यां तेणे [illegible]
[illegible] अने [illegible] (सूत्र ने अर्थनो जाणनार) [illegible]
[illegible] बहुत [illegible] करीने [illegible]

ी दूधपाकनुं भोजन लइने सन्मुख वहोराववा आव्यो अने कह्युं के 'हे स्वामी! आ
दोष अन्न ग्रहण करो.' तेवामां ते पात्रमांथी एक बिंदु नीचे पड्युं. ते जोइ धर्मघोष
नि पाछा वळी गया. त्यारे वरदत्त मंत्रीए विचार कर्यो के 'मुनि आहारमाटे आवेल
तां आ शुद्ध आहार तेमणे शा माटे ग्रहण कर्यो नहि!' ए प्रमाणे ते विचार करेछे
वामां नीचे पडेला दूधपाकना बिंदु उपर एक मक्षिका (मांखी) बेठी, ते मांखीने जोइने
ना उपर एक गरोळी आवी, ते गरोळी उपर एक काकोडो आव्यो ते काकोडाने
रवाने एक बिलाडी दोडी, त बिलाडीना वध माटे घरनो कूतरो आव्यो, अने ते
तराने मारवाने माटे शेरीनो कूतरो दोड्यो, शेरीना कूतराने घरना नोकरोए मारी
ख्यो. त्यारे शेरीना लोकोए घरना कूतराने मारी नांख्यो. पछी घरना नोकरो अने
रीना लोको वच्चे परस्पर गाळागाळी थवा लागी. तेमांथी कजीओ वध्यो, अने क्रोध
थी जवाथी बाणो अने खड्गोवडे युद्ध थवा लाग्युं. ते जोइ वरदत्त मंत्रीए विचार
र्यो के 'अहो! आ साधुने धन्य छे के जेणे आवो भावी उपद्रव जाणीने शुद्ध अन्न
ापतां छतां पण ग्रहण कर्युं नहि. आ जिनधर्मने पण धन्य छे हवे ए जंगम तीर्थ रूप
ाधुओ मने केवी रीते मेळाप थशे?' एम विचार करतां तेने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न
युं एटले सघळुं पूर्व भवनुं वृत्तांत दीक्षाग्रहणादि स्मरणमां आव्युं. पछी स्वयमेव चा-
त्र लइ देवताए आपेलो वेष धारण करी स्वयंबुद्ध एवा वरदत्त मुनि विहार करतां
ुसमारनगरे आव्या, अने नागदेवना चैत्यमां कायोत्सर्ग करीने स्थित थया.

सुसमारपुरना राजा धुंधुमारने 'अंगारवती' नामे अति रूपवती पुत्री हती. तेणे
क दिवस कोइ योगिनीनी साथे विवाद कर्यो अने योगिनीने निरुत्तर करी. योगिनीने
ोध उत्पन्न थयो, तेथी तेणे अंगारवतीनुं रूप चित्रपटमां आलेखीने उज्जयिनीना राजा
ंडप्रद्योत' ने बताव्युं. तेना रूपथी मोहित थइने अने योगिनीना मुखथी पण ते
ुं रूपवती छे एम सांभळीने ते राजाए धुंधुमार राजा पासे दूत मोकली अंगारवतीनी
ागणी करी. धुंधुमारे कहेवराव्युं के 'पुत्री मननी प्रसन्नताथी अपाय छे पण बळा-
ारथी लइ शकातीं नथी.' ए प्रमाणे दूतना मुखथी सांभळी चंडप्रद्योत राजाने अति
ोध उत्पन्न थयो, तेथी मोटुं लश्कर लइ सुसमारपुर आवीने घेरो घाल्यो. अल्प सैन्य-
ाळो धुंधुमार राजा नगरनी अंदरज रह्यो बहार नीकळ्योज नहि. ए प्रमाणे घणा
दिवसो व्यतीत थतां धुंधुमार राजाए कोइ निमित्तियाने पूछ्युं के 'मारो जय थशे के
पराजय!' निमित्तिये कह्युं के 'हुं निमित्त जोइने कहीश.' पछी पेला निमित्तियाए
क्यां आवीने घणां बाळकोने व्हीवराव्यां: एटले ते बाळको भय पामीने नागमासा-
ां रहेला वरदत्त मुनिनी पासे गयां. भयथी आकुळव्याकुळ थयेला ते बाळकोने

काळमांज मूळगुण जे माणातिपातविरमणादि तेने पण तजे छे-उत्तर गुणनो नाश थये सते मूळगुणनो नाश पण थायज छे. कारण के जेम जेम आ जीव प्रमाद-शिथिलता करेछे तेम तेम ते क्रोधादि कषाये करीने भेराय छे." ११७. एटले प्रमाद शिथिलता थवाथी उत्तर गुणनी हानि थायछे, पछी कषायनो उद्भव थवाथी मूळगुणनी हानि थायछे; माटे उत्तर गुण पण तजवा नहि.

जो निच्छएण गिन्हइ, देहच्चाएवि नय धिइं मुअइ ।
सो साहेइ सकज्जं, जह चंदवडिंसओराया ॥ ११८ ॥

अर्थ-" जे माणी निश्चयवडे-स्थिरताए करीने व्रत नियमादि ग्रहण करेछे अने देहत्यागे-माणांत कष्ट माप्त थये सते पण जे धैर्यने मूकता नथी अर्थात् ग्रहित अभिग्रहने तजता नथी ते माणी पोताना मुक्ति साधनरूप कार्यने साधे छे. जेम चंद्रावतंसक राजाए माणांत कष्ट उत्पन्न थये सते पण ग्रहण करेलो अभिग्रह तज्यो नहि तेम बीजाए पण प्रवर्त्तवुं." ११८. अहीं चंद्रावतंसक राजानुं दृष्टांत जाणवुं. ३५.

चंद्रावतंसक राजानुं दृष्टांत.

साकेतपुर नगरमां चंद्रावतंस नामनो राजा हतो. तेने सुदर्शना नामे राणी हती. ते राजा परम श्रावक हतो, अने समकितमूळ श्रावकनां बार व्रतो सारी रीते पाळतो थको राज्य करतो हतो. एक दिवस सभा विसर्जन करी अंतःपुरमां जइ सामायिक करी कायोत्सर्गमुद्राए मनमां एवुं धारीने स्थित थयो के 'ज्यांसुधी आ दीवो बळे त्यांसुधी मारे कायोत्सर्गमुद्राथी अहींज स्थिर रहेवुं.' ए प्रमाणे पहेलो पहोर गयो पछी दीवाने झांखो पडेलो जोइ राजाना अभिग्रहने नहि जाणता दासीए तेमां तेल पूर्युं. ए प्रमाणे बीजो पहोर गयो. एटले फरीने तेल पूर्युं. ए प्रमाणे तेल पूरवाथी चार पहोर सुधी अखंड दीवो बळयो; अने अखंड अभिग्रहवाळा राजाए पण प्रातःकाळे दीवो ओलवाया पछी कायोत्सर्ग पार्यो. परंतु राजा घणो कोमळ होवाथी चार पहोर सुधी एक स्थाने स्थिति करवाने लीधे घणी वेदना अनुभवी विशुद्ध ध्यानथी काळ करी देवलोकमां उत्पन्न थयो.

ए प्रमाणे अन्य मनुष्योए पण दृढता राखवी, एवो आ कथानो उपदेश छे.

सीउण्हखुप्पिवासं, दुस्सिज्जापरिसहं किलेसं च ।
जो सहइ तस्स धम्मो, जो धिइमं सो तवं चरइ ॥११९॥

[illegible]

अर्थ-" जे मुनि शीत परीसह, उष्ण परीसह, क्षुधा परीसह, पिपासा ते तृषा-
ह तथा दुष्ट शय्या ते तृण संस्तारके तद्रूप परीसह अने क्लेश ते लोचादि काय-
तेने सहन करेछे तेने चारित्रधर्म होयछे. जे पुरुष परीसह सहवामां धृतिमान् के०
ढ चित्तवाळा होयछे तेज तपने आचरेछे-आचरी शकेछे. " ११९.

धम्म मिणं जाणंता, गिहिणोवि दृढव्वया किमुअ साहू ।
कमलामेलाहरणे, सागरचंदेण इत्थु वमा ॥ १२० ॥

अर्थ-" आ जिनभाषित धर्मने जाणनारा-तेने सम्यग् प्रकारे समजनारा एवा
य श्रावको पण दृढव्रतवाळा-व्रत धारण करवामां दृढ होय छे, तो पछी साधु केम
तवाळा न होय ? होयज. अहीं कमळामेलाना संबंधमां आवेला सागरचंद्र कुमा-
उपमा अर्थात् तेनुं दृष्टांत जाणवुं."१२० अहीं सागरचंद्र कुमारनो संबंध जाणवो.३६

सागरचंद्र कुमारनुं दृष्टांत.

द्वारिका नगरीमां कृष्ण राजा राज्य करेछे. तेमने बलभद्र नामे मोटा भाइ छे,
निषध नामे पुत्र छे. ते निषधने सागरचंद्र नामे कुमार छे. ते नगरीमां धनसेन
नी पुत्री कमळामेला नामे छे. तेने उग्रसेनना पुत्र नभसेन वेरे आपेली छे.

एकदा नभसेनने घेर नारद मुनि आव्या. ते वखते नभसेने क्रीडामां व्यग्र चित्त
ो लीधे तेमने आदर आप्यो नहि; तेथी अति क्रोधित थइ नारद मुनि त्यांथी
ा सागरचंद्रने घेर आव्या. तेणे नारद मुनिनो विनय पूर्वक घणो आदरसत्कार कर्यो
सिंहासन उपर बेसाड्या. पछी सागरचंद्र तेमना पग धोइ हाथ जोडी उभो रहीने
ा लाग्यो के ' हे स्वामिन् ! आपे जोयेलुं, अनुभवेलुं के जाणेलुं आश्चर्यकारी
क कौतुक कहो.' तेना विनयथी रंजित थयेला नारद मुनिए कह्युं के "हे कुमार !
मां कौतुको तो घणा जोवायछे, पण कमलामेलानुं रूप जे में जोयुंछे ते महा आश्च-
क छे. एना जेवुं रूप कोइ पण स्त्रीनुं नथी. जेणे ए स्त्रीने जोइ नथी ते माणसनो
र वृथा छे, परंतु तेना मातापिताए तेने नभसेनने आपीने काच अने मणिनी पेठे
अयोग्य संबंध कर्योछे." ए प्रमाणे कही सागरचंद्रना मनमां प्रीति उत्पन्न करीने
मुनि कमळामेलाना मंदिरे आव्या. तेणे पण नारद मुनिनो अति सत्कार कर्यो अने
के ' कांइक आश्चर्यकारी वार्ता कहो.' त्यारे नारदे कह्युं के ' जेवुं आश्चर्यकारक
सागरचंद्रनुं छे तेवुं रूप आ पृथ्वीमां बीजा कोइ पुरुषनुं नथी. तेना रूपनी उपमा
उपर तो नथी. तेना रूपमां अने नभसेनना रूपमां मोटो तफावत छे.' ए प्रमाणे
े नारद मुनि उत्पती गया.

गाथा १२०-आहरणे-दृष्टांते इत्थुवमा-अत्रोपमा.

ळानो मेळाप करावनारो तारो काको छुं. माटे आंखो उघाड अने सारी रीते जो. हो! कामांधपणुं केवुं छे! कह्युं छे के—

दिवा पश्यति न घूकः, काको नक्तं न पश्यति ।
अपूर्वः कोऽपि कामांधो, दिवा नक्तं न पश्यति ॥

" घुवड दिवसे जोइ शकतो नथी, कागडो रात्रिए जोइ शकतो नथी, पण कामांध तो कोइ अपूर्व अंध छे के ते दिवसे तेमज रात्रिए—कोइ वखत जोइ शकतो नथी." एटलुं कहेतां सागरचंद्रे काकाने जोया एटले ते तेना चरणमां पड्यो; अने पोतानो अविनय खमावी लज्जा मूकीने बोल्यो के ' हे तात! आप बोल्याछो के हुं कमलामेलानो मेळाप करावनार छुं तो ते वात सत्य करो. सत्पुरुषो पोतानुं बोलेलु पाळेछे.' कह्युं छे के—

जं आलंतेणवि सज्जणेण, जं भासियं मुहे वयणं ।
तव्वयणसाहणत्थं, सप्पुरिसा हुंति उज्जमिया ॥

" बोलतां बोलतां सज्जनो पोताने मुखे जे वचन बोलेछे ते वचन साधवाने—सत्य करवाने माटे सत्पुरुषो उद्यमवंत होयछे." वळी सत्पुरुषो परोपकार करवामां पण कुशळ होयछे. कह्युं छे के—

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥

" मन वचन अने कायामां पुण्यरूपी अमृतथी भरेला, अनेक प्रकारना उपकारोथी आखा त्रिभुवनने प्रसन्न करनारा अने हमेशां अन्यना परमाणु जेवा अल्प गुणोने पण पर्वत जेवा मोटा करीने स्वहृदयमां आनंद पामता एवा कोइकज सत्पुरुषो होय छे." ए कारणथी हे काका! कमलामेलानो मेळाप मने करावो.'

आ प्रमाणे सांभळीने शांबकुमारे ते वात कबुल करी. पछी पोतानी विद्याना बळथी कमलामेलाना घर सुधी सुरंग देवरावीने ते सुरंगद्वाराए कमलामेलानुं हरण कर्युं अने द्वारिका नगरीना उद्यानमां आणी. पछी नारद मुनिने बोलावीने तेनी साक्षीए शुभ मुहूर्ते सागरचंद्रनी साथे तेने परणावी. अहीं ते कन्याना मातपिताए कन्यानुं हरण थयुं एम जाणी सर्वत्र तपास करी तो ते वनमां मालम पडी, एटले तेमणे कृष्णनी

आगळ फरियाद करी के 'हे स्वामिन्! आप समर्थ नाथ छतां हुं अनाथ एम जाणी मारी कन्या कोइएक विद्याधरे हरण करीने वनमां मूकीछे.' ते सांभळी सैन्य सहित देवकीपुत्र (कृष्ण) त्यां आव्या. तेने आवतां जोइ नारदनी साथे सन्मुख आवी पिताना पगमां पड्यो अने सर्व हकीकत जणावी. 'पोताना पुत्रनुं कृत्य छे' एम जाणी कृष्ण मौन थइने उभा रह्या. पछी सागरचंद्रे आवी नभसेनना चरणमां पडी तेने खमाव्यो, पण नभसेने तेने खमाव्यो नहि.

हवे सागरचंद्र कमलामेलानी साथे विषयसुख भोगवतां केटलोक काळ व्यतीत थये पछी एक दिवस भगवान नेमि प्रभुनी देशना सांभळीने तेणे श्रावकनां बार व्रतो अंगीकार कर्यां. दररोज स्वव्रतनुं पालन करता सता एक वखत श्रावकनी पडिमानुं पालन करतां ते स्मशानभूमिमां जइने कायोत्सर्गे र ो. ते वखते नभसेन जे हमेशां तेनुं छिद्र शोधतो हतो ते सागरचंद्रने स्मशानमां कायोत्सर्गे रहेलो जोइने विचार करवा लाग्यो के 'आजे वखत बराबर मळयो छे, तेथी मारी कमलामेलाना भोक्ता सागरचंद्रने आज मृत्यु पमाडुं' एमाणे विचारीने तेना माथा उपर माटीनी पाळ बांधीने तेमां धगधगता खेरना अंगारा भरी ते अन्यत्र चाल्यो गयो. अहीं तेनी वेदनाने समभावे सहन करतो निश्चल मनवाळो सागरचंद्र शुभध्यानथी मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो.

आ प्रमाणे श्रावके पण आवा उपसर्गो सहन कर्याछे तो साधुए तो विशेषे करी सहन करवा जोइए, एवो आ कथानो उपदेश छे.

देवेहिं कामदेवो, गिहीवि नवि चालिओ तवगुणेहिं।
मत्तगयंद भुयंगम, रक्खसघोरट्टहासेहिं ॥ १२१ ॥

अर्थ—' कामदेव नामना गृहस्थ श्रावकने पण तप गुणथी मदोन्मत्त हस्ती [illegible] [illegible] अट्टहास [illegible] देवता चळावी शक्यो नहि." अर्थात् देवकृत [illegible] [illegible] श्रावक छतां पण चळयो नहि तो मुनि तो केनाथी चळे? आ [illegible] [illegible] ग्रहण करवुं. अहीं कामदेव श्रावकनो संबंध जाणवो.

कामदेव श्रावकनुं वृत्तांत.

[illegible] जितशत्रु नामे राजा राज्य करतो हतो. ते [illegible] [illegible]) वसतो हतो, ते बहु धनधान्यथी [illegible] [illegible] एक दिवस महावीर स्वामी [illegible] [illegible] (जिनधर्म [illegible] [illegible]

नीय कर्मना उपशमादिकथी अरिहंते कहेला जीवादि तत्त्वोमां सम्यग् श्रद्धा थवी म्यक्त्व जाणवुं; अथवा आत्माना शुभ परिणाम एटले ज्ञान दर्शन चारित्र रूप त्रण ना अध्यवसाय ते सम्यक्त्व जाणवुं. कह्युं छे के—

अरिहं देवो गुरुणो. सुसाहुणो जिणमयं महप्पमाणं ।
इच्चाइ सुहो भावो, सम्मत्तं विंति जगगुरुणो ॥

" अरिहंत देव, सुसाधु गुरु अने जिनमत ए मारे प्रमाण छे, इत्यादि शुद्ध ने जगत्गुरुओ समकित कहेछे." अर्हतधर्मनुं मूळ समकित छे. कह्युं छे के 'श्राव- बार व्रतना त्रेरसें चोराशी क्रोड, बार लाख, सत्तावीश हजार, बसो ने बे थायछे; ए सर्व भांगाओमां समकित पहेलो भांगो छे. समकित विना बीजा पण भांगानो संभव नथी. कह्युं छे के—

मूलं दारं पइठाणं, आहारो भायणं निही ।
दुवक्क साविधम्मस्स सम्मत्तं परिकित्तियं ॥

" दुछक्क बे.० बार प्रकारना श्रावकधर्मनुं मूळ, द्वार, प्रतिष्ठान, आधार, भाजन निधि सम्यक्त्व कहेलुं छे. "

सम्यक्त्वनुं फळ आ प्रमाणे—

अंतोमुहुत्तमित्तंपि, फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं ।
तेसिं अवड्ढपुग्गल, परिअट्टो चेव संसारो ॥ १ ॥
जं सक्कइ तं कीरई, जं नसक्कइ तयंमि सद्दहणा ।
सद्दहमाणो जीवो, वच्चइ अयरामरं ठाणं ॥ २ ॥

अंतर्मुहूर्त मात्र पण जे जीवने समकित फरस्युं होय तेने अर्ध पुद्गलपरावर्तन रहेछे-वधारे रहेतो नथी व्रतादि जे कांइ बनी शके ते करवुं अने जे न बनी मां श्रद्धा राखवी ए प्रमाणे सर्दहनारो जीव पण अजरामर स्थानकने पामे थारे समकित मूळ रूप व्रतो समकित सहित सारी रीते आराध्यां होय तो कमां ने परलोकमां बहु फळदायी थायछे "

ना प्रमाणे भगवाननी देशना सांभळीने परम संवेग जेने प्राप्त थयेल छे एवो देव [illegible] इच्छापूर्वक धर्म धारी थयो. अने जीवाजीवादि तत्त्वनो [illegible] आवकधर्मने पाळवा लाग्यो.

एक दिवस सौधर्म इंद्रे तेनां वखाण कर्यां के 'कामदेव श्रावक दृढधर्मी छे, पण तेने धर्मथी चळाववाने समर्थ नथी. अरे शुं तेनुं धैर्य छे!' ए प्रमाणे कामदेवनी बहु प्रशंसा सांभळी कोइ एक मिथ्यादृष्टि देव देवेन्द्रनी वाणी अन्यथा करवाने [illegible] कामदेव पासे आव्यो. ते अवसरे कामदेव पोसह करी पोषधशाळामां कायोत्सर्ग मुद्राए रह्यो हतो. पेलो देव मध्य रात्रिए भयंकर राक्षसनुं रूप ग्रहण करी हाथमां [illegible] जिह्वा जेवुं खड्ग लइ पादप्रहारथी भूमिने कंपावतो, मुख पहोळुं करी अट्टहास [illegible] कामदेवनी पासे आव्यो अने बोल्यो के 'आ पच्चख्खाणने तुं छोडी दे अने कायोत्सर्गमुद्रानो त्याग कर. नहितो आ खड्गवडे तारा कुकडे कुकडा करी नाखीश, जेथी तुं आर्तध्यानथी अकाळे मृत्यु पामीश.' ए प्रमाणे वारंवार कहे [illegible] हतां [illegible] ध्यानथी चलित थयो नहि. पछी क्रोध उत्पन्न थवाथी ते देवे खड्गवडे [illegible] शरीर छेद्युं, जेथी तेने घणी वेदना थवा लागी, पण ते ध्यानथी क्षोभ पाम्यो नहि. पछी देवे पर्वत जेवुं मोटुं हाथीनुं रूप विकुर्व्युं, अने सुंढने उछाळतो भयंकर हाथीना रूपे कामदेव प्रत्ये बोल्यो के 'हे कामदेव! आ व्रतोने छोडी दे अने आ [illegible] [illegible] त्याग कर, नहितो आ सूंढवडे [illegible] उपाडी, आकाशमां उछाळी [illegible] [illegible] तने दंतूशळे मारीश.' आ प्रमाणे कहेतां छतां पण ते ध्यानथी चलित थयो नहि, [illegible] ते सूंढवडे तेने उछाळीने पृथ्वी उपर पछाड्यो अने दंतप्रहारोथी [illegible] मार्यो; छतां ते जरा पण क्षोभ पाम्यो नहि अने मनमां विचार करवा लाग्यो के

सर्वेभ्योऽपि प्रियाः प्राणास्तेऽपि यान्त्वधुनापि हि ।
न पुनः स्वीकृतं धर्मं, खण्डयाम्यल्पमप्यहम् ॥

'सर्व वस्तु करतां प्राण वहाला होय छे परंतु ते पण हमणां भले जाओ, [illegible] मात्र पण खंडित करीश नहि." [illegible] देव [illegible] [illegible] काया छे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वखाणवा योग्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] त्याग कर, [illegible] [illegible]

अत्यल्पादप्यतीचाराद्, धर्मस्यासारतैव हि ।
अंघ्रिकंटकमात्रेण, पुमान्पंगूयते न किम् ॥

" अति अल्प अतीचारथी पण धर्मनो निःसारता थइ जायछे. पगमां मात्र ो वागवाथी शुं पुरुष लंगडो थतो नथी !" थायछे. ए प्रमाणे निश्चय आत्मावाळो माणोने सर्परूप देव तेने डस्यो. अत्यंत दुःख उत्पन्न करनारा ते दंशथी कामदेवनुं र काळज्वरथी जाणे पीडायलु होय तेवुं थइ गयुं अने तेने घणी वेदना थवा लागी, ते ध्यानथी चलित थयो नहि. ते मनमां विचार करवा लाग्यो के-

खंडनायां तु धर्मस्यानंतैरपि भवैर्भवैः ।
दुःखांतो भविता नैव, गुणस्तत्र च कश्चन ॥

" धर्मनुं खंडन करवाथी अनंता भवो भमतां पण दुःखनो अंत आवतो नथी तेमां कोइ जातना लाभ तो छेज नहि. "

दुखं तु दुष्कृताज्जातं, तस्यैव क्षयतः क्षयेत् ।
सुकृतात्तत्क्षयश्च स्यात्, तत्तस्मिन् सुदृढो न कः ॥

" दुःख दुष्कृतथी उत्पन्न थायछे अने दुष्कृतनो क्षय करवाथी तेनो क्षय थायछे; तेनो क्षय सुकृतथी थायछे, त्यारे ते सुकृतमां कोण प्राणी सुदृढ न होय ? " ए ण कामदेवने शुभध्यानपरायण जाणो देवे पोतानुं स्वरूप प्रगट कर्युं अने तेने सारी खमाव्यो. पछी ते कहेवा लाग्यो के ' हे कामदेव ! तने धन्य छे, तुं पुण्यशाळो छे ते जीवितनुं फळ मेळव्युं छे. सौधर्म देवलोकमां इंद्रे तारी प्रशंसा करी ते शब्दे पने श्रद्धा न आववाथी हु अहीं तारी परीक्षा करवाने माटे आव्यो हतो, परंतु जे ण इंद्रे तारी प्रशंसा करी हतो ते प्रमाणेज में तारो नजरे जोयुंछे. " आ प्रमाणे स्तुति करीने ते देव पोताने स्थानके गया.

प्रातःकाळे कायोत्सर्गने पारो कामदेव श्रावक समवसरणमां भगवानने वांदवा . त्यां तेने भगवंते कर्युं के ' हे कामदेव ! आज मध्यरात्रिए कोइ देवे तने उप र्ग कर्यो ए वात खरी छे ? ' कामदेवे कर्युं के ' हे स्वामी ! ते वात खरी छे. पछी गवाने सर्व साधुओ अने साध्वीओने बोलावीने कर्युं के " हे देवानुप्रियो ! ज्यारे आ कामदेव श्रावकधर्ममां रहेतो सतो पण देवोए करेला उपसर्गोने सहन करेछे तो श्रुतना ण साधुओए तो ते सम्यक प्रकारे सहन करवाज जोइए. " आ प्रमाणेनुं भगवाननुं वचन विनय पूर्वक सघळा साधु साध्वीए सांभळ्युं अने अंगीकार कर्युं.

आ कामदेव धन्यात्मा छे के जे कामदेवनी भगवाने पोताना मुखे प्रशंसा कर्‍युं छे के—

धण्णा ते जिअलोए, गुरवो निवसन्ति जस्स हिययंमि।
धन्नाण वि सो धन्नो, गुरूणहियए वसई जो उ ॥

“ आ जीवलोकमां ते पुरुष धन्य छे के जेना हृदयमां गुरुमहाराज वसे छे, ते तो धन्यमां पण धन्य छे के जे गुरुमहाराजना हृदयमां वसे छे. ”

आ प्रमाणे लोकोथी स्तुति करातो कामदेव भगवानने वांदी पोताने घेर आव्यो. पछी तेणे श्रावकोनी दर्शन आदि अग्यार प्रतिमाओने सारी रीते आराधी अने [illegible] वर्ष सुधी श्रावकपर्याय पाळी छेवटे एक मासनी संलेखणावडे सारी रीते सर्व पा[illegible] आलोचना प्रतिक्रमणा करीने काळ मासे काळ करी सौधर्म नामना देवलोकमां [illegible] णाभ नामना विमानमां चार पल्योपमना आयुष्यवाळो देव थयो. त्यांथी च्यवीने म[हा]विदेहमां सिद्धिपदने पामशे.

जेवी रीते कामदेवे श्रावक छतां पण भयंकर उपसर्गो सहन कर्या तेवी [रीते] मोक्षार्थी साधुओए पण उपसर्गो सहन करवा, एवो आ कथानो उपदेश छे.

भोगे अभुंजमाणावि, केइ मोहा पडंति अहर गइं।
कुविओ आहारत्थी, जत्ताइजणस्स दमगुव्व ॥ १२२ ॥

अर्थ—“ केटलाक प्राणीओ भोगने भोगव्या विना तेनी इच्छा करता सता [illegible] अज्ञान, ते थकी अधोगति—नरक तिर्यंच गतिमां पडे छे कोनी जेम? या[त्रा]-[illegible] अर्थे वनमां गयेला लोकोनी उपर (आहार न आपवाथी) कोपाय[मान] [illegible] आहारना अर्थी द्रमक एटले भिक्षुकनी जेम. ” १२२

[illegible] दुर्ध्यान चिंतववाथी जेम तेणे दुर्गतिरूप फळ प्राप्त कर्युं तेम [illegible] [illegible]. अहीं ते द्रमकनो संबंध जाणवो. २८

द्रमकनुं दृष्टांत.

[illegible] नगरने विषे कोइ एक उत्सवमां सर्व लोको वैभारगिरि उपर [illegible] [illegible]. ते नगरने विषे कोइ एक भिक्षुक भोजननी इच्छाथी नगरमां भमता [illegible] [illegible] त्यां पण ते [illegible] पडयो. पण अंतराय कर्मना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गइ [illegible] [illegible]

[illegible]

गरना लोको अति दुष्ट छे. कारणके तेओ खायछे, पीएछे, इच्छा मुजब भोजन
, परतु मने जरा पण खावानुं आपता नथीः तेथी हुं वभारगिरि उपर चडी
शिला गवडावीने आ सर्व दुष्टोने चूर्ण करी नांखुं " ए प्रमाणे विचार करतो
ध्यानथी वैभारगिरि उपर चडयो अने त्यांथी एक मोटी शिला गवडावी ते शिला
जोइ सर्व लोको नासो दूर गया. परतु तेज भिक्षुक दुर्भाग्यने लीधे ते गवडती
नी नीचे आवी गयो अने तेना भारथी दवाइ जइ तेनुं बधुं शरीर चूर्ण थइ गयुं;
ते रौद्र ध्यानवडे मृत्यु पामी सातमी नरके गयों. अहो! मननो व्यापार केवो
ान छे! कह्युं छे के–

मनोयोगो बलीयांश्च भाषितो भगवन्मते।
यः सप्तमीं क्षणार्द्धेन नयेद्वा मोक्षमेव च॥

" सर्व योगोमां मननो योग बळवान छे, ए प्रमाणे भगवाने कह्युं छे. कारणके
नो योग अर्ध क्षणमां सातमी नरके लइ जायछे अथवा मोक्षे पण लइ
छे. " वळी–

मन एव मनुष्याणां, कारणं बंधमोक्षयोः।
यथैवालिंग्यते भार्या, तथैवालिंग्यते स्वसा॥

" मनुष्योने बंध तथा मोक्षनुं कारण मनज छे. कारणके जेवी रीते भार्यानुं
लिंगन करायछे तेवीज रीते (मळती वखते) बेनने पण आलिंगन करायछे. "
रंतु तेमां मनना विचारनोज तफावत छे).

एवी रीते जेम ते भिक्षुके रौद्र ध्यानथी नरकनुं दुःख मेळव्युं तेवीज रीते अन्य
नरकनुं दुःख मेळवेछे माटे मनथी पण भोगनी इच्छा न करवी, एवो आ कथानो
श छे.

भवसयसहस्सदुलहे, जाइजरामरणसागरुत्तारे।
जिणवयणंमि गुणायर, खणमवि माकाहिसि पमायं॥१२३॥

अर्थ–" हे गुणाकर! लाखो भवे पण पामवा दुर्लभ अने जन्म जरा मरण रूप
द्रथी पार उतारनार एवा जिन वचनने विषे क्षणमात्र पण प्रमाद न करीश. "
२३. अर्थात् प्रमाद तजीने जिनवचन आराधवा योग्य छे.

जं न लहइ सम्मत्तं, लद्धूणवि जं न एइ संवेगं।
विसयसुहेसु य रज्जइ. सो दोसो रागदोसाणं॥१२४॥

गाथा १२३–दुलहे। गाथा १२४–सम्मत्त। न एइ–न प्राप्नोति.

अर्थ—"आ जीव जे सम्यक्तने पामतो नथी, सम्यक्त पाम्या छतां पण जे पामतो नथी अने विषयसुख जे शब्दादि तेने विषे जे रक्त थायछे ते सर्वे राग, द्वेषज दोष छे." १२४. तथी दोषना हेतु एवा रागद्वेषज तजवा योग्य छे. अर्थात् ने वैराग्य—संसारथी उदासी भाव ने मोक्षनो अभिलाष समजवो.

तो बहुगुणनासाणं, सम्मत्त चरित्त गुणविणासाणं ।
न हु वस मागंतव्वं, रागदोसाण पावाणं ॥ १२५ ॥

अर्थ—"ते माटे बहु गुणनो नाश करनार अने सम्यक्त ते शुद्ध श्रद्धान, ते पंचाश्रवनिरोध अने गुण ते उत्तरगुण तेनो विनाश करनार एवा रागद्वेष पाप तेने वश निश्चे न आववुं." १२५.

नवि तं कुणइ अमित्तो, सुट्ठुवि सुविराहिओ समत्थोवि
जं दोवि अणिग्गहिया, करंति रागोय्य दोसोय्य ॥ १२६

अर्थ—"जेवो अनर्थ निग्रह नहि करेला—नहि रोकेला एवा राग अने द्वेष करेछे तेवो अनर्थ अतिशय सारी रीते विराधेलो अने समर्थ एवो पण अमित्र जे [illegible] करी शकतो नथी." १२६ अर्थात् शत्रु तो विराध्यो सतो एक भवमां मरण [illegible] रागद्वेष तो अनंता जन्ममरण आपे माटे रागद्वेषज तजवा योग्यछे.

इहलोए आयासं अजसं च करंति गुणविणासं च ।
पसवंति परलोए सारीरमणोगए दुक्खे ॥ १२७ ॥

अर्थ—"रागद्वेषनां फळ कहेछे—आ लोकमां आयास के० शरीर ने मन [illegible] [illegible] अपयश अने गुण ते ज्ञान दर्शन चारित्र तेनो विनाश करेछे अने पर[illegible] [illegible] ने मन [illegible] दुःखो प्रसवेछे—आपेछे अर्थात् रागद्वेष [illegible] [illegible] होवाथी तेमज अनर्थमूळक होवाथी परलोकमां पण अनेक प्रकारनां [illegible] [illegible]." १२७

[illegible] अहो अकज्जं, जं जाणंतोवि रागदोसेहिं ।
[illegible] कडुअं, तंचेव निसेवए जीवो ॥ १२८ ॥

[illegible] अहो एवा अनर्थकारी आ अकार्य छे! [illegible] [illegible] (एवा अनर्थकारी छे एम) जाणतो सतो अने [illegible]

[illegible] गाथा १२८-अनुवृत्त [illegible]

पाक) अतुल (विस्तीर्ण) अने अति कडवां छे एम पण जाणतो मतो तेनेज ते द्रुमनेज अथवा तेना फळने जीव (अमृतरसनी बुद्धिए) फरी फरीने सेवे छे." : तेथी आ संसारवासी जीवोने धिक्कार छे !

५ ६ ७ ८ ९ १० ११
को दुक्खं पाविज्जा, कस्सवि सुक्खेहिं विह्मओ हुज्जा ।
११ १३ १४ १२ २ १ ३ ४
को नवि लभिज्ज मुक्खं, रागदोसा जइ न हुज्जा ॥ १२९ ॥

अर्थ–" जो रागद्वेष न होत तो कोण दुःख पामत ? कोने सुखे करीने विस्मय ? (के अहो आ महासुखी छे) अने कोण जीव मोक्ष न पामत ? अर्थात् सर्व मोक्षे जात." १२९

१ २ ३ ४
माणी गुरुपडिणीओ, अणत्थभरिओ अमग्गचारीय ।
७ ५ ८ ९ १०
मोहं किलेसजालं, सो खाइ जहेव गोसालो ॥ १३० ॥

अर्थ–' जे शिष्य मानी (अहंकारी), गुरुनो प्रत्यनिक (गुरुना अपवाद ...नारो), पोताना अशुद्ध स्वभावथीज अनर्थनो भरेलो अने उत्सूत्र प्ररूपणारूप उन्मा-र्गमां चालनारा होय ते शिष्य फोगट अनेक प्रकारना क्लेश (शिरमुंडन संयमादि) ...ने भोगवेछे. अर्थात निष्फळ तप संयमादि कष्टने सहन करेछे,गोसाळानो जेम."१३०

भगवंतना शिष्याभास गोसाळे जेम फोगट तप संयमादि कष्ट भोगव्युं. उपर ...वेला दोषवाळो होवाथी तेने तप संयमादिनुं कांइ पण फळ प्राप्त थयुं नहीं, तेम जवुं.

१ २ ४ ३
कलहण कोहणसीलो, भंडणसीलो विवायसीलो य ।
५ ६ ७ ८ ९
जीवो निच्चुज्जलिओ, निरत्थयं संयमं चरइ ॥ १३१ ॥

अर्थ–" जे जीव कलह करवाना स्वभाववाळो होय, क्रोध करवाना स्वभाव-वाळो होय, भंडन करवाना स्वभाववाळो होय अने विवाद करवाना स्वभाववाळो होय नित्य प्रज्वलित रहेछे तेथी ते निरर्थक चारित्रने आचरे छे." १३१ अर्थात् क्रोध चारित्रनो विनाश थायछे अने आ बधा क्रोधनाज प्रकारछे, तेथी क्रोधने तजीने ...त्र पाळवुं तेज श्रेयकारी छे.

...था १२९ पिविज्जा । हुज्जा । लभेज्ज । रागदोसा. गाथा १३०-मोह-ल्यर्थ । खाइ मुंजते. ...था १३१-विवागसिलोअ । संजमं.

परस्पर राडो पाडीने बोलवुं ते कलह समजवो. पाक्का गुणने सहन न शकवानो स्वभाव ते क्रोधनशील समजवो, यष्टि मुष्टि विगेरेथी युद्ध करवानो भाव ते भंडनशील जाणवो अने वचनवडे वादविवाद करवो ते विवादशील

जह वणदवो वणं, दवदवस्स जलिओ खणेण निद्दहइ ।
एवं कसायपरिणओ, जीवो तव संजमं दहइ ॥ १३२ ॥

अर्थ–" जेम वनमां लागेलो दावानळ उतावळो उतावळो ज्वलित थइ मात्रमां आखा वनने बाळी नाखेछे तेम कषायपरिणत कषाय परिणाम वतता तपसंयमने पण शीघ्र बाळे छे–नाश पमाडेछे." १३२. तेथी समतान चारित्र मूळछे एम समजवु.

परिणामवसेण पुणो, अहिओ ऊणयरउ व्व हुज्ज खओ ।
तह वि ववहारमित्तेण, भन्नइ इमं जहा थूलं ॥ १३३ ॥

अर्थ–' वळी परिणामने वशे एटले जेवा जेवा परिणाम थाय ते प्रमाणे अधिक अथवा ओछो तपसंयमनो क्षय थाय छे, तथापि व्यवहार मात्रे करीने आ कहेवामां जेम स्थूल क्षय थायछे." १३३. परंतु ने व्यवहारनयनु वचन समजवुं. निश्चयथी तो कषायना तीव्रतर परिणामे करीने चारित्रनो तीव्रतर क्षय थायछे अने मंद परिणामे मंद क्षय थायछे, तेथी जेवा जेवा परिणाम ते अनुसारे क्षय थायछे एम जाण

फरुसवयणेण दिणतवं, अहिक्खिवंतो हणइ मासतवं ।
वरिसतवं सवमाणो, हणइ हणंतो अ सामन्नं ॥ १३४ ॥

अर्थ–"कठण वचन कहेवाथी–गाळ देवा विगेरेथी ते दिवसना करेला तपने पुन्यने हणेछे (क्षय पमाडेछे), अधिक्षेप एटले अत्यंत कोप करीने जाति कुळ प्रगट करतो सतो महिनाना तपसंयमनो क्षय करेछे, 'तारुं आवु थशे, थजो' एम देतो सतो वर्ष पर्यंतना तपसंयमने हणेछे अने यष्टि खड्गादि वडे परने घात करतो सतो जन्म पर्यंतना श्रामण्यने (श्रमणपणाने) हणे छे." १३४.

आ बधा व्यवहारिक वचनो समजवां.

अह जीविअं निकिंतइ, हंतूण य संजमं मलं चिणइ ।
जीवो पमायबहुलो, परिभमइ जेण संसारे ॥ १३५ ॥

गाथा १३२ दववदवस्स न [illegible] दहइ । गाथा १३३ [illegible] ।
गाथा १३४ फरुसवयणेण । अहिक्खिवंतो । गाथा १३५ [illegible] ।

अर्थ-" अथ एटले कषायनां फळ कह्यांथी अनंतर प्रमादनां फळ कहेछे-
बहुल एटले बहु प्रमादवाळो (प्रमादपरवश) संसारी जीव संयम रूपी
तने हणेछे अने संयमने हणीने पापकर्म रूप मळने पुष्ट करेछे, जेणे करीने ते
रमां परिभ्रमण करेछे. " १३५. तेथी प्रमादने परिहरवा-त्यजवा.
अहीं संयमना-पांच आश्रवनो त्याग, पांच इंद्रियोनो निग्रह, चार कषायनो
अने त्रणदंडनो विरति रूप सत्तरभेद समजवा.

अक्कोसण तज्जण तालणा, अवमाण हीलणाओ अ ।
मुणिणो मुणियपरभवा, दढप्पहारिव्व विसहंति ॥ १३६ ॥

अर्थ-" जेमणे अग्रेतन-परभवनुं स्वरूप जाण्युं छे एवा मुनिओ आक्रोश, तर्जना
ना, अपमान अने हिलणा विगेरे दृढप्रहारीनी जेम सहन करेछे. " १३६
जेम दृढप्रहारीए सहन कर्युं तेम अन्य बीजाओए पण सहन करवुं आक्रोश ते श्राप
, तर्जन ते भ्रूकुटि भंगादिवडे निर्भर्त्सना करवी, ताडन ते लाकडी विगेरेथी कुटवा,
मान ते अनादर अने हीलना ते जात्यादिनुं उद्घाटन करीने निंदवा-ए प्रमाणे
नवुं. अर्थात् ए सर्व सहन करवुं एवो आ गाथानो उपदेश छे. अहीं दृढप्रहारीनुं
हरण समजवुं ३९

दृढ प्रहारीनुं वृत्तांत.

माकंदी नामनी मोटी नगरीमां समुद्रदत्त नामे एक ब्राह्मण वसतो
. तेने समुद्रदत्ता नामे भार्या हती. एक दिवस तेणे एक पुत्रने जन्म
यो. ते प्रतिदिन वधतो सतो सेंकडो अन्याय करेछे. युवावस्था प्राप्त थतां ते लोकोने
छे, खोटुं बोलेछे, चोरी करेछे, परस्त्रीसमागम करेछे, भक्ष्याभक्ष्यना विवेकने
ाता नथी, कोइनी शीखामण मानतो नथी, मातापितानी अवज्ञा करेछे, ए प्रमाणे
अन्यायाचरणमां चतुर एवो ते शहेरमां भम्या करेछे एक दिवस राजाए तेना
वी हकीकत सांभळीने आ अयोग्य छे एम जाणी दुर्गपाळने बोलावीने कह्युं के
वेरस वाजित्रो वगाडतां आ अधम ब्राह्मणने शहेरनी बहार काढी मूको ' लोकोए
ए बाबतमां अनुमोदन आप्युं. दुर्गपाळे ते प्रमाणे कर्युं. ते ब्राह्मण पण मनमां
ेष राखी नगरमांथी नीकळी भीलपल्लीमां गयो. त्यां ते भिल्लपतिने मळयो.
ल्लपतिए पण ' अमारा काममां आ कुशळ छे ' एवुं लक्षणोथी जाणी तेने स्वपुत्र
कि स्थापित कर्यो अने पोताना घरनो सघळो संपत्ति तेने स्वाधीन करी. ते
ारपणे विचरेछे. त्यां रहेतो सतो ते घणा जीवोने निर्दयपणे मारे छे तेथी लोकमां
हारी ए नामथी ते प्रसिद्ध थयो

गाथा१३६-३ कोसण । ताडणा३।

एक दिवस ते मोटुं धाडुं लइने कुशस्थल नगर लुंटवाने गयो. ते वखते ते नगरमां देवशर्मा नामनो एक दरिद्री ब्राह्मण वसतो हतो. ते दिवसे घणा मनो[illegible] पूर्वक तेणे पोताना घर आगळ क्षीरनुं भोजन रंधाव्युं हतुं, अने पोते स्नानार्थे नदी[illegible] गयो हतो. ते अवसरे कोइ एक चोरे ते ब्राह्मणना घरमां दाखल थइ ते क्षीरनुं भाज[illegible] उचाड्युं. ते जोइने रुदन करतां करतां ते ब्राह्मणनां बाळकोए नदीए जइ तेमना पिताने ते कह्युं. क्षुधातुर थयेल ते ब्राह्मण पण जल्दी घेर आवी कोपित था[illegible] मोटी भोगळ लइ मारवाने माटे ते चोर पासे आव्यो. बंने परस्पर लडवा लाग्या ते वखते तेना दृढप्रहारीए आवीने खड्गथी ब्राह्मणने मारी नांख्यो. तेने भूमिपर पडेलो जोइने क्रोधावेशथी धसतां थइ पोतानुं पूछडुं ऊंचुं करी ते ब्राह्मणना घरनी गाय ते दृढप्रहारीने मारवाने माटे दोडी. परन्तु दृढप्रहारीए भयंकर परिणाम पूर्वक ते गायने पण मारी नांखी. ते अवसरे पोताना पतिने मरेलो जोइने आंसु पाडती, विलाप करती [illegible] ते ब्राह्मणनी सगर्भा स्त्री त्यां आवी. तेने पण ते [illegible] तेना पेट [illegible] करतां तेनी कुक्षिमां रहेलो गर्भ [illegible] ते गर्भने भूमि उपर तरफडतो जोइने ते निर्दय दृ[illegible] [illegible] थइ. ते विचारवा लाग्यो के "अरेरे ! अति भय[illegible] [illegible] विनाश था अनाथ अने गर्भनी अवस्थाने [illegible] [illegible] पण हत्यानो निश्चय नरकगति प्राप्त थाय [illegible]

अने इंटोवडे ते गळा सुधी ढंकाइ गयो. छेवटे पोतानो श्वास रुंधाय छे एम जाण्युं त्यारे कार्योत्सर्गने पारी ते बीजे दरवाजे जइने काउस्सग्ग करी उभो रह्यो. त्यां पण तेणे तेज प्रमाणे परीसहोने सहन कर्या. पछी त्रीजे दरवाजे गया पछी चोथे दरवाजे गयो. त्यां गाळ, मार अने प्रहार विगेरे सहन करतां जेणे चतुर्विध आहारनुं पच्चक्खाण कर्युं छे एवा ते दृढप्रहारीने छ मास व्यतीक्रम्या, परंतु ते पोताना नियमथी जरा पण चलित थयो नहि. विशुद्ध ध्यानथी तेनुं अंतःकरण सर्वावडे निर्मळ थयुं अने घातिकर्मनो क्षय थवाथी तेने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी घणा जीवोने प्रतिबोध पमाडी दृढप्रहारी केवली मोक्षे गया.

ए प्रमाणे बीजा पण जेओ आक्रोश आदि अनेक प्रकारना उपसर्गोने सहन करेछे तेओ अनंत सुखना भोगवनारा थायछे, एवो आ कथानो उपदेश छे.

अहमाहओत्ति नय पडिहणंति, सत्तवि नय पडिसवंति ॥
मारिज्जंतावि जइ, सहंति सहस्समल्लुव्व ॥ १३७ ॥

अर्थ—" मुनिओ आणे मने हण्योछे एम जाण्या छतां पण तेने हणता नथी, कोइए श्राप दीधा छतां पण तेने सामो श्राप देता नथी अने मार्या छतां पण ते सहन करेछे. सहस्रमल्लनी जेम. " १३७

अहीं हण्योछे एटले पीडा उपजावी छे—सामान्य प्रहारादि करेलछे एम समजवुं जेम सहस्रमल्ल साधुए प्रहारादि सहन कर्या तेम बीजाए पण सहन करवा. अत्र सहस्रमल्लनुं दृष्टांत जाणवुं. ४०

सहस्रमल्लनी कथा.

शंखपुर नगरमां कनकध्वज राजा राज्य करतो हतो तेनी सभामां वीरसेन नामनो कोइ सुभट राजसेवा करतो हतो. राजाए तेने पांचसे गाम आपवा मांडया छतां तेणे ते लीधां नहि तेणे कह्युं के ' हे राजन् ! मारे आपनी सेवा पगार पण लीधा वगर करवी जोइए आप प्रसन्न थशो तो सघळुं सारुं थशे. ' ए प्रमाणे कही हंमेश राजानी सेवा करेछे हवे ते वखते कालसेन नामना ते राजानो एक दुर्जय शत्रु छे, ते कोइनाथी वश थतो नथी. अनेक गामो ने शहेरोने ते उपद्रव करेछे. एकदा सभामां बेठेला राजाए कह्युं के ' एवो कोइ बळवान छे के जे कालसेनने जीवतो पकडीने मारी पासे लावे ?' राजानुं ते वचन सांभळीने सघळा मौन रह्या, कोइ बोल्युं नहि. एटले वीरसेन बोल्यो के ' हे राजन् ! आप राजाओने शामाटे कहोछो ? मने आज्ञा करो तो हुं एकलो जइ तेने बांधीने आपनी समक्ष लावुं. ' राजाए आज्ञा

गाथा १३७-उजड सहस्समल्लुव्व, सहस्समल्लुव । अहमाहतः इति । शप्ता अपि-शापिता अपि । यति ।

आपी एटले उपर प्रमाणेनी राजा पासे प्रतिज्ञा करी तैयार थइने मात्र खड्ग लइ [illegible] लोज कालसेननी सामे चाल्यो. कालसेन पण पोतानुं लश्कर लइ सन्मुख आ[illegible] मोटुं युद्ध थतां कालसेननुं सघळु सैन्य नासी गयुं. एटले वीरसेन एकला [illegible] कालसेनने बांधीने राजानी समीपे लाव्यो. राजा पण वीरसेननुं तेवुं बळ जो[illegible] आश्चर्य पाम्यो, अने 'जे लाखो माणसोथी जीती शकाय तेवो नहोतो तेने [illegible] मात्रमां आणे पराजित कर्यो ' ए प्रमाणे कही सभाना लोको पण तेनी प्रशंसा क[illegible] लाग्या.संतुष्ट थयेला राजाए तेने लक्षद्रव्य आपी सहस्रमल्ल एवुं तेनु नाम स्थापन [illegible] अने तेने एक देशनो राजा बनाव्यो. पछी कालसेन पासे पण पोतानी आज्ञा मना[illegible] तेनुं राज्य तेने पाछु सोंप्युं.

सहस्रमल्लने पोताना देश उपर राज्य करतां केटलाक दिवसो व्यतिक्रम्या ए[illegible] सुदर्शनाचार्ये कहेला धर्मना श्रवणथी तेने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी तेणे राज्य[illegible] दइने चारित्र ग्रहण कर्युं.ते सामायिकथी मांडीने अगियार अंग भण्यो. अनुक्रमे [illegible] त्रि पाळतां तेणे जिनकल्पविहार अंगीकार कर्यो. ते प्रमाणे विहार करतां एकदा [illegible] कालसेन राजाना नगरनी समीप भागमां कायोत्सर्गमुद्राथी रह्या.कालसेने तेने जो[illegible] [illegible] 'आ पापीए मने जीवतो पकडीने कनकध्वज राजा पासे लइ ग[illegible] [illegible] विनाशी तेना पर [illegible] थइने ते दुष्ट कालसेने सहस्रमल्ल मानुने [illegible] [illegible] पाषाणादिना प्रहारो करवा वडे अति कदर्थना करी;परंतु ते [illegible] [illegible] क्षमा धारण करीने शुद्ध ध्यानमां तत्पर रह्या. अनुक्रमे ते [illegible] [illegible] वेदनावडे मृत्यु पामी सर्वार्थसिद्ध विमानमां देवपणे उत्पन्न थया.

[illegible] प्रकारे [illegible] मुनिओए पण क्षमा करवी एवा आ कथानो उपदेश छे.

[illegible], [illegible] पुव्वकम्मनिम्माया ।
[illegible] ते न [illegible], [illegible]निफल्यंचइंताणं ॥ १३८ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ १३९ ॥

[illegible]

अर्थ-" पथ्थरथी हणायेलो कुतरो पथ्थरने करडवाने इच्छेछे अने सिंह बाणने पामीने अर्थात् पोताने बाण लागवाथी बाण तरफ न जोतां शरोत्पत्तिने एटले आ बाण क्यांथी आव्युंछे ते स्थानने अथवा बाण मुकनारने जुएछे-शोधेछे, " १३९. मुनि पण दुर्वचन रूपी तीरने पामीने ते बोलनार तरफ द्वेष करता नथी पण आ वचनप्रहार मारा पूर्वोपार्जित कर्मनुं फळ छे एम विचार करी ते कर्मोने हणवा प्रयत्न करेछे.

तह पुव्विं किं नकयं, न बाहए जेण मे समथ्थोवि ।

इण्हिं किं कस्सव कुप्पि--मुत्ति धीरा अणुप्पिच्छा ॥ १४० ॥

अर्थ-" धीर पुरुष एवी रीते विचार छे के-हे आत्मा ! तें पूर्वभवे शामाटे एवुं सुकृत) न कर्युं के जेथो मने समर्थ एवो पुरुष पण बाधा करी न शके ? (जो शुभ होत तो तने कोण बाधा करी शकत ?) हवे अत्यारे शामाटे कोइना उपर कोप करे ? कारणके पूर्वना अशुभ कर्मनो उदय थये सते पर उपर क्रोध करवो ते व्यर्थ छे). आम विचारीने ते कोइना पर क्रोध करता नथी. " १४०.

अणुराएण जइस्सवि, सियायवत्तं पिया धरावेइ ।

तहविय खंदकुमारो, न बंधुपासेहिं पडिबद्धो ॥ १४१ ॥

अर्थ-" यति थयेला एवा पण पोताना पुत्रना अनुरागे करीने तेना पिता माथा पर श्वेत छत्र (सेवको पासे) धरावेछे, ते छतां पण स्कंदकुमार नामना मुनि जेनो आवो स्नेह छतां बंधुवर्गना स्नेह रूप पासे करीने बंधाणा नहि." १४१. अहीं स्कंदकुमारनुं दृष्टांत जाणवुं. ४१

स्कंदकुमारनुं दृष्टांत.

श्रावस्ती नामे एक मोटी नगरी हती. त्यां तमाम शत्रुमंडलने धूमकेतु जेवो कनककेतु नामे राजा हतो. तेने देवांगना करतां पण अति सुंदर एवी मलयसुंदरी नामे राणी हती. तेमने स्कंदकुमार नामे प्राणप्रीय तनुज (कुमार) हतो अने मनुष्योने आनंद आपनारी सुनंदा नामे पुत्री हती. रूप ने यौवनथी गर्वित थनेली ते कांतिपुर नगरमा राजा पुरुषसिंहने आपेली हती. एकदा श्रावस्ती नगरीए विजयसेन सूरी पधार्या. स्कंदकुमार परिवार सहित वांदवाने आव्यो. गुरुए देशना आपी के हे भव्य जीवो ! आ संसार अनित्य छे, आ शरीर नाशवंत छे, लक्ष्मी समुद्रतरंग जेवी चंचळ छे, यौवन पर्वतमांथी नीकळती नदीना प्रवाह जेवुं

गाथा १४० इण्हिं । कस्सवि । कुप्पमुत्ति ।
गाथा १४१-सिआयवत्तं-सीतआतपत्रं-श्वेतछत्र ।

छे; माटे आ कालकूट विष जेवा विषयसुखना आस्वादथी शुं! कह्युं छे के-

संपदो जलतरंगविलोला. यौवनं त्रिचतुराणि दिन
शारदाभ्रमिव चंचलमायुः, किं धनैः कुरुत धर्मसनिंद

" संपत्तिओ जळना तरंग जेवी चपळ छे, यौवन मात्र त्रण चार दि छे अने आयुष्य शरदऋतुना मेघ जेवुं चंचळ छे, तो धनथी शुं विशेष छे एवो धर्मज करो. " वळी-

सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडंवणा।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥

" सर्व गीतो विलाप रूप छे, सर्व नृत्यो विडंबना रूप छे, सर्व प्रकारना रणो भार रूप छे अने सर्व प्रकारना कामो (विषयो) परिणामे दु आपनारा छे. "

इत्यादि गुरुनी देशना सांभळीने स्कंदकुमार प्रतिबोध पाम्य हर्षी मातापितानी आज्ञा लइ तेणे श्री विजयसेन सूरि पासे चारि दिवसथी आरंभीने राजाए पण स्नेहथी पोताना पुत्र उपर श्वेत छत्र अने सेवा करवाने माटे तेनी पासे सेवको राख्या. ते नोकरो मार्गमां क होय ते आघा फेंकी देछे अने परम भक्तिथी सेवा करेछे. अनुक्रमे ते रूपी समुद्रना पारगामी थया. गुरुनी आज्ञा लइ जिनकल्पमार्ग एकला विहार करवा लाग्या. तेमने अति उग्र विहारी जाणीने सर्व सेवक स्थानके गया.

एक दिवस विहार करतां कांतिपुरीए आव्या. त्यां महेलना झरुखा पति साथे सोगठाबाजी रमती सुनंदा नामनी तेमनी बहेने तेमने जोया. भ नथी तेने अत्यंत हर्ष थयो, आंखमां हर्षनां आंसु आव्यां, अने दृष्टिथी कदंब पुष्पोनी माफक तेनां रोमराय विकस्वर थयां. ते मनमां विचार करवा ' आ मारो सहोदर हशे के नहि ? ' ए प्रमाणे बंधुप्रेमथी नेत्रमां हर्षअश्रु आव्यां दाने स्कंदमुनिए ओळखी, पण तेणे तेना उपर जरा पण स्नेह आण्यो नहि. राजा बंनेनुं स्वरूप जोइ भाइबहेनने संबंध नहि जाणतो होवाथी मनमां विचार ' आ सुनंदाने आ साधु साथे अत्यंत राग होय एम जणाय छे. ' ए प्रमाणे दुर्बुद्धिथी रात्रिए कायोत्सर्गमुद्राथी वनमां रहेला स्कंदऋषिने राजाए मारी न

थां लोहीथी लाल थयेली मुहपत्तीने कोइ पक्षीए चांचमां लइने राणीना आंगणामां नांखी. ते मुहपत्ती जोइने राणीने मनमां शंका पडी, एटले तरतज बोलावीने ते संबंधी पूछ्युं.दासीए कह्युं के 'आपे गइ काले जे साधुने जोया साधुने कोइ पापीए मारी नांख्या होय तेम जणायछे. आ तेनीज मुहपत्ती ' ते सांभळीने राणी मूर्छित थइ अने वज्रथी हणाइ होय तेम भूमि उपर शीतळ उपचारोथी तेने सावध करी एटले रुदन करती सती ते बोलवा "कदाच ते मारो भाइ हशे तो हुं शुं करीश ? कारणके मारा भाइए दीक्षा नुं सभळायछे,अने ते साधुना दर्शनथी मने पण बंधुने जोवाथी जेवो आनंद आनंद थयो हतो." एवुं विचारी तेणे एक सेवकने पोताना पिताना घरे र मंगावी. ते उपरथी ' पोते धारेल ते सघळु खरुं छे' एम जाणी तेनुं दुःखथी भराइ आव्युं. ते मोकळे कंठे रुदन करवा लागी के " हे बंधु ! हे होदर ! हे वीर ! तुं मने मारा प्राण करतां पण वधारे वहालो छे. तें ? तारुं स्वरूप मने पण जणाव्युं नहि ? तें तो आ पृथ्वी विहार करीने नावीछे, पण हुं तो महा पाप करनारी छुं. कारणके तारा उपर मारी दृष्टि निमित्ते तारो घात थयोछे. मारुं शुं थशे ? हुं क्यां जाउं ? शुं करुं ? " ए क प्रकारे विलाप करती सुनंदाने मंत्रीओए अनेक प्रकारनां अपूर्व नाटक वीने लांबे वखते शोकरहित करी.

ाणे बीजाओए पण स्कंदक मुनिनी पेठे निर्मोहपणुं धारण करवुं एवो आ देश छे.

गुरुतरो अइगुरु, पिंयमाइअवच्चपियजणसिणेहो ।
तिज्झमाण गुविलो, चत्तो अइधम्मतिसिएहिं ॥१४२॥

र्थ—" गुरु के० घणो, गुरुतर के० तेथी वधारे, अतिगुरु के० तेथी पण पितामाता पुत्रादि अने प्रियजन ते स्त्री तथा परिजनादि तेनो अनुरूपे इ ते विचार्यो सतो गुविलो के० महा गहन छे—अनंत भवना हेतुभूत छे धर्मना अति तृषित के० धर्मना अत्यंत इच्छक एवा प्राणीओए तेने तज्यो रण के ते धर्मना शत्रुभूत छे. " १४२ एम जाणीने बीजा पण धर्मना ए बंधुवर्गना स्नेहमां न मुंझाता तेने तजी देवो.

ाणियपरमत्थाणं, बंधुजणसिणेहवइयरोहोइ ।
गयसंसारसहाव--निच्छयाणं समं हिययं ॥ १४३ ॥

१४२ गुरुतरक । प्रियमातृ । गिलिज्जमान । अतिधर्मतृषितैः ।
१४३-बंधुजन । निच्छयवातां । व्यतिकरः-संबधः ।

अर्थ–" नथी जाण्यो परमार्थ जेणे एवा प्राकृत प्राणीओने ज बंधुजनना संबंध थायछे अने जेणे संसारना स्वभावनो निश्चय जाण्यो छे तेनुं हृदय तो होयछे." १४३.

जेणे संसारनुं स्वरूप जाण्युं नथी. एवा मंद बुद्धिओने बंधुजननो करनार थाय छे, पण पंडित बुद्धिवाळा के जेओए संसारनुं स्वरूपजाण्युं छे संसारनो संबंध तजी दीधोछे तेमना हृदयमां तो शत्रुमित्रपर समान भाव ह[illegible] तेमने बंधुजननो स्नेह प्रतिबंधकारक थतोज नथी.

माया पिया य भाया, भज्जा पुत्ता सुहीय नियगा य।
इह चेव बहुविहाइं, करंति भयवेमणस्साइं ॥ १४४ ॥

अर्थ–" माता, पिता, भ्राता (भाइ), भार्या (स्त्री), पुत्र, [illegible] अने निजकाः एटले पोताना संबंधीओ ते सर्वे आ भवमांज बहु[illegible] मरणादि अने वैमनस्य ते मन संबंधी दुःखो तेने उत्पन्न करेछे." तेज अनुक्रमे कहेछे–

माया नियगमइविगप्पियंमि, अत्थे अपूरमाणंमि।
पुत्तस्स कुणइ वसणं, चुलणी जह बंभदत्तस्स ॥ १[illegible]

अर्थ–" पोतानी बुद्धिवडे विचारेला पोताना अर्थमां (कार्यमां) करेला नहि पूरायेली अर्थात् पोतानुं धारेलुं कार्य परिपूर्ण जेने थयुं नथी [illegible] पोताना पुत्रने पण अनर्थ–कष्ट करेछे. जेम चुलणीए ब्रह्मदत्तने कर्युं तेम."

ब्रह्मराजा साथे विषयासक्त थयेली चुलणीए पोताना चक्रवर्ती थनार [illegible] काढी नाखवानी बुद्धिथी प्राणांत कष्टमां नाख्यो. अहीं पुत्र[illegible] मरण जाणवो.

चुलणी राणीनुं दृष्टांत.

कांपिल्यपुर नगरमां ब्रह्म नामे राजा हतो. तेने चुलणी नामे [illegible] कुक्षिथी [illegible] स्वप्नथी सूचित पुत्र जन्म्यो. तेनुं ब्रह्मदत्त नाम [illegible]. हवे ब्रह्मराजाने बीजा चार राजाओ मित्र हता पहेलो कणेरदत्त ना[illegible] राजा. बीजो काशीदेशनो अधिपति कटकदत्त नामे राजा, त्रीजा [illegible] नामे राजा अने चोथो अंगपति पुष्पचूल नामे राजा हतो. पांचमा [illegible] परस्पर अति-गाढ मित्रता हती. तेओ क्षणमात्र पण एक बीजानो वियोग [illegible]

[illegible] । वैमनस्यानि । मृत्यु-मित्राणि । निजकाः [illegible] । [illegible]-अनर्थ-कष्टं ।

गां अकता नहोता. ते पांचे जणा प्रतिवर्ष अनुक्रमे एक एकना शहेरमां जइने एकठा ...था हता.

ए प्रमाणे एक वखत पांचे राजाओ कांपिल्यपुरमां एकठा मळ्या हता. ते वर्षे ब्रह्म ...ा मस्तकना व्याधिथी परलोकवासी थया. ते वखते ब्रह्मदत्त कुमार बारवर्षनी लघु- ...नो हतो तेथी चारे मित्रोए विचार्युं के 'आपणा प्रीतिपात्र परममित्र ब्रह्मराजा पंचत्व ...म्या छे अने तेनो पुत्र नानो छे, माटे आपणामांथी एकेक जणे दरवर्षे आ राज्यनी ... करवा माटे अहीं रहेवुं.' ए प्रमाणे विचार करी दीर्घ राजाने त्यां मूकी बीजा त्रण ...जाओ पोतपोताने नगरे गया. दीर्घ राजाए त्यां रहेता सता ब्रह्मराजाना कोठार अने ...तःपुरमां जतां आवतां एक दिवसे चुलणी राणीने नवयौवना जोइ, तेथी ते कामरागथी ...राधीन थयो. चुलणी पण दीर्घ राजाने जोइने रागवती थइ. बंनेने परस्पर वातचीत ...ी महान कामराग उत्पन्न थयो. तेथी ते बंनेने परस्पर शरीरसंबंध थयो. अनुक्रमे ...ीर्घ राजा पोतानी स्त्रीनी माफक चुलणी राणीनी साथे भोग भोगववा लाग्यो. तेणे ...इनो भय गण्यो नहि. लोकापवादनो डर पण तजी दीधो. धनु नामना वृद्ध मंत्रीए ... बधी हकीकत जाणी, तेथी ते मनमां विचारवा लाग्यो के 'अरेरे! आ दुष्ट दीर्घ राजाए ...ुं अविचारी कार्य कर्युं. अन्य त्रण मित्रोए पण शो विचार करीने आने राज्यनो ...धिकार सोंप्यो? एमणे पण विपरीत कार्य कर्युं. आ दीर्घ राजा पोताना मित्रनी स्त्रीनी ...थे व्यभिचार करतां लज्जा पण पामतो नथी.' ए प्रमाणे विचारी घेर आवी पोताना ...त्र वरधनुने आ हकीकत जणावी. तेणे जइने ब्रह्मदत्तने आ खबर कही. ते सांभळी ...दत्त अति क्रोधित थइ रक्त नेत्रवाळो थयो. पछी दीर्घ राजा सभामां बेठा छे ते ...खते सभामां जइने कोकिला ने कागडानो संगम करावी ते कहेवा लाग्यो के 'अरे ...! काग! तुं कोकिलनी स्त्री साथे संगम करे छे ए अति अयुक्त छे. आ तारुं अयोग्य ...चरण हुं सहन करीश नहि.' एम कही कागने हाथमां पकडी मारी नांख्यो अने लोक- ...ने कह्युं के 'जे कोइ आवुं दुष्ट कार्य मारा नगरमां करे छे अथवा करशे तेने हुं ...र करीश नहि.' ए सांभळीने दीर्घ राजाए चुलणी राणीने कुमारनी ते हकीकत ...णावी. त्यारे चुलणीए कह्युं के 'ए तो बाळक्रीडा छे, तेनाथी शुं बीओ छो? माटे स्व- ...स्थ थाओ.' ए प्रमाणे केटलाक दिवसो व्यतीत थतां फरीथी ब्रह्मदत्ते दीर्घ राजानी ...मक्ष हंसी ने बगलानो समागम करावी पूर्ववत् जनसमूहनो आगळ कह्युं. पछी आ- ... चेष्टा दीर्घ राजाए चुलणी राणीने कह्युं के 'तारो पुत्र आपणा बंना संबंधनो ...जाणी गयो छे, तेथी आपणो निःशंक समागम हवे केवी रीते थइ शके? माटे तुं ...मारी नाख; जेथी आपणे निर्भयपणे विषयरसनो आस्वाद अनुभवीए.' चुलणीए

मध्य रात्रिए सर्व लोको सुइ जतां चुलणी राणीए आवीने लाक्षागृहने आग लगाडी, लाक्षागृहने चोतरफथी बळतुं जोइने ब्रह्मदत्ते कह्युं के 'हे मित्र ! हवे शुं करवुं ?' वरधनुए कह्युं के 'मित्र ! चिंता शामाटे करोछो ? आ जग्या उपर पगनो प्रहार करो.' पछी ब्रह्मदत्ते पगना प्रहारथी सुरंगनुं बारणुं उघाडयुं. बंने जण पेली स्त्रीने त्यां रहेवा दइने ते मार्गे नासी गया. सुरंगने छेडे मंत्रीए पवनवेगी बे घोडा तैयार राख्या हता. बंने जण ते बे घोडा उपर स्वारी करीने भाग्या. पचास योजन गया पछी बंने घोडा अत्यंत श्रमित थइ जवाथी मरी गया. तेथी ते बंने जणा पगे चालीने एक नगरे गया. त्यां कोइ ब्राह्मणने घेर भोजन लीधुं अने ते ब्राह्मणनी पुत्री साथे ब्रह्मदत्त परण्यो. पछी घणां शहेरो अने घणां गामोमां कोइ ठेकाणे गुप्त रीते अने कोइ ठेकाणे प्रगटपणे फरतां फरतां ते ब्रह्मदत्त अनेक स्त्रीओ परण्यो. ए प्रमाणे घणां वर्ष भम्या. अनुक्रमे कांपिल्यपुरमां आवी दीर्घ राजाने मारी नांखीने पोतानुं राज्य लीधुं. पछी छ खंड साधीने ते बारमो चक्री थयो.

एक दिवसे राज्यनुं पालन करतां पुष्पनो गुच्छ जोइने ब्रह्मदत्तने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पूर्व भवनो भाइ चित्रनो जीव प्रतिबोध पमाडवाने त्यां आव्यो, परंतु ते प्रतिबोध पाम्यो नहि. सोळ वर्षनुं आयुष्य बाकी रहेतां कोइ गोवाळीआए तेना बाणवना डोळा काढी लीधा, अर्थात् आंखो फोडी नाखी. 'आ बधुं एक ब्राह्मणनुं चरित्र छे' एम जाणी ब्राह्मणोनां नेत्रो कढावतो सतो रौद्र ध्यानवडे घणां अशुभ कर्मोने बांधी, सातसो वर्षनुं आयुष्य पूरुं करी सातमी नरकमां अप्रतिष्ठान नरकावासमां उत्कृष्ट स्थितिए उत्पन्न थयो.

आ सघळो संबंध वधारे विस्तारथी उपदेश सहस्सेहिं वीति ए गाथाना विवरणथी जाणवो. अहीं तो आ प्रमाणे मातानो स्नेह कृत्रिम छे, एवो आ गाथानो उपदेश छे.

सव्वंगोवंगविगत्तणाओ, जगडण विहेडणाओ अ ॥

कासीय रज्जतिसिओ, पुत्ताण पिया कणयकेउ ॥ १४६ ॥

अर्थ –"राज्यनो तरश्यो एवो कनककेतु नामनो पिता पोताना पुत्रोने सर्व अंगोपांग छेदन करीने कदर्थना अने विविध प्रकारनी यातना जे पीडा ते करतो हतो. माटे पितानो संबंध पण कृत्रिम छे." १४६

कनककेतु राजा राज्यना लोभथी तेमां अंतराय थवाथी पोताने जे पुत्र थाय तेना

गाथा १४६-विगत्तणा-छेदनानि. जगडण-कदर्थना, कामो. विहेडणा-विविध यातना-पीडाः कारापित.

[illegible] मंत्रीपणाने राज्यने अयोग्य करतो हतो. तेनुं विशेष चरित्र ते [illegible] गाथा. ४४.

कनककेतु राजानी कथा.

[illegible]पुर नगरमां कनककेतु नामे राजा हतो. तेने पद्मावती नामे [illegible] अने [illegible]पुत्र नामे मंत्री हतो. ते कारमार्गने पोट्टिला नामे अति [illegible] [illegible]. राज्यसुख भोगवतां कनककेतुने घेर पुत्रनो जन्म थयो. ते वखते राजा [illegible] लाग्यो के 'आ पुत्र मोटो थतां मारुं राज्य लइ लेशे.' एवा भयथी तेने [illegible] कापी नांख्या. बीजो छोकरो थयो तेना पग कापी नांख्या. ए प्रमाणे [illegible] [illegible] उत्पन्न थतां कोइनो अंगछेद कर्यो, कोइनी आंगळी कापी नांखी, कोइनुं [illegible] कापी नांख्युं. कोइना कान कापी नांख्या अने कोइनी आंख काढी नांखी. आ [illegible] [illegible] पुत्रोने खंडित अंगवाळा कर्या. ए प्रमाणे घणो काळ व्यतीत थतां फरीथी [illegible] [illegible] सुस्वप्नथी सूचित गर्भ धारण कर्यो. ते वखते मंत्रीनी स्त्री पोट्टिलाए [illegible] गर्भ धारण कर्यो. तेथी मंत्रीने बोलावी राणीए कह्युं के 'सुस्वप्नथी सूचित [illegible] धारण कर्यो छे, माटे तेना जन्म वखते आपे लइ जइने गुप्त रीते तेनुं रक्षण करवुं [illegible] तेथी ते राज्याधिकारी थाय अने तमने पण आधारभूत थाय.' मंत्रीए कबुल [illegible] योग्य समये पुत्र प्रसव्यो मंत्रीए गुप्त रीते ते पुत्रने पोतानी स्त्री पोट्टिलाने [illegible] अने ते वखते पोट्टिलाए प्रसवेली पुत्री राणीने आपी. पछी दासीए राजाने [illegible] के 'राणीने पुत्री जन्मी छे.'

अहीं मंत्रीने घेर राजपुत्र मोटो थतां तेनुं कनकध्वज नाम पाड्युं. अनुक्रमे [illegible] यौवनवयने प्राप्त थयो. ए अवसरे कनककेतु राजा मृत्यु पाम्यो. तेथी सर्व मंत्री [illegible] राजा चिंता करवा लाग्या के 'हवे राज्य कोने सोंपवुं ?' ते वखते मंत्रीए [illegible] बधी हकीकत जणावी. तेथी कनकध्वज राजानो पुत्र छे एम जाणी मयत्न घणा [illegible] करी अने तेने मोटा आडंबरथी राज्यगादीए बेसाड्यो.

[illegible] राजा 'आ मंत्रीए मारा उपर मोटो उपकार कर्यो छे' एम [illegible] [illegible] बहु सन्मान करवा लाग्यो. घणा आनंदथी राज्यनुं पालन करतां केटलोक [illegible] व्यतीत थयो. अन्यदा मंत्रीनी स्त्री पोट्टिला जे पहेलां मंत्रीने प्राण करतां पण [illegible] [illegible] हती ते कोइ कर्मना दोषथी अप्रिय थइ पडी. तेथी मंत्रीए तेनी [illegible] [illegible] [illegible] तेथी पोट्टिलाना मनमां घणुं दुःख थवा लाग्युं. कह्युं छे के-

आज्ञाभंगो नरेन्द्राणां, गुरुणां मानमर्दनम् ।
प्रथक शय्या च नारीणामशस्त्रवध उच्यते ॥

"राजाओनी आज्ञानो भंग करवो, गुरुओना माननुं मर्दन करवुं अने स्त्रीओनी [illegible] शय्या करवी-ए शस्त्र वगरनो वध छे."

भर्तारना अपमानथी पीडित थयेली पोट्टिला विशेष प्रकारे दान विगेरे धर्मकृत्यो [illegible]वा लागी. ते समये तेने घेर एक सुव्रता नामना साध्वी आहारने माटे आव्या. [illegible]ो सन्मुख जइ, शुद्ध आहार वहोरावी, हाथ जोडीने पोट्टिलाए कह्युं के 'हे भग[illegible]! तेवुं कांइक करो के जेथी मारो भर्तार मारे वश थाय. परोपकार एज मोटुं [illegible] छे. कह्युं छे के-

दोपुरिसे धरइ धरा, अहवा दोहिं वि धारिया धरणी ।
उवयारे जस्स मई, उवयारो जं न वीसरइ ॥

"बे पुरुष उपर आ पृथ्वी धारण करायेली छे अथवा बे पुरुषोए आ पृथ्वीने [illegible]रण करीछे. (ते बे पुरुष कोण?) एक तो जेनो उपकार करवामां बुद्धि वर्तेछे-[illegible]कार करवामां जे तत्पर छे, अने बीजो जे उपकारने विसरतो नथी-कोइए उप[illegible]र कर्यो होय तो ते भूली जतो नथी"

ए प्रमाणे पोट्टिलानुं कहेवुं सांभळीने सुव्रता साध्वीए कह्युं के-"आ तुं शुं [illegible]मी? उत्तम स्त्रीए आवी प्रवृत्ति करवी योग्य नथी. कारणके मंत्र विगेरेथी पतिने [illegible] करवो ए मोटो दोष छे, अने अमे तो सर्वविरति ग्रहण करेलीछे, तेथी कामण [illegible]गेरे करवां ए अमने तो उचितज नथी. तुं जे भोगो भोगववाने माटे वशीकरण [illegible]वा इच्छेछे ते भोगो सांसारिक दुःखोना कारणभूत छे. विषयो किंपाक फळनी [illegible] प्रारंभमां रम्य लागेछे पण परिणामे अति दारुण छे. लांबो वखत तेनुं सेवन [illegible]यतो पण तेनाथी तृप्ति थती नथी. तेथी आ विषयनी अभिलाषाने तजी दइने [illegible]रोदित शुद्ध धर्म आचार के जेथी तने सर्व प्रकारनी सिद्धि प्राप्त थशे." पोट्टि[illegible]ए ते वात कबुल करी अने पोताना भर्तारनी आज्ञा लइने तेणे चारित्र ग्रहण [illegible]युं. भर्तारे पण क्रोधरहित थइने कह्युं के "तने धन्य छे के तें आवो उत्तम धर्म [illegible]ण कर्यो, हवे तुं देवी रूप थशे, माटे देवी थइने तारे मने प्रतिबोध पमाडवाने माटे [illegible]रुर आववुं." तेणे ते कबुल कर्युं. ते पोट्टिला पृथ्वी उपर विहार करवा लागी, अने [illegible]रकाळ सुधी निर्दोष चारित्र पाळी देवलोकमां उत्पन्न थइ.

पछी अवधिज्ञानथी पोतानो पूर्व भव जाणी पूर्व भवना भर्तारने प्रतिबोध करवा [illegible]टे ते पोट्टिलादेव मंत्री पासे आव्यो. तेणे घणो उपदेश कर्यो, पण तेतलीपुत्र प्रधान

प्रतिबोध पाम्यो नहि. तेथी देवे विचार्युं के 'आ राज्यमोहथी प्रतिबोध पामतो नथी' पछी ते देवे राजानुं चित्त प्रधान उपरथी फेरवी नांख्युं. एटले मंत्री ज्यारे सभा आव्यो त्यारे राजा पराङ्मुख थइने बेठो, मंत्रीने दर्शन आप्युं नहि. तेथी तेतली विचार्युं के "राजा मारा उपर रुष्टमान थया छे. कोइ दुष्टे मारुं छिद्र तेमने क जणाय छे. आमां खबर पडती नथी के राजा मने शुं करशे ? अथवा कया प्रका मरणथी मने मारशे ? तेथी आत्मघात करीने मरवुं एज वधारे सारुं छे." ए प्रम विचार करी घरे आवीने तेणे गळामां फांसो नांख्यो. देवना माहात्म्यथी ते त्रुटी गयो; एटले विष खाधुं ते पण अमृत जेवुं थइ गयुं. त्यारे तरवारथी पो मस्तक कापवानो आरंभ कर्यो. देवे खड्गनी धार बांधी लीधी. वळी अग्निमां फरवा तैयार थयो. ते अग्नि जळरूप थइ गयो. ए प्रमाणे तेणे लीधेला मरणना उपायो ते देवे व्यर्थ कर्या. पछी प्रगट थइने पोट्टिलादेव बोल्यो के 'आ सव कर्युं छे, तुं शामाटे आत्मघात करे छे ? चारित्र ग्रहण कर.' ते सांभळीने तेतल प्रधाने चारित्र ग्रहण कर्युं. राजा आवीने तेना पगमां पडयो. घणो काळ पृ विहार करी, चौद पूर्वनो अभ्यास करी, घातिकर्मनो क्षय थवाथी केवळज्ञान तेतलीपुत्र मुनिमोक्षे गया.

विसयसुहरागवसओ, घोरो भायावि भायरं हणइ ।
आहाविओ वहत्थं, जह बाहुबलिस्स भरहवई ॥ १४७

अर्थ—" विषयसुखनो जे राग तेना वशपणाथी घोर के० (शस्त्रादि ग्रहण करवाथी) भयंकर एवो भाइ पण भाइने हणे छे. जेम भरतपति (भरत चक्र) बाहुबळीना वधने माटे दोडया हता तेम." १४७ आ दृष्टांत प्रथम आवी गये

भज्जावि इंदियविगार—दोसनडिया करेइ पइपावं ।
जह सो पएसिराया, सूरियकंताइ तह वहिओ ॥ १४८

अर्थ—" इंद्रियोना विकार संबंधी दोषथी विडंबित थयेली भार्या पण प रूप—पतिने मारी नाखवा रूप पापने करे छे. जेम ते प्रदेशी राजाने तेनी नामनी राणीए विष देवा विगेरे वडे मारी नांख्यो तेम समजवुं." १४८ दृष्टांत पूर्वे आवी गयेल छे.

गाथा—भायरं । आधाविओ वधार्थं । बाहुबलस्स ।
गाथा—पइपावं । पतिपाप-पतिसिद्धारूपं पापं.

सासयसुक्खतरसी, नियअंगसमुब्भवेण पियपुत्तो ।
जह सो सेणियराया, कोणियरन्ना खयं निओ ॥ १४९ ॥

अर्थ-" हवे पुत्रना स्नेहनुं पण व्यर्थपणुं बतावे छे. जेम शाश्वत सुख मेळववाने ...क एवो ते श्रेणिक राजा भगवंतनां वचनमां रक्त अने क्षायक समकितधारी तेने ...ना अंगथीज उत्पन्न थयेला अने प्रिय-वहाला एवा पुत्रे कोणिक राजाए क्षय ...डयो-विनाश पमाडयो तेम." १४७ अर्थात् पुत्रनो स्नेह पण एवो व्यर्थ समजवो. ... कोणिकराजानुं दृष्टांत जाणवुं.

कोणिक राजानुं दृष्टांत.

शोभायमान घरोथी भरपूर अने नगरमां प्रसिद्ध एवा इभ्यजनोनी श्रेणीथी पूर्ण राजगृह नामे एक शहेर हतुं. त्यां जिनभक्तिमां रक्तचित्तवाळो श्रेणिक नामे राजा ...य करतो हतो. ते श्रेणिक राजाने उत्तमशील अने लावण्यथी भरपूर, सुंदर रूप... ..., अत्यंत प्रीतिवाळी अने निर्मळ गौर वर्णवाळी चिल्लणा नामे पट्टराणी हती. ...क राजा साथे पूर्व जन्ममां जेणे वैर बांध्युं छे अने जेणे पुष्कळ तप कर्युं छे एवो ...जीव छीपनी अंदर जेम मोती उत्पन्न थाय तेम चिल्लणाना गर्भमां उत्पन्न थयो. पछी ...णाने गर्भना प्रभावथी त्रीजे महिने पोताना प्राणनाथना हृदयनुं मांस खावारूप अशुभ ... उत्पन्न थयो, तेथी ते घणी दुर्बळ थती गइ राजाए राणीने दुर्बळता संबंधी आग्रह-...पूर्वक पूछ्युं त्यारे तेणे पोतानो दुष्ट विचार जणाव्यो. ते सांभळी कामरागवडे राजाए तेने ...के 'हे कमलाक्षी! तुं जरा स्वस्थ था.' पछी राजाए ते वात अभय कुमारने करी. तेणे ...ना हृदय उपर अन्य प्राणीनुं मांस बांधी, छळथी तेने कापीने राणीनो दोहद ...पूर्ण कर्यो. ते कृशांगीए क्रमे करी पुत्रने जन्म आप्यो अने ते जोरना पुत्रने ...वाडीमां कोइ वृक्षना मूळमां मूक्यो. ते वात दासीमुखथी सांभळीने राजाए ...ते पुत्रने लइ आवी पाळो राणीने आप्यो. राजाए हर्षथी प्रथम ते पुत्रनुं नाम ...चन्द्र पाड्युं. परंतु कुकडाए तेनी आंगळीने दंश कर्यो हतो तेथी ते बाळक ...तेने कोथे कोणिक नामथी बोलाववा लाग्या. ते आंगळीनी वेदनाथी ते ...मोटेथी रडवा लाग्यो. तेथी राजाए ते आंगळी पोताना मुखमां नाखीने तेने ...कर्यो. बाल्यावस्था व्यतीत थतां तेणे अन्य राजपुत्रीनो साथे पाणिग्र... ...अने तेनी साथे विषयसुख भोगववा लाग्यो.

गाथा १४९-भाउयत्तसीलव्वयदोरस

कोणिकने देवसदृश हल्ल अने विहल्ल नामना वे नाना भाइओ थया हता. [illegible] राजाए कुंडल, हार अने हस्ती रूप दिव्य वस्तुओ पोताना नाना पुत्र हल्ल वि[illegible] आपी. तेथी इर्षा उत्पन्न थवाने लीधे कोणिके पोताना पिताने काष्ठना पिंजरामां ना[illegible] अने पोते राजा थयो. पछी ते दररोज कोरडाना मारथी पिताने प्रहार करवा ला[illegible] अन्यदा कोणिक राजानी पत्नी पद्मावतीए एक सुंदर पुत्रने जन्म आप्यो. ते [illegible] वर्षनो थयो त्यारे कोणिक राजा तेने पोताना खोळामां बेसाडी पुत्रना मुत्रथी [illegible] अन्न खावा लाग्यो. पुत्रना मोहने लीधे तेने जरा पण जुगुप्सा उत्पन्न थइ नहि. [illegible] तेणे पोतानी मातानी पासे जइ ते वात कहीने पूछ्युं के ' हे माता ! मने आ [illegible] केवो प्रिय छे ?' ते सांभळीने माताए कह्युं के ' हे क्रूरमते ! आ तारो ते [illegible] छे ? तारा पितानो स्नेह प्रथम तारा उपर आ करतां पण अत्यंत विशेष हतो. [illegible] प्रमाणे पोतानुं पूर्व वृत्तांत पोतानी माताना मुखथी सांभळीने पोताना पिताने [illegible] गृहमां नांखवा रूप पोताना निंद्य कर्मने निंदतो सतो ते कुहाडो लइने [illegible] गाने भांगवा माटे चाल्यो. पोताना पुत्रने एवी रीते आवतो जोइ भयभ्रान्त [illegible] श्रेणिक राजा तालपुट विषना प्रयोगथी पोताना आयुष्यने पूर्ण करी [illegible] [illegible] नामेली पहेली नरक पृथ्वीने प्राप्त थया,, अर्थात् पहेली नरके [illegible] कोणिक राजा पोताना पिताने मृत्यु पामेला जोइ अत्यंत रुदन करवा लाग्यो. [illegible] करी. त्यार पछी तेना मुख्य सामंतोए अनेक प्रकारना प्रयोगोथी [illegible] [illegible] शोकथी निवृत्त कर्यो.

[illegible] मिथ्याथी प्रेरित थयेला कोणिक राजाए पेली त्रणे दिव्य [illegible] [illegible] पासे मागणी करी. एटले हल्ल ने विहल्ल ते वस्तुओ तथा अन्य [illegible] [illegible] पोतानी माताना पिता चेडा राजा पासे गया. [illegible] [illegible] कोणिक राजा घणां युद्धो करी पापथी कराता अनेक [illegible] [illegible] पूर्ण करीने छठ्ठी नरके गयो.

[illegible] पण कृत्रिम छे, एवो आ कथानो उपदेश छे.

[illegible]आ, मुद्दिणाावि विसंवयंति कयकज्जा ।

[illegible], पव्वयओ वायव्वा गया ॥ [illegible] ॥

[illegible] नाति अने करी [illegible] [illegible] विपरीत [illegible] पण छे. [illegible]

[illegible]

चाणाक्य नामना मंत्रीए (पोतानुं कार्य थइ गया पछी राज्यलुब्धपणाथी पोताना थका) पर्वत नामना राजानो घात कर्यो." १५०, अहीं चाणाक्यनो संबंध ग्लो. ४५.

चाणाक्यनुं वृत्तांत.

चणक नामना गाममां चणी नामे ब्राह्मण वसतो हतो. तेने चणेश्वरी नामे स्त्री. बंने जैन हता अने जिनभक्तिमां प्रीतिवाळा हता. एक दिवस तेमने दांत सहित पुत्र जन्म्यो. तेनुं नाम चाणाक्य पाड्युं. ए समये तेमने घेर साधुओ आव्या. एटले बालकने साधु महाराजना चरणमां मूकीने चणी भटे पूछ्युं के 'हे भगवन्! मारे आ पुत्र दांत सहित जन्म्यो छे तेनुं शुं कारण? तेनुं महात्म्य शुं हशे?' साधु राजे कह्युं के 'ते राजा थशे.' त्यारे मातापिताए विचार कर्यो के 'आ छोकरो वखत सुधी राज्यमां आसक्तिवाळो थवाथी जरुर नरके जशे.' एवुं जाणी तेओए दांत घसी नाख्या. पछी फरीने मुनिने पूछतां मुनिराजे कह्युं के 'दांत घसवाथी राजानो मंत्री थशे अने कोइने अग्रेसर करीने पोते राज्यपालन करशे.' पछी कैटलेक काळे मोटो थवाथी, सर्व विद्यामां कुशळ थयो. यौवनावस्था प्राप्त उत्तम द्विजपुत्रीनी साथे पाणिग्रहण करी सांसारिक सुख भोगववा लाग्यो. एक चाणाक्यनी पत्नी पोताना भाइना लग्नप्रसंगे पिताने घेर गइ, परंतु सामान्य वेष धनरहित होवाथी पिताने घेर पण तेने योग्य सन्मान मळ्युं नहि. तेनी बीजी बहेनो त्यां आवेली हती. तेओए घणां घरेणां अने सुंदर कपडां धारण करेलां होवाथी तेमने बहु सन्मान आप्युं. 'अहो! आ जगतनुं मूळ कारण धनज छे.' कह्युं छे के—

> जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तस्याप्यधो गच्छतां
> शीलं शैलतटात्पतत्वभिजनः संदह्यतां वह्निना ।
> शौर्यं वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलं
> येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे ॥

"जाति रसातळमां जाओ अने गुणसमूह तेथी पण नीचे जाओ, शील पर्वतना उपरथी नीचे पडो. सगांवहालां अग्निथी बळी जाओ, शूरवीरपणा उपर वज्र पडो, परंतु अमने मात्र धन मळो; केमके एक धन विना आ समग्र गुणो तृणवत् छे."

बीजी बहेनोने तेनो भाइ सघळां कार्यो विगेरेमां पण पूछेछे, परंतु चाणाक्यनी पत्नी पोतानी बेन तेनी तो सामुं पण जोतो नथी; तेथी ते खेद करती छती

जोयो छे. ?' चाणाक्ये आंगळीनी संज्ञाथी सरोवरमां रहेला चंद्रगुप्तने बताव्यो [illegible] पकडवाने माटे घोडा उपरथी उतरीने ते स्वार लुगडां ने शस्त्रो उतारी [illegible] करे छे तेवामां चाणाक्ये उठीने ते स्वारनुं मस्तक तेनाज खड्गथी छेदी नांख्युं चंद्रगुप्तने बोलावी तेना घोडा उपर बेसाडीने तेओ आगळ चाल्या. मार्गमां [illegible] चंद्रगुप्तने पूछ्युं के 'हे वत्स ! में ज्यारे तने अंगुलिसंज्ञाथी बताव्यो त्यारे [illegible] विचार आव्यो ?' चंद्रगुप्ते कह्युं के 'हे तात ! में विचार्युं के आपे जे कर्युं [illegible] [illegible] कर्युं हशे.' ए प्रमाणे सांभळीने चाणाक्ये चिंतव्युं के 'आ चंद्रगुप्त [illegible] पेठे आशंकित थशे.'

[illegible] अने चंद्रगुप्त ए प्रमाणे वातचित करतां चाल्या जता हता. तेवामां [illegible] स्वार तेओनी पाछळ आव्यो. फरीथी पण चंद्रगुप्तने सरोवरमां राखीने [illegible] बेसाडी मूकीने चाणाक्य पोते धोबी बनी [illegible] [illegible] आवीने पूछ्युं के 'चंद्रगुप्त क्यां छे ?' त्यारे चाणाक्ये [illegible] तेने सरोवरमां बताव्यो अने प्रथम प्रमाणे तेनुं पण मस्तक कापी [illegible] [illegible] घोडा उपर स्वार थइ आगळ चाल्या. [illegible] चंद्रगुप्तने [illegible] [illegible] चाणाक्य गाममां पेठो, ते वखते तेणे [illegible] [illegible] चाणाक्ये पूछ्युं के 'अरे [illegible] ! [illegible] [illegible] के '[illegible] छे.' पछी चाणाक्ये [illegible]

[illegible]

नी साथे मैत्री करी. केटलाक दिवस गया पछी पर्वत राजाने अर्धु राज्य आपवुं कबूल करी मोटुं सैन्य मेळवी आसपासना अनेक देशोने साधीने पछी चाणाक्य पाटलीपुत्र आव्यो. नंदराजानी साथे मोटुं युद्ध थयुं. तेमां नंदराजा हार्यो. तेथी तेणे द्वार मागी लीधुं, एटले पोताने नीकळी जवानो रस्तो आपवानी याचना करी. चाणाक्ये ते वात स्वीकारी तेथी ते रथमां बेसी पोतानी स्त्री,पुत्री अने थोडुं सारभूत द्रव्य लइ नगर बहार नीकळी गयो.

ते वखते रथमां बेठेली नंदराजानी पुत्री नगरमां प्रवेश करता चंद्रगुप्तनुं लावण्य जोइ मोह पामी. नंदराजाए ते जाण्युं, एटले चंद्रगुप्त उपर पुत्रीनो स्नेह जोइ नंदराजाए तेने पोताना रथमांथी उतारी मूकी. ते तरतज चंद्रगुप्तना रथ उपर चढी गइ. ते वखते रथना नव आरा भांगी गया. ते जोइ चंद्रगुप्ते चाणाक्यने कह्युं के 'हे पिताजी ! प्रवेश वखते आ अपशुकन थायछे.' चाणाक्ये कह्युं के 'हे वत्स ! आ शुभ शुकन छे कारणके रथना नव आरा भांग्याछे तेथी तारुं राज्य नव पुरुष सुधी (नव पेढी सुधी) स्थिर थशे.' पछी नगरमां आवी चंद्रगुप्ते नंदराजानी पुत्री साथे पाणिग्रहण कर्युं.

नंदराजा राज्यमहेलनी अंदर एक रूपवती विषकन्या मूकी गयो हतो. तेने चाणाक्ये अनुमानथी दोषवडे दुषित जाणीने पर्वत राजानी साथे परणावी. तेना अंगना स्पर्शथी पर्वत राजानुं शरीर विषव्याप्त थइ गयुं. ते वखते चंद्रगुप्ते कह्युं के 'आ पर्वत राजानी सहायथी आपणे राज्य मेळव्युं छे अने आ मित्र मरी जायछे, माटे तेनी चिकित्सा करवी जोइए.' चाणाक्ये कह्युं के 'चिकित्सा करवाथी सर्युं, औषध विना जाय जायछे.' आ प्रमाणे कार्य साधी मरता मित्र प्रत्ये तदन बेदरकारी बतावी. एवो मित्रस्नेह पण कृत्रिम छे, एवो आ कथानो उपदेश छे.

नियया वि नियय कज्जे, विसंवयंतंमि हुंति खरफरुसा।
जह राम सुभुमकओ, बंभ खत्तस्स आसि खओ ॥ १५१ ॥

अर्थ-" पोताना स्वजनो पण पोतानुं कार्य विघटमान थये सते अर्थात् धार्यो प्रमाणे सिद्ध नहि थये सते खर के० रौद्र कर्मना करनारा अने परुस के० कठोर वचनो बोलनारा थायछे. जेम राम ने परशुराम अने सुभूम चक्रवर्तीनो करेलो ब्राह्मणो अने क्षत्रियोनो क्षय थयो तेम." १५१. परशुरामे सात वखत निःक्षत्री पृथ्वी करी, सुभूमे एकवीश वखत अब्राह्मणी पृथ्वी करी. पोताना कार्यनी सिद्धिने माटे आ बन्ने मोटो क्षय कर्यो, जेमां पोताना स्वजनोनो पण क्षय थइ गयो. माटे स्वजनस्नेह पण व्यर्थ छे. अहीं परशुराम ने सुभूमनो संबंध जाणवो. २६

गाथा १५१-नियय कज्जे-निजकार्य विषे. खरफरुसा. सुभूम. राम-परशुराम.

परशुराम अने सुभूमनी कथा.

सुधर्मा नामना देवलोकमां विश्वानर अने धन्वंतरि नामना वे मित्रदेवो हता. पहेलो जैन हतो अने वीजो तापसभक्त हतो.तेओ परस्पर धर्मवार्ता करता सता पोत पोताना धर्मने वखाणता.तेनो निर्णय करवा माटे धर्मनी परीक्षा करवाना हेतुथी तेओ मृत्युलोकमां आव्या. ते समये मिथिला नगरीनो राजा पद्मरथ राज्य छोडीने श्रीवा पूज्य मुनिनी पासे चारित्र ग्रहण करवाने जतो हतो.नवीन भावचारित्रवाळा तेने जोइ जैनदेवे कह्युं के 'प्रथम आपणे आनी परीक्षा करीए, पछी तमारा तापसनी परी करीशुं.' पछी भिक्षाने माटे अटन करता ते नवीन भावचारित्रीने अनेक प्रकार उत्तम रसवती बतावी, पण ते भावसाधु सत्त्वथी चलित थया नहि.पछी वीजी शेरी जतां तेना मार्गमां चारे तरफ देडकाओ विकुर्व्यां अने वीजे रस्ते कांटा वेर्या. पछ भावमुनि मंडुकीवाळो मार्ग तजी दइ कांटावाळा रस्ते चाल्या. ते वखते कांटा प भोंकावाथी लोहीनी धारा वहेवा लागी अने अत्यंत वेदना थवा लागी. परंतु ते जरा पण खिन्न थया नहि, तेमज ईर्यासमितिथी चालतां लेशमात्र पण क्षोभ पाम नहि. पछी त्रीजी वार देवे निमित्तियो थइ हाथ जोडी विनय पूर्वक कह्युं के " भगवन् ! तमे दीक्षा लेवाने जाओछो, पण हुं निमित्तना प्रभावथी जाणुंछुं के तम आयुष्य हजु लांबुं छे अने तमने युवावस्था प्राप्त थइछे तो हमणा राज्यमां रही वि प्रकारना भोग भोगवो, पछी वृद्धावस्थामां चारित्र ग्रहण करजो; कारणके ते व सारुं छे.वळी आ सरस विषयोनो स्वाद् क्यां अने रेतीना कोळीआ जेवो आ वि योगमार्ग क्यां ?" त्यारे भावसाधुए कह्युं के 'हे भव्य ! जो मारुं आयुष्य लांबुं तो वधारे सारुं, हुं घणा दिवस सुधी चारित्र पाळीश, जेथी मने मोटो लाभ वळी धर्म संबंधी उद्यम तो युवावस्थामांज करवो जोइए. आगममां पण कह्युंछे के

> जरा जाव न पीडेई, वाही जाव न वट्टई ।
> जाविंदिआ न हायंति, ताव सेयं समायरे ॥

" ज्यांसुधी जरा पीडा करे नहि,ज्यांसुधी कोइ प्रकारनो व्याधि थाय नहि, ज्यांसुधी इंद्रियो हानि पामे नहि त्यांसुधीमां धर्म आचरवो." वृद्धावस्थामां प्रमत्त थ मनुष्य इंद्रियो निर्बळ थवाथी धर्मकरणीमां उद्यम केवी रीते करी शके ?" कह्युं छे

> दंतैश्चलितं धिया तरलितं पाण्यंघ्रिणा कंपितं
> दृग्भ्यां कुड्मलितं बलेन लुलितं रूपश्रिया प्रोषितम् ।

प्राप्ताया यमभूपतेरिह महाधाटया जरायामियं
तृष्णा केवलमेकैकेव सुभटी हृत्पत्तने नृत्यति ॥

" यम राजानी मोटी धाडरूप आ वृद्धावस्था प्राप्त थतां दांत हालेछे, बुद्धि नष्ट थायछे, हाथपग कंपेछे, नजर क्षीण थायछे, बळ जतुं रहेछे अने रूप तथा लावण्य जायछे, मात्र तृष्णा एकलीज सुभटनुं आचरण करती सती हृदयरूपी नगरमां नाचती रहेछे."

आ प्रमाणे ते भावमुनिनी दृढता जोइ बने देव खुशी थया अने प्रशंसा करवा लाग्या. पछी जैनदेवे तापसदेवने कह्युं के 'जैनोनुं स्वरूप जोयुं? हवे आपणे तापसनी परीक्षा करीए.' ए प्रमाणे कही तेओ वनमां गया. त्यां तेओए एक जटाधारी, वृद्ध, तीव्र तप करतो अने ध्यानमां आरूढ थयेलो यमदग्नि नामनो तापस जोयो. तेनी परीक्षा करवा माटे ते देवो चकला चकलीनुं रूप धारण करी तेनी दाढीनी अंदर माळो बांधीने रह्या. पछी चकलो मनुष्यवाणीथी बोल्यो के 'हे वाला! तुं अत्र सुखथी रहे. हुं हिमाचल पर्वते जइने आवुंछुं.' त्यारे चकलीए कह्युं के 'हे प्राणनाथ! हुं तमने जवा दइश नहि, कारण के तमे पुरुषो ज्यां जाओछो त्यां लुब्ध थइ जाओछो. जो तमे पाछा न आवो तो मारी शी गति थाय? हुं अबळा एकली अहीं केम रही शकुं? तमारो वियोग मारे केवी रीते सहन थइ शके?' ते सांभळी चकलाए कह्युं के 'हे वाला! तुं शामाटे चिंता करेछे? हुं जल्दी आवीश. जो हुं आवुं नहि तो मने ब्राह्मणनी, स्त्रीनी, बाळकनी तथा गायनी हत्यानुं पाप लागे.' त्यारे चकलीए कह्युं के 'हुं सोगनो मानती नथी. पण जो तमे न आवो तो यमदग्नि तापसनुं पाप मस्तक उपर धारण करो तो हुं तमने जवा दउं.' त्यारे चकलो बोल्यो के 'तुं एम बोल नहि, एनुं पाप कोण अंगीकार करे?' ते सांभळीने यमदग्नि ध्यानथी चलित थयो अने क्रोधवान थइ चकला चकलीने पकडीने कहेवा लाग्यो के 'मारुं शुं एटलुं बधुं पाप छे?' चकलीए कह्युं के 'हे मुनि! क्रोध करो नहि. आपनां धर्मशास्त्र जुओ. कारण के—

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गो नैव च नैव च ।
तस्मात् पुत्रमुखं दृष्ट्वा, स्वर्गं गच्छंति मानवाः ॥

" पुत्र विनाना माणसनी सद्गति थती नथी, अने स्वर्गमां तो तेनी गति छेज नहि, तेथी माणसो पुत्रनुं मुख जोइने स्वर्गमां जायछे."

माटे पुत्ररहित छो तो तमारी शुभ गति केवी रीते थाय? तेथी तमारुं पातक

मोटुं छे. ' ए प्रमाणे कही परीक्षा करीने देवो पोताने स्थाने गया, अने दि
दव हतो ते पण परम जैन थयो.

तेमना गया पछी यमदग्नि' पण पक्षिना मुखनां वचनो सांभळी विचा
रवा लाग्यो के ' एमणे कह्युं ते बाबत खरी छे, तेथी कोइ स्त्रीनी साथे पाणि
ग्रहण करी पुत्र उत्पन्न करूं तो मारी शुभ गति थाय. ' ए प्रमाणे विचार करी कोष्टक
नगरना राजा जितशत्रु समीपे जइ एक कन्या मागी. त्यारे राजाए कह्युं के 'मारे सो
कन्याओ छे, तेओमांथी जे तमने पसंद करे ते कन्या तमे ग्रहण करो. ' ते सांभळीने
ऋषि अंतःपुरमां आव्यो. त्यां रहेली सर्व कन्याओए जटाधारी, दुर्बळ,मळथी मली
नताबाळा अने विपरीत रूपवाळा यमदग्निने जोइने थुथुकार कर्यो (थुंकी). ते
थी कोपायमान थइने ते सर्व कन्याओने कुब्जा करी नांखी. पाछा वळतां तेणे
राजाना आंगणामां धूळमां रमती एक राजपुत्रीने जोइ, तेने तेणे बीजोरुं बताव्युं;
तेथी ते बाळाए तेने लांबो हाथ कर्यो, तेथी तापसे राजा पासे जइने कह्युं के ' आ
कन्या मने इच्छे छे.' एम कहीने तेने ग्रहण करी. भय पामेला राजाए हजार गायोने
[illegible] सहित ते पुत्री तेने आपी; तेथी प्रसन्न थयेला ऋषिए [illegible]
[illegible] शक्तिथी पेली सर्व कुब्जा राजपुत्रीओने सारी करी. ए प्रमाणे
[illegible] पत्नीने लइने ते वनमां आव्यो. त्यां एक झुंपडी बनावीने ते
[illegible]

[illegible] थइ, एटले तेनी साथे तेणे पाणिग्रहण [illegible]
[illegible] कह्युं के 'हे मृगलोचना! सांभळ, तारे माटे एक [illegible]
[illegible] तने एक सुंदर पुत्र थशे.' त्यारे रेणुकाए कह्युं के 'हे
[illegible] एक चरुथी ब्राह्मणपुत्र थाय अने [illegible]
[illegible] राजा अनंतवीर्यनी स्त्री मारी बेन [illegible]
[illegible] ' ए प्रमाणे रेणुकाना कहेवाथी यमदग्नि [illegible]
[illegible] रेणुकाए विचार कर्यो के ' मारो पुत्र [illegible]
[illegible] भक्षण कर्युं अने ब्राह्मणचरु [illegible]
[illegible] तेने एक पुत्र थयो तेनुं नाम [illegible]
[illegible] आव्युं.

[illegible]

सिद्ध थयो. पछी देवताथी अधिष्ठित थयेली परशु (कुहाडी) ने लइने अजय्य ते त्यां त्यां फरवा लाग्यो.

अन्यदा परशुरामनी माता रेणुका हस्तीनापुरमां पोतानी बेनने मळवा अर्थे गइ. पोतानी बेनना पति अनंतवीर्यनी साथे संबंध थवाथी तेने गर्भ रह्यो. अनुक्रमे तेने थयो.पछी पुत्र सहित रेणुकाने यमदग्नि पोताना आश्रममां आणी परशुरामे पोतानु रित जाणी पोतानी पुत्रवती माताने मारी नांखी आ खबर अनंतवीर्यने पडवाथी त्यां आवी यमदग्निना आश्रमने भांगी नांख्यो.तेथी क्रोधित थयेला परशुरामे थी अनंतवीर्यनुं मस्तक छेदी नांख्युं.पछी तेनो पुत्र कीर्तिवीर्य राज्याधिकारी थयो. पितानु वेर वाळवा माटे परशुरामना पिता यमदग्निने मारी नांख्यो. तेथी परशु- त्यां जइ परशुना प्रभावथी कीर्तिवीर्यने हणी हस्तीनापुरनुं राज्य लइ लीधुं. ते ते चौद स्वप्नथी सूचित गर्भ जेणे धारण कर्यो छे एवी कीर्तिवीर्य राजानी तारा नी स्त्री पोताना पतिना मरण समये नासी गइ.ते वनमां तापसोना आश्रमे आवी पहों- त्यां जइ तेणे तापसोने पोतानुं सर्वस्व (वृत्तांत)कह्युं.दयाथी आर्द्र चित्तवाळा तापसोए एम रीते भोंयरामां राखी.अनुक्रमे तेने त्यां पुत्र थयो.तेनुं नाम सुभूम नाम पाड्युं. क्रमे ते मोटो थवा लाग्यो. परशुरामे क्षत्रियो उपर क्रोध करीने सात वार नक्षत्री ता करी अने मारेला क्षत्रियोनी दाढोने एकठी करीने एक थाळ भरी मूक्यो.

एक दिवस फरतो फरतो परशुराम पेला तापसोनी झुपडीए आव्यो,त्यारे परशुनी थी ज्वाला नीकळवा लागी. तेथी परशुरामे तापसोने पूछ्युं के 'खरुं बोलो कोइ क्षत्रिय अहीं छे? कारणके मारी परशुमांथी अंगारा वर्षे छे.' त्यारे तापसोए कह्युं 'अमे क्षत्रियो छीए. परशुरामे तपस्वीओ धारीने तेमने छोडी दीधा. ए प्रमाणे सर्व थोने मारीने ते निष्कंटकपणे हस्तीनापुरनुं राज्य भोगववा लाग्यो. एक दिवसे शुरामे कोइ निमित्तियाने पूछ्युं के 'मारुं मृत्यु कोनाथी थशे?' निमित्ति के कह्युं के नो दृष्टिथी आ क्षत्रियोनी दाढो क्षीररूप थइ जशे अने तेनुं भोजन जे करशे ते ने मारशे.' ते सांभळीने परशुरामे पोताना मारनारने ओळखवा माटे एक नशाळा बंधावी अने त्यां सिंहासन उपर दाढोनो थाळ मूक्यो.

अहीं वैताढ्यगामी मेघनाद नामना विद्याधरे निमित्तियाना कहेवाथी पोतानी त्रिनो वर सुभूम थशे एम जाणीने त्यां आवी सुभूमने पोतानी पुत्री अर्पण करी. अने ते तेनो सेवक थइ त्यां रह्यो.एक दिवस सुभूमे पोतानी माताने पूछ्युं के 'हे माता! शुं आटलोज छे?' एवा पुत्रना शब्दो सांभळीने नेत्रमां अश्रु लावी गद्गद

मोटा श्रीआर्यमहागिरिसूरि आर्यसुहस्तीसूरिने गणनिश्रा (गच्छनुं चिंतण (गच्छ) सोंपीने पोते विशेष वैराग्यथी जिनकल्पनी तुलना करवाने माटे उद्युक्त थइने विचरवा लाग्या. ते विशेषपणे क्रियामां उद्यमवंत रहे छे. ज्यारे आर्य- सुहस्ती सूरि गामनी अंदर समवसरे छे त्यारे श्रीआर्यमहागिरि गामनी बहार रहे छे, गच्छनी निश्राए विहार करे छे.

एकदा श्रीसुहस्तीसूरि विहार करतां पाटलीपुर पधार्या. त्यां आर्यमहागिरि ना छ विभाग करीने पांच पांच दिवस सुधी एक एक विभागमां भिक्षार्थे जायछे नीरस आहार ग्रहण करे छे. एक वखत श्रीआर्यसुहस्तीसूरि वसुभूति नामना श्रावकना कुटुंबने प्रतिबोध करवाने माटे तेने घेर गया हता अने धर्मदेशना आपता हता. ते वखते श्रीआर्यमहागिरि अजाणतां वसुभूतिने घेर भिक्षार्थे आव्या. तेमने जोइ आर्य- सुहस्तीसूरिए उभा थइ विनयपूर्वक वंदन कर्युं. एटले आर्यमहागिरि भिक्षा ग्रहण कर्या विना पाछा वळी गया. वसुभूति श्रावके आर्यसुहस्ती महाराजने पूछ्युं के ' जेमनो आपे आटलो विनय कर्यो ए महामुनि कोण छे ? ' त्यारे आर्य सुहस्तीसूरिए कह्युं के ' ए अमारा मोटा गुरुभाइ छे अने महा अनुभाववाळी जिनकल्पनी तुलना करे छे.' ते सांभळीने वसुभूति श्रावके बीजे दिवसे आखा नगरमां घेर घेर उत्तम आहार कराव्यो. आर्यमहागिरिए तेने अकल्प जाणीने ग्रहण कर्यो नहि. पछी उपाश्रये आवीने तेमणे सुहस्तीसूरिने ओळंभो आप्यो के ' तमे बहु विरुद्ध आचरण कर्युं के वसुभूतिने घेर मारुं अभ्युत्थानादि विनय कर्यो. तेम करवाथी तमे सर्वत्र अशुद्ध आहार करी दीधो छे. हवे आजथी मारे तमारी साथे एक क्षेत्रमां रहेवुं उचित नथी. ' ए प्रमाणे कही आर्यमहागिरिए जुदो विहार कर्यो अने गच्छनो आश्रय छोडी दइ एकाकी तपसंयम पाळी स्वर्गे गया. ए प्रमाणे बीजाए पण प्रतिबंध करवो नहि, एवो आ कथानो उपदेश छे.

रूवेण जुव्वणेण य, कन्नाए सुहेहिं वरसिरीए य ।

नेय लुब्भंति सुविहिया, निदरिसणं जंबुनामुत्ति ॥ १५३ ॥

अर्थ—" रूपे करीने, यौवने करीने, गुणवती कन्याओथी, सांसारिक सुखोथी श्रेष्ठ एवी लक्ष्मीथी सुविहितो—साधु पुरुषो—उत्तम जनो लोभाता नथी. अहीं जंबू नामे महा मुनिनुं निदर्शन केο दृष्टांत जाणवुं. " १५३. जंबूस्वामीनुं दृष्टांत पूर्वे आवी गयेलुं छे तेथी अहीं लख्युं नथी.

उत्तमकुलप्पसूया, रायकुलवडिंसगावि मुणिवसहा ।

बहुजणजइसंघट्टं, मेहकुमारुव्व विसहंति ॥ १५४ ॥

गाथा १५३—कन्नाए । कन्नाहिं । वरसिरीए हिं । निदरिसणं । जंबुनामुत्ति ।
गाथा १५४—मेहकुमारव्व ।

अर्थ-" उत्तम कुळमां उत्पन्न थयेला, राजकुळमां मृगाङ्क समान एवा मनि
मुनिश्रेष्ठो अनेक कुळमां उत्पन्न थयेला एवा मुनिजनोनो संघट्ट मेघकुमारनी जेम
प्रकारे सहन करेछे. " १५४. अहीं मेघकुमारनुं दृष्टांत जाणवुं. ४८

मेघकुमारनुं दृष्टांत.

मगधदेशमां राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा राज्य करतो हतो. तेनी ध
नामे राणी हती. तेनी कुक्षिने विषे कोइ जीव उत्पन्न थयो. तेना प्रभावथी तेने
मेघनो दोहद थयो. अभयकुमारे अट्ठमभक्तथी कोइ देवने आराधीने तेनी सहा
दोहद पूर्ण कर्यो, उत्तम समये पुत्रनो प्रसव थयो. स्वप्नने अनुसारे तेनुं नाम मेघ
पाड्युं. अनुक्रमे तेणे युवावस्था प्राप्त करी. श्रेणिक राजाए तेने स्वरूपवती
कन्या एक लग्ने परणावी. ते स्त्रीओ साथे विषयसुख भोगवतो मेघकुमार
वीरप्रभु त्यां समवसरवाथी वांदवाने गयो. प्रभुनी देशना सांभळी तेणे
प्राप्त थवाथी चारित्र ग्रहण कर्युं. भगवते तेमने शिक्षा ग्रहण करवा माटे स्थविर
मुनि पासे मोकल्या. हवे रात्रिए पोरुषी भणाव्या पछी संथारा करतां वृद्ध
(नाना मोटाना) व्यवहारथी मेघमुनिनो संथारो सर्व साधुनी पछी उपाश्रयनो
आव्यो. त्यां रात्रिए जता आवता साधुना चरणना प्रहारथी अने तेमना अथडावा
रेथी मेघमुनि बहु खिन्न थया. ते विचारवा लाग्या के "अरे! मारो सुखकारी अ
क्यां! मारी कोमळ पुष्पशय्या क्यां! अंगनाना अंगसंगथी उत्पन्न थतुं सुख
अने आ कठिन भूमिमां आळोटवुं क्यां! आ साधुओ प्रथम तो मारा प्रति आदर
हता अने हवे तो तेज साधुओ मने पग विगेरेना संघट्ट करेछे, तेथी जो आजनी
सुखे सुखे जाय तो प्रातःकाळमां वीरप्रभुने पूछी रजोहरण आदि वेष पाछो सोंप
मारे घेर चाल्यो जइश." ए प्रमाणे चिंतवी मेघमुनि प्रातःकाळे प्रभु पासे आव्या. प्र
ने मेघमुनिना बोल्या पहेलांज कह्युं के ' हे मेघ! तें आज रात्रिना चारे पहोर
अनुभव्युं छे अने घेर जवानो विचार करेलो छे आ हकीकत खरी छे ?' मेघमु
कह्युं के 'ए हकीकत खरी छे,' त्यारे भगवाने कह्युं के "हे मेघमुनि! आ दुःख तें
छे! पण जे दुःख तें आ भवथी त्रीजे भवे अनुभवेलुं छे ते सांभळ-पूर्वे वैताढ्य
तनी भूमिमां श्वेतवर्णो, घणो उंचो अने एक हजार हाथणीना टोळानो अधिपति
दांतवाळो सुमेरुप्रभ नामनो हाथी हतो. एक दिवस वनमां दावानळ लाग्यो. तेथी
भय पामी तृषातुर थइ वनमां भटकतां थोडा पाणिवाळा ने घणा कीचडवाळा सरोव
पेठो. त्यां तुं कीचडनी अंदर खुती गयो. तुं जळ सुधी पहोंच्यो नहि एटले तने अब

युं नहि, अने बहार पण नीकळी शक्यो नहीं. पछी घणा वैरी हाथीओए आवीने तने
शळना प्रहार कर्या. सात दिवस सुधी पीडा अनुभवी सो वर्षनुं आयुष्य
करी काळ करीने तुं विंध्यभूमिमां चार दांतवाळो, रक्तवर्णवाळो ने सातसे हाथणीनो
मेरुप्रभ नामे हाथी थयो. त्यां पण अग्नि लागेलो जोइ जातिस्मरथी तें तारो पूर्वभव
ो. पछी दावानळथी भय पामीने तें एक योजनप्रमाण भूमिनी अंदरथी तृण काष्ट
रे सर्व दूर फेंकी दीधुं, अने नवा उगेला तृण वल्ली अंकुरो विगेरेने शूंढवडे परिवारनी
थी मूळमांथी उखेडी नांखवा लाग्यो. एक वखत फरीथी दावानळ प्रगट्यो. ते
ने तुं परिवार सहित पेला एक योजन प्रमाणवाळा मंडळमां आवी गयो. बीजां पण
ां वनचर प्राणीओ त्यां आव्यां. ते वखते तें शरीर खणवाने माटे एक पग उंचो
ों, तेवामां एक ससलो कोइ जग्याए तेने स्थान नहि मळवाथी तारा पग नीचेनी
ाए आवीने उभो रह्यो. पग नीचे मूकतां तें ससलाने जोयो; एटले तेना उपरनी
ने लीधे तारुं मन आर्द्र थवाथी तें तारो पग उंचो ने उंचो राख्यो. ए प्रमाणे अढी
स सुधी एक पग उंचो राखीने रह्यो. दावानळ शांत थतां सर्व प्राणीओ पोतपोताने
ने गया. एटले पग नीचे मूकतां शरीर घणुं स्थूळ होवाथी पगनुं गिलर तूटी पडे
तुं पडी गयो, अने घणी वेदना भोगवी, सो वर्षनुं आयुष्य पूरुं करी दयाना परि-
णामथी शुभ कर्म बांधी श्रेणिक राजानो पुत्र थयो. हवे तुं विचार कर के समकितनो
लाभ मळ्यो नहोतो ते वखतमां तिर्यंचना भवमां थोडुं कष्ट सहन करवाथी तें मनु-
ष्यनुं आयुष्य बांध्युं, तो चारित्र ग्रहण कर्या पछी कष्ट सहन करवाथी तो मोटुं फळ मळशे;
वळी आ जीवे घणी वार नरकादिनां घणां दुःखो भोगव्यां छे, तो तुं आ साधुओना
संघट्टथी उत्पन्न थयेला दुःखथी शा माटे दुभाय छे? साधुना चरणनी रज पण
छे, तेथी आ चारित्र तजी देवानो तारो मनोरथ योग्य नथी. अग्निमां प्रवेश करवो,
, विषनुं भक्षण करवुं सारुं, पण ग्रहण करेला व्रतनो भंग करवो ए मार्ग नहि."
इत्यादि भगवंतनां कहेलां वचनोथी मेघमुनिने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं, एटले भगवंते
कहेला प्रमाणे जोयुं. पछी भगवानने वांदीने मेघमुनि बोल्या के "हे भगवन्!
कुपथमां पडतां तमे मारो बचाव कर्यो छे. आजथी मांदोने बे चक्षु शिवाय बीजा
अंगनी मारे शुश्रुषा करवी नहि एवो हुं अभिग्रह करुं छुं. आ प्रमाणेनो अभिग्रह
. निर्दोष चारित्र पाळी, गुणरत्न संवत्सरादि करी, निर्मळ ध्यानवडे पोतानुं आयु-
पूर्ण करी, समाधियथी मृत्यु पामीने विजय नामना अनुत्तर विमानने विषे देव-
उत्पन्न थया. त्यांथी महाविदेहक्षेत्रमां मनुष्य थइने मोक्षे जशे.

[illegible] सुरसं [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मनसा [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] काण न [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]।

ीमन तेनाथी तेने निरंतर भय रह्या करे छे; अने बहु मुनिना मध्यमां तो अकार्य
नुं मन पण करवाने शक्तिवान थवातुं नथी तो अकार्य करे तो केनेज ? माटे
एकली मुनिओने एकाकी विहार युक्त नथी. " १५८.

उच्चार पासवण वंत पित्त मुच्छाइ मोहिओ इक्को ।

सद्दव भायण विहत्थो, निक्खिवइ कुणइ उड्डाहं ॥ १५९ ॥

अर्थ-"उच्चार ते पुरीष, पासवण ते मूत्रवण (लघुनीति), वांत ते वमन अने
मूर्छा विगेरे-आदिशब्दथी वायुविकार विशुचिकादिनुं ग्रहण करवुं. एवा व्या-
-कळथी व्याकुळ थयेलो एकलो साधु पाणी सहित जे भाजन तेनाथी व्यग्र-
थो होतो सतो जो ते भाजन हाथमांथी मूकी दे तो संयम विराधना-आत्म-
ना थाय. अने जो ते भाजन हाथमां रहेवा दइने उच्चार (वडी नीति) विगेरे
शासननी उड्डाह (लघुता) थाय. तेथी मुनिने एकला रहेवुं कोइ रीते योग्य
" १५९

एगदिवसेण बहुआ, सुहाय असुहाय जीवपरिणामा ।

इक्को असुहपरिणओ, चइज्ज आलंबणं लद्धुं ॥ १६० ॥

अर्थ-"एक दिवसमां पण जीवना परिणाम शुभ अने अशुभ एवा बहु प्रकारना
छे, तेथी एकलो मुनि अशुभ परिणामवाळो थयो सतो कांइक आलंबन-कारणने
चारित्रने तजी दे छे अथवा अनेक प्रकारना दोष लगाडे छे. " १६०

सव्वजिणपडिकुट्ठं, अणवत्था थेरकप्पभेओअ ।

इक्को अ सुद्धाउत्तोवि हणइ तवसंजमं अइरा ॥ १६१ ॥

अर्थ-" एकाकीपणे विचरवुं सर्व जिनेश्वरोए निषेध्युं छे. वळी तेथी अनवस्था
मर्यादानो भंग थाय छे अने स्थविरोनो कल्प जे आचार तेनो भेद थाय छे, तेथी
एकलो रहेवुं अयुक्त छे. वळी एकलो शुभ आयुक्त केटलाक भावानुयुक्त होय तोपण
काळमां तप अने संयमने हणी नाखे छे. अर्थात् तेमां दोष लगाडे छे." १६१

वेसं जुन्नकुमारिं, पउत्थवइअं च बालविहवं च ।

पासंडरोह मसइं नवतरुणिं थेरभज्जं च ॥ १६२ ॥

गाथा १५९-निक्खिवइ । गाथा १६०-परिणामा । चइज्ज ।
गाथा १६१-सुद्धाउत्तोवि । सुद्धाउत्तोवि । पडिकुट्ठ-निषिद्ध । अइरा-अचिरात्

सविडकुब्बरुवां, दिट्ठा मोहेइ जा मणं इथ्थी ।
आयहियंचितंता, दुरयरेणं परिहरंति ॥ १६३ ॥

अर्थ–वेश्या, वृद्ध कुमारिका एटले मोटी उम्मरवाळी कुमारिका, परदेश गये पतिवाळी स्त्री, बाळ विधवा एटले जेनो पति बाल्यावस्थामांज मरण पामेलो छे अति कामविह्वळ स्त्री, पाखंडव्रते करीने जेणे विषयनो रोध करेलो छे एवी स्त्री–सणी प्रमुख, असती ते व्यभिचारिणी स्त्री, नवयौवना, वृद्ध भर्त्तारनी भार्या. शुभ आसायने दुर करी दे एवा उद्भट रूपवाळी अथवा विकार सहित मनोहर रूप अने देखवा मात्रथीज जे मनने मोहित करे एवी स्त्री–आटला प्रकारनी स्त्री आत्महितने चिंतवनार पुरुष अति दूरथीज त्यजी दे छे." १६२. १६३.

सम्मदिट्ठीवि कयागमोवि, अइविसयरागसुहवसओ ।
भवसंकडंमि पविसइ, इथ्थं तुह सच्चइनायं ॥ १६४ ॥

अर्थ–"सम्यग् दृष्टि छतां अने सिद्धांतनो जाण छतां अतिशय विषयराग जे सुख तेना परवशपणाथी भवसंकटने विषे प्रवेश करेछे, अर्थात् बहु भव करेछे. ते संबंधमां हे शिष्य ! तारे सत्यकीनुं उदाहरण जाणवुं."१६४. आ विद्याधरनो संबंध जाणवो. ४९

सत्यकी विद्याधरनी कथा.

विशाळ लक्ष्मीवाळी विशाळा नगरीमां चेटक नामे राजा राज्य करतो तेने सुज्येष्ठा अने चिल्लणा नामे बे पुत्रीओ हती. ते बंनेने अरस्परस प्रेम हतो. अभयकुमारनी सलाहथी ते बन्ने कन्याओए श्रेणिक राजानी साथे परणवानो अभिग्रह कर्यो हतो. पछी अभयकुमारे एक सुरंग खोदावी, अने ते सुरंगना मुखमां श्रेणिक राजाए विशाळा नगरीए आवी बन्ने कन्याओने लीधी. सुरंगना मुख आवतां चिल्लणाए विचार कर्यो के 'सुज्येष्ठा रूपमां माराथी अति श्रेष्ठ छे, तेथी राजा तेने बहु मान दइ पट्टराणी करशे.' ए प्रमाणे विचारी चिल्लणाए सुज्येष्ठा के 'हे भगिनी ! तुं पाछी जइने मारो रही गयेलो घरेणांनो डाबलो जलदी ला' ए प्रमाणे कही सुज्येष्ठाने पाछी मोकली. पछी चिल्लणाए श्रेणिक राजाने कह्युं स्वामिन ! अहींथी जल्दी चालो. जो कोइ जाणशे तो बहु विपरीत थशे.' ए प्रमाणे कहीने तेओ सुरंगमांथी बहार नीकळी गया त्यार पछी आवेलो सुज्येष्ठाए के "बाळपणथी पण वधारे प्रिय एवी मारी बेन चिल्लणाए मारा उपर आवुं क

दे केवळ स्वार्थमां रचीपची रहेल कुटुंबवर्गथी सर्युं. अने सर्पनी फणा जेवा विष-
ने पण धिक्कार छे." ए प्रमाणे वैराग्य थवाथी सुज्येष्ठाए पाणिग्रहण न करतां
आर्या साध्वी पासे जइने चारित्र ग्रहण कर्युं.

छट्ठ अट्ठम आदि अनेक प्रकारनां तप करतां ते एक दिवस आतापना ग्रहण
े रहेली छे. एवे समये पेढाल नामना विद्याधरे त्यांथी जतां तेने जोइ. एटले
मनमां विचारवा लाग्यो के 'आ सती ध्यानमां स्थित थएली छे अने ते महा रूपवती
तेथी जो हुं आ साध्वीनी कुक्षिनी अंदर पुत्रने उत्पन्न करुं तो ते पुत्र मारी वि-
पात्र थाय.' ए प्रमाणे विचार करीने विद्याना बळथी अंधकार विकुर्वी ते ने
एवी रीते भ्रमरनुं रूप करी तेने भोगवीने तेनी योनिमां वीर्य मूक्युं. पछी
कुक्षिने विषे उत्पन्न थयेलो जीव अनुक्रमे वधवा लाग्यो, तेथी सुज्येष्ठा साध्वीने
संदेह उत्पन्न थयो. तेणे ते संबंधी ज्ञानीने पूछ्युं एटले ज्ञानीए तेनो संदेह
ने कह्युं के 'एमां तारो दोष नथी, तुं तो सती छे.' अनुक्रमे ते साध्वीने पुत्र
तेनुं नाम सत्यकी पाडवामां आव्युं. ते साध्वीना उपाश्रयमां मोटो थयो. त्यां
ीनो मुखथी आगमोनुं श्रवण करतां तेने सर्व आगमो मुखपाठ थइ गया.

एक दिवस सुज्येष्ठा वीरभगवानने वांदवाने माटे समवसरणमां गइ. सत्यकी पण
मानी साथे गयो. ते अवसरे कालसंदीपक नामना विद्याधरे भगवानने पूछ्युं के
भगवन्! मने कोनाथी भय छे?' भगवाने कह्युं के 'तने आ सत्यकी बाळकथी भय
सांभळीने कालसंदीपके सत्यकीनी अवज्ञा करीने तेने पोताना पगमां पाडी दीधो.
सत्यकी तेना उपर क्रोधित थयो. पछी सत्यकीना पिता पेढाल विद्याधरे तेने
ो विद्या आपी. ते विद्याने साधतां सत्यकीने कालसंदीपक विघ्न करवा लाग्यो.
ने रोहिणी विद्याए ज कालसंदीपकने तेम करतां अटकाव्यो; कारण के सत्य-
कीने प्रथम पांच भवने विषे रोहिणी विद्याने साधतां मरण प्राप्त थयुं हतुं. छठ्ठे
हिणी विद्याने साधतां तेना आयुष्यमां छ मास अपूर्ण रहेला होवाथी रोहि-
णीए प्रत्यक्ष थइने कह्युं हतुं के 'हे सत्यकी! तारुं आयुष्य मात्र छ मास
रह्यां छे, तेथी तुं जो कहेतो होय तो आ भवमां हुं सिद्ध थाउं, नहींतो आवता
हुं सिद्ध थइश. त्यारे सत्यकीए जीभे कह्युं हतुं के 'जो थावे
ोय तो आवता भवमां तुं सिद्ध थजे. आ प्रमाणे हवे
ा आ ... कालमां सिद्ध था. ...
ारीरनो ... दशार टेमां ...

(कपाळ) थतावयुं. रोहिणी विद्या महावतमांथी अंगमां पेठी, अने कपाळमां लोचन उत्पन्न थयुं. पछी तेणे प्रथम पोताना पिता पेढालने ज साध्वीना व्रतनो भंग करनार जाणी विद्याबळथी मार्यो. कालसंदीपक विद्याधर सत्यकीने विद्याबळथी दुर्जय जाणीने मायाथी त्रिपुरासुरनुं स्वरूप धारण करीने नासी गयो, अने त्रण पुरमां जइने पातालकलशमां पेठो. लोकनी अंदर एवी प्रसिद्धि थइ के 'आणे त्रिपुरासुरने पातालमां पेसाडी दीधो, तेथी आ सत्यकी अग्यारमो रुद्र पेदा थयोछे.'

पछी सत्यकी विद्याधरे भगवाननी पासे समकित अंगीकार कर्युं, अने देवगुरुनो अत्यंत भक्त थयो.त्रणे संध्याए ते भगवाननी आगळ नृत्य करेछे. परंतु अत्यंत विषयसुखमां लोलुप होवाथी राजानी, प्रधाननी के कोइ व्यापारी विगेरेनी रूपवती स्त्रीने ते जुए के तरत ज तेने गाढ आलिंगन आपीने ते भोगवे छे. तेने मारवाने माटे कोइ शक्तिमान थतुं नथी. एक दिवस महापुरी उज्जयिनीमां चंडप्रद्योत राजाना अंतःपुरमां प्रवेश करीने तेणे पद्मावती शिवाय बीजी तमाम राणीओने भोगवी. तेथी चंडप्रद्योत राजा क्रोधित थइ कहेवा लाग्यो के 'जे कोइ आ दुष्टबुद्धि सत्यकीने मारी नांखशे तेने हुं मनवांछित आपीश.' आ प्रमाणे पटह वगडावीने तेणे लोकोने जणाव्युं. ते वखते ते नगरमां रहेनारी एक उमा नामनी वेश्याए बीडुं झडप्युं.पछी एक दिवसे उमा पोताना घरना गोखमां बेठी हती ते वखते तेणे सत्यकीने विमानमां बेसीने आकाशमार्गे जती जोइ कह्युं के 'हे चतुरशिरोमणि ! हे कुरूपजनमां स्फुट रूप ! हे तेजथी सूर्यने जीतनार ! तुं प्रतिदिवस मुग्धा (विषयरसनी अजाण) स्त्रीओने चाहेछे; परंतु अमारा जेवी कामकळामां कुशळ स्त्री तरफ दृष्टि पण करतो नथी. माटे आज तो मारुं आंगणुं कृतार्थ कर, अने एक वखत तुं अमारुं कामचातुर्य जो.' इत्यादि वचनोथी रंजित थयेलो अने कटाक्षविक्षेपथी जेनुं मन आकर्षायुं छे एवो सत्यकी विमानमांथी उतरीने ते नायिकाना घरमां गयो.ते वेश्याए पण अनेक प्रकारना कामक्रीडाना विनोदथी तेनुं मन आधीन करी लीधुं. तेथी ते तेने छोडीने अन्य कोइ स्थाने जतो नथी; हमेशां त्यांज आवेछे. तेमनी वच्चे परस्पर घणीज प्रीति थइ गइ छे.आ प्रमाणे अत्यंत विश्वास पमाडीने तेणे एकवार सत्यकीने पूछ्युं के 'हे स्वामिन् ! तमे स्वेच्छाए परस्त्रीओने भोगवो छो पण तमने मारवाने कोइ शक्तिमान थतुं नथी ते कोना बळथी ?' त्यारे सत्यकीए कह्युं के 'हे सुंदर लोचनवाळी स्त्री ! मारी पासे विद्यानुं बळ छे, तेना प्रभावथी मने कोइ मारतुं नथी.' फरीथी वेश्याए पूछ्युं के 'तमे ते विद्याने कोइ वखत दूर राखोछो के नहि ?' सत्यकीए कह्युं के 'ज्यारे हुं विषयसेवन करुंछुं त्यारे विद्याने दूर राखुंछुं.' ते सांभळीने ते उमा वेश्याए जइ राजाने

थुं के 'सत्यकीने मारवानो एकज उपाय छे, परंतु जो तमे मारो बचाव करो तो तेने सुखेथी मारो.' ए प्रमाणे प्रस्तावना करीने तेणे सर्व हकीकत कही बतावी. पछी वेश्याना उदर उपर कमलपत्रो रखावी तेणे ते कमलपत्रोने छेदी नांख्या, परन्तु वेश्याना शरीर उपर जरा पण खड्ग लाग्युं नहि. एम करी 'आवी रीते तारो बचाव करशुं' एवो विश्वास उत्पन्न करावीने तेने घेर मोकली.पछी रात्रिए पोताना सेवकोने तेने मारी नाखवानुं समजावी तेने घेर मोकल्या. ते सेवकोने वेश्याए गुप्त रीते राख्या. तेवामां सत्यकी आव्यो अने उमा साथे विषयसेवन करवा लाग्यो. एटले गुप्त रहेला राजसेवकोए आवीने बंनेनां मस्तको छेदी नांख्यां.

सत्यकी विद्याधरना नंदीश्वर नामना गणे ते हकीकत सांभळी, एटले ते कोपित थने त्यां आव्यो अने आकाशमां शिला विकुर्वीने कहेवा लाग्यो के 'तमे मारा विद्यागुरुने मार्या छे, तेथी जेवी स्थितिमां तेने मार्या छे तेवीज स्थितिमां तेनी मूर्ति करावीने जो तमे सर्व नगरजनो पूजशो तो तमने सवळाने छोडीश, नहि तो आ शिलाथी सर्वने चूर्ण करी नाखीश.' एवुं सांभळीने भयभीत थयेला राजा आदि सर्व लोकोए तेवीज स्थितिवाळी युग्मरूप मूर्ति करावीने एक मकाननी अंदर स्थापी, अने तेनी पूजा करवा लाग्या. सत्यकी काळे करीने नरकभूमिमां गयो. पछी केटलेक काळे तेवी लज्जा उत्पादक मूर्तिने जोइने ते काढी नांखी तेनी जग्याए लिंगनी स्थापना करी. माटे विषयमां अनुराग न करवो एवो आ कथानो उपदेश छे.

सुतवस्सियाण पूया, पणाम सक्कार विणयकज्जपरो ।
बद्धंपि कम्ममसुहं, सिढिलेइ दसारनेयावा ॥ १६५ ॥

अर्थ–"श्रुतपस्वी–भला चारित्री–महामुनिओनी पूजा ते वस्त्रादि आपवुं, प्रणाम ते मस्तकवडे वंदन करवुं, सत्कार ते तेमना गुणनुं वर्णन करवुं, अने विनय ते तेमनो आवे एटले उभा थवुं–इत्यादि कार्यमां तत्पर एवो पुरुष, बांधेलुं–आत्म प्रदेशनी साथे श्लिष्ट करेलुं एवुं पण अशुभ–पापरूप जे कर्म तेने शिथिल करे छे. कोनी जेम ? दशारनेता जे दशारना स्वामी कृष्ण तेनी जेम." १६५ अहीं कृष्णनो संबंधपी जेम जाणवा. ५०

श्रीकृष्ण प्रबंध.

एकदा विहार करतां करतां श्रीनेमिनाथ भगवान द्वारिकामां समवसर्या. तेमने

गाथा १६५–पूया । दसारनेयव्वा । दसारनेता इव ।

वांदवाने माटे श्रीकृष्ण परिवार सहित आव्या. तेने मनमां एवी इच्छा थइ के 'आवे
आ अढार हजार साधुओमांना दरेकने द्वादशावर्त वंदनथी वांदु.' ए प्रमाणे विचा
पेताना भक्त वीरा साळवीनी साथे सर्व साधुओने उपर प्रमाणे वंदन करवाथी श्रा
थयेला कृष्ण, भगवान पासे आवी बोल्या के 'हे भगवन्! आज हुं अढार ह
साधुओने वांदवाथी अति श्रमित थयो छुं. में आज सुधीमां त्रणसे ने साठ युद्धो
तेमां कोइ वखत हुं आटलो श्रमित थयो नहोतो.' ते वखते भगवाने कह्युं के
महानुभाव! जेम वंदन करवाथी तुं घणो श्रमित थयो छे तेम तें लाभ पण घणो
व्यो छे. कारणके वंदनदानथी तें क्षायक समकित मेळव्युं छे अने तीर्थंकरना
उपार्जन कर्युंछे. वळी संग्राम करीने सातमी नरकभूमिने योग्य जे कर्म बांध्युं हतुं
खपावीने त्रीजी नरकभूमि योग्य रहेवा दीधुं छे. एटलो लाभ तने थयोछे.' ते
भीने कृष्णे कह्युं के 'फरीथी अढार हजार मुनिने वांदीने त्रीजी नरकभूमि योग्य
पण खपावी दउं.' त्यारे भगवाने कह्युं के 'हे कृष्ण! हवे तेवो भाव आवे नहि, का
हवे तमे लोभमां प्रवेश करेलो छे.' कृष्णे फरीथी पूछयुं के 'मने ज्यारे आटलो
लाभ थयो छे?' त्यारे मारा अनुयायी वीरा साळवीने केटलो लाभ थयं
भगवाने कह्युं के 'एने तो मात्र कायक्लेश थयोछे, कारणके तेने तो मात्र तारी
दृत्तिथीज वंदन कर्युं छे, तेथी भाव विना कांइ फल मळतुं नथी.' आ प्रमाणे
ओए साधुओनी पूजाभक्ति विगेरे भावपूर्वक करवी.

अभिगमण वंदण नमंसणेण, पडिपुच्छणेण साहूणं ।
चिरसंचियंपि कम्मं, खणेण विरलत्तण मुवेइ ॥ १६६ ॥

अर्थ—"अभिगमन ते सन्मुख जवुं, वंदन ते वंदना करवी, नमंसण के०
नमस्कार करवो, अने पडिपुच्छण ते शरीरना निराबाधपणा विगेरेनी पृच्छा करवी. मा
एटलां वानां करवाथी चिरसंचित के० घणा काळनुं बहुभवनुं उपार्जन करेलुं कर्म
[illegible]—थोडा काळमां विरलपणाने पामेछे अर्थात् पापकर्मनो क्षय थायछे." ?
केइ सुसीला सुहमाइ सज्जणा, गुरुजणस्सवि सुसीसा ।
विउलं जणंति सद्धं, जह सीसो चंडरुद्दस्स ॥ १६७ ॥

अर्थ—"कोइक सुशील के० निर्मळ स्वभाववाळा अने सूक्ष्म के० अतिशय [illegible]
अने सज्जन के० [illegible] उपर [illegible] एवा सुशिष्यो, गुरुजननी- पोताना [illegible]

— [illegible] १६७ [illegible]

द्राने विस्तीर्ण करेछे, अर्थात् आस्तिक्य लक्षणवाळी श्रद्धाने दृढ करेछे. कोनी-
चंडरुद्र आचार्यना शिष्यनी जेम. चंडरुद्र आचार्यनी श्रद्धा तेना शिष्ये दृढ
नेम." १६७. अहीं चंडरुद्र आचार्य ने तेना शिष्यनो संबंध जाणवो. ५१

चंडरुद्राचार्य कथा.

महादुर्ग उज्जयिनीमां अन्यदा चंडरुद्राचार्य समवसर्या. ते अत्यंत ईर्षाळु अने
हता, तेथी ते पोतानुं आसन शिष्योथी दूर राखता हता. एक दिवस एक नवो
वणिकपुत्र पोताना मित्रोथी परिवृत थइने त्यां आव्यो अने तेणे सर्व साधु-
वांद्या. पछी तेना बाळमित्रोए हांसी करी के 'हे स्वामिन्! आने तमे शिष्य करो.'
मुनिओए कह्युं के 'हे महानुभाव! जो तने दीक्षा ग्रहण करवानो मनोरथ होय
दूर बेठेला अमारा गुरुनी पासे जाओ.' तेथी ते बाळमित्रो वणिकपुत्र सहित
पासे आव्या.त्यां पण गुरुने वांदीने तेओ हास्यथी बोल्या के 'महाराज! आने
आपो.' ते सांभळीने आचार्य मौन रह्या. त्यारे बाळकोए फरीथी कह्युं के 'हे
मिन्! आ नवा परणेला अमारा मित्रने आप शिष्य करो.' छतां पण गुरु तो मौन
. त्यारे तेओए त्रीजीवार पण तेज प्रमाणे कह्युं, एटले चंडरुद्राचार्यने क्रोध चड्यो
बळात्कारे ते नवा परणेला बालकने पकडी,बे पगनी वच्चे राखी तेना केशनो
करी नांख्यो.ते जोइने बीजा सर्व बाळको त्यांथी नासी गया.तेओ विचार करवा
के 'अरे! आ शुं थयुं!' ए प्रमाणे विलखा पडी तेओ जोवा पण उभा न रह्या
. पछी नवदीक्षित शिष्ये गुरुने कह्युं के 'हे भगवन्! हवे आपणे अहींथी अन्य
चाल्या जइए. कारणके मारां मातपिता तथा श्वशुरपक्ष विगेरे जो आ वात
तो तेओ अहीं आवी तमने मोटो उपद्रव करशे.' त्यारे गुरुए कह्युं के 'हुं रा-
चालवाने असक्त छुं.' त्यारे ते नवदीक्षित शिष्य गुरुने पोताना स्कंध उपर बेसाडी
चाल्यो. अंधारी रात्रिए चालतां तेना पग ऊंची नीची भूमिपर पडवाथी
क्रोधित थइ तेना मस्तक उपर दंडनो प्रहार करवा लाग्या.तेथी तेना मस्त-
रुधिर नीकळ्युं अने घणी वेदना थवा लागी; पण तेना मनमां लेश मात्र पण
गयो नहि. ते तो तेमां पोतानोज वांक माने छे अने विचार करे छे के
पापीने धिक्कार छे! कारण के आ गुरु मारे लीधे कष्ट भोगवे छे. प्रथम तो गुरु-
स्वाध्याय अने ध्यानमां स्थिर थयेला हता. तेने में दुष्टे बाधित कर्या,
थी हुं केवी रीते मुक्त थइश?' आ प्रमाणे शुभ भावनाने भावतां शुभ
घातिकर्मनो क्षय करीने ते केवलज्ञान पाम्या. पछी तो सर्वथा प्रकाश थवाथी

ते सारी रीते सरळताथी चालवा लाग्या. एटले गुरुए पूछ्युं के 'हवे तुं केम रीते चालेछे ? संसारमां दंडप्रहार एज साररूप जणाय छे दंडप्रहारने लीधेज तुं सरलताथी चाले छे.' त्यारे शिष्ये कह्युं के 'हुं सरल गतिए चालुं छुं ते आपनो प्रसाद छे.' एटले गुरुए पूछ्युं के 'तने कांइ ज्ञान थयुं छे ?' त्यारे शिष्ये 'हा, स्वामिन् ! मने केवळज्ञान थयुछे.' एवुं शिष्यनुं वाक्य सांभळी गुरुने पश्चात्ताप थयो के 'में अति विरुद्ध कर्म कर्युं. केवलीनी आशातना करनार मने धिक्कार छे ! एना मस्तकमां में दंडप्रहार करेला छे, तो आ मारुं पातक केम नष्ट थशे ?' ए प्रमाणे पश्चात्ताप करतां गुरु, शिष्यना स्कंध उपरथी उतरी पगमां पड्या अने पोतानो अपराध खमाववा लाग्या. ए प्रमाणे वारंवार अपराध खमावतां विशुद्ध ध्यानथी तेमने पण केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. बन्ने केवलीपणे घणा वखत सुधी विहार करीने मोक्षे गया. आ प्रमाणे सुशिष्य पण विनीत धर्म पमाडे छे, एवो आ कथानो उपदेश छे.

अंगारजीववहगो, कोइ कुगुरू सुसीसपरिवारो ।
सुमिणे जइहिं दिट्ठो, कोलो गयकलहपरिकिन्नो ॥ १६८ ॥

अर्थ—"अंगारा (कोयला) रूप जीवनो वध करनारो (अजीवमां जीव संज्ञाने लइ) कोइ कुगुरु (द्रव्यानुयोगनिरक्त गुरु) सुशिष्योथी परवरेलो तेने स्वप्नमां मुनिओए [illegible] कोइ [illegible] शूकर छे, एवा स्वरूपे दीठो." १६८.

सो उग्गभवसमुद्दे, सयंवरमुवागएहिं राएहिं ।
करहो वक्खरभरिओ, दिट्ठो पोराणसीसेहिं ॥ १६९ ॥

अर्थ—"ते कुगुरु उग्र एवा भवसमुद्रमां (परिभ्रमण करतां) पांच [illegible] शिष्यो अने भवांतरमां थयेला राजपुत्रो के जेओ स्वयंवर [illegible] (उपर भारने उपाडनारो)." १६९. एनी विशेष [illegible]

अंगारमर्दकाचार्य कथा.

[illegible]

[illegible]

...म कर्युं त्यारे गुरुए विचारीने कह्युं के ' हे शिष्यो ! आजे कोइ अभव्य गुरु पांचसे शिष्योथी परिवृत थइ अहीं आवशे. ए प्रमाणे तमारुं स्वप्न फलित थशे. ' ...दमां तो रुद्रदेव नामे आचार्य पांचसे शिष्योथी परिवृत थयेला त्यां आव्या. ...साधुओए तेमनुं आतिथ्य कर्युं. पछी बीजे दिवसे अभव्य गुरुनी परीक्षा करवाने माटे प्राशु करवा जवाना (दिशाए जवाना) स्थानके (रस्तामां) विजयसेन सूरिए पोताना शिष्यो पासे ते रुद्रदेव सूरि न जाणे एवी रीते कोयला पथराव्या. रात्रिए ते अभव्य गुरुना शिष्यो लघुशंका करवाने माटे उठ्या तो तेमने पगे कोयला दबाया,तेथी शब्द थतां तेओ 'आ कोयला छे'एवुं नहि जाणवाथी पश्चात्ताप करवा लाग्या के ' अरे ! अंधकारमां अमे अजाणतां कोइ जीवने चांपी नांख्या ' ए प्रमाणे करी पुनः पुनः मिथ्या दुष्कृत देवा लाग्या; अने पछी संथारामां जइने सुइ रह्या. पछी रात्रिमां रुद्रदेवाचार्य पोते लघुशंका करवाने उठ्या.तेना चरणथी पण कोयला दबाया. एटले तेनो शब्द सांभळी वधारे वधारे चांपवा लाग्या अने मुखेथी बोल्या 'आ अर्हतना जीवो दबायाथी पोकार करे छे ' एवुं वचन विजयसेन सूरिए सांभळ्युं. तेथी तेणे प्रातःकाळे रुद्रदेवना शिष्योने कह्युं के ' आ तमारा गुरु अभव्य छे, माटे तमारे तेने छोडी देवा जोइए.' ते सांभळीने तेओए रुद्रदेवने गच्छनी बहार कर्यो. पछी ते पांचसे शिष्यो निरतिचार संयम पाळी अंते समाधिथी मृत्यु पामीने देव उत्पन्न थया.

त्यांथी च्यवीने तेओ वसंतपुर नगरमां दिलीप राजाने घेर पांचसे पुत्रो थया. अने तेओ युवावस्था पाम्या. एक वखत ते पांचसे राजपुत्रो गजपुर नगरमां कनक राजानी पुत्रीना स्वयंवरमां गया हता. ते वखते अंगारमर्दकाचार्यनो (रुद्रदेवनो) जीव संसारमां परिभ्रमण करतो ऊंटपणे उत्पन्न थयो हतो. ते पण त्यां आव्यो हतो. भारना आरोपण वखते अति तीव्र शब्द करता ते ऊंट अत्यंत भारथी पीडित थयेलो होवाथी मोटा बराडा पाडे छे. जाणे पूर्व भवमां शुं अशुभ कर्म कर्युं हशे ? आ प्रमाणे वारंवार चिंतवन करतां ते पांचसे राजपुत्रोने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी तेओए पोताना पूर्व भवनुं स्वरूप जोयुं. जोइने तेओ बोल्या के 'अरे ! आ अमारो पूर्व भवनो अभव्य गुरु ऊंटपणे उत्पन्न थयेलो छे. एमनी गति कष्ट छे, कारणके आणे पूर्व भवमां ज्ञान मेळव्युं हतुं,पण श्रद्धा विनानुं ते निष्फळ थयुं. तेथी ते आवी अवस्थाने प्राप्त थयेलो छे, अने हजु ते अनंता जन्ममरण करशे.' आम विचारी ते ऊंटने तेना धणी पासेथी छोडाव्यो.

पछी ते पांचसे राजपुत्रो विचारवा लाग्या के 'आ संसार अनित्य छे.धिक्कार...

फळ जेवा अने चिरपरिचित एवा भोगथी सर्युं. हस्तीना कर्ण जेवी चंचळ आ लक्ष्मीने धिक्कार छे ! ' आ प्रमाणे वैराग्यपरायण थइ तेओए चारित्र ग्रहण करी अंते सर्वे सद्गतिना भाजन थया.

आ प्रमाणे सुशिष्यो अन्य भवमां पण उपकारी थायछे.एवो आ स्थाने उ

संसारवंचणा नवि गणंति, संसारसूअरा जीवा ।
सुमिणगएणवि केइ बुज्झंति पुप्फचूलावा ॥ १७० ॥

अर्थ–" संसारने विषे आसक्त शूकर–भुंड जेवा जीवो संसारनी वंचना गणता नथी (विषयासक्त जीवो विषयनेज सारभूत गणे छे); अने केटलाक (जीवो) स्वप्न मध्ये देखवा मात्रथी पण पुष्पचूलानी जेम प्रतिबोध पामे छे. जेम पुष्पचूला नामे राणी स्वप्नमां नरकादि स्वरूपने जोइने प्रतिबोध पामी, तेम केटलाक जीवो होय छे. ५२

पुष्पचूलानी कथा.

पुष्पभद्र नामना नगरमां पुष्पकेतु नामे राजा हतो. तेने पुष्पवती नामे पट्टराणी हती. एक दिवस तेणे बे बाळको (पुत्रपुत्री रूप युग्म) ने जन्म आप्यो. तेमां पुत्रनुं नाम पुष्पचूल पाडयुं अने पुत्रीनुं नाम पुष्पचूला पाडयुं. अनुक्रमे ते यौवनावस्था पाम्या अने सर्व कळामां कुशळ थया.तेओने परस्पर अति स्नेह हतो, तेथी एक बीजा विना तेओ एक क्षण पण रही शकता नहोता.ते जोइने एकदा पिताए विचार कर्यो के 'आ साथे जन्मेला पुत्रपुत्री परस्पर अत्यंत स्नेहवाळा छे, जो तेमांथी पुत्रीने बीजे परणावीश तो तेमना स्नेहनो भंग थशे;माटे ए बंनेनोज परस्पर लग्नसंबंध थाय तो तेमनो वियोग न थाय.'ए प्रमाणे चिंतवी नागरिक लोकोने बोलावीने राजाए पूछयुं के 'अंतःपुरमां उत्पन्न थयेला रत्नने स्वेच्छाथी जोडवाने राजा समर्थ छे के नहि ते कहो.' ते सांभळीने तेनो आशय नहि जाणनारा प्रधान पुरुषोए कह्युं के 'हे राजन् ! समग्र देशमां जे जे रत्न उत्पन्न थाय छे तेने अन्यनी साथे जोडवाने राजा समर्थ थाय छे, तो अंतःपुरमां उत्पन्न थयेला रत्नने जोडवाने राजा समर्थ थाय तेमां शुं कहेवुं !' ए प्रमाणे छळवडे तेओनी अनुज्ञा मेळवीने अंतःपुरनी स्त्रीओए अ... करतां छतां राजाए ते बे भाइ बेनने लग्नसंबंध कर्यो.ए कार्य घणुंज असमंजस थयेलुं जोइ तेनी माता पुष्पवती वैराग्यपरायण थइने दीक्षा ग्रहण करी.पछी ते

करीने देवपणे उत्पन्न थइ. पुष्पकेतु राजा पण अनुक्रमे परलोकमां गयो एटले पुष्पचूल कुमार राजा थयो. तेणे पोतानी परणेली बेन पुष्पचूलाने पट्टराणी करी अने तेनी साथे विषयसुख भोगवतो सतो घणो काळ व्यतीत कर्यो.

एक समये तेमनी मातानो जीव जे देव थयो छे तेणे अवधिज्ञानथी जोयुं, एटले पूर्व भवना पुत्रपुत्री उपर प्रीति उत्पन्न थवाथी ते मनमां विचार करवा लाग्यो के मारा पूर्व भवना पुत्र अने पुत्री आवा प्रकारनुं पापकर्म करी नरकमां जशे, तेथी तेमने प्रतिबोध पमाडुं.' एम विचारी तेणे पोतानी पुत्री पुष्पचूलाने रात्रिए स्वप्नमां नरकनां दुःखो देखाड्यां. ते जोइने ते भयभीत थइ गइ. सवारमां तेणे राजाने स्वप्ननी हकीकत कही. राजाए पण नरकनुं स्वरूप पूछवाने माटे अन्यदर्शनी [illegible] विगेरेने बोलाव्या अने नरकनुं स्वरूप पूछ्युं. त्यारे तेओए जणाव्युं के 'हे [illegible]! शोक, वियोग, रोग अने भोगनी पराधीनता विगेरे नरकनां दुःखो जाणवां.' [illegible] पुष्पचूला राणीए कह्युं के 'में जे दुःखो रात्रे स्वप्नमां जोयां छे ते तो भिन्न छे.' [illegible] अर्णिकापुत्र आचार्यने बोलावीने राजाए पूछ्युं के 'हे स्वामिन! नरकनां दुःखो [illegible] होयछे?' तेना उत्तरमां आचार्ये राणीए जेवां नरकनां दुःखो स्वप्नमां जोयां [illegible] तेवांज करी बताव्यां. ते सांभळीने आश्चर्य पामेली राणीए पूछ्युं के 'हे स्वामी! [illegible] पण शुं एवुं स्वप्न जोयुं छे? के जेथी में स्वप्नमां जेवां नरकनां दुःखो जोयां [illegible] तेवांज आप कहो.' आचार्ये कह्युं के 'अमे स्वप्नमां तो जोयां नथी पण आग[illegible] [illegible] वचनथी ते जाणीए छीए.' पछी राणीए पूछ्युं के 'कया कर्मथी एवां दुःखो [illegible] थायछे?' गुरुए कह्युं के 'पांच आश्रवना सेवनथी अने काम क्रोध विगेरे पापा[illegible] [illegible] प्राणीओने नरकनां दुःखो प्राप्त थायछे.' इत्यादि कहीने गुरु पोताने स्थानके [illegible]. [illegible] बीजे दिवसे पुष्पचूलानी मातानो जीव जे देव हतो तेणे राणीने स्व[illegible] [illegible] देवताओनां सुख बताव्यां. प्रातःकाळे राणीए ते स्वप्ननी हकीकत राजाने कही. [illegible] राजाए अन्य दर्शनीओने बोलावीने पूछ्युं के 'स्वर्गनां सुख केवां होयछे?' [illegible] कह्युं के 'हे राजन' उत्तम प्रकारनां भोजन, [illegible], [illegible], [illegible] अंगनाओ साथे विलास इत्यादि स्वर्गनां सुखो छे.' त्यारे राणीए कह्युं के '[illegible] सुखो में स्वप्नमां जोयां छे तेनी आगळ तमारां कहेलां सुखो [illegible] [illegible] पण आवतां नथी.' पछी अर्णिकापुत्र आचार्यने बोलावीने [illegible] [illegible] स्वरूप पूछ्युं. तेमणे राणीए स्वप्नमां जोयेलां [illegible] [illegible] [illegible]. राणीए पूछ्युं के 'एवां सुखो केवी रीते [illegible]' गुरुए कह्युं के '[illegible] [illegible] [illegible] जवाय.' पछी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उत्पन्न थयो, तेथी तेणे चारित्र ग्रहण करवाने माटे पतिनी आज्ञा मागी. त्यारे राजाए कह्युं के 'तुं मने अतिप्रिय छे. माराथी तारो वियोग सहन थइ शकशे नहि, तेथी हुं तने दीक्षा ग्रहण करवानी आज्ञा केवी रीते आपी शकुं?' राणीए घणा उपदेश वडे राजाने वाळ्यो, त्यारे राजाए कह्युं के 'जो दीक्षा ग्रहण करी अहींज रहे अने मारा घरनी भिक्षा ले तो हुं तने दीक्षा ग्रहण करवानी आज्ञा आपुं.' राणीए ए बाबत कबुल करी अने अर्णिकापुत्र आचार्य पासे दीक्षा लीधी. पछी ते त्यांज रहीने राजाने घेरथी दररोज शुद्ध भिक्षा लेछे अने शुद्ध चारित्रधर्म पाळेछे.

एक दिवस अर्णिकापुत्र आचार्ये बार वर्षनो दुष्काळ पडवानुं ज्ञानवडे जाणी सर्व यतिओने जुदी जुदी दिशाओमां मोकली दीधा अने पोते नहि चाली शकवाथी त्यांज रह्या. पुष्पचूला साध्वी दररोज गुरुने आहार लावी आपेछे अने तेमनी पितानी माफक सेवा करेछे. ए प्रमाणे प्रतिदिन गुरुभक्ति परायण रहेतां पुष्पचूलाने शुभ ध्यानना योगथी केवलज्ञान उत्पन्न थयुं, तोपण ते गुरुने आहार विगेरे लावीने आपेछे. एक वखत मेघ वरसतो हतो. छतां पण पुष्पचूला भिक्षा लइने आवी. तेने गुरुए कह्युं के 'हे वत्से! तुं आ शुं करेछे? एक तो हुं स्थिरवासी छु. वळी हुं साध्वीनो आणेलो आहार ग्रहण करुं छु. वळी वरसाद वरसेछे छतां पण तुं आहार लावीने मने आपेछे, ते शुं उचित करेछे?' त्यारे पुष्पचूलाए कह्युं के 'हे स्वामी! आ मेघ अचित्त छे.' गुरुए कह्युं के 'ते तो केवली होय तेज जाणे.' त्यारे पुष्पचूलाए कह्युं के 'स्वामिन! आपनी कृपाथी ते ज्ञान मने पण छे.' ते सांभळीने आचार्य पश्चात्ताप करवा लाग्या के 'अरे! मने धिक्कार छे के में केवलीनी आशातना करी.' आ प्रमाणे खेद करीने तेणे मिथ्यादुष्कृत दीधो. पछी साध्वीए कह्युं के 'हे स्वामिन! तमे शामाटे खिन्न थाओ छो? तमे पण गंगा नदी उतरतां केवळज्ञान पामी मोक्षे जशो.' ते सांभळीने गुरु गंगाने कांठे आवी नावनी अंदर बेठा, तेटलामां पूर्वभवना वैरी कोइ देवे आवीने जे बाजुए गुरु बेठेला छे ते भागने जळमां डुबाववा मांडयो. त्यारे गुरु नावना मध्य भागमां बेठा, एटले आखी नाव बुडवा लागी. ते जोइ अनार्य लोकोए जाण्युं के 'अरे! आ यतिने लीधे सघळाओनुं मरण थशे.' ए प्रमाणे चिंतवी तेओए मळी आचार्यने उपाडीने जळनी अंदर नांखी दीधा. ते समये पेला देवे आवीने तेनी नीचे त्रिशूल धारण कर्युं अने ते वडे अर्णिकापुत्र आचार्यने वींधी लीधा. ते वखते पोताना शरीरमांथी नीकळता रुधिरने जोइ आचार्य मनमां विचार करवा लाग्या के 'अरेरे! आ मारा रुधिरथी जळना जीवोनी विराधना थाय छे.' ए प्रमाणे अनित्य भावना भावतां घातिकर्मनो क्षय थवाथी केवलज्ञान पामीने मोक्षे गया. त

ाए आवीने तेनो महिमा कर्यो. तेथी लोकोए जाण्युं के 'जे गंगामां मरेछे ते
ं आयछे.' पछी ते स्थाने प्रयाग नामना तीर्थनी लोकोए स्थापना करी.

जो अविकलं तवसंजमं च, साहू करिज्ज पच्छावि ।
अन्नियसुयव्व सो नियग–मट्ठमचिरेण साहेइ ॥ १७१ ॥

अर्थ–" जे साधु अविकळ के० संपूर्ण एवुं तप (बार प्रकारनो) अने संयम
ने शीलरूप सत्तर प्रकारनुं) पश्चात् एटले वृद्धावस्थामां पण करेछे–साधेछे ते
(वृद्धावस्थामां धर्म करनार) अर्णिकापुत्र आचार्यनी जेम पोताना अर्थने एटले पर-
ोक्षना साधनने अचिर के० थोडा काळमां पण साधेछे." १७१. अर्थात् जे यौवना-
वस्थामां विषयासक्त होय छतां अंतकाळमां पण धर्म करेछे ते आत्मानुं हित साधी
शकेछे. अहीं उपरनी कथामां कहेतां अवशिष्ट रहेलो अर्णिकापुत्रनो प्रथमनो संबंध
जाणी लेवो. ५४.

अर्णिकापुत्र संबंध.

उत्तरमथुरा नगरीमां कोइ व्यापारीना कामदेव अने देवदत्त नामना पुत्रो
ा हता. ते बंनेने परस्पर अति गाढ मित्रता हती. तेओ एकदा पोताना माता-
ानी आज्ञा लइने व्यापारार्थे दक्षिणमथुराए गया. त्यां तेमने जयसिंह नामना एक
िकपुत्र साथे मैत्री थइ. जयसिंहने अर्णिका नामे बेन हती. ते घणी रूपवती हती.
ेक दिवस जयसिंहे पोतानी बेन अर्णिकाने कह्युं के 'आज सरस रसोइ बनाव. कार-
ण के मारा बे मित्र कामदेव ने देवदत्त आपणे त्यां भोजन करनाराछे. तेथी अर्णि-
काए उत्तम रसोइ बनावी. पछी भोजनसमये त्रणे मित्रो एक पात्रमां भेळा जमवा
ा. अर्णिकाए भोजन पीरस्युं. पछी ते अर्णिका तेमनी पासे ऊभी रहीने पोताना
ाना छेडाथी वायु नाखवा लागी. ते वखते तेना हाथना कंकणनो रणकार, तेनां
स्तन, उदर ने कटिप्रदेश तथा नेत्र ने वदननो विलास जोइने देवदत्त अत्यंत कामा-
तुर थयो. तेमज घीना पात्रनी अंदर प्रतिबिंबित थयेलुं तेनुं रूप जोइने ते अति काम-
ातुर थयो. तेथी ते कामथी परवश बनी गयो. तेने भोजन विरस थयुं, तेथी तेणे कंइ पण खाधुं नहि
अने ऊठी ऊभो गयो.

बीजे दिवसे तेणे पोतानो अभिप्राय कामदेवनी मारफत जयसिंहने जणाव्यो.
त्यारे जयसिंहे कह्युं के "हे मित्र ! मारी आ बेन मने अतिप्रिय छे अने तेने जो परदेश
ाे, तेथी तेनो वियोग थवाथी केवी रीते सहन थइ शके ? माटे जे कोइ आ अर्णिकाने

छाया १७१–अविकलं तपःसंयमं च साधुः कुर्यात् पश्चादपि । अर्णिकासुतवत् स निजकमर्थमचिरेण साधयति ।

मोहने लीधे हंमेशां दुःखी थइ; तो कृत्रिम अने एकतरफी स्नेहने धिक्का
कोण अने माता पण कोण? आ सर्व दुनिया स्वार्थनीज सगी छे.
कोइने वहालुं थथी." आ रीते अनित्य भावनाने भावतां घातिकर्मनो क्ष
केवळज्ञान पामी अंतर्मुहूर्तमांज मोक्षपदने पाम्या. 'आ मरुदेवी माता प्रथम सि
एम कहीने देवोए तेमनो देह क्षीरसागरमां नांख्यो.

आ दृष्टांत लइने केटलाएक माणसो एम कहे छे के–" तप संयम विगेरे
कर्या विना जेम मरुदेवी माता सिद्धिपद पाम्या, तेम अमे पण मोक्ष पामीशुं
आलंबन ग्रहण करे छे, पण विवेकी पुरुषोए तेवुं आलंबन ग्रहण करवा ला

किंपि कहिंपि कयाई, एगे लद्धीहिं केहिवि निभेहिं ।
पत्तेअबुद्धलाभा, हवंति अच्छेरयब्भूया ॥ १८० ॥

अर्थ–" अर्थ केटलाएक (प्रत्येकबुद्ध) पुरुषो, कोइक वखत, कांइक व
कोइक स्थानने विषे, आवरणकारी कर्मना क्षयोपशम रूप लब्धिवडे करीने, के
वृषभ (बळद) विगेरे वस्तु जोवा रूप निमित्तवडे प्रत्येकबुद्धपणे सम्यक् द
रित्रादिकनो लाभ प्राप्त करे छे ते आश्चर्यभूत छे, एटले तेवां दृष्टांतो थोडां
माटे तेनुं आलंबन पण ग्रहण करवा योग्य नथी." १८०

निहिं संपत्त महन्नो, पत्थिंतो जह जणो निरुत्तप्पो ।
इह नासइ तह पत्तेअबुद्धलच्छिं पडिच्छंतो ॥ १८१ ॥

अर्थ–" जेम आ जगतमां (निधिने) इच्छतो पण तेने लेवा माटे (ब
रूप) उद्यमने नहीं करतो एवो अधन्य एटले अपुण्यशाळी माणस ते प्राप्त
(रत्नसुवर्णादिकथी भरेला) निधिने पण नाश पमाडे छे, तेम प्रत्येकबुद्धपणानो
वांछतो एवो पुरुष पण तप संयमादिक बळिविधान नहीं करवाथी मोक्ष रूप
नाश पमाडे छे." १८१

सोऊण गई सुकुमालियाए, तह ससगभसगभयणीए ।
ताव न वीससियव्वं, सेयट्ठीधम्मीओ जाव ॥ १८२ ॥

अर्थ—" तथा ससक अने भसक नामना बे भाइओनी बहेन सुकुमा

गाथा १८०–कहंपि । कइय । अच्छेरयभूया । कहिंचिनिभेहिं केहिंवि ...
गाथा १८१–पत्थिंतो–पडिच्छंतो । निरुत्तप्पो निरुद्यम ।
गाथा १८२–सुकुमालियाइ । सेयट्ठि धम्मिओ ।

-अवस्था सांभळीने ज्यांसुधी रुधिरमांसथी रहितपणाए करीने अेना अस्थि (हा-) श्वेत एटले उज्वळ थयेलां छे एवो धार्मिक (धर्मस्वभाव) थाय त्यांसुधी पण [illegible]रागादिकनो विश्वास करवो नहीं. अर्थात् शरीरमां रुधिर तथा मांस शुष्क थइ [illegible] अने हाडकां श्वेत थाय तो पण धर्मवान् साधुए विषयादिकनो विश्वास करवो [illegible]" १८२. अहीं सुकुमालिकानी कथा जाणवी. ५६

सुकुमालिकानी कथा.

वसंतपुर नगरमां सिंहसेन राजा राज्य करतो हतो. तेने सिंहला नामनी राणी [illegible]. ते राणीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेला ससक अने भसक नामना तेने बे पुत्रो हता. [illegible] बन्ने हजार हजार योद्धाओनो पराजय करे तेवा बळवान हता. ते बन्नेने सुकु-[मा]लिका नामे अति रुपवान एक बहेन हती. एकदा कोइ आचार्य पासे अनुपम [वा]णीथी अमृत सरखी धर्मदेशना सांभळीने ससक अने भसके चारित्र ग्रहण कर्युं. [ते]ओ अनुक्रमे गीतार्थ मुनि थया एटले तेमणे आवीने पोतानी बहेन सुकुमालिकाने [प्रति]बोध कर्यो, तेथी तेणे पण चारित्र ग्रहण कर्युं. पछी ते साध्वीओनी समीपे रहीने [छ]ट्ठ अट्ठम विगेरे आतापना सहित तप करती सती पोताना सौंदर्यना दर्पने दहन [कर]वा लागी; तोपण तेना अनुपम रुपथी मोह पामेला अनेक कामी पुरुषो त्यां आवीने [उपाश्रयनी] सन्मुख बेसी रहेता हता, अने तेनी साथे विषयनी अभिलाषा करता हता. एक [क्षण] पण तेना संगने तेओ मूकता नहीं. ते जाणीने बीजी साध्वीओए तेने उपाश्र-[यमां] ज राखवा मांडी. तोपण तेना रुपथी मोह पामेला कामी पुरुषो उपाश्रयना [द्वार] आगळ बेसी रहेवा लाग्या, अने तेना गुप्तांग जोवानी लालसाथी उन्मत्तनी [पेठे] बकवा लाग्या. तेथी कंटाळीने साध्वीओए जइने आचार्यने कह्युं के "हे स्वामी! [सु]कुमालिकाना चारित्रनुं रक्षण करवाथी बनवुं अशक्य छे. [illegible] कामदेवना [illegible] पुरुषो उपाश्रय आगळ उपद्रव करे छे. [illegible] [illegible]" ते सांभळीने सूरिए ते सुकुमालिकाना भाइओ ससक अने भसकने बोलावीने [कह्युं] "हे वत्सो! तमे साध्वीने उपाश्रये जाओ, अने तमारी बेननी रक्षा करो. [illegible] तेने सहाय करवाथी तमने मोटो लाभ छे." आ प्रमाणे गुरुनुं वचन [illegible] ते बन्ने भाइओ त्यां जइने बहेननी रक्षा करवा लाग्या. [illegible] [illegible] उपाश्रयने बारणे बेसी रहे छे अने बीजो [illegible] [illegible] कामी पुरुषोनी साथे [illegible] युद्ध [illegible] [illegible] सुकुमालिकाए [illegible]

[illegible]

विगेरे मूकीने क्लेश सहन करे छे; तो हवे हुं अनशन ग्रहण करीने जे शरी[illegible]
आ कामी पुरुषो ताप पामे छे ते शरीरनो त्याग करुं." ए रीते विचारीने [illegible]
शन ग्रहण कर्युं. तेथी माल्तीना पुष्पनी जेम ते थोडा दिवसमां करमाइ (सूक[illegible]
तेनुं शरीर क्षीण थयुं, अने एकवार तो श्वासनुं रुंधन थवाथी ते मूर्छा प[illegible]
जोइने तेना भाइओ तेने मरेली जाणी गाम बहार जइ वननी भूमिमां परठवी [illegible]
पछी ते बन्ने गाममां आव्या. अहीं थोडी वारे अरण्यना शीतळ वायुथी सुकुमालि[illegible]
चेतना आवी. तेथी ते उभी यइने चोतरफ जोवा लागी. तेवामां त्यां कोइ [illegible]
वाह आव्यो. तेना सेवको जळ अने काष्ट लेवा माटे वनमां भमता हता. [illegible]
तेनुं वनदेवता समान स्वरूप जोइने तेने लइ जइ सार्थवाहने सोंपी. ते सार्थवा[illegible]
तेने तैलमर्दनादि करावीने स्वस्थ करी. अने पथ्य भोजनादिक करावीने पाछी [illegible]
यौवनवाळी करी. पछी तेना रूपथी मोह पामेला सार्थवाहे तेने कह्युं के "हे सुंद[illegible]
आ तारुं शरीर पुरुषना भोगव्या विना शोभतुं नथी जो कदाच विषयसुखना स्वा[illegible]
तने विमुखपणु होय. तो तारु आवुं अनुपम स्वरूप विधिए शा माटे कर्युं ? हे कम[illegible]
समान नेत्रवाळी ! तने जोया पछी मने बीजी स्त्री रुचती नथी. जेम कल्पवल्ली[illegible]
वांछावाळो भ्रमर बीजी वल्लीनो मनोरथ करतो नथी, तेम तारा रूपथी जेनुं मन मो[illegible]
पामेलुं छे एवा मने बीजी स्त्री गमती नथी. माटे मारापर कृपा कर अने कामदे[illegible]
रूपी समुद्रमां डुबी गयेलो जे हुं तेनो उद्धार कर." आ प्रमाणेनां सार्थवाह[illegible]
सांभळीने सुकुमालिकाए विचार्यु के "आ संसारमां कर्मनी गति विचित्र छे. [illegible]
विधातानी संभावना थइ शकती नथी. कह्युंछे के-

अघटितघटितानि घटयति, सुघटितघटितानि जर्जरीकुरु[illegible]
विधिरेव तानि घटयति, यानि पुमान्नैव चिन्तयति ॥ १ ॥

" विधि (विधाता) अयोग्य संयोगवाळा पदार्थोने एकत्र करे छे, अने
[illegible] योग्यतावाळा संयोग पामेलाने जर्जरित (जुदा) करे छे. पुरुष जेने मनम[illegible]
[illegible] चिंतवतो नथी तेने ते विधि संयोगी करी दे छे."

आ प्रमाणे जो विधातानोज विलास न होय तो मारा भाइओए मने मरेली
[illegible] आ वनमां मूकी दे ? अने आ सार्थवाहनो संबंध पण शी रीते थाय ? [illegible]
[illegible] हजु मारे कांइक पण भोगकर्म भोगववुं बाकी रह्युं छे. वळी आ [illegible]
[illegible] उपकारी छे, तेथी मारा मागप माटेनो तेनो अभिलाष [illegible]

विचारीने सुकुमालिका सार्थवाहना चरणमां पडीने हाथ जोडी बोली के "हे ... आ मारी देहलता तमारे आधीन छे, माटे आ स्वतंत्र पे गुरुने प्रश्न ..., अने तमारो मनोरथ पूर्ण करो." ते सांभळीने हर्षित थयेलो सार्थवाह तेने ...ना नगरमां लइ गया, अने त्यां तेनी साथे निःशंकपणे विषयसुख अनुभवतां ... घणो काळ व्यतीत थयो.

आ अवसरे विहार करता करता ससक अने भसक मुनि तेज नगरमां आव्या. ...हार लेवा माटे तेमणे नगरमां प्रवेश कर्यो; फरतां फरतां संयोगे तेमणे सुकुमा... ...ना घेर जइने धर्मलाभ आप्यो. तेमने जोइने सुकुमालिकाए तो पोताना ...ओने ओळख्या. पण भाइओए तेने बराबर ओळखी नहीं. तेथी तेओ तेना ... जोवा लाग्या. एटले सुकुमालिकाए पूछयुं के "हे मुनिराज! अने मारी ... केम उभा छो?" तेओ बोल्या के "तारा जेवी अमारे एक बेन पहेलां हती." ...सांभळीने नेत्रोमांथी अश्रुपात करती सुकुमालिकाए पूर्वनुं सर्व वृत्तांत भाइओने कह्युं. ... ते भाइओए सार्थवाहने प्रतिबोध पमाडीने तेने तेनी पासेथी छोडावी फरी दीक्षा ...ी. ते शुद्ध [निरतिचार] चारित्रनुं आराधन करी अंते शुद्ध आलोचना पूर्वक ... पामीने स्वर्गे गइ.

आ सुकुमालिकानी कथा सांभळीने धर्मवान पुरुषे विषयोनो विश्वास करवो ..., अने 'हुं जरावस्थाथी जीर्ण थयो छुं, माटे हवे मने विषयो शुं करवाना छे?' ... कदी पण विचारवुं नहीं.

खरकरहतुरयवसहा, मत्तगयंदा वि नाम दम्मंति ।
इक्को नवरि न दम्मइ, निरंकुसो अप्पणो अप्पा ॥ १८३ ॥

अर्थ—"गधेडा, ऊंट, अश्व, वृषभ (बळद), अने मदोन्मत्त गजेन्द्रो पण दमी शकाय ... कराय छे, परंतु एक निरंकुश एवो पोतानो आत्मा दमी शकातो नथी." १८३

वरं मे अप्पा दंतो, संजमेण तवेण य ।
मा हं परेहिं दम्मंतो, बंधणेहिं वहेहि य ॥ १८४ ॥

अर्थ—"मारो (पोतानो) आत्मा संयमवडे अने तपवडे दमन करायेलो होय ... श्रेष्ठ छे, परंतु कुगतिमां गयेलो हुं बीजा पुरुषोथी दोरडां वगेरे बंधनोना ... अने लाकडी वगेरेना प्रहारवडे दमन करायेलो ... (वध करायेलो ...) ...) मारे ते श्रेष्ठ नथी, अर्थात् श्रेय न पामे तो ठीक."

विगेरे मूकीने क्लेश सहन करे छे; तो हवे हुं अनशन ग्रहण करीने जे श
आ कामी पुरुषो ताप पामे छे ते शरीरनो त्याग करुं." ए रीते विचारीने
शन ग्रहण कर्युं. तेथी मालतीना पुष्पनी जेम ते थोडा दिवसमा करमाइ (क्ष
तेनुं शरीर क्षीण थयुं, अने एकवार तो श्वासनुं रुंधन थवाथी ते मूर्छा
जोइने तेना भाइओ तेने मरेली जाणी गाम बहार जइ वननी भूमिमां परठ
पछी ते बन्ने गाममां आव्या.अहीं थोडी वारे अरण्यना शीतळ वायुथी सुकुम
चेतना आवी. तेथी ते उभी थइने चोतरफ जोवा लागी. तेवामां त्यां को
वाह आव्यो. तेना सेवको जळ अने काष्ट लेवा माटे वनमां भमता हता.
तेनुं वनदेवता समान स्वरुप जोइने तेने लइ जइ सार्थवाहने सोंपी. ते सार्थव
तेने तैलमर्दनादि करावीने स्वज्ज करी. अने पथ्य भोजनादिक करावीने पाछ
यौवनवाळी करी. पछी तेना रूपथी मोह पामेला सार्थवाहे तेने कह्यु के "हे
आ तारुं शरीर पुरुषना भोगव्या विना शोभतुं नथी.जो कदाच विषयसुखना स
तने विमुखपणु होय. तो तारु आवुं अनुपम स्वरूप विधिए शा माटे कर्युं? हे
समान नेत्रवाळी ! तने जोया पछी मने बीजी स्त्री रुचती नथी. जेम कल्पव
वांछावाळो भ्रमर बीजी वल्लीनो मनोरथ करतो नथी, तेम तारा रूपथी जेनुं मन
पामेलुं छे एवां मने बीजी स्त्री गमती नथी. माटे मारापर कृपा कर अने काम
रूपी समुद्रमां डुबी गयेलो जे हु तेनो उद्धार कर." आ प्रमाणेनां सार्थवाहनां व
सांभळीने सुकुमाळिकाए विचार्यु के "आ संसारमां कर्मनी गति विचित्र छे. विधाता
विलासनी संभावना थइ शकती नथी. कह्युंछे के-

अघटितघटितानि घटयति, सुघटितघटितानि जर्जरीकुरुते ।
विधिरेव तानि घटयति, यानि पुमान्नैव चिन्तयति ॥ १ ॥

" विधिज (विधाताज) अयोग्य संयोगवाळा पदार्थोने एकत्र करे छे, अ
रीते योग्यताथी संयोग पामेलाने जर्जरित (जूदा) करे छे. पुरुष जेने म
कोइ वखत चिंतवतो नथी तेने ते विधिज संयोगी करी दे छे."

आ प्रमाणे जो विधातानोज विलास न होय तो मारा भाइओज मने मरेल
शा माटे वनमां मूकी दे ? अने आ सार्थवाहनो संबंध पण शी रीते थाय? ते
ाउं छुं के हजु मारे काइक पण भोगकर्म भोगववुं बाकी रह्युं छे. वळी आ सा
न मारो मोटो उपकारी छे, तेथी मारा संगम माटेनो तेनो अभिलाष हुं पूर्ण

[illegible]नियोगीने सुकुमालिका सार्थवाहना चरणमां पडीने हाथ जोडी बोल्यो के "हे [illegible]
[illegible]आ मारां देहलता तमारे आधीन छे. माटे आ सुवर्णादिक गुरुजने ग्रहण
[illegible] अने तमारो मनोरथ पूर्ण करो." ते सांभळीने हर्षित थयेलो सार्थवाह तेने
[illegible]ना नगरमां लइ गया, अने त्यां तेनी साथे निःशंकपणे विषयसुख अनुभवतां
[illegible] घणो काळ व्यतीत थयो.

आ अवसरे विहार करता करता सुव्रत अने सुव्रत मुनि तेज नगरमां आव्या.
[illegible]हार लेवा माटे तेमणे नगरमां प्रवेश कर्यो; फरता फरतां दैवयोगे तेमणे सुकुमा-
[illegible]ना घेर जइने धर्मलाभ आप्यो. तेमने जोइने सुकुमालिकाए तो पोताना
[illegible]ओने ओळख्या, पण भाइओए तेने बराबर ओळख्यां नहीं. तेथी तेओ तेना
[illegible] जोवा लाग्या. पछी सुकुमालिकाए पूछ्युं के "हे मुनिराज ! तमे मारां सन्मुख
[illegible] केम उभा छो ?" तेओ बोल्या के "तारा जेवी अमारे एक बेन पहेलां हती."
[illegible] सांभळीने नेत्रोमांथी अश्रुपात करती सुकुमालिकाए पूर्वनुं सर्व वृत्तांत भाइओने कह्युं.
[illegible] ते भाइओए सार्थवाहने प्रतिबोध पमाडीने तेने ढकावावी छोडावी फरी दीक्षा
[illegible]. ते शुद्ध [निरतिचार] चारित्रनुं आराधन करी अंते शुद्ध आलोयणा पूर्वक
[illegible] पामीने स्वर्गे गइ.

आ सुकुमालिकानी कथा सांभळीने धर्मवान पुरुषे विषयनो विश्वास करवो
[illegible]; अने 'हुं जरावस्थाथी जीर्ण थयो छुं, माटे हवे मने विषयो शुं करवाना छे ?'
[illegible] कदी पण विचारवुं नहीं.

खरकरहतुरयवसहा, मत्तगयंदा वि नाम दम्मंति ।
इक्को नवरि न दम्मइ, निरंकुसो अप्पणो अप्पा ॥ ८८३ ॥

अर्थ—"गधेडा, ऊंट, अश्व, वृषभ (बळद) अने मदोन्मत्त हाथीओ पण दमी शकाय [illegible]
[illegible] शकाय छे, परंतु एक निरंकुश एवो पोतानो आत्मा ज दमी शकातो नथी." [illegible]

वरं मे अप्पा दंतो, संजमेण तवेण य ।
मा हं परेहिं दम्मंतो, बंधणेहिं वहेहि य ॥ ८८४ ॥

अर्थ—"मारो (पोतानो) आत्मा संयमवडे अने तपवडे दमन करायेलो थाय
[illegible] छे. परंतु कुगतिमां पडेलो हुं बीजा पुरुषोवडे [illegible]
[illegible] अने मारवा वडे [illegible]
[illegible] थाउं ते ठीक नथी, अर्थात् तेम न थाय ते ठीक. [illegible]

अप्पा चेव दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य ॥१८५॥

अर्थ–"निश्चे करीने आत्मा दमन करवा योग्य छे–वश करवा योग्य छे. केम
(एक) आत्मा ज दुर्दम [दुःखे करीने दमन थाय तेवो] छे. ते आत्मानुं दमन
होय तो ते आलोकमां तथा परलोकमां सुखी थाय छे." १८५.

निच्चं दोससहगओ, जीवो अविरहिय मसुहपरिणामो।
नवरं दिन्ने पसरे, तो देइ पमाय मयरेसु ॥ १८६ ॥

अर्थ–" नित्ये द्वेषनी साथे रहेलो एटले रागद्वेषनो सहचारी थयेलो एवो
जीव निरंतर अशुभ परिणामवाळो रहेछे. ते आत्माने जो प्रसार आप्यो होय एट
जो तेने मोकळो [छुटो] मुक्यो होय तो ते आ संसारसागर मध्ये लोकविरुद्ध
आगमविरुद्ध एवां कार्योमां विषय कषायादिक प्रमादने आपे छे." १८६.

अच्चिय वंदिय पूइअ, सक्कारिय पणमिओ महग्घविओ।
तं तह करेइ जीवो, पाडेई जह अप्पणो ठाणं ॥ १८७ ॥

अर्थ–"गंधादिकवडे अर्चन (पूजन) करेलो, अनेक लोकोए गुणस्तुतिवडे वंद
करेलो–स्तुति करेलो, वस्त्रादिकवडे पूजेलो, उभा थवुं विगेरे विनयवडे सत्कार करे
मस्तकवडे प्रणाम करेलो अने आचार्यादिक पद आपीने महत्त्व पमाडेलो एवो जीव गर्वि
थइने ते प्रमादादिक अकार्योने एवी रीते करे छे के जेथी ते जीव पोताना महत्त्वा
स्थानने पाडी देछे,एटले आचार्यादिक महत्त्ववाळा स्थानथी ते भ्रष्ट थाय छे."१८

सीलव्वयाइं जो बहुफलाइं, हंतूणय सुक्ख मभिलसइ।
धीइदुब्बलो तवस्सी, कोडीए कागिणिं किणई ॥ १८८ ॥

अर्थ–" मनोबळवडे दुर्बळ–असमर्थ (संतोष विनानो–अतृप्त) एवो जे साध
जेनाथी स्वर्गमोक्षादिक घणा फळो प्राप्त थायछे एवा शील ते सदाचार अने व्रत ते म
महाव्रत तेने हणाने–तेना नाश करीने विषयसेवनरूप सुखनो अभिलाष करेछे ते सा
कोटी द्रव्य आपीने कोडीना एंशीमा भागरूप काकिणीने खरीद करे छे." १८८.

जीवो जहामणसियं, हियइच्छियपत्थिएहिं सुक्खेहिं।
तोसेऊण न तीरइ, जावज्जीवेण सव्वेण ॥ १८९

–" आ संसारी जीव मननी अभिलाषाने अनुकूळ अथवा जे प्रमाणे मननी
होय ते प्रमाणेनां हितकारक, इच्छेलां अने प्रार्थना करेलां एवां स्त्री विगेरेनां
कोने सर्व जीवन पर्यंत अनुभव कर्यां छतां अर्थात् ते सुखो भोगव्यां छतां
तोष पामवाने समर्थ थतो नथी; पछी जावज्जीव निरंतर अनुभवेला विषय-
पण आ जीव संतोषने पामतो नथी." १८९.

सुमिणंतराणुभूयं, सुक्खं समइच्छियं जहा नत्थि ।
एवमिमं पि अईयं सुक्खं, सुमिणोवमं होई ॥ १९० ॥

र्थ–" जेम स्वप्न मध्ये अनुभवेलुं सुख जागृत थया पछी होतुं नथी, तेम आ
अनुभवेलुं विषयसुख) पण वर्तमानकाळनुं उल्लंघन थया पछी पछी भोगवी
पछी स्वप्ननी उपमावाळुं एटले स्वप्न तुल्यज थाय छे. माटे ते विषयसुखमां
करवो नहीं." १९०.

पुरनिद्धमणे जक्खो, महुरा मंगू तहेव सुयनिहसो ।
बोहेइ सुविहियजणं, विसूरइ बहुं च हियएण ॥ १९१ ॥

र्थ–" समस्त श्रुतनी एटले सिद्धान्तनी परीक्षाना निकष एटले कसोटीना पा-
त्र अर्थात् बहुश्रुत एवा मंगू नामना आचार्य मथुरा नगरीमां नगरनी खाळ
(रसगारवादिथी) यक्षपणे उत्पन्न थया; अने पछी ते सुविहित जन एटले साधु
(पोताना शिष्योने) बोध पमाडता हता अने हृदयमां घणो शोक करता
[illegible] एटले शिष्योने बोध करतां पोताना हृदयमां घणा शोक करता हता. तेनो भाव
[illegible] गाथामां कहेवामां आवशे)." १९१ अहीं मंगु आचार्यनो संबंध जाणवो. ते आ

मंगूसूरिनी कथा.

[illegible] मथुरा नगरीमां [illegible] गुणवान श्रीमंगु नामना आचार्य [illegible]
[illegible] ते नगरीमां घणा धनाढ्य श्रावको रहेता हता. तेओ साधुओनी [illegible]
[illegible] हता. तेथी ते आचार्यनी घणी सेवा करी. आचार्य [illegible]
[illegible] तथा व्याख्यान करवा लाग्या. तेथी तेमने [illegible]
[illegible] थया. पछी तेओ [illegible]

[illegible] १९०–[illegible]
[illegible] १९१–[illegible]

भात उंचा प्रकारनी जोइने तेओ एम विचारवा लाग्या के " आ सूरिने
दिकनुं दान करवाथी आपणे भवसागरनो पार पामीशुज." एम जाणीने त्यां
तेमने मिष्ट अने सरस आहार आपवा लाग्या. तेवो आहार भोगवतां आच
लोलुपता थइ.एटले तेमणे विचार कर्यो के " जुदे जुदे स्थाने विहार क
आहार कोइ पण स्थाने हुं पाम्यो नथी.वळी अहींना श्रावको पण विशेष भ
करेछे;माटे आपणे तो अहींज स्थिरता करवी योग्य छे." एम विचारीने
स्थानवासीपणाए करीने [एक स्थानेज रहेवापणाए करीने] त्यांज रह्या.
गृथस्थीओनी साथे परिचय वधतो गयो. तेथी मिष्ट आहारना भोजनवडे,अ
शय्यामां शयन करवावडे अने सुंदर उपाश्रयमां रहेवावडे ते आचार्य रसगृ
आवश्यकादिक नित्यक्रिया पण छोडी दीधी, अने मनमां अहंकार करवा
'मने श्रावको केवो रसवाळो आहार आपेछे ? ए प्रमाणे ते रसगौरव कर
अनुक्रमे त्रणे गौरवमां निमग्न थइने सर्व जगतने तृण समान मानवा लाग्या.
पण कोइ कोइ वखत अतिचारादिक लगाडवावडे शिथिल थया.ए प्रमाणे
सुधी अतिचारादिकथी दूषित थयेला चारित्रनु पालन करीने छेवटे तेनी
कर्याविना मृत्यु पाम्या तेज नगरना जळने नीकळवानी खाळ पासेना यक्षालय
उत्पन्न थया. त्यां तेणे विभंगज्ञानवडे पूर्वभव जोइने पश्चात्ताप कर्यो के "
मूर्खाए जिह्वाना स्वादमां लंपट थइने आवी कुदेवनी गति प्राप्त करी." पछ
शिष्यो बहिर्भूमिए (स्थंडिल) जइने पाछा आवतां ते यक्षनी नजीक आव्या
उदेशीने ते यक्षे पोतानी जीह्वा मुखथी बहार काढीने देखाडी.ते जोइने ते स
मन दृढ राखीने तेने पूछ्युं के–'हे यक्ष ! तुं कोण छे ? अने शा माटे जीभ
काढे छे ?" यक्ष बोल्यो के हुं तमारो गुरु मंगू नामनो आचार्य जीह्वान
पराधीन थइने आवो अपवित्र देव थयो छुं. में गृहनो त्याग करी चारित्र
जीने वरे कहेला धर्मनी आराधना न करी अने त्रण गौरववडे आ आत्माने म
चारित्रनी शिथिळतामां समग्र आयुष्य गुमाव्युं. हवे अधन्य, पुण्यरहित
विनानो एवो हुं शुं करुं ? आ भवमां तो हुं विरति पाळवाने समर्थ नथी
आत्मानो हुं शोक करुं छुं. आ पापी जीव वीतरागना धर्मने पाम्या छतां प
सम्यक् प्रकारे पालन नहीं करवाथी घणो काळ संसारमां भटकशे. माटे हे
तमे श्रीजीनधर्मने पामीने रसलपट थशो नहि. जो कदाच जीह्वाना स्वा
थशो तो मारी जेम पश्चात्ताप करवानो वखत आवशे." आ प्रमाणे पोतान
शिष्योने उपदेश आपीने ते यक्ष अदृश्य थयो.पछी ते साधुओ शुद्ध चारि

...सूरिने पाम्या. आ दृष्टांतसांभळीने सर्व कोईए निद्राना इरादनो त्याग करवो. ...सूरि जे प्रमाणे शोक कर्यो ते नीचेनी गाथामां बतावे छे.

निग्गंतूण घराओ, न कओ धम्मो मए जिणक्खाओ ।
इड्ढिरससायगुरुयत्तणेण, न य चेइओ अप्पा ॥ १९२ ॥

अर्थ—" में गृहथी बहार नीकळीने पण निराळसथान. [illegible] जिनेश्वरे कहेलो ... [illegible] ... आहारादिकना रसथी रसगारव अने केटलाक [illegible] ... गारव—एम त्रणेने विषे आदरपणाए करीने [illegible] तेमनो आदर [illegible] ... करेलो धर्म कर्यो नहीं (पाळ्यो नहिं), अने मारा आत्माने [illegible] ... कर्यो नहिं. " १९२.

ओसन्नविहारेणं, हा जह झीणंमि आउए सव्वे ।
किं काहामि अहन्नो, संपइ सोयामि अप्पाणं ॥ १९३ ॥

अर्थ—" अरे ! जे प्रकारे चारित्रविषयमां शिथिल व्यवहार [illegible] ... [illegible] थयु, तो हवे अधन्य—निर्भागी एवो हुं शुं करुं ? [illegible] ... आत्मानो शोक करूं. " १९३

हा जीव पाव भमिहिसि, जाईजोणीसयाइं बहुयाइं ।
भवसयसहस्सदुलहं पि, जिणमयं एरिसं लद्धुं ॥ १९४ ॥

अर्थ—" हे पापी (दुरात्मा) जीव ! सो हजार (लाख) भवोवडे पण दुर्लभ [illegible] ... अने आवो अचिंत्य चिंतामणी सदृश श्रीजिनमत [illegible] ... [illegible] आराधना नहि करवाथी तुं) एकेंद्रियादिक जाति अने [illegible] ... [illegible] योनिओमां भटकीश. " १९४.

पावो पमायवसओ, जीवो संसारकज्जमुज्जुत्तो ।
दुक्खेहिं न निव्विन्नो, सुक्खेहिं न चेव परितुट्ठो ॥ १९५ ॥

अर्थ—" पापी अने प्रमादने वश पडेलो [illegible] ... [illegible] ... दुःखोवडे पण [illegible] अनेक प्रकारना [illegible] ...

[illegible]

पाम्यो नहीं (जेम जेम दुःख पामे छे तेम तेम पापकर्म वधारे करे छे), अने सुखावस्थाए सुखो भोगवतां पण परितुष्ट (संतुष्ट) थयो नहीं (केमके जेम जेम सुख मळे छे तेम नवां सुखनी वांछा करे छे.) " १९५.

परितप्पिएण तणुओ, साहारो जइ घणं न उज्जमइ ।
सेणियराया तं तह, परितप्पंतो गओ नरयं ॥ १९६ ॥

अर्थ–" जो (तप–संयमादिकने विषे) घणो उद्यम न करे, तो (मात्र) तापवडे एटले पापकर्मनी निंदा, गर्हा अने पश्चात्तापादिकवडे थोडोज आधार था अर्थात् तेथी लघुकर्मोनो क्षय थइ शके छे, पण महाकर्मोनो क्षय थतो नथी. करोनेज श्रेणिक राजा तेवा प्रकारनो (हा इति खेदे ! में विरति न करी एवो) प कर्या छतां पण नरके गयो. (अथवा आ श्लोकना पूर्वार्धनो अर्थ करवो के 'ज संयमादिकने विषे घणो उद्यम न करे तो मात्र परितापवडे कर्म लघु थतां नथी, ए गर्हादिक करवाथी शिथिल कर्मनोज नाश थाय छे, पण दृढ बांधेलां कर्मनो नाश थतो नथी.) " १९६

जीवेण जाणि विसज्जियाणि, जाईसएसु देहाणि ।
थोवेहिं तओ सयलं पि, तिहुयणं हुज पडिहत्थं ॥ १९७

अर्थ–" जीवे (प्राण धारण करनारे) एकेन्द्रियादि सेंकडो जातिओने पूर्वे ग्रहण करी करीने जेटलां शरीरो त्याग कर्यां छे तेमांथी थोडा पण शरीरोए (सर्व शरीरवडे नहीं) सकल त्रिभुवन (त्रण जगत) पण संपूर्ण थाय एटले के भुवन भराइ जाय तेटलां शरीरो जीवे पूर्वे ग्रहण करीने मूक्यां छे, तो पण तेजीव पामतो नथी. " १९७.

नहदंतमंसकेसट्ठिएसु, जीवेण विप्पमुक्केसु ।
तेसु वि हविज्जा कइलासमेरुगिरिसन्निभा कूडा ॥ १९८

अर्थ–"जीवे पूर्वभवोमां ग्रहण करीकरीने मूकेला (तजेलां) जे नख, दांत केश अने अस्थिओ, ते सर्वने विषे पण एटले ते सर्व नखादिकने एकत्र करीए तो कै (हिमवान), मेरु अने बाजा सामान्य पर्वतो जेवडा पुंज–ढगला थाय. माटे तेने पण प्रतिबंध करवो नहीं. " १९८.

गाथा १९७-जीवेन । जाणि = । पडिहत्थ=परिपूर्णम् । गाथा १९८-कैला ...

हिमवंतमलयमंदरदीवोदहिधरणिसरिसरासीओ ।
अहिअयरो आहारो, छुहिएणाहारिओ होज्जा ॥ १९९ ॥

अर्थ–" क्षुधित थयेला (भूख्या) एवा आ जीवे हिमवान पर्वत, हरिण [illegible] रहेलो मलयाचळ पर्वत, मंदर (मेरु) पर्वत, जंबूद्वीप विगेरे असंख्याता द्वीपो, [illegible]समुद्रादिक असंख्य समुद्रो अने रत्नप्रभादिक सात पृथ्वीओ–तेमनो जेवडो मोटो [illegible]थी पण (तेटला मोटा ढगला करीए तो तेथी पण) अति अधिक आहार [illegible] विगेरे) भक्षण करेलो छे; अर्थात् एक जीवे अनंता पुद्गल द्रव्यो भक्षण कर्या [illegible] तेनी क्षुधा शांत थइ नथी. " १९९

जं नेण जलं पीयं, घम्मायवजगडिएण तं पि इहं ।
सव्वेसु वि अगडतलायनईसमुद्देसु न वि हुज्जा ॥ २०० ॥

अर्थ–" घर्म ग्रीष्म ऋतुना आतपथी पीडा पामेला आ जीवे जे जळ पीधुं छे [illegible] जळ आ संसारमां एकत्र करीए तो तेटलुं जळ सर्व कुवा, तळावो, नदी[illegible] समुद्रोमां पण न होय; अर्थात् एक जीवे पीधुं जे जळ [illegible] लवणादिक समुद्रोमां पण न होय; [illegible] जळाशयोना जळथी पण अनंतगणुं छे. " २००.

पीयं थणयच्छीरं, सागरसलिलाओ होज्ज बहुअयरं ।
संसारंमि अणंते, माऊणं अन्नमन्नाणं ॥ २०१ ॥

अर्थ–" आ जीवे जेनो अंत नथी एवा [illegible] संसारमां भिन्न भिन्न माताओनुं [illegible] स्तननुं दूध समुद्रना जळथी पण बहुतर (अनंतगणुं) पीधुं छे. अर्थात् समुद्रना [illegible] दूध अनंतगणुं आ जीवे पूर्वे भवोमां [illegible] छे. " २०१.

पत्ता य कामभोगा, कालमणंतं [illegible] ।
अपुव्वं पिव मन्नइ, [illegible] ॥ २०२ ॥

अर्थ–" वळी आ संसारमां अनंत काळ सुधी [illegible] [illegible]

[illegible]

अर्थात् जाणे पोते पूर्वे कोइ वखत ते सुख भोगव्युंज नथी-नवुंज छे एम माने छे." २०२.

जाणइ जहा भोगिड्ढिसंपया सव्वमेव धम्मफलं।
तहवि दढमूढहियओ, पावे कम्मे जणो रमइ ॥ २०३ ॥

अर्थ-" आ जीव जाणे छे के 'भोग-इंद्रियोथी उत्पन्न थतां सुखो, राज्यलक्ष्मी अने संपदा-धन धान्य विगेरे-ते सर्व धर्मनुं ज फळ (काय) छे. धर्मरूप कारणथीज भोगादिक कार्य प्राप्त थाय छे.' तोपण दृढमूढ के० अत्यंत मूढ नथी व्याप्त थे हृदय जेनुं एवो आ जीव पापकर्ममां रमे छे-क्रीडा करे छे (पाप कर्मक थाय छे: अर्थात जाणता छतां पण अजाण्यानी जेम पापकर्ममां प्रवर्ते छे.

जाणिज्जइ चिंतिज्जइ, जम्मजरामरणसंभवं दुक्खं।
न य विसएसु विरज्जइ अहो सुबद्धो कवडगंठी ॥ २०४ ॥

अर्थ-" जन्म, जरा अने मरणथी उत्पन्न थयेला दुःखने आ जीव गुरु आदिकथी जाणे छे तथा मनमां चिंतवे छे (विचारे छे), तोपण आ जीव विषयोथी विरक्त थतो नथी. अहो! कपटग्रंथि (मोहग्रंथि) केवी सुबद्ध (को विच्छिन्न करवाने अशक्य) छे? ते मोहग्रंथिना वशवर्तिपणाथीज आ जीव आसक्त थाय छे." २०४.

जाणइ य जह मरिज्जइ, अमरंतं पि जरा विणासेइ।
न य उव्विग्गो लोओ, अहो रहस्सं सुनिम्मायं ॥ २०५ ॥

अर्थ-" वळी लोको जाणे छे के 'सर्व प्राणी पोतपोताना आयुष्य आगाना ज छे अने जरा (वृद्धावस्था) नहीं मरेला (जीवता) प्राणीने पमाडे छे.' तोपण लोको उद्वेग एटले संसारथी वैराग्य पामता नथी. अहो आश्चर्य! आ रहस्य केवुं गुप्तपणे निर्माण करायुं छे?" २०५

दुप्पय चउप्पयं बहुपयं, च अपयं समिद्धमहणं वा।
अणवकए वि कयंतो, हरइ हयासो अपरितंतो ॥

अर्थ-" द्वीपद आचार्यो जेणे एवो कृतांत (मृत्यु) मनुष्यादिक वे प...

[illegible] २०३-[illegible]=[illegible] ।
[illegible] २०४-[illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] ।
[illegible] २०५-[illegible]=[illegible]-[illegible] । [illegible]
[illegible]

…इ विगेरे चार पगवाळाने, भ्रमर विगेरे घणा पगवाळाने अने पग विनानां …ने तथा धनाढ्यने अने अधनने-धनरहितने तेमज दुःख पीडित मूर्ख विगेरे … अपराध विना पण अश्रांतपणे-थाकया विना-खेदरहित थइने हणे छे-मारे छे; … जीवोने हणवामां ते मृत्युने किंचित् पण खेद पडतो अम जाणता नथी." २०६

न य नज्जइ सो दियहो, मरियव्वं चावसेण सव्वेण ।
आसापासपरुद्धो, न करेइ य जं हियं वज्झो ॥ २०७ ॥

…र्थ-" वळी जीव ते (मरणनो) दिवस जाणतो नथी. अर्थात् कये दिवसे … ते जाणतो नथी; पण सर्व जीवोए अवश्य करीने मरवुं तो छेज. एम जाणे छे.) … आशा रूपी पाशथी बंधायेलो (पराधीन थयेलो) अने … [illegible] … ने हणेलो एवो आ जीव जे हितकारक धर्मानुष्ठान छे ते करतो नथी." २०७

संझरागजलबुब्बुओवमे, जीविए अ जलबिंदुचंचले ।
जुव्वणे य नइवेगसंनिभे, पावजीव किमयं न बुज्झसि ॥ २०८ ॥

…र्थ-" वळी जीवित संध्याकाळना राता रंगनी तथा जळना बुदबुद … (परपोटा) नी उपमावाळु [अस्थिर] छे, तेमज (दर्भना अग्रभाग पर रहेला जळना … बिंदु) जेवु चंचळ छे; तथा युवावस्था नदीना वेग जेवी [थोडो काळ रहेनारी] … हे पापी जीव! ते सर्व जाणतां छतां तुं केम प्रतिबोध पामतो नथी?" २०८

जं जं नज्जइ असुइं, लज्जिज्जइ कुच्छणिज्ज मेयंति ।
तं तं मग्गइ अंगं, नवरमणंगुत्थ पडिकूलो ॥ २०९ ॥

…र्थ-" जे जे अंग अशुचि जणाय छे, जे अंग जोवाथी लज्जा आवे छे, अने जे … [illegible] … करवा लायक छे-एवा जीवोना मलिन [illegible] … [illegible] करे छे. ते मात्र अनिरुद्ध [illegible] … [illegible] कामदेवना … जीव तेना एवा … [illegible] … छे." २०९

[illegible] पवत्तो, सद्दाणंद्रा [illegible] ।
[illegible] दुग्गया, जेण तिव्वं जणं नरके ॥ २१० ॥

[illegible]

अर्थ–" सर्व ग्रहोनुं (उन्मादोनुं) उत्पत्तिस्थान, महाग्रह (मोटा उ[illegible] अने परस्त्रीगमनादिक सर्व दोषोने प्रवर्तावनार कामदेवरूपी ग्रह एटले काम[illegible] थयेलो चित्तभ्रम महादुष्ट छे के जेणे आ आखुं जगत पराभव पमाडयुं छे–प[illegible] कर्युं छे. माटे कामग्रह ज दुरत्याज्य (महाकष्टे तजी शकाय तेवो) छे." [illegible]

जो सेवइ किं लहइ, थामं हारेइ दुब्बलो होइ।
पावेइ वेमणस्सं, दुक्खाणि अ अत्तदोसेणं ॥ २११ ॥

अर्थ–" जे पुरुष कामने [विषयने] सेवे छे ते शुं पामे छे ? ते का[illegible] ते पुरुष पोताना ज दोषथी वीर्यने हारे छे–गुमावे छे, दुर्बळ थाय छे, अने [illegible] (चित्तनी उद्वेगता) तथा क्षयरोगादिक दुःखोने पामे छे." २११

जह कच्छुल्लो कच्छुं, कंडुयमाणो दुहं मुणइ सुक्खं।
मोहाउरा मणुस्सा, तह कामदुहं सुहं बिंति ॥ २१२ ॥

अर्थ–" जेम खसवाळो माणस खसने नखाग्रे करीने खणतो छतो दुःखने [illegible] रूप माने छे, तेम मोहवडे आतुर–विह्वळ थयेला मनुष्यो, जेनुं रुधिर विकृत थ[illegible] छे–विकार पाम्युं छे तेवा अंगवाळाओ जेम विषयसेवनना दुःखने सु[illegible] माने छे." २१२.

विसयविसं हालाहलं, विसयविसं उक्कडं पियंताणं।
विसयविसाइन्नंपिव, विसयविसविसूइया होई ॥ २१३ ॥

अ[illegible]–"[illegible]दिक विषयो रूपी विष [संयम रूप जीवितनो नाश करनार [illegible] [illegible] पाणि नांखनार विष समान छे, अने उत्कट पण कामसे[illegible] [illegible] विष समान छे. ते विषनुं पान करनारा [illegible] [illegible]ओने [illegible] हत्यां ने विषयरूपी विषनी, [illegible] [illegible] तेम [illegible] विषनो पण विसूचिका [अजीर्ण] थाय छे; [illegible] [illegible] माने [illegible]." २१३

एवं तु पंचहिं आसवेहिं रय मायणित्तु अणुसमयं।
[illegible] अणुपरियट्टंति संसारे ॥ २१४ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ने [illegible] मदनने विषे, [illegible] मनोगुप्ति विषे [illegible] त्तने विषे, पांच इंद्रियोना [illegible] दिक कारणे [illegible] क्षेत्र, काळ अने [illegible] विषे अर्थात् पूर्वोक्त [illegible] चरण मोक्षने [illegible] " [illegible]—

क्रियाशून्यस्य यो भावो, भावशून्यस्य या क्रिया ।
अनयोरन्तरं दृष्टं, भानुखद्योतयोरिव ॥

" क्रियारहित पुरुषनो भाव अने भावरहित पुरुषनी क्रिया, ए बन्नेमां सूर्य अने खद्योत (पतंग) ना जेटलुं अन्तर जोयेलुं छे, अर्थात् तेटलुं अंतर छे. क्रियाशून्य भाव सूर्य जेवो छे अने भावशून्य क्रिया पतंगिया जेवी छे."

"माटे ते सर्वने विषे (संयमने विषे) श्रद्धापूर्वक आचरण करवामां निरंत[र] मवाळ्या अने एषणा एटले बेंतालीश दोष रहित एवा आहारनी शुद्धिमां रहेल साधुने प्रव्रज्या भवसागरनुं तारण थाय छे (अर्थात् ते साधु भवसागर तरे छे, तेनीज दीक्षा अने मनुष्यजन्म सफल छे. एवा गुणोथी रहित मनुष्यनी दीक्षा जन्म बन्ने निरर्थक छे. " २१८–२१९.

जे घरसरणपसत्ता, छक्कायरिऊ सकिंचणा अजया ।
नवरं मुत्तूण घरं, घरसंकमणं कयं तेहिं ॥ २२० ॥

अर्थ--" जे यतिओ गृह (उपाश्रयादिक) ने सज्ज करवामां आसक्त छे, छ जीवना शत्रु छे, एटले पृथिव्यादिक छ कायना विराधक छे; द्रव्यादिकना परिग्रहस[हित]

गाथा २१८–दमउस्सग्गुयवाइ । गाथा २१९–उज्जत्त ।
गाथा २२०–सकिंचण असजया । अजया=असंयता–असंवृतमनोवाक्काययोगाः ।

[illegible] मन वचन अने कायाना योगनुं संयम करता नथी तेओए केवळ पूंठनुं पर [illegible] मुहपत्तिना फिरवी पडिलेहण एटले नवा वस्त्रे विगेरे प्रतिलेखन कर्यो छे पण तेनुं कांइ फळ नथी. " २२०

उस्सुत्तमायरंतो, बंधइ कम्मं सुचिक्कणं जीवो ।
संसारं च पवड्ढइ, मायामोसं च कुव्वइ य ॥ २२१ ॥

अर्थ—" आ जीव उत्सूत्र (सूत्रविरुद्ध) आचरण करतो थको अत्यंत चिकणां [illegible] एटले अति गाढ निकाचित एवां ज्ञानावरणादि कर्मने आत्माना प्रदेशो [illegible] करे छे. तेमज संसारने वृद्धि पमाडे छे. [illegible] माया सहित [illegible] (कपटनुं पापस्थान) करे छे; अर्थात् तेम करवाथी ते [illegible] करे छे. " २२१

जइ गिण्हइ वयलोवो, अहव न गिण्हइ सरीरवुच्छेओ ।
पासत्थसंकमो वि य, वयलोवो तो वरमसंगो ॥ २२२ ॥

अर्थ—" जो पासत्थाए आपेला आहारादिकने [मुनि] ग्रहण करे तो व्रतनो [illegible]) लोप थाय छे, अथवा जो ते ग्रहण न करे तो शरीरनो [illegible] थाय छे ([illegible]) परन्तु त्यां पासत्थानो संग [illegible] व्रतनो लोप थाय छे, त्यारे तो ते पासत्थानो प्रसंग [illegible] ([illegible]) [illegible] छे. " २२२. अर्थात् शरीरनो [illegible] ए सारुं छे.

आलावो संवासो, वीसंभो संथवो पसंगो य ।
हीणायारेहिं समं, सव्वजिणिंदेहिं पडिकुट्ठो ॥ २२३ ॥

अर्थ—" हीन आचारवाळा पासत्थादिकनी साथे आलाप—[illegible], [illegible] [illegible] [illegible], विश्रंभ—विश्वास राखवो, संस्तव—परिचय [illegible], अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे; अर्थात् पासत्थादिकनी साथे मुनिओए आलापादिक [illegible] नहिं. " २२३

अन्नुन्नजंपिएहिं, हसिउद्धुसिएहिं खिप्पमाणो य ।
पासत्थमज्झयारे, बलावि जइ वाउली होइ ॥ २२४ ॥

[illegible]

[illegible]

अर्थ—" अन्योन्य भाषण करवा वडे एटले विकथादिक करवा वडे अने हसितो द्धर्षित एटले हास्यथी रोमोद्गम करवा वडे पासत्थादिकनी मध्ये रहेलो साधु ते पासत्थादिके ज बळात्कारे प्रेरणा करायेलो सतो व्याकुळ थाय छे; एटले स्वधर्मथी भ्रष्ट थाय छे, माटे ते (पासत्थादिक) नो संग तजवा योग्य छे." २२४

लोए वि कुसंसग्गीपियं जणं दुन्नियत्थ मइवसणं ।
निंदइ निरुज्जमं पियंकुसीलजणमेव साहुजणो ॥ २२५ ॥

अर्थ—" लोकमां पण जेने कुसंगति प्रिय छे, जे दुष्ट—विपरीत वेषधारी छे अने जे अतिव्यसनी एटले अत्यंत द्यूतादिक व्यसन सहित छे तेवा जनने लोको निंदे छे; तेम साधुजन पण निरुद्यमी एटले चारित्रने विषे शिथिल आदरवाळा अने कुशीलिया जन जेने प्रिय छे एवा कुवेषधारी साधुने निंदे छेज." २२५

निच्चं संकिय भीओ, गम्मो सव्वस्स खलियचारित्तो ।
साहुजणस्स अव्वमओ, मओ वि पुण दुग्गइं जाइ ॥ २२६ ॥

अर्थ—" कोइ मारुं दुष्ट आचरण न देखो एम निरंतर शंका पामेलो, अने मारी आ माठी प्रवृत्ति रखे जाहेर करी देशे एम भय पामेलो, सर्व बाळकादिकने गम्य एटले पराभव करवाने योग्य अने जेणे चारित्रनी स्खलना—विराधना करी एवो, कुशीलियो साधु [आ लोकमां] साधु जनोने अनिष्ट थाय छे, अने मरीने पण परलोकमां दुर्गति पामे छे; माटे प्राणनो नाश थाय तोपण चारित्रनी विराधना करवी नहीं ए तात्पर्य छे." २२६.

गिरिसुअपुप्फसुआणं, सुविहिय आहरणं कारण विहन्नू ।
वज्जेज्ज सीलविगले, उज्जुय सीले हविज्ज जई ॥ २२७ ॥

अर्थ—" हे सुविहित—सारा शिष्य ! गिरिशुक [पर्वतमां—पर्वत समीपमां रहेनारा भिल्लोनो पोपट] अने पुष्पशुक (वाडीनो पोपट) नुं उदाहरण गुणदोषनुं कारण छे, एटले उत्तम अने अधमनो संग अनुक्रमे गुण अने दोषनुं कारण छे ते बतावे छे एम जाणीने यतिए शीलविकल एटले आचाररहित साधुओने वर्जवा, अने शील—चारित्रना आचरणमां उद्युक्त—उद्यमवान थवुं " २२७. अहीं ते बे शुकनुं दृष्टांत जाणवुं ५४.

गाथा २२५—दुर्नियत्थ दुष्टविपरीत वेषधारिणं ।
गाथा २२६—अवमओ । दुर्गति । अवमओ—अवमनना अनिष्टो ।
[illegible]

गिरिशुक अने पुष्पशुकनी कथा.

[illegible]पुर नगरमां कनककेतु नामे राजा हतो. ते एकदा वनक्रीडा करवा माटे [illegible]र नीकळ्यो. अश्वपर स्वार थईने राजाए अश्व दोडाव्यो. एटले ते विपरीत [illegible] अश्व अति वेगथी दोडीने एक मोटा जंगलमां राजाने लई गयो. [illegible] अश्व एक स्थाने उभो रह्यो. एटले राजा पण थाकी गयेलो होवाथी नीचे उतर्यो [illegible] ते अरण्यमां एकलो आम तेम फरवा लाग्यो. तेवामां थोडे दूर [illegible] [illegible] जोईने विश्राम लेवा माटे राजा ते तरफ चाल्यो. तेटलामां एक [illegible] उपर बांधेला पांजरामां रहेलो एक पोपट बोल्यो के " अरे भिल्लो ! दोडो, [illegible] कोई मोटो राजा आवे छे, तेने पकडो [illegible] [illegible]." [illegible] एवुं वाक्य सांभळीने घणा भिल्लो राजा तरफ दोड्या. तेवामां [illegible] [illegible] राजा वेगवाळा पेला अश्वपर स्वार थईने एकदम [illegible]. एक [illegible] [illegible] ते एक योजन दूर गयो हतो. त्यां पासे एक तापसनो आश्रम जोयो. ते [illegible] एक सुंदर वाटिका हती. तेमां एक उंच वृक्ष पर [illegible] [illegible] एक पोपट हतो. ते [illegible] राजाने [illegible] बोल्यो के " [illegible] [illegible] ! आवो, आवो, [illegible] अतिथि आवे छे, तेनो [illegible] [illegible] [illegible]." [illegible]

[illegible]

[illegible] हे राजा ! [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] कह्युं छे के—

[illegible]संसर्गाः, [illegible] ।

[illegible] [illegible] ॥

" मोटा माहात्म्यवाळानो संग कोनी उन्नतिनुं कारण थतो नथी ? सर्वनी उन्नतिनुं कारण थाय छे. जुओ के गंगानदीमां मळेला शेरीना जळने देवो पण वंदन करेछे.' वळी कह्युं छे के—

वरं पर्वतदुर्गेषु, भ्रान्तं वनचरैः सह ।
न मूर्खजनसंपर्कः, सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥

" पर्वतना दुर्गोमां वनचरो (भिल्ल विगेरे)नी साथे भमवुं ए कांइक ठीक छे परंतु देवेन्द्रना भवनमां [स्वर्गमां] पण मूर्खजननो संग सारो नथी."

ते सांभळीने राजा प्रसन्न थयो. तेटलामां राजानुं सर्व सैन्य के जे पाछळ आवतुं हतुं ते आवी पहोंच्युं. तेनी साथे राजा पोताना नगरमां गयो.

आ प्रमाणे संगतिनुं फळ जाणीने यतिओए भ्रष्टाचारीनो संग तजी तपस्यामां यत्न करवो. सिद्धांतमां कह्युं छे के-

वरमग्गिंमि पवेसो, वरं विसुद्धेण कम्मुणा मरणं ।
मा गहियव्वयभंगो, मा जीयं खलियसीलस्स ॥

"अग्निमां प्रवेश करवो श्रेष्ठ छे,अने विशुद्ध कर्म जे अणसण तेवडे एटले अणसण अंगीकार करीने मरण पामवुं ते श्रेष्ठ छे. परंतु ग्रहण करेला व्रतनो भंग करवो श्रेष्ठ नथी, अने जेनुं शील स्खलित-भ्रष्ट थयुं छे एवा साधुनुं जीववुं ते श्रेष्ठ नथी."

ओसन्नचरणकरणं, जइणो वंदंति कारणं पप्प ।
जे सुविइयपरमत्था, ते वंदंते निवारंति ॥ २२८ ॥

अर्थ-" यतिओ कारण पामीने एटले निर्वाहादिक कारणनी अपेक्षा राखीने जेमनुं महाव्रतादिक मूळ गुणरूप चरण अने पंच समित्यादिक उत्तर गुणरूप करण अवसन्न-शिथिल-भ्रष्ट थयु होय तेवा शिथिलाचारीने पण वंदना करे छे. परंतु जेओए सारी रीते परमार्थने जाण्यो छे, एटले के 'आपणने सुविहित [उत्तम साधुओने वंदाववा ते योग्य नथी.' एम पोताना दोषने जेओ जाणे छे तेवा पासत्थाओ पोताने वंदना करनार साधुओने निवारे छेः अर्थात् 'तमे अमने वंदना करशो नहीं' एम कही तेमने अटकावे छे." २२८

सुविहिय वंदावंतो, नासेइ अप्पयं तु सुपहाओ ।
दुविहपहविप्पमुक्को, कहमप्पं न याणइ मूढो ॥ २२९ ॥

गाथा २२८ उसन्न । सुविहिय । गाथा २२९-सुविहिअ ।

अर्थ–" सुविहित साधुओने वंदावनार (पासत्थादिक) एटले वांदनारने नीचे पाडनार पासत्थादि कुपथथी (दोषमार्गथी) पोताना आत्मानो ज नाश करे छे; [illegible] वे प्रकारना (साधु श्रावक नामना) मार्गथी भ्रष्ट थयेलो ते मूर्ख केम पोताना आत्माने पण जाणतो नथी के हुं बन्ने मार्गथी भ्रष्ट थाउं छुं. [illegible] !" २२९.

हवे श्रावकना गुण वर्णवे छे.

वंदइ उभओ कालं पि, चेइयाइं थयथुईपरमो ।
जिणवरपडिमाघरधुवपुप्फगंधच्चणुज्जुत्तो ॥ २३० ॥

अर्थ–" जे चैत्योने (जिनबिंबोने) बन्ने काळ पण वंदना करे छे; मूळमां 'अपि' [illegible] कह्यो छे, माटे मध्यान्ह काळ पण लेवो एटले त्रणे काळ वंदना करे छे. [illegible] एक श्लोकादि विगेरे स्तवन अने थुई एटले नमस्कारादिक स्तुति, तेमने विषे [illegible] [illegible] स्तव अने स्तुति करनारो तथा जिनवरनी प्रतिमाओ अने तेमना [illegible] विषे [illegible] धूप, माळा विगेरे पुष्पो अने सुगंध [illegible] अर्चन (पूजा) कर[illegible] [illegible] उजमाळ होय छे, ते श्रावक कहेवाय छे." २३०.

सुविणिच्छियएगमई, धम्मंमि अनन्नदेवओ अ पुणो ।
न य कुसमएसु रज्जइ, पुव्वावरवाहयत्थेसु ॥ २३१ ॥

अर्थ–" जिनधर्मने विषे सुनिश्चित एटले निश्चळ [illegible] बुद्धिवाळो अने जेने [illegible] [illegible] सिवाय बीजा देव नथी एवो श्रावक पूर्वापर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अर्थात् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थतो नथी." २३१.

दट्ठूण कुलिंगीणं, तसथावरभूयमद्दणं विविहं ।
धम्माओ न चालिज्जइ, देवेहिं सइंदएहिं पि ॥ २३२ ॥

अर्थ–" [illegible]

वंदई पडिपुच्छइ, पज्जुवासेइ साहुणो सययमेव ।
पढइ सुणेइ गुणेइ अ, जणस्स धम्मं परिकहेइ ॥ २३३ ॥

अर्थ—" श्रावक निरंतर मुक्तिमार्गना साधक एवा साधुओने वंदना [illegible] तेमने पोतानो संदेह पूछे छे, अने तेमनी पर्युपासना [सेवा] करे छे. वळी ते सु[illegible] धर्मशास्त्र भणे छे, ते जिनभाषित धर्मने अर्थथी श्रवण करे छे, अने भणेलानो विचार करे छे, तथा अज्ञान जनोने ते धर्मनुं कथन करे छे: अर्थात् पोतानी बुद्धि [illegible] बीजाओने बोध पमाडे छे. " २३३.

दढसीलव्वयनियमो, पोसहआवस्सएसु अक्खलिओ ।
महुमज्जमंसपंचविहबहुबीयफलेसु पडिक्कंतो ॥ २३४ ॥

अर्थ—" शील ते सद[illegible] अने [illegible] ते अणु[illegible] तेनो नियम जेने दृढ होय, जे पौषध (धर्मनुं पोषण करनार होय [illegible] पोषध). अने अवश्य करवा लायक [illegible]यिक विगेरे छ आवश्यक (प्रतिक्रमण) [illegible] विषे अस्खलित—अतिचार रहित [illegible] मध, मद्य (मदिरा), मांस अने वडलां, उंबरा विगेरे पांच प्रकारना [illegible] बीजवाळा फळो तथा बहु बीजवाळा वृंताक [रींगणा] विगेरेथी निवृत्ति पा[illegible] एटले अभक्ष्यादिकना त्यागवाळो होय, ते श्रावक कहेवाय छे. " २३४. [illegible] पर्वणीने विषे सावद्यत्यागरूप नियम विशेष ते पौषध कहेवाय छे; अने [illegible] [illegible] अवश्य करवाना होवाथी प्रतिक्रमण ते आवश्यक कहेवाय छे.

नाहम्मकम्मजीवी, पच्चक्खाणे अभिक्खणुज्जुत्तो ।
सव्वं परिमाणकडं, अवरज्झइ तं पि संकंतो ॥ २३५ ॥

अर्थ—" वळी श्रावक [illegible] प्रकारना कर्मादान पैकी कोइ पण प्रकार[illegible] [illegible] आजीविका करतो न होय, एटले शुद्ध—निर्दोष व्यापार करतो होय, [illegible] [illegible] प्रत्याख्यानमां [illegible] उद्यमवान होय, वळी अने सर्व [illegible] [illegible] होय, एटले ते परिग्रहना प्रमाणवाळो होय, अने ते [illegible] [illegible] कार्य करे ते पण [illegible] [illegible] [illegible] आलोचना करीने ते दोषथी शुद्ध—मुक्त थाय. [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

"वळी श्रावक जिनेश्वरोना निष्क्रमण (दीक्षा) केवलज्ञान, निर्वाण [illegible] [illegible] रूप कल्याणक स्थानोने वंदना करे छे, अर्थात् [illegible] [illegible] [illegible] बीजा घणा गुण होय-पणी आवनां इत्यादिकनी माहिती मळत होय, [illegible] साधुजन रहित एटले साधुजनना विहाररहित देशमां रहेतो नथी." २२६

[illegible]तित्थियाण पणमणं, उब्भावण थुणण भत्तिरागं च ।
[illegible] सम्माणं, दाणं वि[illegible]यं च वज्जेइ ॥ २२७ ॥

—"वळी श्रावक बौद्ध तापस विगेरे परतीर्थिकोनुं नमन (वंदना करवी), [illegible] (बीजाओ पासे तेओना गुणनी प्रशंसा करवी), [illegible] [illegible] [illegible] देवनी स्तुति करवी), भक्तिराग (तेमने बहुमान आपवुं [illegible] [illegible] [illegible]), सन्मान (तेओ आवे त्यारे उभा थइ मान आपवुं) [illegible] [illegible] वस्त्रादिक आपवुं), तथा [illegible] विगेरे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बुद्धियी भोजनादिक आपवुं), तथा [illegible] करतो नथी." २२७

[illegible] त्याग करे छे: अर्थात् एटलां वानां करतो नथी. [illegible] श्रावक [illegible] बुद्धिथी भोजनादिक [illegible] [illegible] [illegible]

पढमं जईण दाऊण, अप्पणा पणमिऊण पारेइ ।
असई य सुविहियाणं, भुंजइ कयदिसालोओ ॥ २२८ ॥

अर्थ—"श्रावक प्रथम यतिओने (इंद्रियोनुं दमन करनारा [illegible] साधुओने) [illegible] [illegible] आपीने पछी पोते भोजन करे छे. [illegible] साधुओ न होय तो [illegible] [illegible] साधुओनी दिशानो आलोक करतो छतो भोजन करे छे. [illegible] साधुओ [illegible] [illegible] विचरता होय ते दिशा तरफ जोइने "आ साधुओ आवे तो सारुं" [illegible] [illegible] भोजन करवा बेसे छे (भोजन करे छे)." २२८

साहूण कप्पणिज्जं, जं नवि दिन्नं कहिंपि किंचि तहिं ।
धीरा जहुत्तकारी, सुसावगा तं न भुंजंति ॥ २२९ ॥

[illegible] साधुओने कल्पनीय-ग्रहण करवा योग्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] साधुओने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] धीर (सत्त्ववान) अने यथोक्तकारी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

छे तेज प्रमाणे वर्तनारा सुश्रावको वापरता नथी; अर्थात् साधुओने आप्या कोइ पण चीज पोते वापरता नथी: जे वस्तु मुनिमहाराज ग्रहण करे ते वस्तु वापरे छे." २३९.

वसहीसयणासणभत्तपाणभेसज्जवत्थपत्ताइ ।
जइ वि नपज्जत्तधणो, थोवा वि हु थोवयं देई ॥ २

अर्थ—"यद्यपि (जोके) नथी पर्याप्त–संपूर्ण धन जेने एवो एटले संपूर्ण नहीं होवाथी संपूर्ण आपवाने असमर्थ एवो कोइ श्रावक होय, तो ते पोतानी थोडामांथी पण थोडुं एवुं वासस्थान, शयन (सुवानी पाट), आसन (पादपी[illegible]) भक्त-अन्न, पान-जळ, भैषज्य-औषध, वस्त्र अने पात्र विगेरे आपे छे, पण संविभाग कर्या विना वापरतो नथी" २४०.

संवच्छरचाउम्मासिएसु, अट्ठाहियासु अ तिहीसु ।
सव्वायरेण लग्गइ, जिणवरपूयातवगुणेसु ॥ २४१ ॥

अर्थ—"वळी सुश्रावक संवत्सरी पर्वमां, त्रणे चातुर्मासमां, चैत्र आसो अट्ठाइमां अने अष्टमी विगेरे तिथिओमां (ए सर्व शुभ दिवसोमां) विशेष सर्व आदरवडे (सर्व उद्यमवडे) जिनेश्वरनी पूजा, छट्ठ अट्ठमादिक तप अने [illegible] गुणोने विषे लागे छे एटले आसक्त थाय छे." २४१.

वळी श्रावक शुं करे छे ते कहे छे—

साहूण चेइयाण य, पडणीयं तह अवन्नवायं च ।
जिणपवयणस्स अहियं, सव्वत्थामेण वारेई ॥ २४२ ॥

अर्थ—" सा[illegible]ओना अने चैत्य एटले जिनप्रासाद तथा जिनप्रतिमाओना [illegible]–[illegible] करनारने तथा अवर्णवाद एटले कुत्सित वचन बोलनारने [illegible]) अने जिनशासनना अहित करनारने (शत्रुने) सुश्रावक पोतानी [illegible] करीने निवारण करे छे. पण 'साधुओ [illegible] छे ते [illegible] [illegible] करता नथी." २४२.

विरया पाणिवहाओ, विरया निच्चं च अलियवयणाओ ।
विरया चोरिक्काओ, विरया परदारगमणाओ ॥ २४३ ॥

[illegible]

[illegible] वळी सुश्रावको हमेशां प्राणीवध थकी विरति पामेला होय छे, कोइक [illegible] मृषा भाषण थकी विरति (निवृत्ति) पामेला होय छे, चोरीथी विरति पामेला [illegible] ने परस्त्रीगमनथी निवृत्ति पामेला होय छे." २४३.

[illegible]या परिग्गहाओ, अपरिमियाओ अणंततण्हाओ ।

[illegible]दोससंकुलाओ, नरयगइगमणपंथाओ ॥ २४४ ॥

[illegible]" वळी ते सुश्रावको जेनुं परिमाण कर्युं नथी, जेनाथी अनंत तृष्णाओ [illegible] छे, जे घणा वध बंधनादिक दोषोथी भरपूर-भरेलो छे, तथा जे नरक[illegible] छे, जे धनधान्यादिक नव प्रकारना परिग्रह थकी विरति [illegible] माणस छे, एवा [illegible] होय छे." २४४.

[illegible]का [illegible]णमित्ती, गाढियं गुरुवयणसाहुपडिवत्ती ।

[illegible] परपरिवाया, गहिओ जिणदेसिओ धम्मो ॥ २४५ ॥

[illegible]" जे श्रावकोए सुजन (लज्ज) नी मैत्री-दोस्ती मूकी छे, जेओए गाढ- [illegible] गुरुना वचननी साथे (शोभावाळी) प्रतिपत्ति [दक्षिणा] ग्रहण करी छे, [illegible] परिवाद-परना अपवादनुं (परनिंदानुं) कथन मूकी दीधुं छे, अने जेओए [illegible] कहेलो धर्म ग्रहण कर्यो छे." २४५.

तवनियमसीलकलिया, सुसावगा जे हवंति इह सुगुणा ।

[illegible] सुलहाई, निव्वाणविमाणसुक्खाई ॥ २४६ ॥

[illegible]" आ लोकमां जे सुश्रावक [illegible] होय छे, [illegible] अने शील ए [illegible] निर्वाण (मुक्ति) अने विमान [स्वर्ग] ना सुखो [illegible] छे." २४६.

[illegible] भवंति अनुक्रमे [illegible]

[illegible] कयावि चुक्को, तं पि सुसीला [illegible]

[illegible] गुणरयि [illegible] संवेगपक्खमग्गं ॥ २४७ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संयममार्गमां स्थापन करे छे, एटले उत्पथमां गयेलाने सन्मार्गे लावे
आचार्य अने 'पंथक' शिष्य ए बेनुं ज्ञात (दृष्टांत) अहीं जाणवुं." २

सेलकाचार्य अने पंथक शिष्यनी कथा.

कुबेरे बनावेली श्रीद्वारिकापुरीमां 'श्रीकृष्ण' वासुदेव राज्य करता
ते पुरीमां एक 'थावच्चा' नामनी सार्थवाहनी स्त्री रहेती हती. तेनो 'थ
नामनो अति रूपवान पुत्र बत्रीश स्त्रीओनो पति हतो. ते पोताना घरमां
जेम पोतानी स्त्रीओ साथे विषयसुख भोगवतो हतो. एकदा श्रीनेमिनाथ
नगरीनो बहारना उपवनमां समवसर्या. ते खबर जाणीने थावच्चाकुमार
वांदवा गयो. त्यां तेणे भगवानना मुखथी संसारनो नाश करनारी देश
तेथी संसारनी अनित्यता जाणी मातानी आज्ञा लइ श्रीजिनेश्वर पासे एक
सहित तेणे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे तेणे चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो. पछ
श्रीनेमिनाथनी आज्ञा लइने पोताना हजार शिष्यो सहित विहार करता
मुनि सेलक नामना पुरमां आव्या. ते पुरनो राजा 'सेलक' मुनिने वांदव
मुनिना मुखथी देशना सांभळीने प्रतिबोध पामेलो सेलक राजा ते थावच्चापु
पासे बार व्रतधारी श्रावक थयो. त्यांथी विहार करीने आचार्य सौगंधिका
नीलाशोक वनमां पधार्या. ते नगरीमां 'सुदर्शन' नामनो श्रेष्ठी शुक नामना परि
परम भक्त रहेतो हतो. ते श्रेष्ठी थावच्चापुत्र आचार्य पासे गयो, त्यां तेणे
पामीने मिथ्यात्वनो तथा शौचमूळ धर्मनो त्याग करीने श्रीजिनभाषित विनय
अंगीकार कर्यो. ते वातनी शुक परिव्राजकने खबर थतां ते पोताना हजार शिष्य
त्यां आव्यो. सुदर्शन श्रेष्ठी पासे आवीने तेणे पूछ्युं के "हे सुदर्शन! अमारा
मूळ धर्मनो त्याग करीने तें आ विनयमूळ धर्म कोनी पासे ग्रहण कर्यो?"
जवाब आप्यो के "में विनयमूळ धर्म श्रीथावच्चापुत्र आचार्य पासे ग्रहण क
अने ते आचार्य महाराज पण अहींज छे." ते सांभळीने शुक परिव्राजक आ
स्पर्धाथी सुदर्शनने साथे लइने आचार्य पासे आव्यो. त्यां वादमां आचार्ये तेने नि
कर्यो. एटले विनयमूळ धर्मने सत्य मानीने हजार शिष्यो सहित शुक परिव्राज
आचार्य पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे द्वादशांगीनो अभ्यास कर्ये तेने योग्य जा
थावच्चापुत्रे आचार्यपद आप्युं. अने पोते श्रीशत्रुंजय पर जइने हज
एक मासनी संलेखना करी अंते केवळज्ञान पामीने मोक्षे गया.

एकदा श्रीशुकाचार्य हजार शिष्यो सहित सेलकपुर गया.
वांदवा आव्यो. तेमना मुखथी धर्मदेशना सांभळीने प्रतिबोध पामेल

[illegible]र पुत्रने राज्य सोंपी पंथक विगेरे पांचसो मंत्रीओ सहित चारित्र ग्रहण [illegible] शेलक मुनि द्वादशांगीने धारण करनार थया. तेमने [illegible] पदे स्थापन करीने श्रीशुकाचार्य हजार साधुओ सहित [illegible] ते मुनिओ सहित अनशन ग्रहण करी मासने अन्ते केवलज्ञान पामीने मोक्षे गया. [illegible] शैलकाचार्यना शरीरमां नीरस अने लूखा आहारने लीधे [illegible] उत्पन्न थया. ते व्याधिओ असह्य हता. [illegible] रहेता हता. एकदा विहारना क्रमे तेओ [illegible] आव्या. [illegible] मंडुक राजा वंदना करवा आव्यो. त्यां गुरुना मुखथी धर्मदेशना श्रवण करी [illegible] शैलकाचार्यनुं शरीर रुधिरादि रहित शुष्क थई गयेलुं जोईने [illegible] के " हे स्वामी ! आपनुं शरीर रोगथी व्याप्त देखाय छे. [illegible] मारी यानशाळामां पधारो; जेथी हुं शुद्ध औषधवडे तथा पथ्य भोजनवडे [illegible] शरीर [illegible] करुं." ते सांभळीने आचार्ये तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. [illegible] चिकित्सा [illegible] औषधादिकथी तेमनी [illegible] रोग नष्ट थया. [illegible]

[illegible]

भवसागरमां पडतां एवा मने आजे तें उद्धर्यो (खेंचीकाढ्यो) छे." एम प्रमाद दूर करी शुद्ध चारित्र ग्रहण कर्युं. ते वात सांभळी सर्व शिष्यो पासे आव्या. पछी चिरकाळ सुधी विहार करी घणा भव्य जीवोने प्र डीने पांचसो शिष्यो सहित सिद्धाचळपर अनशन ग्रहण करी सेलकाचार्य पाम्या. आवी रीते सारा शिष्यो पोताना प्रमादी गुरुने पण सन्मार्गे ला

दस दस दिवसे दिवसे, धम्मं बोहेइ अहव अहिअ
इअ नंदिसेणसत्ती, तहविय से संजमविवत्ती ॥ २४०

अर्थ-" दिवसे दिवसे (हंमेशां) दश दश पुरुषोने धर्मनो बोध करे तेथी पण अधिकतर माणसोने बोध पमाडे, एवी नंदिषेण मुनिनी शक्ति-व (देशना लब्धि) हती, तोपण ते नंदिषेणना चारित्रनी विपत्ति थइ (विनाश ए उपरथी निकाचित कर्मनो भोग अति बळवान छे एम समजवुं अहीं नंदिषेणनो संबंध जाणवो. ६०

श्रीनंदिषेणनो कथा.

प्रथम नंदिषेणनो पूर्वभव सारी रीते कहे छे—कोइ एक गाममां मुखप्रिय न ब्राह्मण रहेतो हतो. तेणे एकदा छुटक छुटक मळीने लक्ष ब्राह्मणोने भोजन कराव संकल्प कर्यो. ते वखते तेणे विचार्युं के "जो मारे घेर कामकाज करवा माटे एक ने होय तो बहु सारुं" एम विचारीने पोतानी पडोशमां रहेता एक भीम नामना दासने पूछ्युं. त्यारे तेणे कह्युं के "जो ए ब्राह्मणोनुं भोजन थइ रह्या पछी वधेलुं अन्नादि मने आपे तो हुं तारा घरनुं कामकाज करुं" ते सांभळीने ते ब्राह्मणे तेनी माग कबूल करी. एटले ते भीम तेना घरनुं कामकाज करवा लाग्यो; अने ब्राह्मण भोजन थइ रह्या पछी बाकी रहेलुं अन्न नगरमां रहेला साधु साध्वीओने बोलावी वहोराववा लाग्यो. आ प्रमाणे पुण्य करवाथी तेणे भोगकर्म उपार्जन कर्युं. छेवट आयु क्षये मरण पामीने ते दासनो जीव देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी आयुष्य च्यवीने राजगृ नगरमां श्रेणिक राजानो नंदिषेण नामे पुत्र थयो; अने पेलो ब्राह्मणने भोजन करावनार ब्राह्मणनो जीव घणा भवोमां भ्रमण करीने कोइ अटवीमां हाथिणीनी कुक्षिमां उत्पन्न थयो. ते हाथिणीनो स्वामी हाथी ने जे बाळको थाय तेने मारी नाखतो हतो, तेथी ते हाथिणीए विचार्युं के "मारी कुक्षिमां गर्भ उत्पन्न थयो छे,

[illegible] रूपयर्णी गुप्त रीते प्रसवतुं तो ते जीवतो रहे. अने पुत्रनो हाथिणीना टोळांथी [illegible] थाय." एम विचारीने ते हाथिणी टोळांथी [illegible] तेथी कोई वखत एक पहोरे ते पोताना यूथने भेगी थती. कोई वखत बे पहोरे [illegible] वखत एक दिवसे थती अने कोई वखत बे दिवसे यूथ भेगी थती. [illegible] अवसर [illegible] आवेला तापसोने ते यूथनो पूरो [illegible] कोई तापसोना [illegible] गई. त्यां तेणे पुत्र (हाथी)ने जन्म आप्यो. पछी त्यांथी पोताना यूथ भेगी [illegible] पछी दररोज यूथनी पाछळ रहीने तापसोना आश्रममां जई पोताना [illegible] [illegible] पाछी यूथ भेगी थती. एवी रीते ते बाळकनुं तेणे पोषण कर्युं. [illegible] [illegible] हस्तिबाळकनुं तापसोए पुत्रनी जेम पालन कर्युं. तेथी ते [illegible] [illegible] थया. पछी ते तापसोनी सगतिथी तेनाथी पण [illegible] [illegible] आश्रमनां वृक्षोने पाणी पावा लाग्यो. तेथी तापसोए तेनुं [illegible] [illegible] नाम पाड्युं. ते सेचनक अनुक्रमे वृद्धि पाम्यो. [illegible] [illegible] हतो. तेवामां तेणे पेलो यूथपतिनी [illegible] पोतानो [illegible] [illegible] जोया. तेणे [illegible] [illegible] अने ते यूथपतिए पण तेने [illegible] [illegible] तेने सेचनके पोताना [illegible] [illegible] [illegible] मनमां विचार्युं के "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आपणो कोई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राजा पासे जईने कह्युं के "हे राजा! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एक हस्तिरत्न छे, माटे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] परिवार सहित [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

तेने पांचसो स्त्रीओ साथे पाणिग्रहण ... ... विषयसुख
ववा लाग्यो.

एकदा श्रीवर्धमान स्वामीने नगर ... ... आण
कुमार भगवानने वांदवा गयो.प्रभुने वांदीने नंदिषेणे पूछ्युं के "हे भगवान!
सेचनक हाथीने मारापर स्नेह केम उत्पन्न थयो ?" त्यारे भगवाने ते स्नेह
सर्व वृत्तांत तेने कह्युं.ते सांभळीने नंदिषेणे विचार्युं के " ज्यारे साधुओने
आपवाथी आटलुं बधुं पुण्य थयुं त्यारे दीक्षा लइने जो तपस्या करी होय तो
मोटुं फळ मळे." ए प्रमाणे विचारीने तेणे भगवानने विज्ञप्ति करी के "हे
आपीने मारो उद्धार करो."प्रभु बोल्या के "हे वत्स ! तारे निकाचित भोग
बाकी रहेलुं छे,तेथी तुं दीक्षा न ले." ते वखते तेज प्रमाणे आकाशवाणी पण थ
नंदिषेण दृढ चित्तवाळो थइने पांचसो स्त्रीओना उपभोगनो त्याग करी चारित्र
करवा उद्युक्त थयो.एटले भगवाने पण तेनो भावीभाव जाणीने तेने दीक्षा आ
स्थविर साधुओने सोंप्यो.त्यां तेणे सामायिकथी आरंभीने दश पूर्वनो अभ्यास
ते नंदिषेण मुनि जेम जेम छट्ठ, अट्ठम, आतापना विगेरे तपस्या पूर्वक महाकष्ट
लाग्या अने उपसर्गो सहन करवा लाग्या.तेम तेम तेने घणी लब्धिओ प्राप्त थ
साथे दिनप्रतिदिन कामनो उदय पण वृद्धि पामवा लाग्यो.नंदिषेण मुनि मनमां ज
हता के "देवताओए तथा भगवाने निषेध कर्या छतां पण में दीक्षा ग्रहण करी छे,
कंदर्प [कामदेव]ना परतंत्रपणाथी मारा व्रतनो भंग न थाओ." एम विचारीने
देवथी भय पामतां तेमणे आत्मघात करवाना हेतुथी शस्त्रघात, कंठपाश (गळाफां
विगेरे अनेक उपायो कर्या;परन्तु ते सर्व शासनदेवीए निष्फळ कर्या. एकदा
अति उग्र काम व्याप्त थयो. ते वखते ते झंपापात करवा माटे पर्वत पर चढ
पडवा गया.तेवामां शासनदेवताए तेने झीली लइ कह्युं के "हे महानुभाव! आ प्रमा
आत्मघात करवाथी शुं निकाचित कर्मनो क्षय थशे ? नहीं थाय.माटे आ तारो विच
वृथा छे. तीर्थंकरोने पण भोगकर्म भोगव्या विना सर्व कर्मनो क्षय थतो नथी, त
तारा जेवाने माटे शुं कहेवुं !" आ प्रमाणे शासनदेवीनुं वचन सांभळीने नंदिषेणमु
एकलो विहार करतां करतां एकदा छठने पारणे राजगृही नगरीमां गया. आहार
माटे उंचा नीचा कुळोमां भमतां अजाणतां वेश्याने घेर जइने धर्मलाभ आप्यो. ते
सांभळीने वेश्या बोली के " हे साधु ! अमारे घेर तो अर्थलाभनी जरुर छे, अने
तमे तो रांक अने धनरहित छो. " ते वचन सांभळतांज मुनिने अभिमान आव्युं,
तेथी तेणे तेना घरनुं एक तृण खेंचीने पोताना तपनी लब्धिथी साडाबार

...ांह हेतीपर्नी शुद्धि करी; अने कहुं के 'जो मारे धर्मलाभनुं प्रयोजन न होय तो भी ...ओ रुपैआ ग्रहण कर.' एम बोलीने ते मुनि पाछा वळी नीकळवा लाग्या, तेटलामां ...वेश्या आगळ आवीने मुनिना वस्त्रनो छेडो पकडी ऊभी रही, अने कहेवा ...लागी के "हे प्राणेश! आ धन छोडी अन्यत्र जवुं नथी. केमके नवी यौवनावस्था [illegible] ...पछी के तमे अमारा [illegible] पुत्रोने [illegible] उत्पन्न करीने [illegible] ...पछी [illegible] पोतेज उपार्जन करीने [illegible] पण अने ग्रहण करीए [illegible] ...आ धन तमे लई जाओ, अथवा जो अहीं रहीने आ धनादि [illegible] ...हे नाथ! आ अमारी युवावस्था छे! अने आ नवुं [illegible] आ धन, आ ...अने आ मारो सुंदर आवास—ए सर्व [illegible] अने [illegible] ...ते पार्वाने [illegible] पुण्यजन वात्स्यादिकनो [illegible] ...अत्यंत [illegible] ते वेश्याना वचनो [illegible] ...रहेवा [illegible] दश दश पुरुषोने प्रतिबोध पमाडवानो अभिग्रह ...विना [illegible] साधुना वेषने [illegible] ते वेश्या साथे [illegible] ...दररोज प्रातःकाळे दश पुरुषोने प्रतिबोध पमाडता [illegible] ...बोलता नहीं, अने जेओने ते प्रतिबोध पमाडता [illegible] ...प्रमाणे वेश्याने घेर रहेतां [illegible] ...दिवस नव पुरुषो प्रतिबोध पाम्या. दशमो [illegible] प्रतिबोध करवा [illegible] ...दशमो [illegible] लाग्यो के "तमे [illegible] प्रतिबोध करो छो, [illegible] ...अहीं वेश्याने घेर केम रह्या छो?" [illegible] ...पण प्रतिबोध पाम्यो नहीं. ते पछी वेश्या [illegible] ...तैयार करीने तेने बोलाववा आवी अने कहुं के "हे [illegible]! ...थयुं, माटे जमवा ऊठो." नंदिषेणे कहुं के "आ [illegible] ...रहेवा [illegible]" एम कहीने तेने [illegible] ...प्रमाणे बोलाववा आवी. [illegible] ...वार पण बोलाववा आवी, अने [illegible] ...[illegible] ...[illegible] ...[illegible] ...[illegible] ...[illegible]

मूकेलो पोतानो यतिवेष धारण करी ते वेश्याने धर्मलाभ आप्यो. ते वखते बोली के "हे स्वामी ! में तो हास्यथी कह्युं हतुं; माटे मने एकली मूकीने [illegible] जाओछो ?" नंदिषेणे कह्युं के "तारे ने मारे एटलोज संबंध हतो." एम कहीने महावीरस्वामीनी समीपे आवी तेमणे फरीथी चारित्र ग्रहण कर्युं. पछी शुद्ध निरति[illegible] चारित्रनुं प्रतिपालन करी, छेवट अनशन ग्रहण करी मृत्यु पामीने देवलोके गया.

आ प्रमाणे ते नंदिषेण मुनि दशपूर्वधारी हता, तेमज देशनानी अपूर्व [illegible] वाळा हता; तोपण ते निकाचित कर्मना भोग थकी मूकाया नहीं, तो बीजानी वात करवी ? माटे कर्मनो विश्वास करवो नहीं.

कलुसीकओ अ किट्टीकओ अ, खयरीकओ मलिणिओ अ ।
कम्मेहिं एस जीवो, नाऊण [10] वि मुज्झई जेण ॥ २८[illegible]

अर्थ—"जे कारण माटे आ जीव ज्ञानावरणादिक आठ कर्म[illegible] [illegible]ने जेम [illegible] प्राप्त थयेलुं जळ पंकिल (कादववाळुं डोळुं) [illegible] [illegible] जेम काट वळे तेम किट्टीकृत—काटाळो [illegible] [illegible] [illegible] (ज्ञानादिक रहित) स्वभावने पामे (गं[illegible] [illegible] [illegible] मेलवाळु (मलिन [illegible] [illegible] [illegible] आ जीव जाणतां छतां पण मोह[illegible] [illegible] होय छे.)" २४०.

[illegible] मोहिं, [illegible]

[illegible]

वाससहस्सं पि जई, काऊणं संयमं सुविउलं पि ।
अंते किलिट्ठभावो, न विसुज्झइ कंडरीउव्व ॥ १५२ ॥

अर्थ—" कंडरीकनी जेम जेणे घणां वर्ष तपस्या करी संयम अने विपुल चारि- [illegible] ([illegible] गयो) तेओ पण यति हजार वर्ष सुधी पण [illegible] [illegible] ([illegible]) करीने (पाळीने) पण जो छेवट अंते क्लिष्टभाव ([illegible]) [illegible] [illegible] ते विशुद्ध थतो नथी. अर्थात् ते कर्मक्षय करी शकतो नथी. अने दुर्गतिने [illegible] छे." १५२.

अप्पेण वि कालेणं, केइ जहागहियसीलसामन्ना ।
साहंति निययकज्जं, पुंडरीयमहारिसि व्व जहा ॥ १५३ ॥

अर्थ—" जेवा भावे ग्रहण करेलुं होय तेवाज भावथी [illegible] शील—सदाचार अने [illegible] [illegible] पुंडरीक महा- [illegible] छे, एवा केटलाएक साधुओ पुंडरीक महाऋषिनी जेम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible]) [illegible] [illegible] करीने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पामे छे." १५३. विस्तारथी तेनो संबंध [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कंडरीक अने पुंडरीकनो संबंध जाणवो. ६१

कंडरीक अने पुंडरीकनी कथा.

जंबूद्वीपना महाविदेहक्षेत्रमां आवेला पुष्कलावती विजयमां पुंडरीकिणी नामे नगरी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नगरीमां महापद्म नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने पद्मावती नामे राणी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुंडरीक अने कंडरीक नामे बे पुत्रो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुंडरीकने [illegible] पुंडरीक राजा [illegible]

[illegible]

कर्युं. अनुक्रमे ते अगियार अंगने धारण करनार थयो. स्थविरमुनिओनी
करतां अने नीरस तथा लूखो आहार करतां कंडरीक मुनिना शरीरमां
उत्पन्न थया. एकदा कंडरीक मुनि स्थविर साधुओनी साथे विहार करतां पुंडर
रीए आव्या. ते वात सांभळीने पुंडरीक राजा तेमने वंदना करवा गयो. प्रथम
वंदना करी, तेमनी पासे धर्म श्रवण करीने पछी तेणे पोताना भाइ कंडरीकने व
ते वखते तेना शरीरमां रोगोत्पत्ति जाणीने राजाए तेमने पोतानी यानशाळामां
त्यां कंडरीकनी शुद्ध औषधथी चिकित्सा करावी, तेथी ते अनुक्रमे नीरोगी थया.
स्थविरोए विहार करवा माटे राजानी रजा मागी. परंतु मिष्ट खानपानमां मूर्छा प
कंडरीके राजा पासे विहार करवानी रजा मागी नहीं. त्यारे पुंडरीक
स्थविरने वंदना करी पोताना भाइनी प्रशंसा करवा लाग्यो के " हे भ
तमने धन्य छे, तमे पुण्यवान छो अने तमे कृतार्थ छो, तमे उत्तम मनुष्यभ
अने जीवितनुं फळ पाम्या छो. केमके तमे चारित्र ग्रहण करी तप अने संयमनुं आ
धन करो छो, अने हुं तो अधन्य छुं अने अपुण्यवान छुं. केमके राज्यमां मूर्छा पाम
रहेलो छु. " आ प्रमाणे राजाए ते कंडरीक मुनिनी घणी स्तुति करी, परंतु ते मन
जरा पण आनंद पाम्यो नहीं, तो पण तेणे लज्जित थइने राजानी आज्ञा लइ स
विर साथे विहार कर्यो. ए प्रमाणे एक हजार वर्ष सुधी कंडरीक मुनि चारित्रनुं पाळ
करी छेवट भ्रष्ट परिणामवाळो थयो. तेथी ते एकलोज गुरुनी आज्ञा लीधा विन
पुंडरीकिणी नगरीमां आव्यो, अने राजाना महेलनी पासेना अशोक वनमां अशो
वृक्षनी शाखापर पोतानां उपकरणो मूकीने ते वृक्षनी नीचे दुभायेला मनवाळो ते
चिंतातुरपणे बेठो. ते वखते तेने राजानी धाव्यमाताए जोयो. एटले तेणे आवीने
पुंडरीक राजाने ते वृत्तांत कह्युं. ते सांभळीने राजा तेनी पासे गयो. तेने जोइनेज
तेणे तेनो अभिप्राय जाणी लीधो एटले एकांतमां राजाए तेने पूछयुं के " हे भाइ !
तने भोग भोगववानो अभिलाष थइ छे ? " ते बोल्यो के " हा, मने राज्य भोगव
वानी इच्छा थइ छे." ते सांभळीने पुंडरीक राजाए पोताना कुटुंबीओने बोलावीने
कंडरीकने राज्याभिषेक कर्यो, एटले कंडरीक राजा थयो. तेज दिवसे कृश शरीरवाळा
ते कंडरीके अति रसवाळो आहार कर्यो; तेथी तेना देहमां महा वेदना उत्पन्न थइ.
पण तेनुं कोइए काइ पण औषध कर्युं नहीं. सर्वेए जाण्युं के " आ पापिष्ठे चारित्र
मूकीने राज्य ग्रहण कर्युं छे, ते अमने शुं मूल आपवानो हतो ?" आ प्रमाणे मंत्री
वगेरेनुं अपमान [illegible] तेओनी उपर अत्यंत क्रोध चड्यो. तेथी तेणे विचार कर्यो के
" [illegible] हमणां कोइ पण मारी सेवा करतु नथी, परंतु ज्यारे हुं सारो थइ
[illegible] आ सर्वेनो निग्रह करीश " ए प्रमाणे अत्यंत रौद्र ध्यान करतो तेज रात्रे
[illegible] ने ते कंडरीक सातमी नरके तेत्रीश सागरोपमना आयुष्यवाळो [illegible]

आ प्रमाणे जे कोइ चारित्रनो त्याग करीने विषयनी अभिलाषा करे छे ते कं-
डरीकनी पेठे दुर्गतिने पामे छे.

[illegible] राज्य आपीने तरत पुंडरीक पोतानी मेळे चार महाव्रतोनो उच्चार [illegible] ने कंडरीकनां उपकरणो लइ, [illegible] वंदना करवा चाल्यो [illegible] आहार [illegible] करी. परमाणी [illegible] मार्गमां [illegible] पुंडरीक मनमां विचारे छे के [illegible] स्थविर [illegible] वंदना [illegible] पुंडरीक स्थविर मुनि पासे [illegible] [illegible] काळनी वीते दिवसे ते पुंडरीक [illegible] चार महाव्रतो [illegible] वंदना करीने [illegible] [illegible] आहार कर्यो. [illegible] विशुद्ध भावनां [illegible] [illegible] पामीने महाविदेहमां [illegible] सिद्धिपदने पामशे.

[illegible] "आ प्रमाणे [illegible] [illegible] पामे छे."

इति [illegible] ॥

काऊणं संकिलिट्ठं, सामन्नं दुल्लहं जिणाभिहियं ।
[illegible] ॥

[illegible]

करवाथी चारित्रने खंडित करे, तथा क्षणे क्षणे नाना प्रकारना अतिचारे करीने चारित्रने मलिन करे एवो अवसन्न (शिथिल) अने सुखलंपट साधु पाछळथी पण चारित्रने विषे उद्यम करवा शक्तिमान थतो नथी-उद्यम करी शकतो नथी." २५४

अवि नाम चक्कवट्टी, चइज्ज सव्वं पि चक्कवट्टिसुहं ।
न य ओसन्नविहारी, दुहिओ ओसन्नयं चयइ ॥ २५५ ॥

अर्थ-"वळी छ खंडनो अधिपति एवो चक्रवर्ती सर्व एवा पण चक्रवर्तीना सुखनो त्याग करे छे; परंतु शिथिल विहारी पुरुष दुःखी थया छतां पण शिथिलपणानो त्याग करतो नथी. एटले चिकणा कर्मवडे लेपागेलो होवाथी तजी शकतो नथी." २५५

नरयत्थो ससिराया, बहु भणइ देहलालणासुहिओ ।
पडिओमि भए भाओअ, तो मे जाएअ तं देहं ॥ २५६ ॥

अर्थ-नरकमां रहेलो शशि (शशिप्रभ) राजा पोताना भाइने घणुं कहे छे के 'हे भाइ! हुं देहनुं लालनपालन करवाथी सुख पाम्यो (सुखलंपट थयो), तेथी आ भवमां नरकमां पड्यो छुं. माटे मारा ते (पूर्वभवना) देहने तुं पीडा कर. [पीडा पमाड-कदर्थना कर]." २५६. अहीं शशिप्रभ राजानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

शशिप्रभ राजानी कथा.

कुसुमपुर नगरमां 'जितारी' नामे राजा हतो. तेने 'शशिप्रभ' अने 'सुरप्रभ' नामना बे पुत्रो हता. तेमां मोटा शशिप्रभने राज्यपर बेसाडी नाना सूरप्रभने युवराज आपी जितारी राजा धर्मकर्ममां उद्यमी थयो. एकदा त्यां चार ज्ञानने धारण करनारा श्रीविजयघोष सूरि समवसर्या. तेमने वंदना करवा माटे शशिप्रभ अने सुरप्रभ गया. गुरुना मुखथी धर्मदेशना सांभळीने सुरप्रभ प्रतिबोध पाम्यो. पछी घेर आवीने सुरप्रभे शशिप्रभने कह्युं के "हे बंधु! आ संसार असार छे, तेथी विषयसुखनो त्याग करी चारित्र लइ तपसंयमने विषे उद्यम करीए; जेथी स्वर्ग तथा मोक्षनी पण प्राप्ति थाय." ते सांभळीने शशिप्रभे कह्युं के "हे भाइ! आने तुं कोइ धूर्तथी वंचना करायो (ठगायो) देखाय छे. केमके प्राप्त थयेलां विषयसुखोनो त्याग करीने आगळपरनां (भविष्यनां) सुखनी वांछा करे छे, माटे तुं महा मूर्ख छे; भविष्यनां सुख कोणे जोयां छे? धर्मनुं फळ मळशे (मळशे) के नहीं ते कोण जाणे छे?" त्यारे सुरप्रभ बोल्यो के "हे भाइ! आ तमे शुं कह्युं! धर्मनुं फळ निश्चित मळेज छे. केमके पुण्य अने पापनां फळो प्रत्यक्ष

गाथा २५५-उसन्न विहारि । उसन्नय । चयइ ।
गाथा २५६-बहु । भाउअ । जाएह । जाएअ=यातय, पीडयेत्यर्थ ।

[illegible] છે, [illegible], એક [illegible]. [illegible], [illegible]. [illegible]
[illegible], એક [illegible], અને એક [illegible]. [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] છે." [illegible] [illegible]
[illegible] પામ્યો નહીં. [illegible] [illegible]
[illegible] અનુકંપ [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]. [illegible] [illegible]
[illegible] પૂના [illegible] નહીં. [illegible]
[illegible], [illegible] વાત [illegible]! [illegible]
[illegible]." [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] નહીં. [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ([illegible])
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]." [illegible]
[illegible] [illegible]
" [illegible] [illegible]
[illegible]." [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]:

[illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

तपसंयमादिक अनुष्ठान ... ...
अर्थात् पछीथी शोक करवानो ... ... नहीं." २५८.

॥ इति ... ॥ ... .

धित्तूण वि सामन्नं, संजमजोगेसु ... ... सिढिलो ।
पडइ जइ वयणिज्जे, सोअइ अ गओ कुदेवत्तं ॥ २५९ ॥

अर्थ–" जे (मनुष्य) श्रामण्य (चारित्र) ने ग्रहण करीने पण संयमयोगने विषे [चारित्रनी क्रियाना समूहने विषे] शिथिल [प्रमादी] थाय छे, ते यति आ लोकमां वचनीयता (निंदा) पामे छे, अने परभवमां कुदेवपणाने (किल्बिषपणाने) पाम्यो थको ते जीव शोक करे छे. तेने शोक करवानो वखत आवे छे." २५९

सुच्चा ते जिअलोए, जिणवयणं जे नरा न याणंति ।
सुच्चाण वि ते सुच्चा, जे नाऊणं न वि करंति । ॥ २६० ॥

अर्थ–" जे मनुष्यो अविवेकीपणाथी जिनवचनने जाणता नथी तेओ आ जीवलोकने विषे (अरे ! तेओनी शी गति थशे ? एवी रीते) शोक करवा लायक छे अने जे पुरूषो ते जिनवचनने जाणीने (जाणता छतां) पण प्रमादने लीधे करता नथी (ते प्रमाणे आचरण करता नथी) तेओ शोक करवा लायक मनुष्योना मध्ये पण विशेषे करीने शोक करवा लायक छे. जाणता छतां प्रमादपणाथी ए प्रमाणे न वर्तवुं ए महा अनर्थनो हेतु छे, ए अहीं तात्पर्य छे." २६०

दावेऊण धणनिहिं, तेसिं उप्पाडियाणि अच्छीणि ।
नाऊण वि जिणवयणं, जे इह विहलंति धम्मधणं ॥ २६१ ॥

अर्थ–" आ संसारमां जेओ तीर्थंकरे भाखेला वचनने जाणीने पण ते धर्म रूपी धनने ज विफळ (निष्फळ)करे छ तेओए रंकजनने रत्नसुवर्णादिकथी भरेलो धननो निधि देखाडीने पछी ते रंकजनना नेत्रो उपाडी (काढी) नांख्यां छे–काढी नांख्या बराबर कर्युं छे एम समजवुं." २६१.

गाथा २५९-जोएसु । जई । सोयई य । गाथा २६०-सुच्चा=शोच्याः शोचनार्हाः ।
गाथा २६१-दावेऊण=दर्शयित्वा ।

[illegible] उच्चुयवेरं, [illegible] हीणं च [illegible] ॥
[illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] देवदत्तो [illegible] [illegible] अने [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]] [illegible]

[illegible] ॥
[illegible] पंक्खिवो, [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ने पुरुषने [illegible] ([illegible]) [illegible] अने [illegible] [illegible]

[illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] अने [illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

पुलिंद (भिल)नी कथा.

विंध्यवनमां पर्वतनी एक गुफामां कोइ व्यंतरथी अधिष्ठित थयेली शिव (महा-
देव)नी एक मूर्ति हती. तेनी पूजा करवा माटे नजीकना गाममां रहेनारो एक
मुग्ध नामे माणस हंमेशां त्यां आवतो हतो. ते आवीने प्रथम ते स्थान वाळीने साफ
करतो. पछी पवित्र जळवडे ते शिवनी मूर्तिने पखाळी केसरमिश्रित चंदन विगेरे सु-
गंधी द्रव्योवडे पूजा करतो. पछी पुष्पमाळा चडावी, धूप दीप विगेरे यथाविधि करी,
एक पगे भूमिपर उभो रही ते शिवनी स्तुति ध्यान विगेरे करी, मध्यान्ह समये घेर
जइ भोजन करतो.ए रीते ते प्रतिदिन पूजा करवा आवतो हतो.एकदा ते मुग्ध पूजा
करवा आव्यो, त्यारे पोते गइ काले करेली पूजाने (पूजासामग्रीने) काढी नांखीने
कोइए धतूरा अने कणेर विगेरेनां पुष्पोवडे पूजेली शिवनी मूर्तिने जोइ तेणे विचार
कर्यो के " अहो ! आ अरण्यमां एवो कयो पुरुष छे के जे मारी करेली पूजाने
दूर करीने हंमेशां शिवनी पूजा करे छे ? तो आजे तेने हुं जोउं तो खरो." एम वि-
चारीने ते गुप्त रीते त्यां रह्यो. तेवामां त्रीजा प्रहरे एक भिल्ल त्यां आव्यो. तेना शरीर-
नो वर्ण श्याम हतो, तेणे डावा हाथमां धनुष धारण करेलुं हतुं, जमणा हाथमां आक-
डानां, धतूरानां अने कणेर विगेरेनां पुष्पो विगेरे पूजानी सामग्री धारण करी हती अने
मुखमां जळ भरेलुं हतुं. एवी रीते भयंकर मूर्तिवाळो ते भिल्ल पगमां पहेरेला जोडा
सहित मूर्ति पासे आव्यो. पछी तुरतज तेणे मुखना जळथी ते मूर्तीने एक पगवडे पराणे
आकडानां अने धतूरानां पुष्पो चडाव्यां, अने ते मूर्तिना मुख पासे एक मांसनी पेशी
मूकी. आवा प्रकारनी भक्ति करीने मात्र ' महादेव परमेश्वरने नमस्कार हो ' एटलाज
शब्दो बोली तेणे नमस्कार कर्यो. पछी तरतज ते बहार नीकळ्यो.तेज वखते महादेवे
प्रकट थइने तेने बोलाव्यो अने कह्युं के "हे सेवक ! आजे केम आटलो बधो विलंब थयो?
तने भोजन तो सुखेथी मळे छे के ? अने तुं विघ्नरहित वर्ते छे के ?" आ प्रमाणे सुखशा-
तानां प्रश्न पूर्वक महादेवे तेनी संभाळ लीधी; त्यारे भिल्ल बोल्यो के हे स्वामी ज्यारे
आप मारा पर प्रसन्न छो,त्यारे मारे शी चिंता होय.एम कहीने ते भील्ल चाल्यो गयो.
त्यार पछी गुप्त रहेला पेला मुग्धे प्रगट थइ महादेव पासे आवीने कह्युं के "हे शिव!
... आ भिल्ल सेवक छे तेना पर तुं रोष जणाव छे; केमके हुं
हंमेशां केशरमिश्रित चंदन तथा सुगंधी पुष्पधूपादिकवडे पवित्रताथी तारी पूजा करुं
छुं, तोपण तुं मारापर प्रसन्न थयो नहीं अने मारी साथे कोइ दिवस वातचीत पण
करी नहीं, अने आ अपवित्र तथा आशातना करनार भिल्लनी साथे प्रत्यक्ष वातो करे
छे." ते सांभळीने महादेव बोल्या के "हे वत्स ! ते भिल्लनी अने तारी भक्ति

[illegible] (નિટ)ની કથા.

[illegible] દેખાડીશ." [illegible]

[illegible] (કચ્છલો) [illegible]

[illegible] ! આ શું થયું ? [illegible]

[illegible]

[illegible] આ કથાનું [illegible]

[illegible]

॥ ઇતિ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

चिल्लणा हर्ष पामी. ते वाडी सर्व (छए) ऋतुओनां फळ अने पुष्पो सहित र
ते वाडी फरता राजाना सुभटो तेनी रक्षा करवा माटे रात्रिदिवस रहेता ह
ते वाडीमांथी एक पांदडुं पण लेवा कोइ शक्तिमान थतुं नहोतु.

हवे ते नगरमां कोइ एक विद्यावान चंडाळ रहेतो हतो. तेनी स्त्रीने गर्भना
कार्तिक मासमां आम्रफळनुं भक्षण करवानो दोहद थयो. तेणे ते दोहद
धणीने जणाव्यो. ते सांभळीने चंडाळे विचार्यु के "आज अकाळे आम्रफ
राजाना देवनिर्मित उद्यानमां वर्त्ते छे; बीजे कोइ पण स्थाने वर्तता नथी.
विचारीने रात्रिने वखते ते चंडाळ ते उद्यान तरफ गयो. किल्लानी अंदर चोकी हे
ते किल्लानी बहारज उभो रह्यो. पछी तेणे अवनामिनी विद्याना बळथी आम्र
शाखा नीचे नमावी फळो तोडी लीधां, अने पछी उन्नामिनी विद्यावडे पाछी हत
शा . उं . ा करी दीधी. ए रीते ते फळो लइने तेवडे पोतानी स्त्रीनो दोहद तेणे
कर्यो. प्रातःकाळे आम्रफळ विनानी शाखा तथा तेनी नीचे किल्लानी बहार माण
पगलां जोइने रक्षकोए ते वृत्तांत राजाने निवेदन कर्युं. राजाए सर्वत्र तेनी (चोर
शोध करावी, पण चोर हाथ लाग्यो नहीं; एटले राजाए अभयकुमारने बोलावीने
के "आम्रफळना चोरने पकडी लाव." अभये कह्युं के 'बहु सारुं, लावुं छुं.'
कहीने अभयकुमार चौटामां गयो. त्यां घणा लोको नटनी रमत जोवा माटे एक
थयेला हता. तेमनी पासे जइने अभये कह्युं के "हे लोको! आ नट ज्यां सुधीमां नाट
शरु करे नहीं तेटलामां हुं एक कथा कहुं ते सांभळो." लोको सर्वे सांभळवा लाग्या
एटले अभयकुमारे नीचे प्रमाणे कथा कही.

पुण्यपुर नगरमां गोवर्धन नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने युवावस्थाए पहोंचेली
सुंदरी नामनी कुमारिका पुत्री हती. ते सुंदरी स्वरूप अने युवावस्था थी अत्यंत सुंदर
लागती हती. ते हंमेशां योग्य वरनी प्राप्तिने माटे कोइ एक वाडीमांथी छानी रीते पुष्पो
लइने तेवडे कामदेव नामना यक्षनीपूजा करती हती. एकदा ते वाडीना माळीए तेने
पुष्पो चुंटती जोइ. तेनो हाथ पकडी, तेने माथे चोरीनुं कलंक मूकी माळी बोल्यो
के "हे स्त्री! जो तुं मारुं कहेवुं कबूल करे तो तने मूकी दउं, नहींतो राजा पासे
लइ जइश." त्यारे ते बोली के "हे मित्र! कहे." माळी बोल्यो के "तारे मारी काम-
क्रीडा संबंधी वांछा पूर्ण करवी." कन्या बोली के "सांभळ, हजु सुधी हुं कुमारिका
छुं, आजथी पांचमे दिवसे मारा लग्न थवाना छे, ते दिवसे हुं परण्या पछी तरत प्रथम
तारी पासे आवी पछी मारा स्वामी पासे जइश." माळीए ते वात कबूल करी, एटले ते
सुंदरी प्रतिज्ञा पूर्वक वचन आपीने ...

[illegible]

प्रथम संगम वखतेज परपुरुष पासे मोकली. पछी परस्त्रीलंपट कामी पुरुषो बोल्या के "माळी दुष्कर काम करनार कहेवाय. केमके तेणे रात्रिने वखते निर्जन प्रदेशमां जातेज सामी आवेली सुंदर स्त्रीनो त्याग करी पोताना मनने कबजे राख्युं. माटे धन्य छे ते माळीने!" पछी जेओ मांस खावामां लुब्ध हता तेओए राक्षसनी प्रशंसा करी अने तेने दुष्करकारी कह्यो. छेवट पेलो आम्रफळनो लेनार चोर बोल्यो के "ते त्रणे करतां चोरोज दुष्कर कार्य करनारा कहेवाय. केमके तेओए आभरणोथी भूषित थयेली अने समीपे आवेली ते स्त्रीने मूकी दीधी, अने लुंटी नहीं. तेथी तेओनेज धन्य छे!" ते सांभळीने अभयकुमारे ते चंडाळने पकडी लीधो. पछी तेने एकांतमां लइ जइ अभये कह्युं के "तुंज आम्र फळनो चोर छे, माटे सत्य वात कही दे; नहीं तो तारो निग्रह करीश." त्यारे चंडाळ बोल्यो के "हा, में फळो लीधां छे." अभये पूछ्युं के "शामाटे अने केवी रीते लीधां?" त्यारे तेणे पोतानी स्त्रीना दोहदनुं अने विद्याना सामर्थ्यनुं स्वरूप यथार्थ निवेदन कर्युं. एटले तेने लइने अभयकुमार श्रेणिक राजा पासे आव्यो. राजाए ते चोरने मारवानी आज्ञा करी. त्यारे दयालु अभये कह्युं के "हे स्वामी! एक वार एनी पासेथी विद्या तो ग्रहण करो; पछी जेम करवुं होय तेम करजो." ते सांभळीने राजाए सिंहासन पर बेठाबेठाज हाथ बांधीने आगळ उभा राखेला चोर पासे विद्या शीखवा मांडी ते चंडाळ विद्या शीखववा लाग्यो; पण राजाना मुखे एक अक्षर पण चड्यो नहीं. त्यारे अभयकुमारे कह्युं के "हे राजा! ए प्रमाणे विद्या आवडे नहीं. विनयथी विद्या प्राप्त थाय छे. माटे तेने सिंहासनपर बेसाडो, अने तमे हाथ जोडीने सन्मुख बेसो." ते सांभळीने राजाए तेम कर्युं, एटले तरतज विद्या आवडी. पछी फरीथी राजाए तेनो वध करवानी आज्ञा करी, त्यारे अभयकुमारे कह्युं, के "हे राजा! ए आपनी आज्ञा अयोग्य छे. केमके एक अक्षरनो पण जे आपनार होय तेने जे गुरु तरीके माने नहीं, ते सो वार कुतरानी योनिमां जन्म लइ छेवट चंडाळमां उत्पन्न थाय छे, एम नीतिशास्त्रमां कह्युं छे; तेथी आ चंडाळ आपनो विद्यागुरु थयो छे माटे तेने केम मराय? हवे तो ते आपने पूज्य थयो छे." ते सांभळीने राजाए ते चंडाळनी घणी भक्ति करी, अने धन वस्त्र विगेरे आपवावडे तेनो सत्कार करीने तेने घेर मोकल्यो. तेज प्रमाणे शिष्ये पण विनयपूर्वक गुरु पासे विद्यानो अभ्यास करवो ए आ कथानुं तात्पर्य छे. वळी बीजे प्रकारे विनयनीज प्ररूपणा करे छे:–

॥ इति चंडाळ दृष्टान्तः ॥ ६४.

तिदंडिआए कासिवमंतिआए, दंसमुअंतो सिरिं पंतो ।
गंडिओ मुंमं वयंतो, सुअंनिहाणा इव अपत्थो ॥ २६७ ॥

अर्थ—" [illegible] त्रिदंडी [illegible] तो [illegible] दिव्य [illegible] कारण [illegible] ([illegible]) [illegible] लेनी दिशाथी [illegible] पाम्यो हतो; [illegible] ([illegible]) [illegible] विद्यागुरुनो [illegible] करवाथी [illegible] विद्याथी भ्रष्ट [illegible] [illegible] लागीने श्रुतनिधानरूप [illegible] अर्थात् श्रुतज्ञान [illegible] [illegible] करनार [illegible] " २६८.

त्रिदंडीनी कथा.

[illegible] नगरमां एक चंडिल नामे अति [illegible] रहेतो हतो. ते [illegible] [illegible] आकाशमां [illegible] हतो. [illegible] [illegible] जवाने [illegible] ते विद्याना [illegible] [illegible] प्रभाव [illegible]. तेथी त्रिदंडीए ते [illegible] ([illegible]) [illegible] विद्या ग्रहण करी. पछी ते त्रिदंडी [illegible] नगरमां [illegible] [illegible] ते [illegible] त्यां [illegible] [illegible] [illegible] लोको [illegible] त्रिदंडीने आकाशमां [illegible] [illegible] [illegible] अत्यन्त पूजा (सेवा) करवा लाग्या. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आ त्रिदंडीने आकाशमां [illegible] [illegible] आ विद्यानुं [illegible] [illegible] छे ? त्रिदंडीए [illegible] [illegible] पूछ्युं के " [illegible] [illegible] [illegible] त्रिदंडीए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आराधना करी हती. [illegible] [illegible] विद्या आपी हती. [illegible] [illegible] आकाशमां [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] त्रिदंडी गुरुनो [illegible] करवाथी [illegible]

[illegible] जेवो [illegible]

॥ इति त्रिदंडी [illegible] ॥

[illegible]

सयलंमि वि जियलोए, तेण इहं घोसिओ अमाघाओ ।
इक्कं पि जो दुहत्तं. सत्तं बोहेइ जिणवयणे ॥ २६८ ॥

अर्थ–"जे मनुष्य एक पण दुखार्त (दुःखथी पीडित) सत्व (प्राणी) ने जिन वचनने विषे (जिनवचनोवडे) बोध पमाडे छे, ते पुरुषे अहीं (आ लोकमां) [illegible] सकळ जीवलोकने विषे (चौद राजलोकने विषे) पण अमारी पडह [illegible] एम जाणवुं."

सम्मत्तदायगाणं. दुप्पडियारं भवेसु बहुएसु ।
सव्वगुणमेलियाहि वि, उवयारसहस्सकोडीहिं ॥ २६९ ॥

अर्थ–" [illegible] भवोने विषे पण सर्वगुणमिलित एटले (गुणए करेला [illegible]) [illegible] गणा, चारगणा, एम करतां करतां [illegible] (अनंतगुणा) [illegible] हजारो क्रोडो उपकारोए करीने पण समकित आपनार गुरुनो प्रतिकार (प्रत्युपकार) [illegible] [illegible] जे गुरुए समकित आपीने उपकार कर्यो छे तेनाथी [illegible] [illegible] करीने पण तेनो प्रत्युपकार करी शकातो नथी. ([illegible] [illegible] मोटी भक्ति करवी " २६९.

[illegible]

[illegible] नरगतिरियदाराइं ।
[illegible] ॥ २७० ॥

[illegible]

[illegible] (नाश करनारं) एवं सम्यक्त्व [illegible] [illegible] ([illegible]) अर्थात् सम्यक्त्व न होय, तो ज्ञान न [illegible] [illegible] नहीं. [illegible]

मुंरिच्छियसम्मत्तो, नाणाणोइयत्थसब्भावो ।

निव्वाणमग्गजुत्तो, इच्छियमत्थं पमाएइ ॥ २७२ ॥

अर्थ—[illegible]

[illegible]

जह मूलताणए पंडुरंमि, दुव्वन्नरागवन्नेहिं ।

बीभच्छा पडसोहा, इय सम्मत्तं पमाएहिं ॥ २७३ ॥

[illegible]

नरएसु सुरवरेसु य, जो बंधइ सागरोवमं इक्कं ।

पलिओवमाण बंधइ, कोडिसहस्साणि दिवसेणं ॥ २७४ ॥

[illegible]

[illegible]

करे छे. माटे प्रमादना आचरणनो त्याग करीने निरंतर पुण्य उपार्जन करवा उद्यम करवो, ए आ गाथानुं तात्पर्य छे. " २७४.

पलिओवमसंखिज्जं, भॉग जो बंधंइ सुरगणेसु ।
दिवसे दिवसे बंधंइ, स वासकोडी असंखिज्जा ॥ २७५ ॥

अर्थ–" जे सो वर्षना आयुष्यवाळो नरभवमां रहेलो पुरुष पुण्याचरण देवजातिना समूहमां पल्योपमना संख्यातमा भागने (तेटला अल्प आयुष्यने) ब छे, (ते पुरुषने प्रतिदिन केटला करोड वर्ष आवे ? ते उत्तरार्ध गाथामां कहे छे ते (देवगतिमां पल्योपमना संख्यातमा भागपरिमाण आयुष्यने बांधनार सो वर्ष आयुष्यवाळो) पुरुष दिवसे दिवसे (प्रत्येक दिवसे) असंख्याता करोडो वर्ष (नुं आ ष्य) बांधे छे. एटले के जो पल्योपमना संख्यातमा भागना वर्षोना विभाग करीने वर्षना दरेक दिवसमां वहेंचीए तो ते दरेक दिवसे असंख्याता करोड वर्ष आवे." २७

एस कमो नरएसु वि, बुहेण नाऊण नाम एयं पि ।
धम्मंमि कह पमाओ, निमेसमित्तं पि कायव्वो ॥ २७६ ॥

अर्थ–"आज क्रम नरकने विषे पण छे (जाणवो). एटले के पापकर्म करन सो वर्षना आयुष्यवाळो पुरुष प्रत्येक दिवसे असंख्याता करोड वर्षनुं नरकायु बांधे छे. ते–पूर्वे कहेलुं पुण्यपापने उपार्जन करवानुं स्वरूप (नाम प्रसिद्धार्थक छे जाणीने पंडित पुरुषे क्षांत्यादिक दश प्रकारना धर्मना आराधनमां एक निमेषमात्र प्रमाद (शिथिलता) शामाटे करवो जोइए ? सर्वथा प्रमाद न ज करवो जोइए." २७

दिव्वालंकारविभूसणाइं, रयणुज्जलाणि य घराइं ।
रूवं भोगसमुदओ, सुरलोगसमो कओ इहयं ॥ २७७ ॥

अर्थ–आ (मनुष्य) लोकने विषे सुरलोकनी जेवां दिव्य अलंकारो (सिंह सन, छत्र विगेरे) अने मुकुटादिक आभूषणो, रत्नोए करीने उज्वळ (निर्मळ गृहो, रूप (शरीरनुं सौभाग्य) अने भोगसमुदाय एटले भोगनो संयोग (ए सर्व क्यांथी होय ? " अर्थात् सर्वथा न ज होय. माटे धर्मकार्यने विषे उद्यम करवं जेथी तेवां सुख प्राप्त थाय. ए आ गाथानो उपदेश छे. " २७७.

देवाण देवलोए, जं सुक्खं तं नरो सुभणिओ वि ।
न भणइ वाससएण वि, जस्स वि जीहासयं हुज्जा ॥ २७८ ॥

१ पा०–११ सुरलोगसमो । कओ–कृत ।

अर्थ—"जे (कोइ पण) पुरुषने जो निश्चे [illegible] ([illegible]) [illegible] ने [illegible] करीने (पण) देवलोकमां देवांगनाने जे सुख छे ते [illegible] [illegible] अर्थात् जो निदानवाळो बाचाळ [illegible] सुखी [illegible] [illegible] करे, [illegible] ते सुखना वर्णननो पार आवे नहीं. [illegible] २७८. [illegible] सागरना [illegible] जो ते [illegible] श्रीगौतम [illegible]

नरएसु जाइं अइकक्खडाइं, दुक्खाइं परमतिक्खाइं ।
को वन्नेही ताइं, जीवंतो वासकोडी वि ॥ २७९ ॥

अर्थ—"नरकोने विषे अति कर्कश (दुःसह) अने [illegible] [illegible] [illegible] अति तीक्ष्ण [illegible] [illegible] दुःखो छे, ते दुःखोने [illegible] [illegible] [illegible] मनुष्य वर्णन करवा [illegible] [illegible] [illegible] दुःखो [illegible] [illegible] सुधी [illegible] [illegible] २७९.

कक्खडदाहं सामलि असिवण वेयरणि पहरणसएहिं ।
जा जायणाउ पावंति, नारया तं अहम्मफलं ॥ २८० ॥

अर्थ—"नारकीओ कर्कश दाह ([illegible]), [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], असिवन ([illegible]), वैतरणी (वैतरणी नामनी नदीनां [illegible]) [illegible] [illegible] अने [illegible] यातना ([illegible]) पामे छे. ते [illegible] [illegible] [illegible] फळ जाणवुं." २८०. हवे तिर्यंचगतिनां दुःखोनुं वर्णन करे छे—

तिरिया कसंकुसारानिवायवहबंधमारणसयाइं ।
न वि इहयं पावंता, परत्थ जइ नियमिया हुंता ॥ २८१ ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]

आजीवसंकिलेसो, सुरकं तुच्छं उवद्दवा बहुया ।
नीयजणसिट्ठणा विय, अणिट्ठवासो अ माणुस्से ॥ २८२ ॥

अर्थ–" अपि च (वळी) मनुष्यभवमां जावजीव (जीवन पर्यंत) संक्लेश (मननी चिंता), तुच्छ–असार–अल्प काळ रहेनारुं एवुं विषयादिकनुं सुख, अग्नि चोर विगेरेथी उत्पन्न थता घणा उपद्रवो, नीच (अधम) लोकोना आक्रोशादिक दुर्वचनो सहन करवांअने अनिष्ट स्थाने परतंत्रताथी रहेवुं. ए सर्वे दुःखना हेतुओ छे."

चारगनिरोहवहबंधरोगधणहरणमरणवसणाइं ।
मणसंतावो अजसो, विग्गोवणया य माणुस्से ॥ २८३ ॥

अर्थ–"वळी मनुष्यभवमां कोइ पण अपराधने लीधे कारागृहमां रुंधन, दंडादिकना मार, रज्जु शृंखला विगेरेथी बंधन, वात पित्त अने कफथी उत्पन्न थता रोगो, धनहरण, मरण अने व्यसन (कष्ट), तथा मननो संताप (चित्तनो उद्वेग), अपयश (अपकीर्ति), अने बीजां पण घणा प्रकारनां विगोपनो (वगोणां) ए सर्वे ज्यां (मनुष्यभवमां)दुःखनां कारणो छे; त्यां (ते मनुष्यभवमां) शुं सुख छे? कांइज नथी." २८३

चिंतासंतावेहिय, दारिद्दरुआहिं दुप्पउत्ताहिं ।
लध्धूण वि माणुस्सं, मरंति केवि सुनिव्विण्णा ॥ २८४ ॥

अर्थ–"मनुष्यभव पामीने पण केटलाएक प्राणीओ कुटुंबना भरणपोषणादिकनी चिंताए करीने अने चौरादिकथी उत्पन्न थता संतापे करीने तथा पूर्वभवे करेलां दुष्कर्मोए प्रेरेलां एवां दारिद्र्य (निर्धनपणुं) अने क्षयादिक रोगोये करीने सुनिर्विण्ण एटले अत्यंत निर्वेद–खेद पाम्या सता (खेद पामीने) मरण पामे छे. माटे ए रीते चिंतादिके करीने मनुष्यभव निष्फल जवा देवो योग्य नथी; किंतु अमूल्य मनुष्य जन्म पामीने धर्म कार्यने विषे उद्यम करवो योग्य छे ए तात्पर्यार्थ छे." २८४

हवे देवताओने पण सुख नथी. ते वात कहे छे—

देवा वि देवलोए, दिव्वाभरणाणुरंजियसरीरा ।
जं परिवडंति तत्तो, तं दुरकं दारुणं तेसिं ॥ २८५ ॥

अर्थ–"देवलोकने विषे दिव्य अलंकारोथी अनुरंजित (अलंकृत–शोभायमान) छे शरीर जेमनां एवा देवो पण जे ते (देवलोक)थी पाछा पडे छे–चवे छे, ए

गाथा २८२–बहुया । नीचजनाक्रोशनम् ।
गाथा २८३–चारगनिरोह । चारके कारागृहे रोधः निरोधः । अयसो ।

[illegible] चवीने मनुष्यिणी भरेळा एवा गर्भावासमां आवे छे. ते [illegible] तेनां [illegible] नहि [illegible] ते देवलोकमां पण सुख नथी." २८५.

[illegible] सुख छे; तेथी देवलोकमां पण सुख नथी. २८५.

जं सुरविमाणविभवं, चिंतिय चवणं च देवलोगाओ।
अइबलियं चियं जं न वि, फुट्टइ सयसक्करं हिययं॥ २८६॥

अर्थ—"जे (प्रसिद्ध एवा अर्थात् मोटुं) देवलोकना विमाननुं [illegible] अने देवलोकथी चववानुं मनमां विचारीने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ते [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एवो विचार करीने [illegible] पण [illegible] नथी; अर्थात् हृदय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे." २८६.

[illegible] देवगतिना सुखनुं [illegible] कहे छे—

ईसाविसायमयकोहमाणमायालोभेहिं एवमाईहिं।
देवा वि समभिभूया, तेसिं कत्तो सुहं नाम॥ २८७॥

अर्थ—"देवो पण ईर्षा [illegible] तो तेओने पण सुख क्यांथी होय? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होय." २८७.

धम्मं पि नाम नाऊण, कीस पुरिसा सहंति पुरिसाणं।
सामित्ते साहीणे, को नाम करिज्ज दासत्तं॥ २८८॥

अर्थ—[illegible]

[illegible]

[illegible]

सर्वे समान अवयवोने धारण करनारा छे. (आज्ञा करनारमां ने आज्ञा उठावनारमां अ-
यवनो कांइ फेरफार नथी). स्वामीपणुं पोताने स्वाधीन छतां कयो माणस दासपणुं (अं-
गीकार) करे ? कोइ न करे. एटले बीजानी आज्ञा उठाववानी जेम जो श्रीजिनेश्वरनी
आज्ञा उठावे, तो तेओ सर्वनुं स्वामीपणुं पामे तेम छे, माटे जिनप्ररूपित धर्मनी आज्ञा
मानवी जोइए " २८८.

संसारचारए चारए व्व, आवीलियस्स बंधेहिं ।
उव्विग्गो जस्स मणो, सो किर आसन्नसिद्धिपहो ॥२८९॥

अर्थ-" कारागृहनी जेवा आ चार गतिवाळा संसारना भ्रमणमां कर्मरूप बं-
धोए करीने पीडा पामेला (बंधायला) एवा जे पुरुषनुं मन उद्वेग पामेलुं होय, ते
रुप निश्चे आसन्नसिद्धिपथ (जेने सिद्धिमार्ग नजीकमां रहेलो छे तेवो) जाणवो.
परिमित संसारीनुं (जेना संसारनुं प्रमाण थयुं छे तेनुं) लक्षण छे. " २८९.

आसन्नकालभवसिद्धियस्स, जीवस्स लक्खणं इणमो ।
विसयसुहेसु न रज्जइ, सव्वत्थामेसु उज्जमइ ॥ २९० ॥

अर्थ-" जेनी अल्पकाळमांज भवथकी-संसारथकी सिद्धि (मुक्ति) थवानी
एवा जीवनुं ए लक्षण छे के-तेवो जीव पांच इंद्रियोना शब्दादिक विषयोमां रंजित-
सक्त थतो नथी, अने सव्व के० सर्वत्र (तप संयमादिकना अनुष्ठानमां) पोतानी
शक्तिवडे उद्यम करे छे. " २९०. अहीं गाथामां प्राकृत भाषा होवाथी तृतीयना
र्थमां सप्तमी विभक्ति छे.

हुज्ज व न व देहबलं, धिइमइसत्तेण जइ न उज्जमसि ।
अत्थिहिसि चिरं कालं, बलं च कालं च सोअंतो ॥२९१॥

अर्थ-" हे शिष्य ! देहनुं बळ-शरीरनुं सामर्थ्य होय के न होय, तोपण जो
धृति (मननी धीरज), मति (पोतानी बुद्धि) अने सत्त्व-साहसवडे करीने (धर्ममां) उ-
द्यम नहीं, तो पाछळथी बळने (एटले शरीनुं सामर्थ्य हाल नथी एम) तथा का-
(एटले आज धर्म करवानो काळ नथी एम) शोच करतो (विचार करतो चिरकाळ
संसारमां रहीश-भ्रमण करीश-तारे भ्रमण करवुं पडशे; अर्थात् धर्म नहीं करनार

[illegible]

[illegible] आत्मानां वचन [illegible] २२२.

[illegible] च [illegible], अंकम्मि [illegible] नामयं च [illegible] ।
[illegible] [illegible], [illegible] कंचणं मुल्लं ॥ २२२ ॥

[illegible] हे मुनि ! आ [illegible]

[illegible] २२३.

[illegible] उपसर्गथी [illegible] —

[illegible] ।
[illegible] निगमसुर. [illegible] ॥ २२३ ॥

[illegible]

[illegible] २२३.

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

समिईकसायगारवइंदियमयबंभचेरगुत्तीसु ।
सज्झायविणयतवसत्तिओ अ. जयणा सुविहियाणं ॥२९५॥

अर्थ–"सारुं (शोभन) छे विहित (आचरण) जेमनुं एवा सुविहित साधुओने(साधुओए) इर्यादिक पांच समितिनुं पाळन करवुं, क्रोधादिक कषायनो निग्रह करवो, ऋद्धि रस अने साता ए त्रण गारवनुं निवारण करवुं, इन्द्रियोने वश करवी, जाति विगेरे आठ प्रकारना मदनो त्याग करवो, नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यगुप्तिनुं पालन करवुं तथा वाचनादिक पांच प्रकारनो स्वाध्याय करवो, दश प्रकारनो विनय करवो, बाह्य अने अभ्यंतर भेदे करीने बार प्रकारनुं तप करवुं, तथा पोतानी शक्तिनुं गोपन करवुं नहीं. इत्यादिक यतना करवी जोइए." २९५.

हवे यतनानुंज निरूपण करे छे.

जुगमित्तंतरदिट्ठी, पयं पयं चक्खुणा विसोहिंतो ।
अव्वक्खित्ताउत्तो, इरियासमिओ मुणी होइ ॥ २९६ ॥

अर्थ–"युगमात्र (चार हाथ प्रमाण) क्षेत्रनी अंदर दृष्टि राखनार, पगले पगले चक्षुवडे पृथ्वीनुं विशोधन करतो एटले सारी रीते अवलोकन करतो, तथा शब्दादिक विषयोमां व्याक्षेपरहित (स्थिर-मनवाळो) होवाथी धर्मध्यानमांज रहेलो एवो मुनि (त्रिकाळने जाणनार) ईर्या (गमन) ने विषे समित एटले सारी रीते उपयोगवाळो (ईर्यासमितिनुं पालन करनार) कहेवाय छे." २९६.

कज्जे भासइ भासं, अणवज्जमकारणे न भासइ य ।
विगहविसुत्तियपरिवज्जिओ अ जइ भासणासमिओ ॥ २९७ ॥

अर्थ–" ज्ञानादिक कार्य सते (उपदेशादि–पठनपाठनादि निमित्ते) अनवद्य (निर्दोष) भाषा (वचन) बोले, अने कारण विना बोलेज नहीं, तथा चार विकथा अने विरुद्ध वचन बोलवा (चिंतववा) ए करीने वर्जित (रहीत) एवो यति भाषासमित एटले बोलवामां सावधान कहेवाय छे." २९७.

बायालमेसणाओ, भोयणदोसे य पंच सोहेइ ।
सो एसणाइ समिओ, आजीवी अन्नहा होइ ॥ २९८ ॥

गाथा २९५–इदिअ । गाथा २९६–विसोहंतो ।

[illegible] बेंतालीश प्रकारनी एषणा (आहारना दोष) ने [illegible] आहार [illegible] दोषोने शुद्ध [illegible] [illegible] माधु) एषणा (आहार) ने विषे [illegible] (उपयोगवान) [illegible] [illegible] कहेवाय छे). अन्यथा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आजीवी-आजीविकाकारी कहेवाय छे. [illegible]

[illegible] आ नीचेका ([illegible]) [illegible] कहेवाय [illegible]

पुव्विं चक्खू परिक्खिय, पमज्जिउं जो ठवेइ गिण्हइ वा ।

आयाणभंडनिक्खेवणाइ, समिओ मुणी होइ ॥ २९९ ॥

अर्थ—जे (मुनि) प्रथम चक्षु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पछी रजोहरणादिकवडे [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] (मूके) छे, अथवा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]) अने [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) होय छे. अर्थात् [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अथवा मूकतो साधु आदान [illegible] कहेवाय छे. [illegible]

उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणए [illegible] पाणविही ।

सुविवेइए पएसे, निसिरंतो होइ तस्समिओ ॥ ३०० ॥

अर्थ—उच्चार (वडीनीत), [illegible] ([illegible]), [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]); अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मुनि ते [illegible] [illegible]

[illegible] छे. ३००.

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३०१ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

...ए सर्वे साक्षात कलि-क्लेशरूप छे. ए ढंगेने-क्लेशरूप जाणवा." ३०१.

...कोना भेद (पर्यायो) कहे छे.

कोहो कलहो खारो, अवरुप्परमच्छरो अणुसओ अ।
चंडत्तणमणुवसमो, तामसभावो अ संतावो ॥ ३०२ ॥
निच्छोडण निब्भंछण, निराणुवत्तित्तणं असंवासो।
कयनासो अ असम्मं, बंधइ घणचिक्कणं कम्मं ॥ ३०३ ॥ युग्मम् ॥

अर्थ-" क्रोध (अप्रीति मात्र), कलह (वचननी मारामारी) ... (मांहोमांहे मत्सर-अहंकार ...), ... कोप करवाथी पाछळथी पश्चात्ताप थाय छे ... चंडत्व (भ्रकुटि चडावी-रोष करवो), ... तामस भाव (...) ... ३०२. ...(कोइने तिरस्कार ...), ...

[illegible]

[illegible] (राजानी निंदा करनी) अमुया (पोताना गुणोने लिधे बीजा [illegible]) [illegible] करवो) ३०५. हीला ([illegible]) [illegible] निग्गहियत्त ([illegible]) अविनय ([illegible]) [illegible]

[illegible] पगुनवत्ताहना ([illegible]) [illegible]

[illegible]

[illegible] काम करनार होवाथी ([illegible]) [illegible]

[illegible] माणाना पर्यायो कहे छे—

[illegible] फुरंति पच्छन्नपावया, [illegible] ।

[illegible] ॥ ३०८ ॥

[illegible] संवद्धयरो, [illegible] ।

[illegible] ॥ ३०९ ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] कहे छे—

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible]

अर्थ–" लोभ–सामान्य लोभ, अतिसंचयशीलता (लोभवडे एक जातनी अथवा घणी जातनी वस्तुओनो अति संचय करवाना स्वभावपणुं), क्लिष्टत्व (लोभवडे मननी क्लिष्टता–कलुषता), अति ममत्व (वस्तुपर अत्यंत ममता–मारापणुं), कल्प्यान्ननो अपरिभोग (भोगववा योग्य अन्नादिक वस्तुनो अपरिभोग एटले ते न भोगववुं अने कृपणताने लीधे खराब अन्नने पण नांखी न देतां खावुं ते), अश्वादिक वस्तुओ नाश पामे छते अने धान्यादिक वस्तुओनो विनाश थये छते आगळ्छ एटले रोगादिक उत्पन्न थवा, ते नष्ट विनष्टाकल्प्य नामनो लोभप्रकार कहेवाय छे. ३०८. तथा मूर्च्छा (मूढता–धन उपर तीव्रराग), अतिवह्धनलोभता (घणा धन उपर अत्यंत लोभपणुं) तथा सदा–सर्वदा तद्भावभावना (लोभपणाए करीने मनमां तेज भाववुं वारंवार चिंतवन–करवुं)–ए सर्व लोभना सामान्य अने विशेष भेदो छे. तेओ संसारी (प्राणी)ने महा घोर (अति भयंकर) जरामरणना प्रवाहरूप महासमुद्रमां बोळे छे–डुबाडे छे–माटे तेवा दारुण लोभनो त्याग करवा योग्य छे. " ३०९.

एएसु जो न वट्टिज्जा, तेणं अप्पा जहट्ठिओ नाओ।
मणुआण माणणिज्जो, देवाण वि देवयं हुज्जा ॥ ३१० ॥

अर्थ–" ए क्रोधादिक कषायोने विषे जे (तत्त्वज्ञ) पुरुष नथी वर्ततो–कषायोने नथी करतो, ते पुरुषे पोताना आत्माने यथास्थित (सत्य–कर्मथी भिन्न–शुद्ध स्वरूपवाळो) जाणेलो छे एम समजवुं, अने ते पुरुष मनुष्योने माननीय तथा इंद्रादिक देवोना पण देवत रूप (इंद्रोने पण पूज्य) थाय छे. " ३१०

हवे ते कषायोने सर्पादिकनी उपमा आपे छे—

जो भासुरं भुअंगं, पयंडदाढाविसं विघट्टेइ।
तत्तो चिय तस्संतो, रोसभुअंगोवमाणमिणं ॥ ३११ ॥

अर्थ–" जे पुरुष भासुर (रौद्र–भयंकर) अने जेनी दाढमां प्रचंड विष रहे छे एवा भुजंग (सर्प)नो (लाकडी विगेरेथी) स्पर्श करेछे, तो निश्चे ते सर्पथकीज (पुरुष)नो अंत (मरण) थाय छे. आ रौद्र रोष (क्रोध) रूपी भुजंगनु अहीं उपमान [illegible] एटले के रोष भुजंगनो पण स्पर्श कर्यो होय तो ते संयम (चारित्र)रूपी जीवितनो नाश करे छे माटे रौद्र सर्पनी जेम तेनो त्याग करवो. " ३११.

जो आगलेइ मत्तं, कयंतकालोवमं वणगइंदं।
सो तेणं चिय चुज्जइ, माणगइंदेण इत्थुवमा ॥ ३१२ ॥

[illegible]
[illegible]

अर्थ— [illegible]

[illegible]

[illegible] गाथा [illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

अर्थ— [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

अर्थ— [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

अर्थ— [illegible]

[illegible]

अट्टट्टहास केलीकिलत्तणं हासखिड्डुं जंमगरुई ।
कंदप्पं उवहसणं, परस्स न करेंति अणगारा ॥ ३१६ ॥

अर्थ-" अनगार (घर विनाना-गृहस्थाश्रमरहित-साधुओ) बीजा साथ (बीजा साथे) अट्टहास्य (खडखड हसवु), बीजानी क्रीडामां असबद्ध वचननुं भाषण (बोलवुं), हास्यवडे बीजाना अंगनो वारंवार स्पर्श करवो (सलकोलीयां-गदगदी करवां), एक बीजा साथे सफकाळे हाथताळीओ देवी, कौतुक करवुं अने उपहास मानान्य हास्य करवुं एटलां वानां करता नथी." ३१६. इति हास्यद्वारं.

हवे रतिद्वार कहे छे-

साहूणं अप्परई, ससरीरपलोअणा तवे अरई ।
सुत्थिअवन्नो अइपहरिसो य नत्थि सुसाहूणं ॥ ३१७ ॥

अर्थ-" [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३१८ ॥

[illegible]

मोगं मनोनं [illegible] मन्नुं न [illegible] ।

[illegible] न [illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ—" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] नहीं—[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

अर्थ—" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

एयंपि नाम नाऊण, मुज्झियव्वंति नूणं जीवस्स।
फेडेऊण न तीरइ, अइबलिओ कम्मसंघाओ॥ ३२२॥

अर्थ—“ नाम (मित्र) एटले जिनभाषित पद । ते पूर्वे कहेला कषायादिकने जाणीने पण निश्चे शुं जीवने मूढ थवुं योग्य छे? अर्थात् योग्य नथी (त्यारे आपणे जीव मूढ थतो हशे? तेनो जवाब आपे छे के—) तोपण जीव ते कषायने दूर करवा शक्तिमान थतो नथी. केमके कर्मसंघात—आठ कर्मनो समुदाय अतिबळवान छे; जेथी ते कर्मने पराधीन थयेलो आ जीव अकार्यनी सन्मुख थाय छे, अकार्य करवा तत्पर थाय छे.” ३२२.

जह जह बहुस्सुओ सम्मओ अ, सीसगणसंपरिवुडो अ।
अविणिच्छिओ अ समए, तह तह सिद्धंतपडिणीओ॥३२३॥

अर्थ—“ जेम जेम बहुश्रुत (घणुं श्रुत जेणे सांभळ्युं छे एवो अथवा जेणे घणा श्रुतनो अभ्यास कर्यो छे एवो) थयो, तथा घणा (अज्ञ नो) लोकोने संमत (इष्ट) थयो, वळी शिष्यना समूहवडे (घणा परिवारवडे) परिवृत थयो, तोपण जो ते समय (सिद्धान्त)मां अनिश्चित (रहस्यना ज्ञानरहित) एटले अनुभवरहित होय, तो तेम तेम तेने सिद्धान्तनो प्रत्यनीक (शत्रु) जाणवो; अर्थात् तत्त्वने जाणनार थोडा श्रुतवाळो होय तोपण ते मोक्षमार्गनो आराधक छे; पण बहुश्रुत छतां तत्त्वजाण न होय तो ते मोक्षमार्गनो आराधक नथी पण विराधक छे, एम जाणवुं.” ३२३.

हवे ऋद्धिगारव विषे कहे छे—

पवराइं वत्थपायासणोवगरणाइं एस विभवो मे।
अविय महाजणनेया, अहं ति अह इड्ढिगारविओ॥ ३२४॥

अर्थ—“ आ प्रवर (प्रधान) एवां वस्त्रो, पात्रो, आसनो अने उपकरणो मारो विभव (वैभव) छे. (अपिच—फरीना अथवा समुच्चयना अर्थमां छे) महाजन एटले प्रधानजनोने विषे नेता (नायक) छुं. महाजननो आगेवान विचारनार ऋद्धिगारववाळो कहेवाय छे, अथवा अप्राप्त (नहीं प्राप्त थयेली) ऋद्धिनी वांछा करनार पण ऋद्धिगारववाळो कहेवाय छे” ३२४.

हवे रसगारव कहे छे—

गाथा ३२२-मुज्झियव्वंपि। गाथा ३२४-विहवो। अविअ-अपिच। इढ्ढ। इड्ढगाराव:

[illegible]

अंसं सिरं [illegible] च निन्निए [illegible] ।

[illegible] ॥

निढ्ढाणि [illegible]

[illegible]

[illegible]

मुच्छुसइ [illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible]

अर्थ—" गंधने विषे (कर्पूरादिक सुगंधी द्रव्यने विषे), रसने विषे (श[illegible] विगेरे मिष्ट पदार्थोना आस्वादने विषे) अने सुकोमळ शय्यादिकना स्पर्शने विषे [illegible] नहीं पामेला मुनीए वीणाना तथा स्त्रीना संगीतना शब्दोमां रंजित (रक्त) थवुं न[illegible] तथा रूप एटले स्त्री विगेरेना अवयवनी सुंदरता जोइने रागबुद्धिथी वारंवार [illegible] सन्मुख जोवुं नहीं, परंतु (धर्मने विषे) उद्यम करवो." ३२८.

निहयाणि हयाणि य, इंदिआणि घाएह णं पयत्तेणं ।
अहियत्थे निहयाइं, हियकज्जे पूयणिज्जाइं ॥ ३२९ ॥

अर्थ—" साधुओने इंद्रियोना विषयभूत पदार्थोमां रागद्वेष करवानो अभाव होव[illegible] तेमनां इंद्रियो निहत (हणायेलां) छे, अने ते इंद्रियोना आकार कायम होवाथी पोतपोताना विषयोने ग्रहण करती होवाथी अहत के० नहीं हणायेलां छे. एटले क[illegible] हणायेलां अने कांइक नहीं हणायेलां होय छे. एनां इंद्रियोनो (णं—वाक्यनी श[illegible] माटे छे) हे साधुओ ! तमे घात करो एटले प्रयत्नवडे वश करो. ते इंद्रियो पोतपोत[illegible] विषयमां रागद्वेष करवा रूप अहित अर्थमां हणवा योग्य छे, अने सिद्धांतादिक [illegible] कार्यमां पूजवा योग्य एटले रक्षण करवा योग्य छे." ३२९.

हवे मदद्वार कहे छे.—

जाइकुलरूवबलसुअतवलाभसरिय अट्ठमयमत्तो ।
एयाइं चिय बंधइ, असुहाइं बहुं च संसारे ॥ ३३० ॥

[illegible] " जे (मनुष्य) जाति ते मातापक्ष[illegible], कुळ ते पोतानो वंश, रूप ते श[illegible] [illegible], [illegible] शरीरनुं सामर्थ्य, श्रुत ते शास्त्रनुं ज्ञान, तप ते छट्ठ अट्ठमादि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] ॥ ३३१ ॥

[illegible]

संसारमणवयरं. नीयट्ठाणाइं पावेमाणो य ।
भमइ अणंतं कालं, [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] जइ [illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अने कायाना योगनो निरोध करनार, स्थिर:(शांतताथी व्यापाररहित), दांत (इंद्रियोनुं दमन करवामां तत्पर) तथा प्रशांत (कषायना बळने जीतनार) एवा साधुए स्त्री (मानुषी अथवा देवी) अने पशु (तिर्यंचो)ए करीने सहित एवी वसति (उपाश्रय)ने वर्जवी (१), स्त्रीओनां नेत्र अने रूप विगेरेनी कथा वर्जवी (२), स्त्रीजननुं आसन (जे स्थाने ते बेठी होय ते स्थान) वर्जवुं (स्त्रीना उठया पछी पण अमुक वखत ते स्थाने बेसवुं नहीं) (३), स्त्रीओना अंगनुं निरूपण ते निरिक्षण न करवुं (स्त्रीओनां चक्षु, मुख, हृदयादिक अंगोपांगने रागबुद्धिथी जोवां नहीं) (४), ३३४. पर्वगत स्मरण छे० चारित्र ग्रहण कर्या पहेलां गृहस्थाश्रममां करेली कामक्रीडानुं स्मरण करवुं (५), स्त्रीजनना विरहरूप विलापना वचननुं श्रवण रागनो हेतु होवाथी वर्जवुं (६), अति बहु (कंठ सुधी भरीने) आहार वर्जवो (७), अतिबहु प्रकारनो (स्निग्ध, मधुर विगेरे) आहार वर्जवो (८), ३३५. तथा विभूषा (अंगना शोभा)ने वर्जवी (९). आ नव ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने विषे ब्रह्मचर्यना रक्षण माटे यत्न करवो." ३३६.

गुज्झोरुवयणकक्खोरुअंतरे तह थणंतर दट्ठुं ।
साहरइ तओ दिट्ठिं, न बंधई दिट्ठिए दिट्ठिं ॥ ३३७ ॥

अर्थ–"साधु पुरुष स्त्रीनुं गुह्यस्थान (स्त्रीचिन्ह), उरु (बे जंघा), वदन (मुख), कक्षा (काख) तथा उरस (हृदय)ना अंतर (मध्यभाग)ने तथा स्तनना अंतरने जोइने ते स्थानोथकी दृष्टिने संहरे छे–दृष्टिने खेंची लेछे, तेमज स्त्रीनी दृष्टि साथे पोतानी दृष्टिने बांधता नथी–मेळवता नथी. अर्थात् कार्यप्रसंगे पण नीचुं मुख राखीने स्त्रीनी साथे वात करे छे." ३३७.

हवे सातमुं स्वाध्याय द्वार कहे छे–

सज्झाएण पसत्थं झाणं जाणइ य सव्वपरमत्थं ।
सज्झाए वट्टंतो, खणे खणे जाइ वेरग्गं ॥ ३३८ ॥

अर्थ–"वाचनादिक पांच प्रकारना स्वाध्याये करीने प्रशस्त (भव्य) (धर्मध्यानादिक) ध्यान छे, अने सर्व परमार्थ (वस्तुतत्त्व)ने जाणेछे. स्वाध्यायमां वर्तता मुनिने क्षणे क्षणे वैराग्य प्राप्त थाय छे; अर्थात् रागद्वेष रूप दूर थवाथी निर्विण थाय छे." ३३८.

गाथा ३३७–विशुद्ध । गाथा ३३८–मालेइ ।

...महतिरियलोए, जोइसवेमाणिया य सिद्धी य ।
...ओ लोगालोगो, संज्झायविउस्स पच्चक्खो ॥ ३३९ ॥

...— स्वाध्याय (सिद्धान्त)ने जाणनार पुरुष मुनिने [illegible] ... वैमानिकना विमान अने ... अने लोकनुं स्वरूप, ... सर्व लोकालोकनुं स्वरूप प्रत्यक्ष छे. ... [illegible] ... अपरिमित अलोक. तेनुं ... [illegible]

निच्चकालं तवसंजमुज्जओ, न वि करेइ सज्झायं ।
...लसं सुहसीलजणं, न वि तं ठावेइ साहुपए ॥ ३४० ॥

...— जे साधु निरंतर तप तथा पांच आश्रवना निरोध ... [illegible] ... अध्ययन अध्यापन ... स्वाध्याय न करे— ... [illegible] ... आळसु अने सुखशील (सुखनो ...) मुनिने ... [illegible] ... नथी— साधु ... नथी. ... ३४० ... [illegible] ... तेनुं आराधन करतुं जोइए. ... [illegible]

... आलसु शिष्यद्वार कहे छे—

...ओ सासणे मुक्के, विणीओ संजओ भवे ।
विणयाओ विप्पमुक्कस्स, कओ धम्मो कओ तवो ॥ ३४१ ॥

...— [illegible] ... शासनमां ... विनयवान ... [illegible] ... विनयथी ... साधु ... [illegible] ... अने ... [illegible] ... होता नथी. " ३४१.

...ओ आवहइ सिरिं, लहइ विणीओ जसं च कित्तिं च ।
न कयाइ दुव्विणीओ, सकज्जसिद्धिं समाणेइ ॥ ३४२ ॥

...— [illegible] ... अने ... [illegible]

[illegible]

दुर्विनीत (विनय रहित) पुरुष पोताना कार्यनी सिद्धिने कदापि पामतो नथी. अवि[illegible]
नीतनी कार्यसिद्धि थती नथी. " ३४२.

विनयद्वार कह्युं. हवे तपनुं द्वार कहे छे—

जह जह खमइ सरीरं, धुवजोगा जह जहा न हायंति ।
कम्मक्खओ अ विउलो, विवित्तया इंदियदमो अ ॥ ३[illegible]

अर्थ–" जेम जेम (जेवी रीते) शरीर सहन करे (बळहीन न था[illegible]
जेम जेम ध्रुवयोग एटले पतिलेखना (पडिलेहणा) प्रतिक्रमण विगेरे नि[illegible]
(क्रियाओ) हीन न थाय (करी शकाय), ए प्रमाणे तप करवो तेवी रीते [illegible]
थायो विपुल (विस्तारवाळो) कर्मनो क्षय थाय छे, तथा विविक्तताए करीने
'आ जीव देहथी भिन्न छे अने आ देह जीवथी भिन्न छे' एवी भावनाए [illegible]
इन्द्रियोनुं दमन पण थाय छे " ३४[illegible]

जइ ता असक्कणिज्जं, न तरसि काऊण तो इमं कीस ।
अप्पायत्तं न कुणसि, संजमजयणं जईजोगं ॥ ३४४ ॥

अर्थ–" जो कदाच हे शिष्य ! अशक्य एवी साधुप्रतिमा तपस्यादिक क्रिया[illegible]
करवाने तुं शक्तिवान न होय, तो हे जीव ! आ आत्माने स्वाधीन अने [illegible]
[illegible] एवो संयम पाळवाने (पूर्वे कहेला कोशादिकना जयने) केम करतो नथी ? [illegible]
[illegible] करवानी शक्ति न होय तो का[illegible]दिकनो जय करवानो यत्न कर. " ३[illegible]

॥ इति तपोद्वारम् ॥

[illegible] [illegible]गाणि, जंपणाए किंचि सेविज्जा ।
[illegible] पुण [illegible] अ निकिज्जमो अ, तो संजमो कीतो ॥ ३४५ ॥

[illegible]

[illegible] कुणइ जइ तिगिच्छं, अहियासेइ जइ तहं सम्मं ।
अहियासिंतस्स पुणो, जइ से जोगा न हायंति ॥ [illegible] ॥

अर्थ— [illegible] (साधु) ते रोगोने सारो रीते सहन करवाने समर्थ होय, [illegible] पण [illegible] ते साधुना जोगो (प्रतिक्रमणादिक क्रियाओ) होय [illegible] (रोगनी प्रतिक्रिया-औषध) न करवी; अर्थात् [illegible] चिकित्सा करवी. [illegible] [illegible] जोवे सीदाती होय—शिथिल थती होय तो चिकित्सा [illegible]

निच्चं पवयणसोहाकराण, चरणुज्जुयाण साहूणं ।
संविग्गविहारीणं, सव्वपयत्तेण कायव्वं ॥ [illegible] ॥

अर्थ— जिन प्रवचननी (जिनशासननी) शोभा (प्रभावना) करनारा, [illegible] उद्यत करनारा अने संविग्न एटले मोक्षनी अभिलाषा [illegible] [illegible] साधु [illegible] (भक्ति) [illegible] [illegible]

हीणस्स विसुद्धपरूवगस्स, नाणाहियस्स कायव्वं ।
जणचित्तग्गहणत्थं, करिंति लिंगावसेसे वि ॥ [illegible] ॥

अर्थ— विशुद्ध [illegible] अने ज्ञान ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

करणानं पुण[illegible], [illegible] ।
[illegible] जइ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

अर्थ–" असंयमीओ (शिथिलाचारीओ) सचित्त जळनुं पान, जात्यादि पुष्पो, आम्रादिकनां फळो, अणेसणीय (आधाकर्मादि दोषवाळो) आहारादिक, तथा व्यापारादिक श्रावकनां कार्योने करे छे, संयमने प्रतिकूळ आचरण आचरे छे, तेओ केवळ यतिवेषनी विडंबना करनाराज छे, परंतु अल्प पण परमार्थना साधक नथी." ३४९

ओसन्नया अबोही, पवयणउब्भावणा य बोहिफलं ।
ओसन्नो वि वरं पिहु–पवयणउब्भावणापरमो ॥ ३५० ॥

अर्थ–" तेवा उपर कहेला भ्रष्ट चारित्रवाळानी अवसन्नता के० पराभव छे, तथा तेमने अबोधि एटले धर्मनी प्राप्तिनो अभाव थाय छे. केमके प्रवचन (शासन)नी उद्भावना–प्रभावनानी वृद्धि करवाथीज बोधिरूप फळनी प्राप्ति थाय छे; प्रवचननी हीलना करवाथी बोधिलाभ थतो नथी. परंतु पृथु (विस्तारवाळी) प्रवचननी उद्भावना (शोभा)ने विषे तत्पर रहेतो एवो अवसन्नो एटले शिथिलाचारी पण श्रेष्ठ जाणवो. अर्थात् व्याख्यान विगेरेथी शासननी प्रभावना करनार शिथिलाचारी पण श्रेष्ठ जाणवो." ३५०.

गुणहीणो गुणरयणायरेसु, जो कुणइ तुल्लमप्पाणं ।
सुतवस्सिणो अ हीलइ, सम्मत्तं कोमलं तस्स ॥ ३५१ ॥

अर्थ–" जे चारित्रादिक गुणे करीने हीन एवा साधु गुणना समुद्र रूप साधुओनी साथे पोताना आत्माने तुल्य करे छे एटले 'अमे पण साधु छीए' एम माने छे तथा जे सारा तपस्वीओनी हीलना करे छे ते पुरुषनुं (भ्रष्टाचारी साधुनुं) समकित कोमल–असार छे. अर्थात् तेने मिथ्यादृष्टि जाणवो." ३५१.

ओसन्नस्स गिहिस्स व, जिणपवयणतिव्वभावियमइस्स ।
कीरइ जं अणवज्जं, दढसम्मत्तस्स वत्थासु ॥ ३५२ ॥

अर्थ–" जिनेश्वरना प्रवचन (सिद्धान्त धर्म) वडे जेनी मति भावित (रक्त) थयेली छे; अर्थात् जे जिनधर्मना रागमां रक्त थयेला छे, तथा जे दृढ समकित दर्शनमां निश्चळ छे, एवा अवसन्न (पासत्थादिक) नुं अथवा गृहस्थीनुं क्षेत्र अवस्थाने विषे (क्षेत्र काळादिक जोइने) जे वैयावृत्त्यादिक करवामां आवे ते निष्पाप एटले दूषणरहित छे." ३५२.

गाथा ३५०–अवसन्नता=पराभवः ।
गाथा ३५१–कोमलं=असारं ।
गाथा ३५२–गिहत्थ। भावियमयस्स ।

पासत्थोसन्नकुसील-नीयसंसत्तजणमहाछंदं ।
नाऊण तं सुविहिया, सव्वपयत्तेण वज्जंति ॥ ३५२ ॥

अर्थ—" पासत्थ (ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी पासे रहेनार—तेने अंगीकार नहीं करनार), ओसन्न (चारित्रने विषे शिथिलाचारी), कुशील ([illegible]), नीच (अतिचारादि [illegible] ज्ञाननो विराधक), संसक्त [illegible] [illegible] स्त्री—तेनी संगतिथी तेवो थाय, ते संसक्त [illegible] छे. [illegible] [illegible] [illegible] करनार) [illegible] ते पासत्थादिकने [illegible] ([illegible]) सुविहित साधुओ ते पासत्थादिकना [illegible] [illegible] [illegible] छे; अर्थात् तेओ चारित्रना विराधक [illegible] [illegible] [illegible] तेओनो संग [illegible] करे छे.... ३५२. हवे पासत्थादिकनां लक्षणो कहे छे—

बायालमेसणाओ, न रक्खइ धाइसिज्जपिंडं च ।
आहारेइ अभिक्खं, विगईओ संनिहिं खाइ ॥ ३५३ ॥

अर्थ—" जे बेंतालीस एषणा—आहारना दोषोनुं रक्षण करता नथी, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आहार लेता नथी, वारंवार ([illegible] [illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] विगई विगईनुं भक्षण करे छे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राखी मुकेलो अन्नादि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे. " ३५३.

सूरप्पमाणभोजी, आहारेइ अभिक्खमाहारं ।
न य मंडलीए भुंजइ, न य भिक्खं हिंडइ अलसो ॥ ३५४ ॥

अर्थ—" वळी जे सूर्यप्रमाण एटले सूर्योदयथी आरंभीने सूर्यास्त सुधी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे. [illegible] [illegible] आहार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे, वळी जे साधुनी मंडलीमां (साथे) बेसीने भोजन करतो नथी, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे, तथा आळसुपणाथी जे भिक्षाने माटे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आहार ग्रहण करे छे. " ३५४.

[illegible]
[illegible]
[illegible]

कीवो नें कुणंइ लोअं, लज्जंई पंडिमाइ जल्लमवणेइ।
सोवाहणो अ हिंडंइ, बंधंइ कडिपट्टमकज्जे ॥ ३५६ ॥

अर्थ–" वळी क्लीब केo कायर थयो जे लोच करतो नथी, कायोत्सर्ग करतां जे लज्जा पामे छे, शरीरना मेलने जे हाथवडे अथवा जळवडे दूर करे छे, तथा जे उपान (जोडा) सहित चाले छे अने जे कार्य विना केडे चोलपट्टो बांधे छे." ३५६.

गामं देसं चं कुलं, ममाए पीठफलगपडिबद्धो।
घरसरणेसु पसज्जइ, विहरइ य सकिंचणो रिक्को" ॥ ३५७ ॥

अर्थ–"वळी ते पासत्थादिक गाम देश अने कुळने विषे ममताए करीने विचरे छे; एटले आ गाम, आ देश, आ कुळ विगेरे मारां छे एवी ममता राखे छे पीठफलकने विषे प्रतिबद्ध एटले वर्षाऋतु विना पण पीठ फलक दिकनो उपयोग करे छे–ग्रहण करे छे घरो (उपाश्रयादिक) नवां करावावानो प्रसंग राखे छे, एटले तेनी चिंता छे, अने सुवर्णादिक द्रव्यनो परिग्रह पासे छतां पण हुं रिक्त (द्रव्यरहित) हुं छुं, एम लोको पासे बोलतो विहार करे छे–विचरे छे–फरे छे." ३५७.

नहदंततकेसरोमे, जमेइ अच्छोलधोअणो अजओ।
वाहेइ य पलियंकं, अइरेगपमाणमत्थुरइ ॥ ३५८ ॥

अर्थ–" नख, दांत, (मस्तकना) केश अने शरीरना घणा जळथी हस्तपादादिक धूए छे अने यतनारहित वर्ते छे, दिक वापरेछे तथा अधिक प्रमाणवाळा (प्रमाणथी अधिक संथाराने पाथरे छे–एटले सुखशय्या करे छे." ३५८.

सोवइ य सव्वराइं, नीसट्ठमचेयणो न वा झरई।
न पमज्जंतो पविसइ, निसिहियावस्सियं न करेइ।

अर्थ–" वळी काष्ठनी जेम निभृत (अत्यंत) चेतनारहित स्थादिक) आखी रात्रि (चारे पहर) सुइ रहे छे. रात्रिए गणना

गाथा ३५६ मुञ्चणेइ। सोवाहणोवि। कडिपट्टयमकज्जे।
गाथा ३५७–ममायए। विहरई।
गाथा ३५८–उछाल। जमेइ=भूषयति। अस्तोकजलेन धावनं प्रक्ष. वाहेई। अच्छुरइ=आस्तरति।
गाथा ३५९–सोयई=स्वपिति। नीसट्ठं=निश्चेष्टः। वासरई–...

[illegible] ३५९.

पायं पहे न पमज्जइ, जुगमायाए न सोहए इरियं ।
पुढवीदगअगणिमारुअवणस्सइतसेसु निरविक्खो ॥ ३६० ॥

अर्थ- [illegible] ३६०.

सव्वं थोवं उवहिं, न पेहए न य करेइ सज्झायं ।
सद्दकरो झंझकरो, लहुओ गणभेयतत्तिल्लो ॥ ३६१ ॥

अर्थ- [illegible] ३६१

खित्ताईयं भुंजइ, कालाईयं तहेव अविदिन्नं ।
गिण्हइ अणुइयसूरे, असणाई अहव उवगरणं ॥ ३६२ ॥

अर्थ- [illegible] ३६२.

ठवणकुले न ठवेई, पासत्थेहिं च संगयं कुणई ।
निच्चमवज्झाणरओ, न य पेहपमज्जणासीलो ॥ ३६३ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अर्थ–"स्थापना कुळोनुं एटले वृद्ध, ग्लान विगेरेनी अत्यंत भक्ति करनारा श्रावकना गृहोनुं रक्षण करतो नथी. एटले के कारण विना पण तेमने घेर आहार लेवा जाय छे. वळी भ्रष्टाचारीओ साथे संगति (दोस्ती) करे छे. निरंतर अपध्यान (दुष्ट ध्यान) मां तत्पर रहे छे; तथा प्रेक्षा (दृष्टिथी जोइने वस्तु ग्रहण करवी ते) अने प्रमार्जना (रजोहरणादिक वडे प्रमार्जन करीने–पुंजीने वस्तु भूमिपर मूकवी ते) करवाना स्वभाववाळो होतो नथी." ३६३.

रीयंइ दंवदवाए, मूंढो परिभंवइ तहय रायंणिए।
परंपरिवायं गिंण्हई, निठुरंभासी विगंहसीलो ॥ ३६४ ॥

अर्थ–"वळी उतावळथी (उपयोग विना) चाले छे, तथा मूर्ख एवो ते ज्ञानादिक गुणरत्नोथी अधिक एवा वृद्धोनो पराभव करे छे, एटले तेओनी साथे स्पर्धा करे छे. परनो परिवाद (अवर्णवाद) ग्रहण करे छे–परनी निंदा करे छे; निष्ठुर (कठोर) भाषण करे छे; अने राजकथादिक विकथाओ करवाना स्वभाववाळो होय छे–विकथा करे छे." ३६४.

विंज्जं मंतं जोगं. तेगिंच्छं कुणंइ भूइंकम्मं चं।
अंक्खरनिमित्तजीवी, आरंभंपरिग्गहे रंमइ ॥ ३६५ ॥

अर्थ–"देवीअधिष्ठित ते विद्या, देवअधिष्ठित ते मंत्र, अदृश्य करणादिक ... रोगनी प्रतिक्रिया (औषध प्रयोग) अने भूतिकर्म (राख विगेरे मंत्रीने गृह... आपवानुं कर्म) करे छे. अक्षर (लेखकोने अक्षरविद्या आपवी ते) तथा निमित्त (शुभ अशुभ लक्षणादिकना प्रकाश करवा) वडे आजीविका करनार एवो ते आ... (पृथ्वीकायादिकना उपमर्दन) अने अधिक उपकरणना संचयरूप परिग्रह तेने ... रमे छे–आसक्त रहे छे."

कंज्जेण विणा उग्गंहमणुंजाणावेइ दिवंसओ सुंअइ।
अंज्जियलाभं भुंजइ, इंत्थिनिसिज्जासु अंभिरमइ ॥ ३६६ ॥

अर्थ–" कार्य विना (निरर्थक) गृहस्थोने रहेवा माटे अवग्रह भूमिनी अनुज्ञा ... करे छे–मागे छे. दिवसे शयन करे छे. आर्यिकाना लाभने (साध्वीए लावेला आ...

गाथा ३६४–रीअईय=गच्छति च।
गाथा ३६५ तेगिच्छं–रोगप्रतिक्रियां।
गाथा ३६६–सुयइ।

[illegible]

उवाए पानवर्ग, पेच्छ विगयं अनाइलो ।
संथाग उवहीणं, पडिक्कमई [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

नं करेइ पंढ जयणं, वन्धियाणं नइ करेइ परिवेसं ।
वंदइ अणुवड्ढमाणे, [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] अइ [illegible] [illegible] अंगहा ।
[illegible] [illegible] पंचइ अ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] पाइ [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] न प [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

इच्छावाळो ते (पासत्थादिक) सांवत्सरिक पर्वे अट्ठम, चातुर्मासीए छट्ठ अने पक्ष (चतुर्दशी)ने दिवसे चतुर्थ (उपवास) तप करतो नथी, तथा चातुर्मास शिवाय शेष काळे क्षेत्रो छतां पण मासकल्पनी मर्यादा प्रमाणे विहार करतो नथी." ३७०.

नीयं गिण्हइ पिंडं, एगागि अत्थए गिहत्थकहो ।
पावसुआणि अहिज्जइ, अहिगारो लोगगहणंमि ॥ ३७१ ॥

अर्थ–" नित्य एटले अमुक घेरथी आटलो आहार लेवो एम नियमित रीते पिंड (आहार) ग्रहण करे छे, एकाकी (एकलो) रहे छे, पण समुदायमां रहेतो नथी. गृहस्थोनी कथा (प्रवृत्ति) जेने विषे होय एवी वातो करे छे, पापशास्त्रो (ज्योतिष तथा वैदक विगेरे)नो अभ्यास करे छे तथा लोकोने रंजन (वश) करवा माटे लोकोना मनमां अधिकार करे छे, एटले तेमनी वातोमां मोटाइपद धारण करी मुख्यता मेळवे छे, परंतु पोतानी संयमक्रियाना अधिकारी थता नथी." ३७१.

परिभवइ उग्गकारी, सुद्धं मग्गं निगूहए बालो ।
विहरइ सायागुरुओ, संजमविगलेसु खित्तेसु ॥ ३७२ ॥

अर्थ–" बाळक (मूर्ख) एवा ते पासथ्थादि उग्रकारीनो एटले उग्र विहार करनार मुनिओनो पराभव करे छे (तेओने उपद्रव करे छे). शुद्ध एवा मोक्षमार्गने आच्छादन करे छे-गोपवे छे. अने साता (सुख) ने विषे गुरुक (लंपट) एवो संयमथी विकल एटले सारा साधुओथी रहित एवा क्षेत्रोने विषे विहार करे छे." ३७२

उग्गाइ गाइ हसई, असंवुडो सइ करेइ कंदप्पं ।
गिहिकज्जचिंतगो विय, ओसन्ने देइ गिण्हइ वा ॥ ३७३ ॥

अर्थ–" असंवुडो एटले मुखने पहोळुं करीने मोटा शब्दवडे गायन करे छे अने हसे छे. वळी कंदर्प एटले कामने उत्पन्न करे तेवी कथाओ करे छे. वळी ते गृहस्थोना कार्यनी चिंता (विचार) करे छे, तथा अवसन्न (भ्रष्टाचारी)ने वस्त्रादिक आपे छे अथवा तेनी पासेथी ग्रहण करे छे." ३७३.

धम्मकहाओ अहिज्जइ, घराघरं भमइ परिकहंतो अ ।
गणणाइ पमाणेण य, अइरित्तं वहइ उवगरणं ॥ ३७४ ॥

[illegible] – [illegible] । पावसुयाणि ।
[illegible] – [illegible] । [illegible] ।
[illegible] – [illegible] । [illegible] । [illegible] ।
[illegible]

[illegible]

ञस्स वामे निंति वं. [illegible]मीओ ।
अंतो वढ्ढि य अंढियाणि. अंतढियाणि न पी[illegible] ॥ ३ ५४ ॥

[illegible]

गोनंबं संनिम्मं. आयढ्ढिअं मुंढइ [illegible] ।
गुंढगो यं अगापुन्ढा. जं [illegible] ॥ ३५५ ॥

[illegible]

[illegible]

गुंढगिगोणं मुंढइ. निंढुणं[illegible] ।
[illegible] नावइ. अनिगीढो [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

'तुं' एम कही जवाब आपे छे-तुंकारो करे छे: भगवन्! एवा बहुमान पूर्वक बोलतो नथी." ३७७.

गुरुतवस्सिगिलाणसेहबालाउलस्स गच्छस्स ।
न करेइ नेय पुच्छइ निद्धम्मो लिंगमुवजीवी ॥ ३७८ ॥

अर्थ-" निर्धर्म (धर्मरहित) अने लिंगउपजीवी एटले मात्र वेष धारण करीने-वेषना निमित्तवडे ज आजीविका करनार एवो ते (पार्श्वस्थादिक) गुरु (आ[illegible] उपाध्यायादि), तपस्वीवाळा (अनशनादि-उपवासादि तपस्यावाळा), [illegible] [illegible]), सेह-शिष्य (नवदीक्षित) अने बाळ (क्षुल्लक) साधुओथी आ[illegible] (संकीर्ण) एवा गच्छनुं (समुदायनुं) अपेक्षित वैयावृत्यादिक पोते करतो नथी, [illegible] [illegible] करुं? एम बीजा ज्ञान साधुओने पूछतो पण नथी." ३७८.

[illegible]सहिआहारसुयगथंडिलविहिपरिच्छुण्णं ।
नो [illegible] नेव जाणइ अज्जावट्टावणं चेव ॥ ३७९ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ३८० ॥

[illegible]

अर्थ—" [illegible] ." [illegible]

[illegible] गिलाणं [illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ—" [illegible]

[illegible] —

जो [illegible] अप्पमत्तो [illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥ युग्मम् ॥

[illegible]

[illegible] —

[illegible]

अलसो संढो वंलित्तो, आलंबणतप्परो अइपमाई ।
एवं ठिओ वि मन्नइ, अप्पाणं सुट्ठिओ मि त्ति" ॥ ३८५ ॥

अर्थ-" धर्मक्रियामां आळसु, शठ (मायावी), अवलिप्त (अहंकारी), आलंबनमां तत्पर (कोइ पण मिषे करीने प्रमादनुं सेवन करवामां तत्पर) तथा अति प्रमादी (निद्राविकथादिप्रमादवान)-एवो छतो पण 'हुं सुस्थित (भव्य-सारो) छुं' एम पोताना आत्माने माने छे." ३८५. हवे मायावीने पाछळथी पश्चात्ताप करवो पडे छे, ते विषे कपटक्षपक तापसनुं दृष्टान्त-

जो वियं पाडेऊणं, मायामोसेहिं खाइ मुद्धजणं ।
तिग्गाममज्झवासी, सो सोअइ कवडखवगु व्व ॥ ३८६ ॥

अर्थ-" वळी जे (मायावी) माया (कपट) करवामां मृषा (कूट) भाषण वडे करीने-माया मृषावादे करीने मुग्ध जनने पाडीने (वश करीने) छेतरे छे, ते पुरुष त्रण गामनी मध्ये (वच्चे) रहेनारा कपटक्षपक नामना तपस्वीनी जेम शोक करे छे." ३८६. संप्रदायागत ते कथा अहीं कहे छे-

कपटक्षपक तपस्वीनी कथा.

उज्जयिनी नगरीमां एक अघोरशिव नामनो महा धूर्त ब्राह्मण रहेतो हतो ते महाकपटी, महाधूर्त अने महापापी हतो. तेथी राजाए तेने देश बहार काढी मूक्यो एटले ते चर्मकारना (मोचीना) देशमां गयो. त्यां चोर लोकोनी पल्लीमां जइने चोरोने मळी गयो. पछी तेणे चोरोने कह्युं के-"जो तमे लोकोमां मारी प्रशंसा करं तो हुं परिव्राजकनो वेष धारण करीने आ त्रण गामनी वच्चेनी अटवीमां रहुं अ तमने घणुं धन मेळवी आपुं." ते सांभळीने चोरोए तेनुं कहेवुं कबूल कर्युं. प ते ब्राह्मण तापसनो वेष धारण करीने ते त्रणे गामनी मध्ये रही कपटवृत्तिथी मा क्षपण करवा लाग्यो, अने ते चोरो पण कूटवृत्तिथी सर्वत्र कहेवा लाग्या के-'अ आ महात्मा धन्य छे. आ तपस्वी निरंतर मासक्षपण करीने पारणुं करे छे.' ते सांभळी सर्वे मुग्ध जनो तेनी एवी प्रवृत्ति जोइ तेने वंदना-नमस्कार करवा लाग्या, अने भोजनने माटे पोताने घेर निमंत्रण आपी लइ जवा लाग्या. पछी तेने इच्छा भोजन करावी पोताना घरनी लक्ष्मी बताववा लाग्या; पोताना घरनी सर्व हकीकत तेने कहेवा लाग्या, अने प्रसंगे प्रसंगे निमित्त विगेरे पूछवा लाग्या. ते कपटी तापस पण लग्नना बळथी लोकोने आगामी स्वरूप कहेवा लाग्यो. पछी ते कूटक्षपक रात्रे

गाथा ३८५ थिलित्तो।अइपमाई।सुट्ठिओमि=सुस्थितोऽस्मि। गाथा ३८६ खाइ=वंचयति।सोयइ

[illegible]

[illegible]

ते [illegible] छे—

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible]

ते [illegible] छे—

गच्छगओ अणुओगी, गुरुसेवी अनियवासि यांउत्तो ।
संजोएण पयाणं, संजमआराहगा भणिया ॥ ३८८ ॥

अर्थ–" गच्छनी मध्ये रहेनार, अनुयोगी एटले ज्ञानादिकनुं सेवन कर[illegible] उद्योगी, गुरुनी सेवा करनार, अनियतवासी एटले मासकल्पादिक विहार करनार [illegible] प्रतिक्रमणादिक क्रियामां आयुक्त–उद्युक्त. ए पांच पदाना संयोगे करीने संयम(चारि[illegible] ना आराधक कहेला छे; एटले जेने विषे आ गुणोमांथी वधारे वधारे गुण [illegible] तेने विशेष विशेष आराधक जाणवो. " ३८८.

निम्मम निरहंकारा, उवउत्ता नाणदंसणचरित्ते ।
एगंखित्ते वि ठिया, खवंति पोराणयं कम्मं ॥ ३८९ ॥

अर्थ–" निर्मम के० ममता रहित, अहंकार रहित अने विशेष अवबोध रू[illegible] ज्ञानने विषे, तत्त्वश्रद्धान रूप दर्शनने विषे, तथा आश्रवना निरोधरूप चारित्रने विषे उप[illegible] युक्त–उपयोगवाळा–सावधान एवा महापुरुषो एक क्षेत्रने विषे रह्या होय, तोपण तेओ [illegible] पुराणा (पूर्व भवे संचय करेला) ज्ञानावरणादिक कर्मने खपावे छे–नाश करे छे." ३८९.

जियकोहमाणमाया, जियलोहपरीसहा य जे धीरा ।
वुड्ढावासे वि ठिया, खवंति चिरसंचियं कम्मं ॥ ३९० ॥

अर्थ–" जेओए क्रोध, मान अने मायानो जय कर्यो छे, जेओ लोभसंज्ञा [illegible] रहित छे, अने जेओए क्षुधा पिपासादिक परीषहोनो जय कर्यो छे एवा जे धीर [illegible] (सत्त्ववाळा) पुरुषो छे तेओ वृद्धावस्थामां पण एक स्थाने रह्या सता चिरकाळना [illegible] संचय करेला ज्ञानावरणादिक कर्मने खपावे छे—नाश करे छे. सदाचा[illegible] मुनिओने कारणने लीधे एक स्थाने रहेवामां पण जिनेश्वरनी आज्ञा छे. [illegible] [illegible] " ३९०.

पंचसमिया तिगुत्ता, उज्जुत्ता संजमे तवे चरणे ।
वाससयं पि वसंता, मुणिणो आराहगा भणिया ॥ ३९१ ॥

अर्थ–" पांच समितिओथी समित (युक्त), त्रण गुप्तिओथी गुप्त ([illegible] [illegible] अने सत्तर प्रकारना संयमने विषे तथा [illegible] छ जीवनिकायनी रक्षा [illegible] [illegible] [illegible] प्रकारना तपने विषे तथा [illegible] पांच प्रकारना [illegible]

[illegible] ३८८-[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।
[illegible] ३९०-[illegible] । [illegible] ।

[illegible]

नेता सव्वागुना. सव्वोनिमेहा य पवत्ते नाचि । [illegible]

आयं वेगं तुम्लेना. [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] न य [illegible] ।

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

न [illegible] ।

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

जहट्ठियखेत्त न जाणइ, अध्धाणे जणवएअ जं भणियं ।
कालंपि नवि जाणइ, सुभिक्खदुभिक्ख जं कप्पं ॥ ४०२ ॥

अर्थ–" वळी अगीतार्थ यथास्थित क्षेत्रने एटले आ क्षेत्र भद्रक छे के अभद्रक छे ? ते जाणतो नथी. दूर मार्गवाळा जनपदमां (देशमां) विहार कर्ये छते जे विधि-स्वरूप सिद्धान्तमां कहेलुं छे ते पण जाणतो नथी तथा काळ (काळनुं स्वरूप) पण जाणतो नथ, तेमज सुभिक्ष (सुकाळ) अने दुर्भिक्ष (दुष्काळ)ने विषे जे वस्तु कल्प्य के अकल्प्य कहेल छे ते पण अगीतार्थ जाणतो नथी." ४०२.

भावे हट्ठगिलाण, नवि याणइ गाढगाढकप्पं च ।
सहुअसहुपुरिसवत्थुं, वत्थुमवत्थुं च नवि जाणइ ॥ ४०३ ॥

अर्थ–" भावने विषे (भावद्वारने विषे) आ हृष्ट (नीरोगी) छे. माटे तेने आ वस्तु देवा योग्य छे, अने आ ग्लान (रोगी) छे, माटे तेने आ वस्तुज देवा योग्य छे, ते जाणतो नथी. तथा गाढागाढ कल्प एटले गाढ (मोटा) कार्यमां अमुक करवा योग्य छे अने अगाढ (स्वाभाविक) कार्यमां अमुकज करवा लायक छे, ते पण जाणतो नथी. वळी समर्थ शरीरवाळो अने असमर्थ शरीरवाळो पुरुषवस्तुने पण जाणतो नथी के आ समर्थ छे ने आ असमर्थ छे; तथा वस्तु एटले आचार्यादिकना [illegible] अने अवस्तु एटले सामान्य साधुना [illegible] पण जाणतो नथी." ४०२.

पडिसेवणा चउद्धा, आउट्टि पमाय दप्प कप्पेसु ।
[illegible] अग्गीओ, पच्छित्तं चेव जं तत्थ ॥ ४०४ ॥

[illegible] आचरण) चार प्रकारे होय छे [illegible] (स्वाभाविक) [illegible] कारण [illegible] जाणतो नथी [illegible]

[illegible] ॥ ४०५ ॥

[illegible]

अर्थ-" [illegible] जे दिवस अने रात्रि [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अणागयं [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ-" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], [illegible] ।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ-" [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] कहे छे—

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ-" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

अर्थ-" ज्ञानाधिक (ज्ञानथी पूर्ण) पुरुषनुं ज्ञान पूजाय छे, केमके ज्ञानथी चरण चारित्र) प्रवर्ते छे; परंतु जे पुरुषने ज्ञान अने चारित्र ए बेमांथी एक पण नथी ते पुरुषनुं शुं पूजाय? शुं पूजवा योग्य होय? कांइ पण पूजवा योग्य न होय."

नाणं चरित्तहीणं, लिंगग्गहणं च दंसणविहीणं ।
संजमहीणं च तवं, जो चरइ निरत्थयं तस्स ॥ ४२५ ॥

अर्थ-" जे पुरुष चारित्र (क्रिया) रहित ज्ञाननुं आचरण करे छे, जे पुरुष दर्शन सम्यक्त्व) रहित लिंग (मुनिवेष)नुं ग्रहण (धारण) करे छे, अने जे पुरुष संयम (छ जीव निकायनी रक्षा रूप चारित्र) रहित तपनुं आचरण करे छे-ते पुरुषोना ए सर्वे मोक्षनां साधनो निरर्थक छे-निष्फळ छे." ४२५.

जहा खरो चंदणभारवाही, भारस्स भागी न हु चंदणस्स ।
एवं खु नाणी चरणेण हीणो, नाणस्स भागी न हु सुग्गईए॥४२६

अर्थ-" जेम चंदनना भारने वहन करनार खर (गधेडो) केवळ भारनोज भागी थाय छे, पण चंदनना सुगंधनो भागी थतो नथी, तेज रीते निश्चे चारित्रे करीने हीन एवो ज्ञानी पण केवळ ज्ञाननोज भागी थाय छे, पण मोक्षरूप सुगतिनो एटले ज्ञानना परिमलनो भागी थतो नथी. माटे क्रिया सहित ज्ञान होय तोज ते श्रेष्ठ छे." ४२६.

संपागडपडिसेवी, काएसु वएसु जो न उज्जमई ।
पवयणपाडणपरमो, सम्मत्तं कोमलं तस्स ॥ ४२७ ॥

अर्थ-" प्रगटपणे (लोक समक्ष) प्रतिकूल (निषिद्ध) आचरणने आच[illegible] एवो जे पुरुष छ जीवनिकायना पाळनने विषे अने पांच महाव्रतना रक्षणने उद्यम करतो नथी-प्रमादनुंज सेवन करे छे, तथा जे प्रवचन (जिनशासन)नुं प[illegible] (लघुता) करवामां तत्पर छे, तेनुं सम्यक्त्व कोमळ एटले असार जाणवुं; अर्थात मिथ्यात्वज वर्त्ते छे एम जाणवुं." ४२७.

चरणकरणपरिहीणो, जइ वि तवं चरइ सुट्ठु अइगुरुअं ।
सो तिल्लं व किणंतो, कंमिय बुद्धो मुणेयव्वो ॥ ४२८ ॥

अर्थ-" चरण एटले महाव्रतादिकनुं आचरण अने करण एटले आहार[illegible]

गाथा ४२५-संजमविहीणं ।
गाथा ४२७-जो उ न उज्जमइ । संपागड-संपकड ।
गाथा ४२८-जइ वि । सुट्ठं । बुद्धो ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वध एटले लाकडी विगेरेना प्रहारने, मांकळ (बेडी) विगेरेना बंधनने तथा द्रव्य-हरण एटले सर्वस्वना नाशने अने मरणान्त कष्ट पामे छे. एम आज्ञानो भंग करवाथी पामे छे." ४३१.

तह छक्कायमहव्वयसव्वनिवित्तीउ गिण्हिऊण जई ।
एगमवि विराहंतो, अमच्चरन्नो हणइ बोहिं ॥ ४३२ ॥

अर्थ-"तेवीज रीते छ जीवनिकाय तथा पांच महाव्रत संबंधी सर्व नि (सर्वविरति) रूप प्रत्याख्यान (नियमो)ने ग्रहण करीने यति (साधु) एक पण निकायनी अथवा एक पण व्रतनी विराधना करतो सतो अमर्त्य राजा (दे राजा-तीर्थंकर)ए आपेली अथवा तेमणे प्ररूपेली बोधिने हणे छे-नाश पमाडे अर्थात् जिनाज्ञानो भंग करवाथी बोधि (सम्यक्त्व)नो नाश थाय छे; अने ते अनन्त संसारी थाय छे." ४३२.

तो हयबोहीय पच्छा, कयावराहाणुसरिसमियममियं ।
पुण वि भवोअहिपडिओ, भमइ जरामरणदुग्गंमि ॥ ४३३ ॥

अर्थ-"त्यार पछी हणी छे बोधि जेणे एवो ते मुनि करेला अपराध (जिन भंगरूप)ने अनुसारे एटले अनुमाने करीने करीने समान आ प्रत्यक्ष एवा अमित मानरहित (अति मोटा) फळने पामे छे. ते फळ कयुं? ते कहे छे-वृद्धावस्था मरणे करीने अत्यंत दुर्ग एटले गहन एवा भवसागरने विषे पड्यो छतो वारंवार भ्रमण करे छे-अनंतकाळ परिभ्रमण करवारूप फळने पामे छे." ४३३.

जइयाणेणं चत्तं, अप्पणयं नाणदंसणचरित्तं ।
तइया तस्स परेसु, अणुकंपा नत्थि जीवेसु ॥ ४३४ ॥

अर्थ-"ज्यारे आ निर्भागी जीवे आत्माने हितकारक एवा ज्ञान, दर्शन, च त्रनो त्याग कर्यो, त्यारे समजवुं के ते जीवने बीजा एटले पोता शिवाय बीजा जी विषे अनुकंपा नथी अर्थात् जे पोताना आत्मानो हितकारक नथी थतो ते बीजा हित शी रीते करे? पोताना आत्मापर दया होय तोज बीजा जीवोपर दया थइ छे. (आत्मदया मूळकज परदया छे.)" ४३४.

गाथा ४३२ निवत्तिओ । गिण्हिऊण । हणगो । अमच्चरन्नो=अमर्त्यराज्ञः तीर्थंकरदेवस्
गाथा ४३३-हयबोहि पच्छा । हयबोही । कृतापराधानुसदृशमिदममितम् । पुणो वि
गाथा ४३४-यदाऽनेन त्यक्तं । अप्पणयं=आत्मनीनं । परेसुं ।

[illegible] अस्संजयाण [illegible] ।

[illegible] अस्संजमो [illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

किं [illegible]. [illegible] ।

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

अर्थ-" रागद्वेषरूपी घणा दोषोवडे संक्लिष्ट (भरेलो) एटले दुष्ट चित्तवाळो अने जेनो स्वभाव (अभिप्राय) चंचळ एटले विषयादिकमां लुब्ध छे एवा पुरुष अत्यंत परीसहादिक कष्टने सहन करतो छतो पण मात्र कायाए करीने कांइ पण (थोडो पण) कर्मक्षयादि रूप गुणने करतो नथी-मेळवतो नथा; नवरं के० उलटो ते पोताना आत्माने मलिन करे छे. " ४३८.

केसिंचि वरं मरणं, जीवियमन्नेसिमुभयमन्नेसि ।
दद्दुरदेविच्छाए, अहियं केसि च उभयं पि ॥ ४३९ ॥

अर्थ-" दर्दुर देवनी इच्छामां केटलाएकनुं मरणज श्रेष्ठ छे, केटलाएक पुरुषोनुं जीववुंज श्रेष्ठ छे, केटलाएकनुं जीवित अने मरण बन्ने श्रेष्ठ छे, अने केटलाएकनुं जीवित अने मरण बन्ने अहितकारक छे. आ गाथानो सविस्तर भावार्थ दर्दुरांक देवनी कथाथी जाणवो. " ४३९. ते कथा नीचे प्रमाणे—

दर्दुरांक देवनी कथा.

प्रथम दर्दुरांक देवना पूर्वभवनुं स्वरूप कहे छे—कौशांबी महापुरीमां शतानीक नामे राजा राज्य करतो हतो, ते वखते ते गाममां एक सेडुक नामनो दरिद्री ब्राह्मण रहेतो हतो. तेनी स्त्री गर्भवती थइ. ज्यारे तेनो प्रसूतिसमय नजीक आव्यो त्यारे तेणे पोताना पतिने कह्युं के-' मारो प्रसूतिकाळ समीप आव्यो छे, माटे मने घी, गोळ विगेरे लावी आपो.' त्यारे सेडुक बोल्यो के-' मारा पासे एवी कोइ पण जातनी कळा नथी, तेथी द्रव्य विना घी गोळ विगेरे क्यांथी लावुं ? ते सांभळीने ते बोली के—' जो कांइ पण कळा न होय तोपण उद्यम करवाथी फळनी प्राप्ति थाय छे. कह्युं छे के—

प्राणिनामन्तरस्थायी, न ह्यालस्यसमो रिपुः ।
न चोद्यमसमं मित्रं, यं कृत्वा नावसीदति ॥

" प्राणीओनो पोताना अन्तःकरणमां रहेला आळस जेवो बीजो कोइ शत्रु नथी, अने उद्यम समान बीजो कोइ मित्र नथी, के जे (उद्यम) करवाथी प्राणी कदि पण सीदातो नथी-खेद पामतो नथी."

आ प्रमाणे पोतानी स्त्रीनुं वाक्य सांभळीने ते सेडुके एक फळ लइ राजानी सभामां जइ राजाने ते भेट कर्युं. एवी रीते हंमेशां ते राजसभामां फळ लइ जइने शतानीक राजानी सेवा करवा लाग्यो.

* पा० ३३९-[illegible] ।

[illegible] कोइ कामणी चेवा [illegible] राजा [illegible]
[illegible] वालवा. ते [illegible] गजानीक पासे [illegible]
[illegible] तेमां युद्ध थयां अनुक्रमे [illegible]
[illegible] बहु थयुं, तेवामां [illegible]
[illegible] हतो. तेने [illegible] सैन्य [illegible]
[illegible] कहुं के—" हे राजा! आवे युद्ध [illegible]
[illegible] राजा सैन्य सहित [illegible]
[illegible] तेना हाथी घोडा [illegible]
[illegible] पछी सेवकने पण मान आपीने [illegible] कहुं के—" हे [illegible]
[illegible] इच्छानुसार दान." सेवके कहुं के—" हे [illegible]
[illegible] आपीश." एम कही [illegible]
[illegible] गजानीक राजा [illegible]
[illegible] मांत्रीने तेने [illegible] के—" [illegible]
[illegible] एम विचारीने [illegible] कहुं के—" [illegible]
[illegible] होय, तो [illegible]
[illegible] करो. [illegible]
[illegible]

पण तेवां तिरस्कारनां वचनो सांभळीने सेडुकने क्रोध चड्यो; तेथी तेणे विचार कर्यो के-' आ सर्वेने कोढीया करुं त्यारेज हुं खरो. ' एम विचारीने तेणे पोताना पुत्रने बोलावीने कह्युं के-" हे पुत्र ! सांभळ, हुं वृद्ध थयो छुं, मारुं मृत्यु हवे नजीक आव्युं छे, तेथी मारे तीर्थयात्रा करवा जवुं छे. पण आपणा कुळनो एवो आचार छे के जे तीर्थयात्रा करवा जाय ते प्रथम जव तथा घासने मंत्रथी मंत्रीने एक बकरीना पुत्रने (बोकडाने) खवरावे, अने ते बकराने पुष्ट करी तेनुं मांस सर्व कुटुंबने खवरावीने पछी तीर्थयात्रा करवा जाय. माटे हे पुत्र ! मने पण एक बकरीनुं बच्चुं लावी आप." ते सांभळीने ते पुत्रे ते प्रमाणे कर्युं; एटले ते बोकडाने सेडुके पोतानी पासे राख्यो. पछी पोताना कुष्ट सबंधी परु विगेरेथी मिश्रित करीने जव तथा घास तेने खावरावा लाग्यो. तेवी रीते करतां केटलेक काळे ते बोकडो कोढीयो थयो. एटले तेने मारीने तेना मांसवडे कुटुंबनुं पोषण करीने (सौने जमाडीने) तेमनी रजा लइ ते तीर्थयात्रा माटे नीकळ्यो.

मार्गमां जतां सेडुकने तृषा लागवाथी तेणे सूर्यना तापथी तपेलुं, अंदर पडेला घणां पांदडांओथी ढंकायेलुं क्काथ (उकाळा) जेवुं कोइक ह्रद (खाबोचीया)नुं जळपान कर्युं. तेथी तुरतज तेने विरेचन थयुं. एटले तेनो सर्व कुष्टकृमिनो व्याधि बहार नीकळ्यो. पछी तेणे घणा काळ सुधी ते जळनुं पान कर्या कर्युं. एटले दैवयोगे ते तद्दन नीरोगी थयो. परंतु अहीं कुष्टरोगवाळा बोकडानु मांस खावाथी तेनु आखुं कुटुंब कोढीयुं थयुं. पछी सेडुक पोताना शरीरनी नीरोगता देखाडवा माटे कौशांबी नगरीमां पाछो आव्यो. लोकोए तेने पूछ्युं के-' तारो रोग केवी रीते गयो ? ' त्यारे ते बोल्यो के-' देवना प्रभावथी मारो व्याधि नष्ट थयो छे. ' पछी घेर आवीने सेडुके पोताना कुटुंबने व्याधिग्रस्त जोइने कह्युं के-' जेवी तमे मारी अवज्ञा करी हती तेवुंज तमने सर्वने फळ मळ्युं छे? में केवुं कर्युं ? ' ते सांभळीने सर्वए तेनो अत्यंत तिरस्कार कर्यो, अने ' तुं अदीठ था ' एम कही कुटुंबे अने नगरना लोकोए तेनी निर्भर्त्सना करी तेने नगर बहार काढी मूक्यो. त्यांथी भमतो भमतो ते राजगृही नगरीमां प्रतोलिए (दरवाजे) आवीने रह्यो.

ते अवसरे श्रीमहावीरस्वामी राजगृही नगरीना उद्यानमां समवसर्या. ते सांभळीने द्वारपाळोए सेडुकने कह्युं के-' जो तुं अहीं रहीने चोकी करे तो अमे वीरप्रभुने वंदना करी आवीए. ' ते सांभळीने सेडुक हा कहीने बोल्यो के-' हुं भूख्यो छुं. ' त्यारे द्वारपाळोए कह्युं के-' अहीं द्वारदेवोनी पासे जे नैवेद्य आवे ते तु यथेष्टपणे खाजे. परंतु तारे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तो तरतज आकाशमां उत्पती गयो. ते जोइ श्रेणिक राजा विस्मय पाम्यो. पछी पाछा फरीने तेमणे भगवंत पासे आवी पूछयुं के–'हे स्वामी ! ते कुष्टी कोण हतो ते कहो.' त्यारे भगवाने सेडुकना भवथी आरंभीने तेनुं सर्व वृत्तांत राजाने कही संभळाव्युं. पछी कह्युं के 'ते दर्दुरांक देव जे हमणाज उत्पन्न थयो छे तेणे तारी परीक्षा करवा माटे तने कुष्टीनुं रूप बतावाने मारे अंगे दिव्य चंदननो लेप कर्यो छे.' फरीथी श्रेणिक राजाए पूछयुं के 'हे स्वामी ! त्यारे कहो के आपने छींक आवी, ते वखते आपने तेणे मरवानुं केम कह्युं ?' भगवान बोल्या के 'हे श्रेणिक ! मने अहीं छुं त्यां सुधी वेदनीयादिक चार कर्म वळगेलां छे, अने मृत्यु पाम्या पछी तो मने मुक्तिसुख मळवानुं छे, माटे मने मरवानुं कह्युं. वळी तने छींक आवी त्यारे तने जीववानुं कह्युं. तेनुं कारण ए छे के हालमां तुं जीवतो छे तो राज्यसुख भोगवे छे, पण मृत्यु प [illegible] नरकमां जवानो छे. माटे तने 'चिरं जीव' एम कह्युं. तथा अभयकुमार अ[illegible] धर्मकार्य करतो सतो राज्यसुख भोगवे छे, अने परभवमां पण ते अनुत्तर वि[illegible] जवानो छे. तेथी तेने 'जीव अथवा मर' एम कह्युं; अने कालसौकरिक तो जीवतो छतो पण बहु हिंसादिक पापनुं आचरण करे छे, अने मरण पाम्या [illegible] सातमी नरके जवानो छे. माटे तेने 'न जीव अने न मर' एम कह्युं. आ चार भ[illegible] सर्व जीव परत्वे लागु पडे छे. (एटले के चार भांगामांथी कोइ पण एक भांगामां कोइ जीव आवी शके छे). आ दर्दुरांक देवना मननो अभिप्राय छे." ते सांभ[illegible] श्रेणिके भगवानने विनंति करी के "हे स्वामी ! आप जेवा मारे माथे गुरु छतां [illegible] नरकमां जवुं केम योग्य कहेवाय ?" भगवान बोल्या के "हे राजा ! तें सम्य[illegible] पाम्या पहेलां नरकनुं आयुष्य बांधेलुं छे, ते कोइथी पण दूर (मिथ्या) थइ शके [illegible] नथी. परंतु तुं खेद न कर. आवती चोवीशीमां तुं पद्मनाभ नामे प्रथम तीर्थंकर [illegible] थवानो छे." ए सांभळीने राजाए हर्षित थइ फरीथी प्रभुने पूछयुं के 'हे भगवान शुं [illegible] पण उपाय नथी के जेथी मारे नरकमां जवुं न पडे ?' त्यारे भगवा[illegible] [illegible] के [illegible] कपिला नामनी दासी भावपूर्वक साधुने दान आपे, अने [illegible] कालसौकरिक [illegible] पाडा मारे छे ते न मारे तो तारे पण नरके जवुं न पडे.' [illegible] भगवानने वंदना करी घर तरफ चाल्यो. मार्गमां फरीथी श्रेणिक [illegible] करवा माटे दर्दुरांक देव एक साधुनुं [illegible] विकुर्वी [illegible] [illegible] जाळनी सन्मुख आव्यो. तेने जोइ श्रेणिके पूछ्युं के [illegible] आ जाळने केम ग्रहण करी छे?' अने [illegible] [illegible] मत्स्यादिकनो आहार पण करो छो?' आ [illegible]

[illegible] श्लोक आ प्रमाणे छे—

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आपती बोली के 'आ दान हुं आपती नथी, पण श्रेणिक राजाना आ चाटवो दान आपे छे.' पछी तेने तजी दइने राजाए काळसौकारिकने बोलावीने कह्युं के 'तुं पाडा मारवानुं काम मूकी दे' ते बोल्यो के 'हे राजा! हुं प्राणथी पण प्रिय एवी हिंसानो त्याग नहीं करुं.' ते सांभळीने राजाए तेने एक अंधकूपमां नांख्यो. त्यां पण तेणे कादवनी माटीना पांचसो पाडा चीत्रीने (बनावीने) तेने मार्या (तेनी हिंसा करी). ते जाणीने राजाए विचार्युं के 'खरेखर जिनेश्वरनुं वचन सत्य छे, ते मिथ्या थायज नहीं.' आथी जोके तेने खेद थयो परंतु पोते तीर्थंकर थवाना छे, ते हकीकत जाणेली होवाथी मनमां आनंद पामवा लाग्या.

॥ इति दर्दुरांकदेवसंबन्धः ॥ ६७ ॥

केसिंचिय परलोगो, अन्नेसिं इत्थ होई इहलोगो ॥
कस्स वि दुन्न वि लोगा, दोवि हया कस्सई लोगा ॥ ४४० ॥

अर्थ–"केटलाएक जीवोने परलोक (परभव) सारो होय छे, बीजा केटलाएकने अहींज आ लोक सारो होय छे, कोइ पुण्यशाळी जीवने बन्ने लोक पण सारा होय छे, अने कोइ पापकर्म करनारा जीवने बन्ने लोक हत (नष्ट) होय छे." ४४०.

(आ हकीकतनो उपनय उपर जणावेली छींकनी हकीकत परथी समजी लेवो,) वळी विशेष स्पष्ट करे छे—

छज्जीविकायविरओ, कायकिलेसेहिं सुट्ठु गुरुएहिं ।
न हु तस्स इमो लोगो, हवइ स्सेगो परो लोगो ॥ ४४१ ॥

अर्थ–"छ जीवनिकानुं मर्दन (वध) करवामां विशेष आसक्त एवा ते तापसादिकने अतिशय मोटा एवा पंचाग्नि, मासक्षपण विगेरे कायक्लेशोए करीने आ लोक (भव) सारो होतो नथी. परंतु तेने एक परलोक सारो थाय छे. केमके तेने अज्ञानतपथी परभवमां राज्यादिक सुखनी प्राप्ति थाय छे." ४४१.

नरयनिरुद्धमईणं, दंडियमाईण जीवियं सेयं ।
बहुवायम्मि वि देहे, विसुज्झमाणस्स वरं मरणं ॥ ४४२ ॥

अर्थ–"नरकने विषे बांधी छे (धारण करी छे) मति जेओए एटले नरकगतिगमन योग्य कार्यना करनारा एवा मंत्री विगेरे राज्यचिंता करनारनुं जीवित

गाथा ४४०-केषांचित् परो लोकः । हतः । कस्यचित् ।
गाथा ४४१-षड्जीवकायमर्दने विशेषेण रतः । न पुनः परो लोकः । स्स-तस्य पुनः=पदः । गाथा ४४२-नरक । जीवितं । सेयं-श्रेयः । दंडियमाईण=दण्डिकप्रमुखाणां । बहुवायम्मि वि=बहुरोगग्रस्तेऽपि ।

[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सुलसनी कथा.

राजगृह नगरमां महा क्रूर करनार अने अधर्मी कालसौकरीक नामे पशुवध करनार (कसाइ) रहेतो हतो. ते हमेशां पांचसो पाडानो वध करतो हतो, अने ते वडे कुटुंबनुं पोषण करतो हतो. तेने सुलस नामे एक पुत्र थयो. ते अभयकुमारना संसर्गथी श्रावक थयो. केटलेक काळे काळसौकरिकना शरीरमां एवा मोटा रोगो उत्पन्न थया के जेनी वेदनाने ते सहन करी शकतो नहीं. तेथी ते अत्यंत विलाप अने पोकार करतो हतो. तेना स्वजनो अनेक प्रकारना औषधो करता हता, पण वेदना शांत थती नहोती. एकदा पिताना दुःखथी दुःखी थएला सुलसे अभयकुमारने ते वात कही, एटले अभयकुमारे तेने कहुं के " हे सुलस! तारो पिता महापापी होवाथी नरकमां जवानो छे, तेथी सारां औषधोथी तेने शांति थशे नहीं; माटे तेनुं तुं मध्यम (हलका प्रकारनुं-कनिष्ठ) औषध कर के जेथी तेने कांइक सुख थाय." आवी अभयकुमारे आपेली बुद्धिथी सुलसे घेर आवी पिताना शरीरपर विष्टा विगेरे दुर्गन्धी वस्तुओनुं विलेपन कराव्युं, बोरडी अने बावळ विगेरेना कांटानी शय्या करी तेमां सुवाड्या, कडवां कषायलां ने तीखां औषधो पावा मांड्यां, गाय भेंस विगेरेनां मूत्र पायां, कुतरा अने भुंड विगेरेनी विष्टानो धूमाडो दीधो, तथा राक्षस अने वेताळ विगेरेना भयंकर रूपो देखडाव्यां. एवी रीते करवाथी तेना शरीरने महा सुख उत्पन्न थयुं, तेमज ते पोताना मनमां पण अत्यंत सुख मानवा लाग्यो. पछी ते काळसौकरिक मृत्यु पामीने सातमी नरकमां नारकीपणे उत्पन्न थयो.

तेनुं प्रेतकार्य (मरणक्रिया) कर्या पछी सुलसने तेना कुटुंबे कह्युं के " तुं पण हवे तारा पितानी जेम हंमेशां पांचसो पाडानो वध करीने कुटुंबनुं पोषण कर, अने आपणा कुटुंबनी रीति प्रमाणे वर्ती सर्व कुटुंबमा मोटो था." ए प्रमाणे कुटुंबीओनुं वाक्य सांभळीने सुलस बोल्यो के " ए पापकर्म हुं कदी करवानो नथी. केमके तेवुं पाप करीने हुं नरके जाउं, ते वखते मारो कोइ आधार थवानुं नथी. जिह्वाना स्वादने माटे थइने जे पुरुषो आवी हिंसा करे छे तेओ अवश्य दुर्गतिने पामे छे. ज्यारे एक कांटो लागवाथी पण प्राणीने मोटुं दुःख उत्पन्न थाय छे, त्यारे अनाथ अने अशरण एवा पशुओने शस्त्रादिकवडे मारवाथी तेमने दुःख उत्पन्न थतुं हशे तेनुं तो कहेवुं ज शुं! माटे आवा पापकर्मवडे कुटुंबनुं पोषण करवाथी सर्युं. मारे हिंसा करवानुं कांइ पण प्रयोजन नथी." ते सांभळी कुटुंबवर्ग बोल्यो के " तने जे पाप लागशे तेना अमे पण भागीदार थइशुं, माटे तारे कुळक्रमने त्याग करवा नहीं." इत्यादि कुटुंबनो बहु आग्रह जोइने तेमने प्रतिबोध करवा माटे सुलसे एक कुहाडी लइने पोताना पग

[illegible] जेणे ते [illegible] पर [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible].

[illegible] [illegible] "हे सुलस! [illegible]
[illegible] आदर कर्यो नहीं." [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

॥ इति सुलसकथानक [illegible] ॥

[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ—" [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]—

[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

अर्थ—" [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

[illegible]
[illegible]

क्लेश सहे छे, छतां ते यतनानेज निश्चे ते मूर्ख माणस करतो नथी; तो ते मूर्खने उपरना पशु विना पशुनां उपकरणो मेळवनारनी जेवो जाणवो; अर्थात् यतनाने माटेज उपकरणो मेळववानी जरुर छे, छतां ते मेळवीने पछी यतनाज जो न करे तो ते उपकरणो एकठां करवा व्यर्थ छे." ४४७.

अरिहंता भगवंतो, अहियं व हियं व नं वि इहं किंचि।
वारंति कारवंति य, घित्तूण जणं वला हत्थे ॥ ४४८ ॥

अर्थ—" अरिहंत (रागद्वेष रहित) भगवान् (ज्ञानी) मनुष्योने बळात्कारे हाथे पकडीने आ संसारमां कांइ पण (थोडुं पण) तेना अहितनुं निवारण करावता नथी. तेमज तेना हितने करावता नथी. अर्थात् जेम राजा माणसने हाथे पकडीने बळात्कारे पोतानी हितकारी आज्ञा मनावे—पळावे छे अने अहितकारी मार्ग छोडावे छे तेम अरिहंत भगवान् करता नथी." ४४८. त्यारे शुं करे छे ते ते कहे छे—

उवएसं पुण तं दिंति, जेणं चरिएण कित्तिनिलयाणं।
देवाण वि हुंति पहू, किमंग पुण मणुअमित्ताणं ॥ ४४९ ॥

अर्थ—" परंतु तेने (मनुष्यने) उपदेश—धर्मोपदेश आपे छे, के जे आचरवाथी (जे धर्मनुं आचरण करवाथी) कीर्तिना स्थानरूप एवा देवोनो पण ते प्रभु—स्वामी थाय छे; तो पछी हे अंग! (हे शिष्य!) मनुष्यमात्रनो स्वामी थाय, तेमां तो शुं आश्चर्य!" ४४९.

वरमउडकिरीडधरो, चिंचइओ चवलकुंडलाहरणो।
सक्को हिओवएसा, एरावणवाहणो जाओ ॥ ४५० ॥

अर्थ—" वर (श्रेष्ठ) [illegible] मुकुटने धारण करनार (श्रेष्ठ मुकुटने धारण करनार), [illegible] विविध आभरणोथी शोभित तथा कर्णने विषे चपळ कुंडलना आभरणने धारण करनार एवो देवेन्द्र हितोपदेशथी एटले हितकारी जिनेश्वरना उपदेशथी (उपदेश प्रमाणे आचरण करवाथी) ऐरावणना वाहनवाळो थयो; एटले कार्तिक शेठना भवमां [illegible] अंगीकार करवाथी तेणे इन्द्रपणुं प्राप्त कर्युं." ४५०

रयणुज्जलाइं जाइं, बत्तीसविमाणसयसहस्साइं।
वज्जहरेण वराइं, हिओवएसेण लद्धाइं ॥ ४५१ ॥

[illegible]
[illegible]

अर्थ— [illegible]

[illegible]

[illegible]

मुक्खमग्गं विभूइं, जे पत्तो [illegible] ।

[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ— [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] नं मुक्खं, जिणगणगुणरयण[illegible] ।

अंयहियं कायव्वं, अहियं [illegible] न [illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ— [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ— [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धर्मानुष्ठानादिक करे छे ते पुरुष देवतानी जेम पूज्य थाय छे. तथा लोकना मध्ये ते सिद्धार्थक (श्वेत सरसव)नी जेम मस्तकपर चडे छे. अर्थात् जेम सरसवने मनुष्यो पोताना मस्तकपर चडावे छे, तेम लोको तेनी आज्ञाने मस्तकपर वहन करे छे—अंगीकार करे छे." ४५५.

सव्वो गुणेहिं गण्णो, गुणाहिअस्स जह लोगवीरस्स ।
संभंतमउडविडवो, सहस्सनयणो सययमेइ ॥ ४५६ ॥

अर्थ—" सर्व जीव गुणोवडेज गण्य (माननीय) थाय छे. जेमके सत्त्वादिक गुणोथी अधिक अने लोकवीर के० लोकमध्ये प्रसिद्ध एवा श्रीमहावीर स्वामीने नमवा माटे मुकुटनो नम्र भाग जेनो एवो सहस्र नेत्रवाळो इन्द्र पण निरंतर सेवना करता आवे छे. माटे गुणवानपुरुष पुरुषगणमां श्रेष्ठ छे, एम सिद्ध थाय छे." ४५६.

चोरिक्कवंचणाकूडकवडपरदारदारुणमइस्स ।
तस्स च्चिय तं अहियं, पुणोवि वेरं जणो वहइ ॥ ४५७ ॥

अर्थ—" चोरी, वंचना—परने छेतरवुं, कूड—खोटुं बोलवुं, कपट—माया करवी [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

અાં—" રાજ્યકર્તાઓનો ન્યાય [illegible] [illegible] ... [illegible] નહીં. [illegible]" [illegible]

સલાદિનની વાત.

ઇજીપ્ત નગરમાં સલાદિન નામનો એક [illegible] ... [illegible]

थोडुं भांग्युं होय तोपण ते वासण भांग्युं कहेवाय छे. जेम वस्त्रनो थोडो भाग फाट्या छतां पण वस्त्र फाट्युं एवो वचनव्यवहार थाय छे, तेवीज रीते करातुं एवुं कार्य पण कर्युं, एम कहेवाय छे. 'कडेमाणे कडे' ए निश्चय सूत्र छे. जो प्रथम समये कार्यनी उत्पत्ति न मानीए, तो पछी बीजे क्षणे पण कार्य थयुं नहीं कहेवाय, एम त्रीजे चोथे विगेरे क्षणे पण कार्य उत्पन्न थयेलुं कहेवाशे नहीं. मात्र एक छेल्लेज क्षणे कार्यसिद्धि कहेवाशे. तेम मानवाथी प्रथमादिक क्षणोनी व्यर्थता थशे. वळी अंत्य क्षणेज कांइ सर्व कार्यसिद्धि देखाती नथी. माटे 'कडेमाणे कडे' ए भगवाननुं वाक्य युक्तियुक्त अने सत्यज छे." इत्यादिक अनेक युक्तिथी बोध कर्या छतां पण जमालिए पोतानो कदाग्रह छोड्यो नहीं, त्यारे केटलाक शिष्यो 'आ (जमालि) अयोग्य छे, जिनवचननो उत्थापक छे, अने पोताना मतनुं स्थापन करनार निह्नव छे.' एम जाणी तेने तजीने भगवंतनी पासे गया.

पछी जमालि पण नीरोगी थयो त्यारे विहार करतो करतो चंपानगरीमां भगवाननी पासे आवी कहेवा लाग्यो के 'हुं तमारा बीजा शिष्योनी जेम छद्मस्थ नथी, पण हुं तो केवळी छुं.' ते सांभळीने श्रीगौतमस्वामीए पूछ्युं के 'जो तुं केवळी हो तो कहे के आ लोक शाश्वत छे के अशाश्वत? तथा जीव शाश्वत छे के अशाश्वत?' ते सांभळीने तेना प्रत्युत्तर आपवाने असमर्थ एवो जमालि मौन धारीनेज रह्यो. त्यारे श्रीगौतमस्वामी बोल्या के 'हे जमालि! तुं केवळीनुं नाम धारण करे छे अने उत्तर केम आपी शकतो नथी? हुं छद्मस्थ छुं तोपण तेनो उत्तर जाणुं छुं ते सांभळ–लोक बे प्रकारनो छे. शाश्वत अने अशाश्वत. तेमां द्रव्यथी आ लोक शाश्वत (नित्य) छे, अने पर्याय थकी एटले उत्सर्पिणी अवसर्पिणी विगेरे काळप्रमाणथी अश्वात (अनित्य) छे. तथा जीव पण द्रव्यथी नित्य छे, अने देव, मनुष्य, तिर्यंच तथा नरकगतिरूप पर्यायथी अनित्य छे." ते सांभळीने तेना उत्तर उपर श्रद्धा नहीं राखतो जमालि विहार करी श्रावस्ती नगरीए गयो.

सुदर्शना साध्वीए पण जमालिनो मत अंगीकार कर्यो हतो. ते सुदर्शना पण तेज नगरीमां ढंक नामना भगवानना उपासक कुंभारनी शाळामां रहीने लोकोनी पासे जमालिना मतनी प्ररूपणा करवा लागी. ते सांभळी ढंके विचार्युं के "जुओ! कर्मनी केवी विचित्रता छे? आ सुदर्शना भगवाननी पुत्री छतां पण कर्मना वशथी असत् प्ररूपणा करे छे, तोपण जो माने तो हुं कांइ पण उपायथी प्रतिबोध पमाडुं तो मने मोटुं फळ प्राप्त थाय." एम विचारीने तेणे एकदा पोताना भट्ठामां स्वाध्याय करती सुदंसणा (सुदर्शना) साध्वीनी साडीपर एक अंगारो नांख्यो, तेथी साडीमां [illegible] छिद्र थयां

[illegible] सुदर्शनाय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] आ प्रमाणे [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] सुदर्शना [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible]

आ प्रमाणे [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] आ [illegible] [illegible]

॥ इति [illegible] [illegible] ॥

[illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

अर्थ–“ पर (अन्य)ना परिताप (आर्तध्यान–चिंता) ने विषे एटले पर-परिवादमां–पारकी निंदा करवामां आसक्त एवा संसारमां रहेला (संसारी) जीवो अनेक प्रकारना कंदर्प (हास्यादिक करवुं ते) अने शब्दादिक विषयोना भोग एटले सेवनवडे करीने अन्यने अरति उत्पन्न करे तेना विनोदने करे छे. एवं एटले ए प्रमाणे बीजाने परिताप उत्पन्न करीने पोताना आत्माने सुख उत्पन्न करे छे.” ४६१.

आरंभपायनिरया, लोईअरिसिणो तहा कुलिंगी अ।
दुहओ चुक्का नवरं, जीवंति दरिद्द जियलोए ॥ ४६२ ॥

अर्थ–“ आरंभ (पृथ्वीकायादिकनुं उपमर्दन) अने पाक ते रंधनक्रिया–तेमां निरत (आसक्त) एवा लौकिक ऋषिओ (तापस विगेरे) तथा त्रिदंडी विगेरे कुलिंगीओ यतिधर्मथी अने श्रावकधर्मथी एम बन्ने धर्मथी भ्रष्ट थइने मात्र आ जीवलोक विषे दरिद्र (धर्म रूपी धन रहित) एवा छता जीवे छे.” ४६२.

सव्वो न हिंसियव्वो, जह महिपालो तहा उदयपालो।
न य अभयदाणवइणा, जणोवमाणेण होयव्वं ॥ ४६३ ॥

अर्थ–“ साधुए सर्व जीव (कोइ पण जीव)नी हिंसा करवी नहीं. जेवो महिपाळ के० राजा तेवोज उदकपाळ के० रंक पण जाणवो. (मुनि राजाने अने रंकने समान गणे छे, एटले एकेने मारता नथी.) अभयदानना व्रतवाळा साधुए सामान्य जननी उपमावडे थवुं नहीं. एटले के करेलानो प्रतिकार करवो (कोइए आपणने मार्या होय, तो तेनुं वैर लेवुं) इत्यादिक सामान्य जनना कहेणी छे अने कृति पण होय छे तेनी समानता धारण करवी नहीं.”

पाविज्जइ इह वसणं, जणेण तं छगलओ असंतुत्ति।
न य कोई सोणियबलिं, करेइ वग्घेण देवाणं ॥ ४६४ ॥

अर्थ–“ क्षमा करनार प्राणी आ संसारमां व्यसन एटले निंदारूप कष्टने पामे छे. केमके लोकमां क्षमावान प्राणीने एवुं कहेवामां आवे छे के ‘ आ तो असमर्थ (विचारो) बकरा जेवो छे. ’ एवी रीते लोको तेनो उपहास करे छे, बीजाथी पीडा पामतो छतो पण ते क्षमाज करे छे, माटे आ असमर्थ बकरा जेवो छे, एम लोको कहे छे; वळी कोइ

गाथा ४६२-लोईय । कुलिंगीय । जीयलोए ।
गाथा ४६३-उदकपालो-रकः । होइव्व ।
गाथा ४६४-छग्गलओ । असत्तोत्ति ।

[illegible]

वखंड सूणेण जीवो, [illegible] ।
उरिमह मां [illegible] वल्लजीवो [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

पंचिंदियत्तणं माणुसत्तणं आयरिए जणे सुइदं ।
साहुसमागम सुणणा, सद्दहणारोग पव्वज्जा ॥ [illegible] ॥

[illegible]

लोए सहियं [illegible] ।
[illegible] सुणणी, [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

इक्कं पि नत्थि जं सुट्ठु, सुचरियं जह इमं बलं मज्झ ।
को नाम दढक्कारो, मरणंते मंदपुन्नस्स ॥ ४६८ ॥

अर्थ–" एक पण तेवुं सुष्ठु (सारुं) सुचरित (सारुं आचरण) नथी, के जे सुचरित मारुं बळ (आधार रूप) थाय. माटे मंद पुण्यवाळा एवा मारो मरणने अंते कोण आधार थशे ? " ४६८.

सूलविसअहिविसूईपाणीसत्थग्गिसंभमेहिं च ।
देहंतरसंकमणं, करेइ जीवो मुहुत्तेण ॥ ४६९ ॥

अर्थ–" शूळ (कुक्षिमां शूळ आववुं ते), विष (झेरनो प्रयोग), अहि (सर्पनुं विष), विसूचिका (अजीर्ण) पाणी (जळमां बूडवुं), शस्त्र (शस्त्रनो प्रहार) अग्नि (अग्निमां बळवुं), तथा संभ्रम एटले भय स्नेहादिक वडे एकदम हृदयनुं रुंधाइ जवुं–आटला प्रकारे करीने आ जीव एक मुहूर्त मात्र (क्षणवार)मां देहान्तरमां संक्रमण (बीजा देहमां प्रवेश) करे छे. एटले मृत्यु पामी परभवमां जाय छे. अर्थात् प्राणीओनुं आयुष्य अति चपळ छे." ४६९.

कत्तो चिंता सुचरियतवस्स गुणसुट्ठियस्स साहुस्स ।
सोगइगमपडिहत्थो, जो अच्छइ नियमभरियभरो ॥ ४७० ॥

अर्थ–" सद्गतिमां जवाने प्रतिहस्त (दक्ष) एटले समर्थ अने नियम (अभिग्रह) वडे भर्यो छे धर्मकोश (धर्मभंडार)नो भार जेणे एवा जे साधु रहे छे (होय छे), ते सुचरित तप एटले क्षमा सहित आचरण कर्युं छे तप जेणे एवा अने चारित्रादिक गुणने विषे सुस्थित एटले दृढ थयेला साधुने क्यांथी चिंता होय ? एटले तेवा साधुने मरणकाळे पण क्यांथी फीकर होय ? नज होय." ४७०.

साहंति अ फुडं विअडं, मासाहसमउणसरिसया जीवा ।
न य कम्मभारगरुयत्तणेणं तं आयरंति तहा ॥ ४७१ ॥

गाथा ४६८–नहिं । सुट्ठु । दढकारो । दढभाल अवष्टंभ आधारः ।

गाथा ४६९–विसूइअ । पाणिअ । सत्थग्गि–शस्त्राग्नि । मुहुत्तेण ।

गाथा ४७०–कुत्तो । सुचरिय । सुगतिसुट्ठियस्स । साहुस्स । अच्छइ । सुगइ सुगति [illegible]

गाथा ४७१–[illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible]

अर्थ-“ जे नट होय छे ते वैराग्यनी एवी वातो कहे छे के जेथी घणा लोको निर्वेद (वैराग्य) पामे छे. तेवी रीते मूर्ख माणस सूत्रार्थ भणीने पण (बोलीने-उपदेश आपीने पण) पछीथी ते प्रमाणे वर्तता नथी, परंतु माछलां पकडवा माटे जाळ लइने जळमां उतरे छे. (उतर्या जेवुं करे छे.) अर्थात् मूर्ख माणस सूत्रना अध्ययन (अभ्यास)ने विपरीत आचरण करवाथी व्यर्थ करे छे.” ४७४.

कह कह करेमि कह मा करेमि, कह कह कयं बहुकयं मे ।
जो हिययसंपसारं, करेइ सो अइ करेइ हियं ॥ ४७५ ॥

अर्थ-“ हुं केवी केवी रीते धर्मानुष्ठान करुं ? केवी रीते न करुं ? अने केवी रीते करेलुं ते धर्मानुष्ठान मने बहु करेलुं एटले घणुं गुणकारी थाय ? आवी रीते जे पुरुष हृदयमां संप्रसार (आलोचना-विचार) करे छे ते पुरुष अत्यंत आत्महित करे छे (करी शके छे).” ४७५.

सिढिलो अणायरकओ, अवसवसकओ तहा कयावकओ ।
सययं पमत्तसीलस्स, संजमो केरिसो होज्जा ॥ ४७६ ॥

अर्थ-“ शिथिल, अनादर वडे (आदर रहित) करेलो, अवशपणाथी एटले गुरुनी परतंत्रताथी करेलो अने कांइक पोतानी स्वतंत्रताथी करेलो, तथा कृतापकृत एटले कांइक (संपूर्ण) करेलो अने कांइक विपरीत करेलो एटले विराधेलो एवो निरंतर प्रमत्तशील (प्रमादना आचरणना स्वभाववाळा)नो संयम एटले प्रमादीए ग्रहण करेलो तेवा प्रकारनो संयम केवो होय ? अर्थात् सर्वथा तेनो ते संयम (चारित्र) कहेवायज नहीं.” ४७६

चंदु व्व कालपक्खे, परिहाइ पए पए पमायपरो ।
तह उग्घरविग्घरनिरंगणो य ण य इच्छियं लहइ ॥ ४७७ ॥

अर्थ-“ कृष्ण पक्षमां चंद्रनी जेम एटले जेम कृष्ण पक्षमां चंद्र दिवसे दिवसे हीन थाय छे, तेम प्रमादवान पुरुष पगले पगले हानि पामे छे. जोके ते गृहनो (गृहस्थपणाना गृहनो) त्याग करीने घरना आश्रयरहित थया छतां अने स्त्रीरहित थया छतां पण इच्छित एटले स्वर्गादिक वांछित फळने पामतो नथी.” ४७७.

गाथा ४७५-कहवा करेमि । हियइ सपसारो । गाथा ४७६-अणायारकओ । कहाविकओ । कयावकओ=कृतापकृत: । हुज्जा ।

गाथा ४७७-कालपक्खे=कृष्णपक्षे । विहवर । ण य । उद्गृहविगृहनिरंगन:= ऊज्झितं गृहं येन, गृहाद्विरहितो विगृह:, निर्गता अंगना यस्य, स्त्री रहित इत्यर्थ: ।

मीओखिमा निन्दुंभो. [illegible] ।
अंगमं नणेनो. नंगम्म पी [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

न नेहिं [illegible] [illegible]. [illegible] ।
[illegible] [illegible]. [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

जो न वि [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

करवो नहीं एम तुलना करी, आ प्रमाणे आर्यमहागिरि विगेरेना दृष्टांते करीने घ
प्रकारे बताव्युं, तथा घणे प्रकारे समिति, कषायादिकना फळभूत दृष्टांतो देखाडवा व
नियंत्रणा देखाडी, तोपण आ जीव जो प्रतिबोध न पामे तो शुं करीए? खरेखर
जीवनी चिरकाळ भवभ्रमण रूप भवितव्यताज छे; नहीं तो ते केम प्रतिबोध न पामे
माटे जरुर तेनी एवीज भवितव्यता छे एम जाणवुं." ४८१.

किंमगं तु पुणो जेणं, संजमसेढी सिढिलीकया होई ।
सो तं चिअ पडिवज्जइ, दुक्ख पच्छा हु उज्जमई ॥ ४८२ ॥

अर्थ—" वळी हे शिष्य ! जे पुरुषे संयमश्रेणी (ज्ञानादिक गुणश्रेणी) शिथिल क
रेली छे ते पुरुषे करीने शुं ? (ते पुरुष शा कामनो? कांइज नहीं). केमके ते पुरुष
निश्चे ते (शिथिलपणा)नेज पामे छे, अने पछी (शिथिल थया पछी) दुःखे करीने
उद्यम करी शके छे. एटले शिथिल थया पछी उद्यम करवो अशक्य छे. माटे प्रथम
थीज शिथिल थवुं नहीं, ए अहीं तात्पर्य छे." ४८२.

जइ सव्वं उवलद्धं, जइ अप्पा भाविओ उवसमेणं ।
कायं वायं च मणं, उप्पहेण जह न देइ ॥ ४८३ ॥

अर्थ—" वळी हे भव्य प्राणी ! जो तें पूर्वोक्त सर्व सामग्री प्राप्त करी होय, अने
जो उपशमवडे आत्मा भावित (वासित) कर्यो होय, तो तुं काययोग वचनयोग अने
मनयोगने जे प्रमाणे उन्मार्गे न जाय तेम कर—तेवी रीते प्रवर्ताव." ४८३

हत्थे पाए निक्खिव्वे, कायं चालिज्ज तं पि कज्जेण ।
कुम्मो व्व सया अंगे, अंगोवंगाइं गोविज्जा ॥ ४८४ ॥

अर्थ—" हाथ तथा पगने संकोचवा एटले कार्य विना हलाववा नहीं, अने जे
कायाने एटले काययोगने चलाववो ते पण कार्ये करीने एटले कार्य होय तोज चला-
ववो, कार्य विना चलाववो नहीं; अने काचबानी जेम निरंतर अंगोने विषे भुज, नेत्र
विगेरे अंगोपांगने गुप्त राखवां एटले तेने पण कार्य विना चलाववां नहीं." ४८४.

अहीं कूर्म (काचबा)नुं दृष्टांत जाणवुं.

कूर्मनी कथा.

वाराणसी नामनी महापुरीमां गंगानदीनी पासे एक मृदुगंगा नामनो मोटो द्रह
छे. तेनी समीपे मालुया कच्छ नामे एक मोटुं गहन वन छे. ते वनमां बे दुष्ट शी-

गाथा ४८२-होइ । चिय । सज्जमइ । गाथा ४८३-भाविउ । उवसमेण । उप्प-
हियं जा न देइ । देही=प्रवर्तय । गाथा ४८४-कलिज्जे । चालिज्ज । कुम्म व सय अंगंमि ।

[illegible]

[illegible]

॥ इति [illegible] ॥

[illegible]

अर्थ– [illegible]

अणवट्ठियं मणो जस्स, झायइ बहुयाइं अट्टमट्टाइं ।
तं चिंतिअं च न लहइ, संचिणइ पावकम्माइं ॥ ४८६ ॥

अर्थ--"जेनुं अनवस्थित (अति चपळ) मन घणा दुष्ट विचारोने (आर्त्त ने रौद्रने-आळजाळने) हृदयमां चिंतवे छे. ते चिंतित (मनोवांछित)ने पामतो नथी, पण उलटां दरेक समये पापकर्मोने एकठां करे छे-वृद्धि पमाडे छे. माटे मनने स्थिर करीने सर्व अर्थने साधनार एवा संयमने विषे यतना करवी-उद्यम करवो. ४८६.

जह जह सव्वुवलद्धं, जह जह सुचिरं तवोवणे वुच्छं ।
तह तह कम्मभरगुरु, संजमनिव्वाहिरो जाओ ॥ ४८७ ॥

अर्थ-"कर्मना भर (समूह) थी गुरु (व्याप्त) थयेला पुरुषे (भारेकर्मी जीवे) जेम जेम सर्व सिद्धान्तनुं रहस्य उपलब्ध (प्राप्त) कर्युं, अने जेम जेम चिरकाळ सुधी तपोधन (तप रूपी धनवाळा) साधुओने विषे (साधुसमुदायने विषे) निवास कर्यो, तेम तेम ते (गुरुकर्मी) चारित्र थकी बाह्य करायो-भ्रष्ट थयो." ४८७.

ते उपर दृष्टान्त कहे छे.—

विज्जप्पो जह जह ओसहाइं पिज्जेइ वायहरणाइं ।
तह तह से अहिययरं, वाएणा ऊरिअं पुट्टं ॥ ४८८ ॥

अर्थ-"आप्त (हितकारी) वैद्य जेम जेम वायुने हरण (नाश) करनारां सुंठ, मरी विगेरे औषधो पाय छे, तेम तेम ते (असाध्य रोगवाळा)नुं उदर (पेट) वायुए करीने अधिकतर पूर्ण (भरायेलं) थाय छे ते दृष्टान्त प्रमाणे श्रीजिनेश्वर रूपी वैद्य पण ज्ञानावरणादिक कर्म रूपी वायुने शांत करनार सिद्धांतरूपी घणुं औषध पाय छे, तो पण (बहुकर्मी जीवोनो) असाध्य एवो कर्म रूपी वायु उलटो वृद्धि पामे छे." ४८८

दड्ढजउमकज्जकरं, भिन्नं संखं न होई पुणकरणं ॥
लोहं च तंबविद्धं, न एइ परिकम्मणं किंचि ॥ ४८९ ॥

अर्थ-"बळेली जतु (लाख) अकार्यकर छे-कांइ पण कामनी नथी. भांगी (फूटी) गयेला शंखनुं फरी सांधवुं थतुं नथी (फरी संधातो नथी). तथा तांबावडे विंधायेलुं मळेलुं-एकरूप थयेलुं लोढुं कांइ पण (जरा पण) परिक्रमण (सांधवा) ना उपायने पाळतुं नथी. तेवीज रीते असाध्य कर्मथी वींटायेलो भारेकर्मी जीव धर्मने विषे सांधी-जोडी शकातो नथी." ४८९.

गाथा ४८६-संचिणय । गाथा ४८७-सुचिरो । वुच्छउत्ति उषितं । भारगुरू । संयमान्निर्बासित । निव्वाहिरउ जाओ ।
गाथा ४८८-वाइहरणायं । ऊरिय पोट्टं । गाथा ४८९-होइ ।

[illegible]

को दांही त्र्यणं, [illegible] ।
[illegible] देवलोगो, न [illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ— [illegible]

[illegible]

श्री [illegible], [illegible] ।
[illegible] ॥

अर्थ— [illegible]

[illegible]

[illegible] ।
भावना न [illegible] ॥

अर्थ— [illegible]

[illegible]

श्री [illegible]

[illegible]

अर्थ— [illegible]

[illegible]

यती नथी, तथा तेने परलोक पण (परभवमां देवपणुं के मनुष्यपणुं) प्राप्त थतो नथी." ४९३ द्रव्यपूजा अने भावपूजामां भावपूजा श्रेष्ठ छे ते बतावे छे.

कंचणमणिसोवाणं, थंभसहस्सूसिअं सुवन्नतलं।
जो कारिज्ज जिणहरं, तओ वि तवसंजमो अहिओ ॥४९४॥

अर्थ–"कांचन (सुवर्ण) अने चंद्रकांतादिक मणिओना सोपान (पगथीयां)-वाळुं, हजारो स्तंभोए करीने उच्छित एटले विस्तारवाळुं अने सुवर्णनी भूमि (तळ) वाळुं जिनगृह (जिनमंदिर) जे कोइ पुरुष करावे, तेना करतां पण एटले तेवुं जिनमंदिर कराववा करतां पण तप अने संयमनुं पालन (करवुं ए) अधिक छे, अर्थात् भावपूजा अधिक छे." ४९४.

निब्बीए दुब्भिक्खे, रन्ना दीवंतराओ अन्नाओ।
आणेऊणं बीअं, इह दिन्नं कासवजणस्स ॥ ४९५ ॥

अर्थ–"आ लोकमां निर्बीज एटले बीज पण न मळी शके एवा दुकाळसमयमां राजाए लोकोने माटे बीजा द्वीपमांथी बीज अगावीने (मंगावीने) ते (बीज) कर्षक लोकने एटले खेडुतोने आप्युं." ४९५.

केहिंचि सव्वं खइयं, पइन्नमन्नेहिं सव्वमद्धं च।
वुत्तंगयं च केई, खित्ते खुट्टंति संतत्था ॥ ४९६ ॥

अर्थ–"ते राजाए आपेला बीजने केटलाएक बधुं खाइ गया, बीजा केटलाए खेडुतोए ते सर्व बीजने वावीने उगाडयुं, केटलाएके अर्धुं खाधुं ने अर्धुं वाव्युं, त[illegible] केटलाक खेडुतो वावीने पछी ज्यारे ते उग्युं के तरतज एटले पूरुं पाकता दीधा प[illegible] लांज त्रास पामीने एटले पाछळथी राजसेवको आ धान्य लइ जशे एवा भयथी धान्य पोताने घेर लइ जवा माटे क्षेत्रमां कूटवा लाग्या. कूटीने दाणा काढवा लाग्या. तेने पण राजसेवकोए गुन्हेगार गणी पकडया अने घणुं दुःख आप्युं ४९६.

[illegible] गाथामां कहेला दृष्टान्तनो उपनय बतावे छे-

[illegible]गा जिणवरिंदो, निब्बीयं धम्मविरहिओ कालो।
[illegible] भूमी, कामंगवग्गो य चत्तारि ॥ ४९७ ॥

[illegible]-[illegible]नसूसिअं-स्तम्भसहस्रोच्छ्रितम्।
[illegible] कारयत्-कारयेत्।
[illegible] काश्यपजनस्य-कर्षकजनस्य।
[illegible] पवनं। पइन्न-प्रकीर्णम्। वुत्तगयं-उप्तागतम्। [illegible]
[illegible] खुट्टन्ति। संतत्था-संत्रस्ताः।
[illegible] काम[illegible]।

[illegible]

अम्मंजगाहि मंचं, [illegible] अंडं च [illegible] ।

नाहिं धम्मवीओ, उत्तं नीअं च निरागि ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] मत्तं [illegible], [illegible] लहिति [illegible] ।

[illegible] , [illegible] ने ओरे[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

अग्ने [illegible], [illegible] ।

आने च [illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] नं नाणि [illegible], [illegible] ।

[illegible] नी [illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

अर्थ–" हे भव्य जीव! जो कदाच तुं समिति विगेरे उत्तर गुणना भार (समूह) सहित मूलगुणना भारने (पंचमहाव्रतना भारने) धारण करवा (वहन करवा) शक्तिमान न हो तो तारे जन्मभूमि, विहारभूमि अने दीक्षाभूमि ए त्रण भूमिनो त्याग करीने सुश्रावकपणुं अंगीकार करवुं ते अति श्रेष्ठ छे; अर्थात् तुं अति श्रेष्ठ एवा सुश्रावकपणाने अंगीकार कर." ५०१

अरिहंतचेइआणं, सुसाहू पूयारओ दढायारो।
सुसावगो वरतरं, न साहुवेसेण चुअधम्मो ॥ ५०२ ॥

अर्थ–" वळी हे भव्य प्राणी! जो तुं साधुपणुं धारण करवा असमर्थ हो, तो अरिहंतना चैत्य (बिंब)नी पूजामां तत्पर अने सुसाधु एटले उत्तम साधुओनी सत्कार सन्मानादिरूप पूजामां आसक्त अने दृढाचारवाळो (अणुव्रत पाळवामां कुशळ) एवो सुश्रावक था ते घणुं श्रेष्ठ छे, एटले तेवुं श्रावकपणुं धारण करवुं ते बहु सारुं छे. परंतु साधुवेषे करीने–साधुवेष धारण करीने धर्मथी च्युत- भ्रष्ट थवुं ए श्रेष्ठ नथी. केमके आचारभ्रष्ट थइने मात्र वेष धारण करवाथी कांइ पण फळ नथी." ५०२.

सव्वं ति भाणिऊणं, विरई खलु जस्स सव्विया नत्थि।
सो सव्वविरइवाई, चुक्कइ देसं च सव्वं च ॥ ५०३ ॥

अर्थ–" सर्व एटले 'सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि' हु सर्व सावद्य योगनुं प्रत्याख्यान (निषेध) करुं छुं एम प्रतिज्ञा करवावडे सर्व सावद्य योगनुं प्रत्याख्यान करीने पण जेने निश्चे सर्व (संपूर्ण) षट्कायना पालन रूप विरति नथी ते सर्व विरतिने कहेनारो (हुं सर्वविरति छुं एम प्रलाप करनारो) देशविरतिने (श्रावक धर्मने) अने सर्वविरतिने (साधुधर्मने) बंनेने चूके छे- हारे छे, अर्थात बन्नेथी भ्रष्ट थाय छे."५०३.

जो जहवायं न कुणइ, मिच्छदिट्ठी तओ हु को अन्नो।
वुड्ढेइअ मिच्छत्तं, परस्स संकं जणेमाणो ॥ ५०४ ॥

अर्थ–" जे पुरुष यथावाद एटले जेवुं वचन बोले तेवुं क्रियानुष्ठानादिक करतो नथी ते पुरुषथी बीजो कयो पुरुष मिथ्यादृष्टि जाणवो? एनेज मिथ्यादृष्टि जाणवो. तेनाथी बीजो कोइ विशेष मिथ्यादृष्टि नथी. केमके ते पुरुष बीजा लोकोने शंका उत्पन्न करावतो सतो मिथ्यात्वने वृद्धि पमाडे छे." ५०४.

गाथा ५०२ चेईआणं । पुआरओ । सुस्सावगो । च्युतधर्मः ।
गाथा ५०३-भाणिउणं । विरई । ।विया=सविका-सर्वा । विरइवाहो ।
गाथा ५०४-वड्ढेई मिच्चत्त । जणेमाणे ।

[illegible]

आलोए निय [illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] [illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible]

लोए वि जो ससूगो, अलिअं सहसा न भासए किंचि।
अह दिक्खिओ वि अलियं, भासइ तो किंचि दिक्खाए॥

अर्थ–" लोकने विषे पण जे सशूक (पापभीरु–पापथी भय पामतो) माणस होय छे ते सहसा (विचार कर्या विना) कांइ पण असत्य बोलतो नथी; त्यारे जो दीक्षित थईने (दीक्षा लइने) पण ते असत्य बोले, तो दीक्षाए करीने शुं ? अर्थात् दीक्षा लेवानुं शुं फळ ? कांइज नहीं." ५०८.

महव्वयअणुव्वयाइं, छड्डेउं जो तवं चरइ अन्नं।
सो अन्नाणी मुढो, नावा बुड्डो मुणेयव्वो ॥ ५०९ ॥

अर्थ–" जे पुरुष महाव्रतोने अथवा अणुव्रतोने तजीने बीजुं तप करे छे, एटले महाव्रत अने अणुव्रत शिवाय बीजां तप करे छे ते अज्ञानी अने मूर्ख माणस (अज्ञान कष्ट करनार माणस) नावबडे करीने पण एटले हाथमां नावा आव्या छतां पण बूडेलो जाणवो. जेम कोइ समुद्रमां रहेलो मूर्ख माणस हाथमां आवेली नावने तजीने ते नावना लोढाना खीलाए करीने समुद्र तरवाने इच्छे ते री रीतनो तेने जाणवो." ५०९.

सुबहुं पासत्थजणं, नाउणं जो न होइ मज्झत्थो।
न य साहेइ सकज्जं, कागं च करेइ अप्पाणं ॥ ५१० ॥

अर्थ–" बहु प्रकारे पासत्थानुं स्वरूप जाणीने पण (पार्श्वस्थ जन संबंधी शिथिलताने जाणीने पण) जे मध्यस्थ होतो नथी ते पोतानुं मोक्षरूप कार्य साधी शकतो नथी, अने पोताना आत्माने कागडा तुल्य करे छे." ५१०.

परिचिंतिऊण निउणं, जइ नियमभरो न तीरए वोढुं।
परचित्तरंजणेणं, न वेसमित्तेण साहारो ॥ ५११ ॥

अर्थ–" निपुणताथी (सूक्ष्म बुद्धिथी विचार करीने जो नियमनो भार (मूळ अने उत्तर गुणनो समूह) वहन करवा (धारण करवा) शक्तिमान न थवाय, तो [illegible] बीजाना चित्तने रंजन (खुशि) करनार एवा वेषमात्रे करीने [illegible]

[illegible] ५०८ [illegible] । [illegible] । अह दिक्खिय [illegible] । [illegible] ।

[illegible] ५०९–[illegible] [illegible] । [illegible] । अन्नाणी । बुड्डो [illegible] ।

[illegible] ५१०–[illegible] ।

[illegible] ५११–[illegible] ।

[illegible]

निष्कामनयन्न [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

अर्थ—[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

अर्थ—[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

अर्थ—[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

अर्थ—[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

अर्थ–" कांतर (मोटुं अरण्य एटले अटवीमां आवी चडवुं), रोध (राजानी लडाइ विगेरे प्रसंगे दुर्गमां रुंधावुं), मद्धाण (विषममार्गे चालवुं) ओम (दुष्काळ) अने गेलन्न (ग्लानता–रोगीपणुं) इत्यादिक कार्यने (प्रसंगोने) विषे पण एटले एवा कारण प्राप्त थया छतां पण सर्व आदर (शक्ति) वडे करीने यतना पूर्वक साधुने जे करवा लायक कार्य छे तेज सुसाधु करे छे; अर्थात् प्रबळ कारण प्राप्त थया छतां पण साधुए पोतानी सर्व शक्तिथी पोतानुं जे कर्तव्य छे ते यतना पूर्वक अवश्य करवुं. " ५२३.

आयंरतरसंमाणं, सुदुंकरं माणसंकडे लोए।
संविग्गपक्खियत्तं, ओसन्नेणं फुडं काउं ॥ ५२४ ॥

अर्थ–" अहंकारे करीने सांकडा एटले अभिमानथी भरेला एवा आ लोक (संसार) ने विषे अत्यंत आदरे करीने (संविग्न पणाए करीने) सुसाधुओनुं सन्मान करवुं ए अति दुष्कर छे, तेमज अवसन्न एटले शिथिल आचारवाळाने स्फुट–प्रगटपणे संविग्ननुं पक्षपाती पणुं करवुं एटले संविग्न पक्षना अनुरागी थवुं ए दुष्कर छे. " ५२४.

सारणचइआ जे गच्छनिग्गया पविहरंति पासत्था।
जिणवयणबाहिरा वि य, ते अ पमाणं न कायव्वा ॥ ५२५ ॥

अर्थ–" सारणा के० स्मारणा–भूली गयेलानुं स्मरण आपवुं एटले आ काम आवी रीते करवुं एवी वारंवार शिक्षा आपवाथी उद्वेग पामेला अने तेथी करीने गच्छ बहार नीकळी गयेला (स्वेच्छाए वर्तवा माटे गच्छ बहार गयेला) एवा जे पासत्थाओ स्वेच्छाए विहार करे छे तेओ जिनवचनथी बाह्य छे, अर्थात् प्रथम शुद्ध चारित्रनुं पालन करीने पछी प्रमादी थयेला छे तेओने प्रमाण रूप गणवा नहीं, एटले साधुपणामां गणवा नहीं. " ५२५.

हीणस्स विसुद्धपरूवगस्स, संविग्गपक्खवायस्स।
जा जा हविज्ज जयणा, सा सा से निज्जरा होइ ॥ ५२६ ॥

अर्थ–" विशुद्ध [illegible] करनार, अने संविग्ननो पक्षपात छे जेने एवा हीननी ([illegible]) जे जे यतना ([illegible]) होय छे, ते ते यतना तेने [illegible] छे. " ५२६.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

अर्थः— [illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

अर्थः— [illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

अर्थः— [illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

अर्थ—"पांच महाव्रतादिक चरण अने पिंडविशुद्ध्यादिक करणने विषे आळसु तथा अविनयवडे बहुल एटले घणा अविनयवाळा एवा पुरुषोने आ उपदेशमाळा प्रकरण निरंतर अयोग्य छे, अर्थात् तेओने आ उपदेश आपवा योग्य नथी. केमके सो हजार (लाख)ना मूल्यवाळो मणि कुत्सित भाषावाळा कागडाने (कागडानी कोटे) बांधवा लायक नथी." ५३०.

नाऊण करयलगयामलं व सब्भावओ पहं सव्वं ।
धम्मंमि नाम सीइज्जइ त्ति कम्माइं गरूआइं ॥ ५३१ ॥

अर्थ—"करतलमां रहेला आमलक (आमळाना) फळनी जेम अथवा अमल के० निर्मळ क के० पाणीनी जेम सद्भावथी (सत्य बुद्धिथी) सर्व (ज्ञानादि रूप) मोक्षमार्ग जाणीने पण आ जीव धर्मने विषे (नाम संभावनाने अर्थे छे) प्रमादी थाय छे तेमां ते प्राणीना गुरुकर्मोज कारण छे अर्थात् ते जिव भारे कर्मी होवाथी—ज्ञानावरणी यादि कर्मनी बहुलता होवाथी ते जाणतो सतो पण धर्म करतो नथी." ५३१.

धम्मत्थकाममुक्खेसु, जस्स भावो जहिं जहिं रमइ ।
वेरग्गेगंतरसं, न इमं सव्वं सुहावेइ ॥ ५३२ ॥

अर्थ—"धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार पुरुषार्थोने विषे जे प्राणीनो भाव (अभिप्राय) जे जे (भिन्न भिन्न) पदार्थोने विषे रमे छे (वर्ते छे); एटले प्राणीओनो अभिप्राय भिन्न भिन्न पदार्थोमां होय छे, माटे जेने विषे वैराग्यनोज एकांत रस रहेलो (भरेलो) छे एवुं (वैराग्य रसमय) आ उपदेशमाला प्रकरण सर्व प्राणीओने सुखकर नथी (सुख उत्पन्न करतुं नथी); किंतु वैराग्यवाळा पुरुषोनेज आ प्रकरण सुख उपजावे छे." ५३२.

संजमतवालसाणं, वेरग्गकहा न होइ कन्नसुहा ।
संविग्गपक्खियाणं, हुज्ज व केसिं चि नाणीणं ॥ ५३३ ॥

अर्थ—"सत्तर प्रकारना संयम तथा तपस्याने विषे आळसु (प्रमादी) एवा पुरुषोने वैराग्यकथा कर्णने सुखकारी थती नथी, प्रमादीने वैराग्यनी वार्ता रुचती नथी; परंतु संविग्न पक्षवाळा (मोक्षनी अभिळाषावाळा)ने अथवा केटलाएक ज्ञानीनेज वैराग्य कथा कर्णने सुखकारी थाय छे, सर्वने सुखकारी थती नथी." ५३३.

गाथा ५३१-सीइज्जइ=विषीदति-प्रमादी भवति ।
गाथा ५३२ मोक्खेसु । वेरग्गेगंतरसं । सुहावेइ ।
गाथा ५३३-हुज्ज व । केसिंच । नाणीणं ।

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

छे एवाए एटले धर्मदासगणिए आ उपदेशमाळा प्रकरण पोताना अने परना (भव्य जीवोना) हितने माटे रच्युं छे." ५३७.

जिंणवयणकप्परुख्खो, अणेगसुत्तत्थसालिविच्छिन्नो ।
तवनियमकुसुमगुच्छो, सुग्गइफलबंधणो जयइ ॥ ५३८ ॥

अर्थ-" अनेक सूत्रार्थ रूपी शाखाओवडे विस्तार पामेलो, तप अने नियमरूप पुष्पोना गुच्छवाळो तथा देव मनुष्यरूप सद्गति रूपी फळनी निष्पत्तिवाळो (सद्गतिने बंधावनारो) आ जिनवचन (द्वादशांगी) रूप कल्पवृक्ष (मनवांछित फल आपनार) जय पामे छे-सर्वोत्कृष्टपणे वर्ते छे." ५३८.

जुग्गा सुसाहुवेरग्गिआण, परलोगपत्थिआणं च ।
संविग्गपख्खीआणं, दायव्वा बहुसुआणं च ॥ ५३९ ॥

अर्थ-" सुसाधुओने, वैराग्यवाळा श्रावकोने अने परलोकना साधनमां प्रस्थित थयेला-चालेला (उद्यमवाळा) एवा संविग्न पक्षीओने योग्य एवी आ उपदेशमाळा बहुश्रुत (पंडितो)ने आपवा योग्य छे. एटले आ उपदेशमाळा पंडितोनेज आनंद आपनारी छे, पण मूर्खने आनंद आपनारी नथी." ५३९.

इय धम्मदासगणिणा, जिणवयणुवएसकज्जमालाए ।
मालव्व विविहकुसुमा, कहिआय सुसीसवग्गस्स ॥ ५४० ॥

अर्थ-" आ प्रमाणे श्री [illegible] (श्री धर्मदासगणि नामना आचार्ये [illegible]) जिनवचनना उपदेशना कार्यनी माळा (परंपरा)ए करीने पुष्पमाळानी जेम [illegible] पुष्पवाळी आ उपदेशमाळा सारा शिष्योना [illegible] माटे कही छे-करी छे." ५४०.

[illegible] ॥ ५४१ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनाजिनुं स्तवन ॥

महावीर प्रभु घेर आवे ॥ ए देशी ॥

नित्य समरु साहेब सयणां, नाम सुणतां सीतल वयणां, गुण गातां उलसे नयणांरे शंखेश्वर साहिब साचो; बीजानो आशरो काचोरे शंखे० ॥ १ ॥ ए आंकणि ॥ द्रव्यथि देव दानव पूजे । गुण संचितसो पण लीजे । अरिहापदपर्यव छाजे । मुद्रापआसन राजेरे ॥ शंखे० वी० २ ॥ संवेग तजी घरवासो। प्रभु पासना गणधर थाशो। तव मुक्तिपुरीमां जाशो । गुण लोकमां वयणे गवाशोरे ॥ शंखे०वी० ३ ॥ एम दामोदर जिनवाणी । अषाढा श्रावक जांणी । जिनवंदी निजघर आवे । प्रभु पासनी प्रतिमा भरावेरे ॥ शंखे० वी० ४ ॥ त्रणकाल ते धूप उखेवे । उपकारी श्री जिनसेवे । पछी तेह वैमानिक थावे । ते प्रतिमापण तिहां लावेरे शंखे० वी० ५ ॥ घणा काल पूजी बहूमाने । वली सूरज चंद्र विमाने । नाग लोकनां कष्ट निवार्या । ज्यारे पार्श्व प्रभुजी पधार्यारे ॥ शंखे० वी० ६ ॥ यदुसेन रह्यो रणभेरी । जीत्या नविजाये वैरी । जरासेनें जरा तव म्हेली । हरि बल विना सघले फेलीरे ॥ शंखे० वी० ७ ॥ नेमीश्वर चोकी विशाली । अठम करे वनमाली । तूठी पद्मावती बाली । आपे प्रतिमा झाकझमालीरे । शंखे० वी० ८ ॥ प्रभू पासनी प्रतिमा पूजी । बळवंत जरातव धूजी । छंटकावन्हवण जळ जोती । जादवनी जरा जाय रोतीरे ॥ शंखे० वी० ९ ॥ शखपूरीने सहूने जगावे । शखेश्वर गाम वसावे । मंदिरमां प्रभु पधरावे । शंखेश्वर नाम धरावेरे ॥ शंखे० वी० १० ॥ रहे जे जिनराज हजूरे । शेवक मनवंछित पूरे । ए भेटण प्रभुजीने काजे । शेठ मोताभाईने राजेरे ॥ शंखे० वी० ११ ॥ नाना माणक केरा नंद । शयनी प्रेमचंद वीरचंद । राजनगरथो संघ चलावे । गामोगामना संघ मिलावेरे ॥ शंखे० वीजा० १२ ॥ अढार अठोत्तर वरषे । फागण वदि तेरशी दिवसे । जिन वंदीने आणंद पावे । शुभवीर वचन रस गावेरे शंखे० वी० १३ ॥ इति श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

॥ श्री महावीर निर्वाण [illegible] ॥

[illegible]

जाहेर खबर.

अमारी पासेथी जैनधर्मनां दरेक जातना उपयोगी पुस्तको मलशे.

१	पंच प्रतिक्रमण गुजराती नव स्मरण तथा जीवविचारादि चारे प्रकरणो अर्थ साथे आवृत्ति आठमी.	१–८–०
२	देवसीराइ अर्थ सहित	०–८–०
३	जीवविचारादि चार प्र. अर्थ साथे.	०–६–०
४	सामायक सूत्र अर्थ साथे....	०–१–०
५	छुटक बोलो सीद्धांतना शास्त्री मोटा टाइपमां	०–५–०
६	नवाणुं प्रकारनी पूजा भाषांतर साथे.	०–८–०
७	विविध पूजासंग्रह भाग १–२–३–४ दरेक आचार्योनी पूजाओ तथा शांतिनाथना मोटा कळश सहित	२–०–०
८	देववंदनमाळा गुजराती...	१–४–०
९	स्तोत्र संग्रह तथा जैन वार्षिक पर्वो.	२–०–०
१०	जीन शतक टीका सहित, संस्कृत ग्रंथ.	०–१२–०
११	नीत्य स्मरणीय शेत्रुंजा प्रकरण	०–२–०
१२	रत्नाकर पचीसी	०–२–६
१३	देवसीराइ मूळ मोटा अक्षर शास्त्री टाइप	०–६–०
१४	देवसीराइ गुजराती मूळ मोटा टाइपमां	०–५–०
१५	दंडक प्रकरण (४१) द्वारवालुं शास्त्री.	०–६–०
१६	दीवाळी कल्प भाषांतर सहित गुजराती.	०–६–०

ते सिवाय दरेक जातनां जैनधर्मनां पुस्तको तेमज छापवा छपाववाना कागळो पण अमारी पासेथी मळशे.

मळवानुं ठेकाणुं —

मास्तर–उमेदचंद रायचंद.

ठे. पांजरापोळ–अमदावाद.